लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–2

सरबिया की लोकप्रिय लोक कथाऐं

1874

अंग्रेजी अनुवादः मैडम ज़ैडोमिली मीजाटोवीज़

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-2
Book Title: Serbia Ki Lok Kathayen (Folktales of Serbia)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Serbia

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

सरबिया की लोक कथाऐं 7

परिचय 9

1 भालू का बेटा 11

2 अद्भुत मकान 24

3 सॉप की भेंट जानवरों की भाषा 31

4 सुनहरे सेब का पेड़ और नौ मोरनियॉ 40

5 पैपैलियूगा या सुनहरा जूता 65

6 सुनहरी खाल वाला भेड़ 77

8 न्यायी और अन्यायी? कौन ज़्यादा अच्छा 100

9 शैतान का खेल और भगवान की ताकत 106

10 अक्लमन्द लड़की 113

11 भले काम कभी बेकार नहीं जाते 121

12 झूठ बोलने की शर्त 136

13 नीच सौतेली मॉ 145

14 चिड़िया लड़की 154

15 सर पैपरकौर्न 159

16 बाश चालक या सच्चा लोहा 194

17 चरवाहा और राजा की बेटी 237

18 एक अच्छा काम दूसरे अच्छे काम का अधिकारी है 259

19 खाने वाले का टुकड़ा 274

20 काम जो कोई नहीं जानता 296

21 तीन उम्मीदवार 320

22 सुनहरे बालों वाले जुड़वाँ.. 330

23 राजा के बेटे का सपना 343

24 तीन भाई 354

25 जानवर दोस्त भी और दुश्मन भी 411

26 सेन्ट जौर्ज की कहानी 429

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

सरबिया की लोक कथाऐं

सरबिया यूरोप का एक देश है जो उसके पूर्वीय भाग में स्थित है। पूर्वीय भाग में होने के कारण इस पर रूस का बहुत प्रभाव है। ऐसा लगता है कि रूस के पास होने के कारण यहाँ की लोक कथाओं पर भी रूस की लोक कथाओं का कुछ प्रभाव है जैसे इस पुस्तक की 16वीं लोक कथा "बाश चालक या सच्चा लोहा" रूस की लोक कथा "मार्या मोरेवना" से बहुत मिलती जुलती है। इसके अलावा इस पुस्तक की अधिकतर कहानियाँ हमारी किसी न किसी सुनी हुई कहानी से मिलती जुलती है या यह कहा जाये कि वे कहानियाँ इन कहानियों के ऊपर आधारित हैं।

सरबिया की ये लोक कथाऐं पुस्तक बहुत पुरानी लिखी गयी है। मैडम ज़ैडोमिली मैजाटोवीज़ ने तो ये लोक कथाऐं अंग्रेजी में अनुवाद कर के **1874** में केवल प्रकाशित की थीं।[2] पर मूल रूप से ये कथाऐं और भी अधिक पुरानी हैं। इस पुस्तक में कुल **26** लोक कथाऐं हैं। आज हम उन्हीं लोक कथाओं को उनकी उसी पुस्तक से पहली बार हिन्दी में अनुवाद कर के अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस पुस्तक की ये कथाऐं अधिकतर दो पुस्तकों से चुन कर और अंग्रेजी में अनुवाद कर के लिखी गयी हैं[3] जो **1853** और **1870** में प्रकाशित पुस्तकों से ली गयी हैं। उन सालों में ये वहाँ की स्थानीय भाषा में प्रकाशित हुई थीं।

इस संग्रह की **20** कथाऐं एक और पुस्तक में भी पायी जाती हैं जो एक वेब साइट पर दी गयी हैं।[4]

आशा है कि ये क्लासिक लोक कथाऐं आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये सरबिया देश की ये पुरानी लोक कथाऐं पहली बार अब हिन्दी में।

---

[2] "Serbian Folk-Lore: popular tales". Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London : W Isbister. 1874. 26 tales. Taken from the Web Site : https://books.google.ca/books?id=lC4CAAAAIAAJ&pg=PR4&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

[3] These two books are – (1) "Srpsk narodne pripovoijetke", by Vuk Stefanovics Karadjivich. Vienna. 1853. A greater part of the tales has been taken from this book. This collection was translated and published in German in Berlin in 1854. (2) "Bosniacke narodne pripovijetke". Society of Young Bosnia. Sissek (Croatia). 1870.

[4] "Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). 20 tales. Available at the Web Site : http://www.hellenicaworld.com/Serbia/Literature/WoislavMPetrovitch/en/HeroTalesAndLegendsOfTheSerbians.html

परिचय

यह अभी कुछ ही सालों का मामला है कि लोक कथाओं आदि की महत्ता मजदूरों में किसानों में और देश के नौजवानों में पीढ़ी दर पीढ़ी पहचानी गयी है। आजकल इस तरह के साहित्य का मूल्य किसी और तरह के क्षणिक आनन्द देने वाले साहित्य से कहीं अधिक है। यह हमारा सौभाग्य है कि "कहानियाँ और बुढ़िया पत्नियों की कहानियाँ"[5] की उपयागिता को इस तरह की मान्यता मिली।

सरबिया की लोकप्रिय कथाओं का यह संग्रह जिसका पहले अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और अब हिन्दी में अनुवाद किया जा रहा है मौजूदा लोक कथा साहित्य में जो हमारे देश में सदियों से चला आ रहा है एक और कड़ी जोड़ रहा है।

सरबियन लोक कथाओं के बारे में एक और बात ध्यान देने योग्य है कि इन कथाओं में इस्तेमाल हुई भाषा में गद्य उन लोक कथाओं में इस्तेमाल किया गया है जो स्त्रियाँ घरों में कहती हैं।

गर्मियों के दिनों में जब स्त्रियों का काम खत्म हो जाता है और वे बड़े बड़े छायादार पेड़ों की फैली हुई शाखाओं के नीचे बैठती हैं तो नौजवान स्त्रियाँ तो कताई करती हैं और बड़ी स्त्रियाँ उन्हें ये कहानियाँ सुनाती हैं। ऐसी जगहों में सामान्यतया आदमी लोग नहीं

[5] Translated for "Tales and the Old Wives' Fables"

आते और इस तरह से यह काम केवल स्त्रियों का ही एक काम बन कर रह जाता है। इस तरह से हमेशा ही ये कहानियाँ केवल गद्य में ही होती हैं।

आदमी भी यही कहानियाँ कहते है पर वे उसी कहानी को पद्य में कहते हैं।

1 भालू का बेटा[6]

एक बार की बात है कि एक भालू ने एक स्त्री से शादी की। उनके एक बेटा हुआ। जब वह बेटा छोटा ही था तो उसने माता पिता से भालू वाली गुफा छोड़ कर बाहर जाने की बहुत विनती की कि वह बाहर जा कर दुनियाँ देखना चाहता है।

उसका पिता भालू उसको इस बात की इजाज़त बिल्कुल नहीं देना चाहता था। उसने कहा — "बेटा तुम अभी बाहर जाने के लिये बहुत छोटे हो और तुम इतने ताकतवर भी नहीं हो कि तुम अपनी रक्षा अपने आप कर सको। दुनियाँ में बहुत सारे नीच जंगली जानवर रहते हैं जिन्हें हम आदमी कहते हैं वे तुमको मार डालेंगे।"

सो बेटा भालू कुछ दिन तक चुप रहा और उन्हीं के साथ उसी गुफा में रहा। पर कुछ समय बाद बेटा भालू ने अपने पिता से फिर बहुत ज़्यादा विनती की कि अब उसको दुनियाँ में बाहर निकलने की इजाज़त दे दी जाये तो पिता भालू को मानना ही पड़ा।

वह उसको जंगल ले गया और उसको एक बीच का पेड़[7] दिखा कर बोला — "अगर तुम इस बीच के पेड़ को जड़ से उखाड़ सकते हो तो मैं तुम्हें बाहर जाने दूँगा। और अगर तुम इसे नहीं उखाड़

---

[6] Bear's Son (Tale No 1)
[Author's Note: "Barensohn" Grimm's No 1 "
[7] Beech tree. Its nuts are edible.

सके तो यह इस बात का सबूत है कि तम अभी भी कमजोर हो सो फिर तुम्हें मेरे साथ ही रहना होगा।"

बेटा भालू ने उस पेड़ को जड़ से उखाड़ने की बहुत कोशिश की पर वह उसको उखाड़ने में कामयाब न हो सका सो उसको फिर से घर वापस जाना पड़ा।

फिर कुछ समय बीत गया। उसको बाद उसने फिर अपने पिता से विनती की कि वह उसको दुनियाँ में जाने दे लेकिन उसके पिता ने फिर वही कहा कि जब तक वह बीच का पेड़ जड़ से नहीं उखाड़ लेगा तब तक वह बाहर नहीं जा सकता।

इस बार बेटा भालू ने वह पेड़ उखाड़ दिया तो पिता भालू ने उसको गुफा से बाहर जाने की इजाज़त दे दी। पर उसने उससे यह भी कहा कि वह उस बीच के पेड़ की शाखें पहले जंगल में काट ले ताकि उसका तना वह अपनी रक्षा के लिये डंडे की तरह काम में ले सके।

अब क्या था बेटा भालू को बाहर जाने की इजाज़त मिल गयी थी सो उसने अपने कन्धे पर बीच के पेड़ का तना रखा और अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

एक दिन जब बेटा भालू अपनी यात्रा में था वह एक ऐसे मैदान में आ गया जहाँ सैंकड़ों आदमी अपने मालिक के लिये खेत जोत रहे थे।

उसने उनसे कुछ खाने के लिये माँगा तो उन्होंने उससे थोड़ा इन्तजार करने के लिये कहा कि जब तक उनका खाना वहाँ आता है वह इन्तजार करे फिर वे उसको खाना दे देंगे। क्योंकि उन्होंने सोचा कि जहाँ इतने सारे आदमी खाना खा रहे होंगे वहाँ एक आदमी को खिलाने में उनको क्या परेशानी हो सकती है।

जब वे ऐसी बातें कर रहे थे तभी गधों खच्चरों और घोड़ों पर लदा खाना वहाँ आ पहुँचा। पर जब वहाँ सबको माँस परोसा गया तो बेटा भालू बोला कि इतना सब तो वह अकेला ही खा सकता था।

किसान लोग यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गये। उनको यह विश्वास ही नहीं हुआ कि क्या एक आदमी इतना माँस खा सकता है जितना कि सैंकड़ों लोगों के लिये हो।

इस पर बेटे भालू ने उनको यह यकीन दिलाने की कोशिश की कि ऐसा हो सकता है। यहाँ तक कि उनसे शर्त भी लगा दी कि अगर उसने खा लिया तो उनके पास वहाँ जितना भी लोहा था वह सब उसका हो जायेगा। इस पर वे राजी हो गये।

जैसे ही वे इस शर्त के लिये राजी हुए कि भालू उनके खाने पर टूट पड़ा और थोड़ी ही देर में सब खा गया। उसने उनके लिये ज़रा सा टुकड़ा भी नहीं छोड़ा।

अब जैसा शर्त में तय हुआ था किसानों ने अपना सारा लोहा उसको दे दिया।

जब बेटे भालू ने उनका सारा लोहा इकट्ठा कर लिया तो उसने एक बिर्च का पेड़ तोड़ा उसको एक पट्टी की तरह मोड़ा सारा लोहा एक गट्ठर में बाँधा जिसको उसने अपने डंडे पर लटकाया़ डंडा अपने कन्धे पर रखा और उन किसानों को आश्चर्य और डर में पड़ा छोड़ कर अपने रास्ते चल दिया।

थोड़ी दूर चलने पर वह एक भट्टी के पास आया जहाँ एक लोहार एक हल बना रहा था। उसने उससे विनती की कि जो लोहा वह ले कर आ रहा था उस लोहे की उसके लिये वह एक गदा[8] बना दे। लोहार ने कहा कि वह उसकी गदा बना देगा। सो उसने उसमें से आधा लोहा तो एक तरफ रख दिया और बाकी बचे लोहे की एक छोटी सी गदा बना दी।

भालू ने देख लिया कि लोहार ने उसे धोखा दिया है। इसके अलावा उसकी कारीगरी भी उसे कोई बहुत ज़्यादा अच्छी नहीं लगी। खैर उसने उससे वह गदा ले ली और उससे कहा कि वह उसको इस्तेमाल कर के देखेगा।

उसने उसको अपने डंडे के एक सिरे पर बाँधा और उसको हवा में बादलों के भी ऊपर बहुत ऊँचा फेंका और उसको नीचे अपने ऊपर गिरने दिया।

[8] Translated for the word "Mace".

जैसे ही वह गदा नीचे उसके शरीर पर गिरी तो वह उसके शरीर से टकरा कर टुकड़े टुकड़े हो गयी। उसके कुछ टुकड़ों ने लोहार की भट्टी भी खराब कर दी।

इस पर भालू अपना डंडा ले कर लोहार की तरफ बढ़ा और उसकी बेईमानी के लिये उसको बुरा भला कहा और उसको वहीं मार दिया। उसने वहाँ से अपना सारा लोहा इकट्ठा किया और एक दूसरे लोहार के पास पहुँचा।

उसने उससे भी अपने लोहे की एक गदा बनाने के लिये कहा और कहा — "और हाँ देखो मेरे साथ कोई चाल नहीं खेलना। मैं ये लोहे के टुकड़े तुम्हारे पास एक गदा बनाने के लिये ले कर आया हूँ। ध्यान रहे तुम मुझे धोखा मत देना वरना तुम्हारी खैर नहीं क्योंकि मैं एक बार धोखा खा चुका हूँ।"

उस लोहार को पता था कि पिछले वाले लोहार के साथ क्या हुआ था उसने अपने कारीगरों को बुलाया सारा लोहा अपनी भट्टी में फेंका और उस सारे लोहे की एक बहुत अच्छी सी गदा बना कर उसको दे दी।

बेटा भालू ने उसको जाँचने का तय किया तो उसने उसको अपने डंडे के एक सिरे पर बाँधा और उसको ऊपर तक बहुत दूर फेंक दिया और उसको अपनी पीठ पर ले लिया। इस बार वह गदा टूटी तो नहीं पर उसकी पीठ से छू कर उछल गयी।

बेटा भालू यह देख कर बहुत खुश हुआ और बोला कि उसका यह काम बहुत अच्छा था। इतना कह कर वह उसको अपने कन्धे पर रख कर वहाँ से चला गया।

वहाँ से कुछ दूर आगे चलने पर वह एक खेत के पास आया जहाँ एक किसान अपने दो बैलों के साथ हल चला रहा था। वह उसके पास गया और वहाँ उससे कुछ खाने के लिये माँगा।

किसान बोला — "बस अभी किसी भी समय मेरी बेटी मेरा खाना ले कर आती ही होगी तब हम देखते हैं कि भगवान हमको क्या देते हैं।"

तब बेटा भालू ने उसे बताया कि किस तरह से उसने सैंकड़ों लोगों का खाना अकेले ने खा लिया था तो अब जो एक आदमी के लिये खाना आयेगा उसमें से कितना तो वह खुद खा पायेगा और कितना उसको मिलेगा।

इसी बीच किसान की बेटी खाना ले कर आ गयी। जैसे ही उसने खाना नीचे रखा तो बेटा भालू ने अपना हाथ बढ़ाया और वह खाना शुरू करने ही वाला था कि किसान ने उसको रोक दिया और कहा — "पहले तुम ग्रेस[9] पढ़ो जैसे कि मैं पढ़ता हूँ।"

बेटा भालू बहुत भूखा था पर उसने किसान की बात मान ली।

---

[9] In Christianity people always say "Grace" before eating, means thanking to the Lord for giving them the food.

ग्रेस पढ़ने के बाद दोनों ने खाना खाना शुरू किया। भालू ने किसान की बेटी की तरफ देखा जो अपने पिता के लिये खाना ले कर आयी थी। वह बहुत सुन्दर थी लम्बी और गोरी थी। वह उसे देखते ही चाहने लगा तो उसने किसान से पूछा — "क्या तुम अपनी बेटी की शादी मुझसे करोगे?"

किसान बोला — "मैं उसे तुम्हें बड़ी खुशी से दे देता पर मैंने उसकी शादी एक मूॅछ वाले से तय कर दी है।"

बेटा भालू बोला — "तो उसका मैं क्या करूॅ। उसके लिये तो मेरे पास मेरी गदा है।"

किसान बोला — "चुप चुप। वह मूॅछों वाला भी कोई है। तुम उसे जल्दी ही यहॉ देखोगे।"

तभी कुछ आवाजें सुनायी पड़ने लगीं। लो एक पहाड़ी के उस पार उस मूॅछ वाले की केवल एक मूॅछ दिखायी दी। उसमें तीन सौ पैंसठ चिड़ियों के घोंसले बने हुए थे। फिर दूसरी मूॅछ दिखायी दी। और फिर आया मूॅछों वाला।

वह उन लोगों के पास तक आ गया और आते ही आराम करने के लिये वहीं जमीन पर लेट गया। उसने अपना सिर उस लड़की की गोद में रख लिया और उससे अपना सिर खुजाने के लिये कहा। लड़की ने उसका कहा किया।

बेटा भालू उठा और उसने अपना डंडा उसके सिर में मारा। मूॅछ वाले को अपने सिर पर कुछ महसूस हुआ तो बोला "लगता है

यहाँ मेरे किसी ने काटा।" बेटा भालू ने उसके सिर में दूसरी जगह मारा तो वह मूँछ वाला फिर बोला "और यहाँ भी।"

जब बेटा भालू ने उसको तीसरी बार मारा तो मूँछों वाला लड़की पर नाराज हो कर बोला "देखो न यहाँ भी किसी ने मुझे काटा। आज यह कौन है जो मुझे बराबर काटे जा रहा है।"

लड़की बोली — "तुम्हें किसी ने नहीं काटा। एक आदमी ने तुमको मारा।"

जब मूँछ वाले ने यह सुना तो कूद कर उठ कर बैठा हो गया पर बेटा भालू ने अपनी गदा फेंक दी और वहाँ से भाग गया। मूँछ वाला उसके पीछे पीछे भागा। हालाँकि बेटा भालू वजन में उससे हल्का था और उससे काफी दूरी पर भाग रहा था पर फिर भी उसने उसका पीछा करना नहीं छोड़ा।

आखिर भागते भागते बेटा भालू एक चौड़ी सी नदी के पास आ पहुँचा। वहाँ आ कर उसने देखा कि कुछ लोग मक्का के भुट्टों में से मक्का के दाने निकाल रहे हैं।

वहाँ आ कर वह उनसे बोला — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। भगवान के लिये मेरी सहायता करो। वह मूँछ वाला मेरा पीछा कर रहा है। मैं क्या करूँ। मैं यह नदी कैसे पार करूँ।"

उनमें से एक आदमी ने अपने हाथ में लिया हुआ फावड़ा उसकी तरफ आगे बढ़ाया और बोला — "तुम इस पर बैठ जाओ मैं तुम्हें इस पर बिठा कर नदी में फेंक दूँगा।"

सो बेटा भालू उसके फावड़े पर बैठ गया और उसने उसे नदी के उस पार फेंक दिया। बहुत जल्दी ही मूँछ वाला भी आ गया। उसने उनमें से एक से पूछा — "क्या यहाँ से कोई नदी के उस पार गया है?"

उस आदमी ने उसे जवाब दिया कि हाँ एक आदमी यहाँ से नदी के पार गया तो है। मूँछ वाले ने पूछा मगर वह उस पार कैसे गया। उन्होंने जवाब दिया वह यहाँ से कूद कर नदी पार कर गया।

मूँछ वाले ने सोचा कि वह भी शायद उसी तरीके से नदी पार कर लेगा सो कूद लगाने के लिये तैयार वह थोड़ा पीछे हटा और नदी के ऊपर से कूद गया और उस पार जा पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने फिर से उसका पीछा करना शुरू कर दिया।

पर बेटा भालू आखिरी दौड़ दौड़ता हुआ कुछ थक गया था। पहाड़ी की चोटी पर उसको एक आदमी बीज बोता हुआ दिखायी दे गया। उसकी गर्दन से बीजों का एक थैला लटक रहा था। वह आदमी एक मुट्ठी बीज तो जमीन में बो देता और फिर दूसरी मुट्ठी बीज खुद खा जाता।

बेटा भालू उससे ज़ोर से बोला — "मेरी सहायता करो। भाई भगवान के लिये मेरी सहायता करो। मूँछ वाला मेरा पीछा कर रहा

है। वह मुझे जल्दी ही पकड़ लेगा। मेहरबानी कर के मुझे कहीं छिपा लो।"

वह आदमी बोला — "यह तो तुम ठीक कह रहे हो। मूँछ वाले का तुम्हारा पीछा करना कोई मजाक नहीं है। पर मेरे पास तो कोई ऐसी जगह ही नहीं है जहाँ मैं तुम्हें छिपा सकूँ। हाँ इस बीज के थैले में छिपा सकता हूँ।" सो उसने उसको अपने बीज वाले थैले में रख लिया।

जब मूँछ वाला बीज बोने वाले के पास तक आया तो उसने उससे पूछा कि क्या उसने भालू के बेटे को कहीं देखा है। बीज बोने वाला बोला — "हाँ देखा है। वह तो यहाँ से काफी देर पहले चला गया और अब तो भगवान ही जानता है कि वह इस समय कहाँ होगा।" मूँछ वाला फिर वापस गया।

उसके बाद बीज बोने वाला भूल गया कि उसके थैले में भालू का बेटा पड़ा हुआ है। पर जब उसने उसमें से खाने के लिये एक मुट्ठी बीज निकाले तो वह भी उसके साथ में निकल आया और उसके मुँह में चला गया।

अब तो बेटा भालू को डर लगा कि वह तो खा लिया जायेगा सो उसने अपने चारों तरफ देखना शुरू किया। वहाँ उसको उसके एक टूटे हुए दाँत की जगह मिल गयी जिससे उसके जबड़े में खाली जगह बन गयी थी सो वह उसमें जा कर बैठ गया।

जब बीज बोने वाला शाम को घर लौटा तो उसने अपनी पत्नी की छोटी बहिनों को बुलाया और कहा — “बच्चों ज़रा मेरी दाँत कुरेदने वाली ले कर आना मेरे टूटे हुए दाँत में कुछ घुसा हुआ लगता है।”

बच्चियाँ उसके लिये दो लोहे की सुइयाँ ले आयीं। उन्होंने उसके मुँह के दोनों तरफ खड़े हो कर उसके टूटे हुए दाँत में वे सुइयाँ घुसा दीं और तब तक वहाँ कुरेदती रहीं जब तक बेटा भालू बाहर नहीं आ गया।

जब उसने बेटा भालू को देखा तब उसे याद आया कि उसने तो उसे अपने बीज के थैले में छिपा रखा था तो वह बोला — “उफ़ देखो न तुम भी कितने बदकिस्मत हो। मैं तो तुम्हें खा ही गया होता।”

फिर उन्होंने खाना खाया। खाना खाने के बाद उन्होंने बहुत सारी बातें कीं। आखिर बेटा भालू ने पूछा — “यह तुम्हारा एक दाँत कैसे टूट गया जबकि तुम्हारे दूसरे दाँत सब बहुत ठीक और मजबूत हैं।”

उस आदमी ने बताया — “एक बार की बात है कि हम 10 आदमी 30 घोड़े ले कर समुद्र की तरफ नमक लाने गये। रास्ते में एक मैदान में हमें एक लड़की दिखायी दे गयी जो भेड़ चरा रही थी। उसने हमसे पूछा कि हम लोग कहाँ जा रहे थे। तो हमने उससे कहा कि हम लोग समुद्र के किनारे नमक खरीदने जा रहे हैं।

उसने कहा तुमको इतनी दूर जाने की क्या जरूरत है। मेरे हाथ में जो यह थैला है इसमें भेड़ों को खिलाने के बाद अभी भी काफी नमक बचा है। मेरे ख्याल से यह तुम लोगों के लिये काफी होगा।

सो हम लोगों ने आपस में उसकी कीमत तय की फिर उसने अपने थैले में से नमक निकाला। हमने अपने 30 घोड़ों पर से अपने नमक भरने वाले थैले उतारे और नमक तौल कर अपने तीसों थैले नमक से भर लिये। फिर हमने उस लड़की को पैसे दिये और घर वापस चल दिये।

उस दिन पतझड़ का एक सुन्दर दिन था और हम एक ऊँचा पहाड़ पार कर रहे थे कि आसमान में बादल छा गये। बर्फ पड़ने लगी और उत्तरी बर्फीली हवा चलने लगी। हमको आगे का रास्ता भी सुझायी नहीं दे रहा था सो हम इधर उधर घूमते रहे।

आखिर हमारी खुशकिस्मती से हममें से एक चिल्लाया "अरे देखो यहाँ एक सूखी जगह पड़ी हुई है।" सो हम सब उस सूखी जगह में चले गये – हम 10 आदमी और हमारे 30 घोड़े।

वहाँ पहुँच कर हमने घोड़ों के ऊपर से नमक के थैले उतारे और एक अच्छी सी आग जलायी और वहाँ अपनी रात गुजारी जैसे वह हमारा घर हो।

अगली सुबह मालूम है कि हमने क्या देखा। हमने देखा कि हम सब एक आदमी की खोपड़ी के अन्दर थे जो एक बागीचे के अन्दर पड़ी हुई थी। और हम लोग अभी इस बात पर आश्चर्य ही कर रहे

थे और अपने घोड़ों पर अपना सामान लाद रहे थे कि उस बागीचे का रखवाला आ गया और उसने उस खोपड़ी को उठा लिया।

उसने उसे एक झूले में रख लिया और कई बार उसको हिलाया। फिर उसने उसे अपने सिर पर से घुमा कर अपने बागीचे में लगी अंगूर की बेलों से मैनाओं को डराने के लिये दूर फेंक दिया। इससे हम एक पहाड़ी से नीचे की तरफ लुढ़कते चले गये। बस उसी समय मेरा यह दाँत टूट गया।"[10]

[10] [My Note : Although this story ends here in the book but it seems incomplete. I may be wrong but at least I felt it like that it was incomplete.]

2 अद्भुत मकान[11]

एक बार की बात है कि एक राजा रहता था। उसके तीन बेटे थे और एक बेटी थी। राजा अपनी बेटी को उसकी सुरक्षा का ख्याल रखते हुए हमेशा उसको एक पिंजरे में बन्द रखता था। वह उसकी अपनी आँखों की पुतली की तरह से रक्षा करता था।

जब लड़की बड़ी हो गयी तो एक दिन उसने अपने पिता से कहा कि वह अपने भाइयों के साथ महल के सामने घूमना चाहती है। उसके पिता ने उसको इजाज़त दे दी।

उसने मुश्किल से ही महल के बाहर कदम रखा होगा कि एक ड्रैगन उधर आया और उसे पकड़ कर उसके उसके भाइयों से दूर ले कर आसमान में उड़ गया।

उसके तीनों भाई बहुत तेज़ दौड़े और जा कर राजा को बताया कि उनकी बहिन के साथ क्या हुआ था और उनसे बहिन को खोजने की इजाज़त माँगी जो उनके पिता ने उनको तुरन्त ही दे दी।

उनको उसने एक एक बहुत बढ़िया घोड़ा और रास्ते के लिये जरूरत का सब सामान भी दे दिया। ये सब ले कर वे तीनों अपनी बहिन की खोज में चले गये।

---

[11] The Wonderful Kiosk (Tale No 2)
[Author's Note: "Das Lustschloss" Grimm's No 2]

काफी समय तक चलते रहने के बाद उन्होंने एक मकान देखा जो न तो आसमान में था और न ही जमीन पर था बल्कि दोनों के बीच में लटका हुआ था।

उसके पास आने पर वे तीनों सोचने लगे कि हो सकता है कि उनकी बहिन इसी मकान में हो। पर वहाँ पहुँचा कैसे जाये।

बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने यह तय किया कि वे अपना एक घोड़ा मार दें और उसकी एक पेटी[12] बनायें। फिर उसका एक सिरा तीर से बाँध दें और उस तीर को सीधा उस शहर के बीच में मारें ताकि वे उस तक पहुँच पायें।

सबसे छोटे भाई ने सबसे बड़े भाई से कहा कि वह अपना घोड़ा मारे पर उसने ऐसा करने से मना कर दिया। इसी तरीके से दूसरे भाई से भी कहा गया कि वह अपना घोड़ा मार दे पर उसने भी मना कर दिया। सो अब और तो कोई बाकी नहीं बचा था इसलिये सबसे छोटे भाई को ही अपना घोड़ा मारना पड़ा।

अपने घोड़े की खाल से उसने एक लम्बी सी पट्टी बनायी और उसको उसने एक तीर से बाँध दिया और वह तीर उस शहर की तरफ छोड़ दिया।

अब सवाल यह उठा कि उस पट्टी पर चढ़ेगा कौन। सबसे बड़े भाई ने चढ़ने से मना कर दिया। दूसरे भाई ने भी जाने से मना कर

[12] Translated for the word “Thong”.

दिया। अब रह गया सबसे छोटा भाई सो उसी को ऊपर जाना पड़ा।

जब वह उस मकान में पहुँच गया तो वह उसके हर कमरे में गया और आखिर अपनी बहिन को पा ही लिया। वह ड्रैगन के साथ बैठी हुई थी। ड्रैगन का सिर उसके घुटनों पर रखा हुआ था और वह उसके बालों में अपनी उँगलियाँ फिरा रही थी।

जब उसने अपने भाई को देखा तो वह बहुत डर गयी उसने उसको इशारे से कहा कि इससे पहले कि ड्रैगन जाग जाये वह वहाँ से चला जाये। पर उसका भाई यह काम करने के लिये बिल्कुल तैयार नहीं था। बल्कि बजाय वहाँ से जाने के उसने अपनी गदा उठायी और बहुत ज़ोर से ड्रैगन के सिर पर दे मारी।

मार खा कर ड्रैगन ने जहाँ उसको राजकुमारी के भाई ने उसे मारा था उस तरफ अपना पंजा थोड़ा सा हिलाया और उस लड़की से कहा — "मुझे लगा मुझे यहाँ किसी ने काटा।"

जब वह यह कह रहा था कि भाई ने एक बार फिर उसको वहाँ बहुत ज़ोर से मारा। ड्रैगन फिर बोला — "मुझे फिर लगा जैसे किसी ने मुझे यहाँ काटा।"

जब भाई ने उसे मारने के लिये तीसरी बार अपना हाथ उठाया तो उसकी बहिन ने उसको इशारा करके बताया कि वह अगर उसको मारना ही चाहता है तो उसको एक खास जगह मारे। सो उसने उसकी जान लेने के लिये उसको उसी जगह मारा जहाँ उसकी

बहिन ने उसे इशारा किया था। और वह तुरन्त ही मर कर नीचे गिर पड़ा।

राजा की बेटी ने भी उसके सिर को अपनी गोद से धक्का दे दिया और उठ कर अपने भाई को चूम लिया। तब उसने उस मकान के सारे कमरे अपने भाई को दिखाये।

पहले तो वह उसको उस कमरे में ले गयी जहाँ एक काला घोड़ा सवारी के लिये तैयार खड़ा हुआ था। उसके ऊपर सवार होने के सारा सामान सजा हुआ था और उसकी सब चीज़ें चाँदी की थीं।

फिर वह उसको एक दूसरे कमरे में ले गयी जिसमें एक सफेद घोड़ा खड़ा हुआ था। इस पर भी जीन आदि सब कुछ कसा हुआ था इसका सब सामान सोने का था।

आखीर में वह अपने भाई को एक तीसरे कमरे में ले गयी जिसमें एक क्रीम रंग का घोड़ा खड़ा हुआ था। उसके ऊपर जो कुछ भी था वह सब बहुत सारे कीमती रत्नों से जड़ा हुआ था।

इन तीनों कमरों से गुजरने के बाद वह उसको एक ऐसे कमरे में ले गयी जिसमें एक लड़की सोने की मेज के पीछे बैठी हुई थी और सोने के धागे से कढ़ाई कर रही थी।

इस कमरे से वे फिर और आगे गये तो एक दूसरे कमरे में एक लड़की बैठी हुई सोने का धागा कात रही थी। एक और कमरे में एक और लड़की मोती पिरो रही थी। उसके सामने एक सोने की

तश्तरी में एक सोने की मुर्गी अपने चूज़ों के साथ मोती छॉट रही थी।

यह सब देखने के बाद भाई फिर उसी कमरे में वापस चला गया जिसमें ड्रैगन मरा पड़ा था। उसने उसे उठा कर नीचे धरती पर फेंक दिया। जब उसके भाइयों ने उसका साइज़ देखा तो वे दोनों तो बहुत डर गये। फिर उसने सब लड़कियों को और अपनी बहिन को भी नीचे फेंक दिया।

पर जब छोटे भाई की अपनी बारी आयी तो उसके भाइयों ने उसको नीचे नहीं उतरने दिया। उन्होंने उसको वहीं छोड़ दिया और वहाँ से चल दिये।

तब उसके भाइयों ने एक नौजवान चरवाहे को पास के खेतों में काम करते देखा तो उन्होंने उसका वेश बदल कर अपना तीसरा भाई बना लिया। फिर वे सब अपने पिता राजा के पास गये पर वे अपनी बहिन और तीनों लड़कियों को इस धमकी के साथ बाहर ही छोड़ गये कि यह सब जो उन्होंने किया है यह वे किसी को भी न बतायें।

कुछ समय बाद सबसे छोटे भाई को जो ड्रैगन के मकान में ही रह गया था यह खबर मिली कि उसके दोनों भाई और चरवाहा उन तीनों लड़कियों से शादी कर रहे हैं।

तो जिस दिन उसका सबसे बड़ा भाई शादी कर रहा था वह अपने काले घोड़े पर चढ़ा और जैसे ही शादी में जा कर सब लोग

चर्च से वापस आये वह अपने मकान से नीचे उतरा और उनकी तरफ दौड़ गया और हल्के हाथ से अपने भाई को उसकी पीठ पर मारा जिससे वह अपने घोड़े से नीचे गिर पड़ा। वह फिर तुरन्त ही अपने मकान में वापस उड़ गया।

जिस दिन उसके दूसरे भाई की शादी होने वाली थी वह छोटा भाई फिर नीचे आया। अबकी बार तो वह अपने सफ़ेद घोड़े पर बैठ कर आया था।

उसने अपने इस भाई को भी मारा जैसे कि उसने अपने बड़े भाई को मारा था। सो वह भी अपने घोड़े से नीचे गिर पड़ा और उसे गिरा कर वह फिर अपने मकान में उड़ गया।

आखीर में उसने सुना कि चरवाहा उस लड़की से शादी कर रहा है जिसे उसने अपने लिये चुना था तो वह अपने क्रीम रंग के घोड़े पर बैठ कर आया और जब शादी वाले लोग चर्च जा रहे थे तो वह उनके बीच पहुँच गया दुलहे के सिर ज़ोर की एक गदा मारी और वह तुरन्त ही मर कर नीचे गिर गया।

जब मेहमान लोग उसको पकड़ने के लिये दौड़े तो उसने उनके अपने आपको पकड़ने दिया। उसने वहाँ से भागने की कोशिश भी नहीं की।

उसने उन सबको जल्दी ही यह साबित कर दिया कि वह राजा का तीसरा बेटा है और वह एक चरवाहा था जिसको उसका रूप दे दिया गया था। उसने उनसे यह भी कहा कि जब उसने अपनी

बहिन को ढूँढ लिया और ड्रैगन को मार दिया तो जलन की वजह से उन्होंने उसको मकान में ही छोड़ दिया था। उसकी बहिन और दूसरी तीनों लड़कियों ने कहा कि वह ठीक कर रहा था।

राजा को यह सुन कर बहुत गुस्सा आया और उसने अपने दोनों बड़े बेटों को दरबार से बाहर निकाल दिया।

अपने सबसे छोटे बेटे की शादी उस तीसरी लड़की से कर दी और अपने मर जाने के बाद अपना सारा राज्य उसी को दे गया।

3 साँप की भेंट जानवरों की भाषा[13]

एक बार की बात है कि एक जगह एक गड़रिया[14] रहता था जो अपने मालिक की बड़ी वफादारी और ईमानदारी से सेवा करता था।

एक बार जब वह जंगल में भेड़ चरा रहा था तो उसने हिस्स्स्स्स्स की आवाज सुनी। उसने सोचा कि यह आवाज किसकी हो सकती थी सो वह इस बात को पता करने के लिये जंगल में कुछ दूर और आगे चला गया।

उसने देखा कि जंगल में तो आग लगी है और एक साँप उस आग में घिरा हुआ चिल्ला रहा है। गड़रिये ने कुछ देर रुक कर देखा कि वह साँप अब क्या करेगा क्योंकि वह साँप आग में काफी घिरा हुआ था और आग उसके पास और और पास आती जा रही थी।

गड़रिये को देख कर साँप चिल्लाया – "ओ भले गड़रिये। मेहरबानी कर के मुझे इस आग से बचाओ।"

सो गड़रिये ने अपना हुक आग में फेंका तो साँप जल्दी से उससे लिपट गया और उसके कन्धे पर आ गया। फिर वह उसकी गर्दन के चारों तरफ लिपट गया।

---

[13] Snake's Gift: animal's language (Tale No 3)
[Author's Note: "Thiersprache" Grimm's No 3 "

[14] Translated for the word "Shepherd"

यह देख कर तो गड़रिये की जान ही निकल गयी। उसके मुँह से निकला — "ओह अब मैं क्या करूँ। मैं भी कितना बेवकूफ हूँ। मैंने तो तुम्हें बचाया और तुम मुझको ही मारे डाल रहे हो।"

साँप बोला — "तुम डरो नहीं। मैं तुम्हें मार नहीं रहा तुम बस मुझको मेरे पिता के घर ले चलो। मेरे पिता साँपों के राजा हैं।" पर गड़रिया तो पहले से ही बहुत डरा हुआ था सो उसने वहाँ न जाने के बहाने बनाने शुरू कर दिये कि वह अपने मालिक की भेड़ें वहाँ इस तरह से छोड़ कर नहीं जा सकता।

इस पर साँप बोला — "तुम मुझे मेरे घर छोड़ आओ तुम्हारी भेड़ों को कुछ नहीं होगा। तुम उनकी चिन्ता मत करो। बस तुम मुझे जल्दी से मेरे घर छोड़ आओ।"

अब गड़रिये के पास उसको उसके घर छोड़ने जाने के अलावा और कोई चारा नहीं था सो वह उसको ले कर जंगल से हो कर उसके घर चल दिया जब तक कि वे एक दरवाजे के पास नहीं आ गये। वह दरवाजा पूरा का पूरा साँपों का बना हुआ था।

उसको देख कर गड़रिये के गले में पड़े हुए साँप ने हिस्स्स्स्स्स की आवाज की जिससे दरवाजे पर बने हुए साँप खुल गये ताकि वह गड़रिया उसके अन्दर जा सके।

जैसे ही वे दरवाजे के अन्दर गये तो साँप ने गड़रिये से कहा — "जब तुम मेरे पिता के घर पहुँचोगे तो मेरे पिता तुमको कुछ भी देने के लिये कहेंगे – सोना चाँदी जवाहरात आदि।

पर तुम इनमें से कोई भी चीज़ मत लेना बल्कि उनसे तुम जानवरों की भाषा माँग लेना। पहले तो वह उसे तुम्हें देने से हिचकिचायेंगे पर आखीर में वह तुमको वह दे ही देंगे।"

यह बात करते करते वे साँपों के राजा के महल में आ गये। अपने बच्चे को देखते ही साँपों के राजा ने रोते हुए कहा — "मेरे बच्चे तुम कहाँ थे।"

इस पर साँप ने उनको सारी कहानी सुना दी कि किस तरह वह आग में घिर गया था और किस तरह इस गड़रिये ने उसकी जान बचायी। साँपों के राजा ने गड़रिये से कहा — "तुम्हारी क्या इच्छा है जो मैं तुम्हें अपने बेटे की ज़िन्दगी बचाने के लिये पूरी करूँ।"

गड़रिया बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये बस जानवरों की भाषा चाहिये।"

साँपों का राजा बोला — "यह तुम्हारे लिये ठीक नहीं है क्योंकि मैं यह अगर तुम्हें दे दूँ और तुम अगर इसे किसी से कह दोगे तो तुम तुरन्त ही मर जाओगे। इसलिये तुम्हारे लिये यही अच्छा होगा कि तुम कुछ और माँग लो।"

पर गड़रिया फिर वही बोला — "अगर आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो मुझे जानवरों की भाषा दे दीजिये। अगर आप मुझे वह नहीं देना चाहते तो फिर मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये। नमस्ते।"

यह कह कर वह वहाँ से चल दिया। यह देख कर साँपों के राजा ने उसको बुलाया और कहा — "अगर तुम सचमुच में उसी को लेना चाहते हो तो लो। अपना मुँह खोलो।"

गड़रिये ने अपना मुँह खोल दिया तो साँपों के राजा ने उसके मुँह में एक फूँक मारी और उससे कहा कि वह भी अपने मुँह से उसके मुँह में एक फूँक मारे। सो गड़रिये ने भी उसके मुँह में एक फूँक मारी। ऐसा उन्होंने तीन बार किया।

इसके बाद साँपों के राजा ने उससे कहा — "अब तुमको जानवरों की भाषा मिल गयी है। जाओ और भगवान के लिये दुनियाँ में किसी को यह बात बताना नहीं। क्योंकि अगर तुमने यह बात किसी को भी बतायी तो तुम तुरन्त ही मर जाओगे।"

गड़रिया वहाँ से जंगल वापस चला आया। जब वह जंगल में से हो कर आ रहा था तो वह सब जानवरों और चिड़ियों की बोली समझ पा रहा था। यहाँ तक कि पेड़ पौधे भी आपस में जो बात कर रहे थे वह भी वह समझ रहा था।

जब वह अपनी भेड़ों के पास आया तो उसने अपनी सब भेड़ों को सुरक्षित पाया सो वह आराम करने के लिये कुछ देर के लिये लेट गया। जैसे ही वह वहाँ लेटा तो उसके पास वाले पेड़ पर दो तीन रैवन[15] आ कर बैठ गये।

[15] Raven is a crow-like bird. It has its own importance all over the world. Read "Raven Ki Lok Kathayen-1" by Sushma Gupta published by Indra Publishing House, Bhopal, India. 2016 and

वे आपस में बात कर रहे थे — "काश यह गड़रिया यह जानता कि जहाँ इसकी काली भेड़ लेटी हुई है वहाँ उसके नीचे जमीन के नीचे एक गड्ढा है जो सोने और चाँदी से भरा हुआ है।"

अब गड़रिया क्योंकि जानवरों की भाषा समझता था सो उसने उनकी बातें समझ लीं। वह उठा और जा कर उसने यह बात अपने मालिक को बतायी तो मालिक ने अपनी गाड़ी उठायी और जा कर वहीं गड्ढा खोदा तो वहाँ तो सच में ही बहुत सारा सोना चाँदी पाया। उसने वह सारा खजाना निकाला और उसको ले कर घर चला गया।

पर उस गड़रिये का मालिक बहुत ही ईमानदार आदमी था। उसने उसमें से एक पैसा भी अपने लिये नहीं रखा। उसने सारा खजाना गड़रिये को यह कह कर दे दिया — "लो मेरे बेटे। यह सारा खजाना तुम्हारा है क्योंकि भगवान ने यह तुम्हें दिया है। इससे तुम अपने लिये एक मकान बनवाओ शादी करो और इस खजाने की सहायता से अपनी ज़िन्दगी गुजारो।"

सो गड़रिये ने वह खजाना लिया अपने लिये एक मकान बनवाया शादी की और उस शहर का सबसे ज़्यादा अमीर आदमी बन गया। अब उसके पास अपनी भेड़ें हो गयीं अपने गड़रिये हो गये। थोड़े में कहो तो उसके पास बहुत सारी सम्पत्ति हो गयी और उसने बहुत सारा पैसा बना लिया।

एक बार क्रिसमस के मौके पर उसने अपनी पत्नी से कहा — "थोड़ी शराब और खाना तैयार रखो कल हम लोग अपने गड़रियों को दावत देंगे।"

उसकी पत्नी ने ऐसा ही किया। अगले दिन वे अपने खेत पर चले गये। शाम को मालिक ने अपने गड़रियों से कहा — "तुम सब लोग आज यहाँ आओ, खाओ पियो और आनन्द करो और आज की रात भेड़ों की देखभाल मैं करूँगा।"

सो मालिक तो भेड़ों की देखभाल करने चला गया और गड़रिये दावत खाने और पीने के लिये आ गये। करीब करीब आधी रात को भेड़ियों ने अपनी भाषा में चिल्लाना शुरू किया "क्या हम भी आ कर तुम्हारी दावत खा सकते हैं। तुमको भी शिकार का कुछ हिस्सा मिल जायेगा।"

यह सुन कर कुत्तों ने अपनी भाषा में उन्हें जवाब दिया — "हाँ हाँ क्यों नहीं। हम भी कुछ खाने के लिये तैयार हैं।"

पर उन कुत्तों में एक बूढ़ा कुत्ता भी था जिसके केवल दो दाँत रह गये थे। यह कुत्ता गुस्से से चिल्लाया — "ओ नीच। तुम ज़रा आ कर तो देखो। जब तक मेरे ये दो दाँत कायम हैं तुम मेरे मालिक की किसी चीज़ को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते।"

मालिक उनकी ये सब बातें सुन भी रहा था और समझ भी रहा था सो अगले दिन उसने उस बूढ़े कुत्ते को छोड़ कर बाकी सब कुत्तों को मरवा दिया।

उसके नौकरों ने उससे कहा भी कि यह ठीक नहीं है पर उसने उन सबको यह कह कर मना कर दिया कि उनसे जो कहा जाये वे लोग वही करें उसके मामले में दखल न दें। और यह कह कर वह अपनी पत्नी के साथ अपने घर चला गया।

मालिक अपने एक सुन्दर घोड़े पर सवार था और उसकी पत्नी एक सुन्दर घोड़ी पर सवार थी। पर मालिक का घोड़ा इतना तेज़ भाग रहा था कि उसकी पत्नी उससे पीछे रह गयी। तो मालिक के घोड़े ने पत्नी की घोड़ी से कहा — "जल्दी जल्दी आ न। तू इतनी पीछे क्यों रह गयी।"

घोड़ी बोली — "तुम्हारे लिये तो यह बहुत आसान है क्योंकि तुम तो केवल एक ही आदमी का बोझा ढो रहे हो पर मैं तो तीन आदमियों का बोझा उठा रही हूँ।"

यह सुन कर मालिक ने पीछे देखा और हॅस दिया। पत्नी ने उसको हॅसते देखा और घोड़ी को मारा ताकि वह थोड़ा जल्दी जल्दी चले और वह अपने पति के पास पहुॅच जाये। जब वह अपने पति के पास आ गयी तो उसने उससे पूछा कि वह क्यों हॅस रहा था।

पति ने कहा कि वह किसी वजह से हॅस रहा था पर पत्नी तो इस जवाब से सन्तुष्ट होने वाली थी नहीं सो उसने उससे फिर पूछा कि वह क्यों हॅस रहा था।

इस पर वह बोला — "मुझसे सवाल पूछना बन्द करो। तुमने क्या सोचा कि मैं क्यों हँस रहा था। मैं तो भूल ही गया कि मैं क्यों हँसा था।"

आखिर में मालिक ने कहा — "अगर मैंने तुम्हें यह बता दिया कि मैं क्यों हँसा था तो मैं तुरन्त ही मर जाऊँगा।"

पर यह जवाब भी उसको शान्त नहीं कर सका। वह उससे पूछती ही रही — "तुम मुझे बताओ न।"

इस बीच वे घर पहुँच गये। घर पहुँचने पर उस आदमी ने एक ताबूत बनाने के लिये कहा और जब वह तैयार हो गया तो उसको अपने घर के सामने रखने के लिये कहा। फिर वह उसके अन्दर लेट गया। उसमें लेट कर उसने अपनी पत्नी से कहा — "अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं क्यों हँसा था। क्योंकि जैसे ही मैंने तुम्हें यह बताया कि मैं क्यों हँसा था मैं मर जाऊँगा।"

कह कर एक बार उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसने देखा कि उसका बूढ़ा कुत्ता जिसे उसने मारने से छोड़ दिया था खेत पर से दौड़ा चला आ रहा है। वह उसके सिर की तरफ आ कर खड़ा हो गया और भौंकने लगा।

जब आदमी ने यह देखा तो अपनी पत्नी से कहा — "इस बेचारे कुत्ते के लिये कुछ रोटी ला दो।" पत्नी ने उसके लिये रोटी ला दी और उसकी तरफ फेंक दी पर उसने रोटी की तरफ ऑख उठा कर भी नहीं देखा।

इतने में एक मुर्गा आया और उस रोटी में अपनी चोंच मारने लगा। कुत्ता मुर्गे से बोला — "तुम तो केवल खाने के बारे में ही सोचते हो। क्या तुमको पता है कि हमारा मालिक मरने वाला है।"

मुर्गा बोला — "मरने दो उसको क्योंकि वह तो है ही बेवकूफ। मेरी सौ पत्नियाँ हैं। अक्सर रात को मैं उन सबको मक्का के एक दाने के चारों तरफ इकट्ठा कर लेता हूँ और जब वे सब वहाँ मैजूद होती हैं तो मैं उस दाने को उठा कर खा जाता हूँ।

अगर उनमें से कोई गुस्सा भी होता है तो मैं उसको अपनी चोंच मार मार कर काबू में कर लेता हूँ। इस तरह से मैं उन सबको शान्त रखता हूँ। जबकि तुम हमारे मालिक को देखो उसके पास तो केवल एक पत्नी है और वह उसको भी काबू में नहीं रख पाता।"

यह सुन कर आदमी की आँखें खुल गयीं। वह ताबूत में से उठ कर खड़ा हो गया। उसने एक डंडा उठाया और अपनी पत्नी को अपने पास बुलाया और उससे कहा — "इधर आओ। अब बताता हूँ मैं तुमको जो तुम जानना चाहती हो।"

जब पत्नी ने यह देखा तो उसको लगा कि उसको पीटे जाने का खतरा है तो उसने उससे वह पूछना छोड़ दिया और फिर कभी उससे यह नहीं पूछा कि वह क्यों हँसा था।

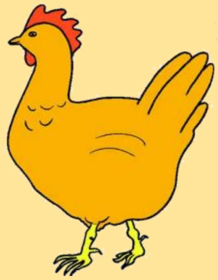

4 सुनहरे सेब का पेड़ और नौ मोरनियाँ[16]

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके महल के सामने सुनहरे सेबों का एक पेड़ लगा हुआ था जिसके ऊपर एक ही रात में फूल आ जाते थे और उसी रात में फल आ जाते थे और उसी रात में उसके सारे फल गिर भी जाते थे। हालाँकि यह किसी को पता नहीं चलता था कि उन सेबों को कौन ले गया।

एक दिन राजा ने अपने सबसे बड़े बेटे से कहा — "बेटे मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरे ये फल कौन ले जाता है।"

उसका बड़ा बेटा बोला — "पिता जी आज मैं सेब के पेड़ पर पहरा दूँगा और देखता हूँ कि उसके फल कौन ले जाता है।"

वह उस रात उस पेड़ के नीचे जा कर लेट गया। काफी देर तक जागता रहा। पर जैसे ही एक सेब पका और नीचे गिरा तो उसकी ऑख लग गयी। जब वह सो कर उठा तो सुबह हो गयी थी। सारे सेब गायब थे और पेड़ पर एक भी सेब नहीं था। इस पर वह अपने पिता के पास गया और उसे सब बताया।

---

[16] The Golden Apple-Tree and the Nine Peahens (Tale No 4)
[Author's Note: "Der goldene Apfelbaum und die neun Pfauinnen " Grimm's No 4]

अगले दिन राजा के दूसरे बेटे ने यह जिम्मेदारी ली तो उसके साथ भी ऐसा ही हुआ। अब राजा की सबसे छोटे बेटे की बारी थी। उसने भी अपनी तैयारी की अपना बिस्तर पेड़ के नीचे लगाया और तुरन्त ही सो गया।

आधी रात से पहले वह उठा और उसने पेड़ के ऊपर की तरफ देखा तो देखा कि सेब कैसे पक रहा था और कैसे उसकी रोशनी से सारे बागीचे में उजाला हो रहा था।

उसी समय नौ मोरनियाँ पेड़ की तरफ उड़ीं और उनमें से आठ तो उसकी शाखाओं पर बैठ गयीं पर नवीं मोरनी उसके पास आ कर बैठ गयी और तुरन्त ही एक लड़की में बदल गयी। वह इतनी सुन्दर थी कि सारे राज्य में कहीं कोई इतनी सुन्दर लड़की नहीं थी जिससे उसका मुकाबला किया जा सके।

वह लड़की वहाँ रुक कर उससे बड़ी नरमी के साथ आधी रात के बाद तक बात करती रही। फिर उसको सुनहरे सेबों के लिये धन्यवाद दे कर वहाँ से जाने लगी। राजकुमार ने उससे उसे कम से कम एक सेब देने की विनती की पर उसने उसको दो सेब दिये – एक उसके अपने लिये दूसरा उसके पिता के लिये।

वह फिर से एक मोरनी में बदली और दूसरी आठ मोरनियों के साथ वहाँ से चली गयी।

अगले दिन सुबह राजकुमार वे दोनों सेब ले कर अपने पिता के पास गया। राजा उसे देख कर बहुत खुश हुआ और उसकी बहुत तारीफ की।

उस दिन जब शाम हुई तो राजकुमार फिर से अपना बिस्तर ले कर उसी पेड़ पर पहरा देने के लिये उसी पेड़ के नीचे पहुँच गया। पिछली रात की तरह से उसने इस रात भी उस लड़की से बातें कीं। अगली सुबह वह पहले की तरह से फिर अपने पिता के पास दो सेब ले कर आया।

ऐसा कई रातों तक चलता रहा तो यह देख कर उसके दोनों बड़े भाई उससे बहुत जलने लगे क्योंकि वह वह कर रहा था जो वे खुद नहीं कर सके थे।

आखिर उनको एक बुढ़िया मिली जिसने उनसे वायदा कि वह उनको इस बात का भेद पता कर के रहेगी कि उनके सबसे छोटे भाई को दो सेब कहाँ से और कैसे मिलते हैं।

जब शाम हुई तो वह बुढ़िया उस भाई के पलंग के नीचे छिप गयी जो सेब के पेड़ के नीचे लगा हुआ था।

कुछ देर बाद ही आधी रात से पहले वहाँ नौ मोरनियाँ उड़ती हुई आयीं और पहले की तरह से उनमें से आठ तो पेड़ पर बैठ गयीं और नवीं मोरनी उसके पलंग के पास खड़ी हो गयी और फिर एक बहुत सुन्दर लड़की में बदल गयी।

बुढ़िया ने सावधानी से उसके बालों में से कुछ बाल काट लिये।

लड़की तुरन्त ही मोरनी में बदल गयी और अपनी दूसरी साथिनों के पास ऊपर उड़ गयी। वे सब भी उसके साथ साथ ही उड़ गयीं और सब वहॉ से गायब हो गयीं।

यह देख कर राजा का बेटा अपने पलंग से कूद पड़ा और अपने पलंग के नीचे से बुढ़िया को बाहर खींचते हुए बोला — "यह क्या है।" अगली सुबह उसने उसे एक घोड़े की पूँछ से बॉध कर उसे भगाने के लिये कहा। इस तरह से वह मर गयी।

पर मोरनियॉ फिर वापस नहीं आयीं। राजा का बेटा बहुत दिनों तक दुखी रहा और अपने प्यार के खो जाने पर रोता रहा।

आखिर उसने फिर यह फैसला कया कि वह अपनी मोरनी को खुद ही ढूँढेगा और जब तक वह उसे नहीं मिल जायेगी वह घर वापस नहीं लौटेगा।

जब उसने अपना यह इरादा अपने पिता को बताया तो पिता ने उसको बहुत समझाया कि वह उसको छोड़ कर न जाये। वह उसके लिये कोई दूसरी सुन्दर लड़की देख देगा जो भी वह सारे राज्य में से चाहे। लेकिन राजा का उसको सारा समझाना बेकार गया।

राजा का बेटा केवल एक नौकर को साथ ले कर दुनियॉ में अपनी मोरनी को ढूँढने निकल पड़ा। काफी यात्रा करने के बाद वह एक झील पर आ निकला। उस झील के बराबर में एक बहुत बड़ा और सुन्दर महल खड़ा था।

उस महल में एक बुढ़िया रहती थी जो वहाँ की रानी थी। और उस बुढ़िया के साथ एक लड़की रहती थी जो उसकी बेटी थी। उसने बुढ़िया से पूछा — "भगवान के लिये आप मुझे बतायें कि क्या आपने कहीं नौ सुनहरी मोरनियाँ देखी हैं या आप उनके बारे में कुछ जानती हैं?"

बुढ़िया बोली — "मेरे बेटे। मैं उनके बारे में सब कुछ जानती हूँ। वे रोज दोपहर को इस झील में नहाने आती हैं। पर तुम्हें उनसे क्या चाहिये। उन्हें आने दो। उनके बारे में मत सोचो।

यह देखो यह मेरी बेटी है। कितनी सुन्दर है यह। यह बहुत अच्छी रानी बनेगी। अगर तुम इससे शादी कर लोगे तो मेरी सारी सम्पत्ति तुम्हारी हो जायेगी।"

पर उसको तो मोरनियों को देखने की इच्छा थी सो वह बुढ़िया की बात ही नहीं सुन रहा था जो वह अपनी बेटी के बारे में कह रही थी।

अगले दिन जब सुबह हुई तो राजकुमार उठ कर झील के किनारे जा कर उन नौ मोरनियों का इन्तजार करने लगा। तब बुढ़िया रानी ने राजकुमार के नौकर को रिश्वत दी। उसने उसको दो धौंकनी[17] दीं और कहा — "तुम यह धौंकनी देख रहे हो न। जब

[17] Translated for the "Bellows". See its picture above. It is used to blow air normally to make fire.

तुम झील के पास पहुँच जाओ तो तुम उसकी गर्दन के पीछे जा कर इसमें छिप कर फूँक मारना। इससे वह बेहोश हो जायेगा और फिर वह किसी मोरनी से बात नहीं कर सकेगा।"

शरारती नौकर ने वैसा ही किया जैसा कि बुढ़िया रानी ने उससे करने लिये कहा था। जब वह अपने मालिक के पास झील तक गया तो मौका देख कर उसने उसकी गर्दन पर पीछे से उस धौंकनी में से फूँक मारी तो लो वह तो तुरन्त ही बेहोश हो गया।

कुछ देर बाद ही नौ मोरनियाँ वहाँ उड़ती हुई आयीं तो उनमें से आठ मोरनियाँ तो झील के पास ही बैठ गयीं पर नवीं मोरनी उसकी तरफ उड़ी क्योंकि वह घोड़े पर बैठा हुआ था और उसको सहलाते हुए बोली — "जागो मेरे प्यारे। जागो मेरे दिल। जागो मेरी आत्मा।"

पर उसे तो यह सब पता ही नहीं चला क्योंकि वह तो बिल्कुल मरे जैसा पड़ा था। जब वे सब मोरनियाँ नहा लीं तो वे सब वहाँ से उड़ गयीं। उनके उड़ जाने के बाद ही राजकुमार की आँख खुली। जैसे ही उसकी आँख खुली तो उसने अपने नौकर से पूछा — "अरे क्या हुआ क्या वे मोरनियाँ यहाँ नहीं आयीं?"

नौकर बोला — "हाँ आयी थीं। उनमें से आठ ने तो इस झील में स्नान किया पर नवीं आपके घोड़े पर आपके पास बैठी रही आपको सहलाती रही और आपको जगाने की कोशिश करती रही।"

यह सुन कर राजकुमार को इतना गुस्सा आया कि वह तो गुस्से के मारे पागल सा हो गया। अगली सुबह वह फिर से झील के किनारे गया और वहाँ जा कर मोरनियों का इन्तजार करने लगा।

वह बहुत देर तक इधर उधर घूमता रहा आखिर एक बार उसके नौकर को फिर से उसकी गर्दन पर धौंकनी से हवा का झोंका मारने का मौका मिल ही गया। हवा का झोंका लगते ही वह फिर बेहोश हो गया और सो गया।

जैसे ही वह सोया तो वे नौ मोरनियाँ उड़ती हुई फिर से वहाँ आयीं। उनमें से आठ मोरनियाँ तो पानी के पास बैठ गयी और नवीं मोरनी राजकुमार के पास आ कर उसके घोड़े पर बैठ गयी। उसने उसे फिर से सहलाया और उसे जगाने की कोशिश की — "जागो मेरे प्यारे। जागो मेरे दिल। जागो मेरी आत्मा।"

पर इसका कोई फायदा नहीं निकला। राजकुमार तो पहले की तरह से सोता ही रहा जैसे मरा हुआ पड़ा हो। तब उसने उसके नौकर से कहा — "कल तुम अपने मालिक से कहना कि वह कल हम लोगों को फिर से देख सकता है पर उसके बाद फिर कभी नहीं।"

इतना कह कर सारी मोरनियाँ वहाँ से उड़ गयीं। जैसे ही वे वहाँ से गयीं राजकुमार जाग गया और उसने अपने नौकर से पूछा कि क्या वहाँ नौ मोरनियाँ आयी थीं।

नौकर बोला — "हॉ सरकार। वे यहॉ आयी थीं और कह गयी हैं कि आप उन्हें कल यहॉ फिर देख सकते हैं पर फिर उसके बाद वे फिर यहॉ कभी नहीं आयेंगी।"

जब दुखी राजकुमार ने यह सुना तो उसने सोच लिया कि अब उसे क्या करना है। वह दुख के मारे अपने बाल नोचने लगा।

तीसरे दिन वह फिर झील के किनारे गया और इस डर से कि कहीं वह सो न जाये वह घोड़े पर बैठ कर सैर करने की बजाय उसको दौड़ाता रहा। पर उसके नौकर को इस बार भी मौका मिल गया कि वह उसकी गर्दन के पीछे से उस पर धौंकनी से हवा फेंक सके। और राजकुमार फिर सो गया।

पल भर बाद ही नौ मोरनियॉ वहॉ आ गयीं। पहले की तरह से आठ तो वहीं झील के किनारे बैठ गयीं और नवीं मोरनी राजकुमार के पास घोड़े पर आ कर बैठ गयी। वह फिर बोली — "जागो मेरे प्यारे। जागो मेरे दिल। जागो मेरी आत्मा।"

पर फिर इसका कोई फायदा नहीं निकला। राजकुमार तो सोता ही रहा। तब मोरनी ने नौकर से कहा — "जब तुम्हारे मालिक नींद से जाग जायें तो उनसे कहना कि वह कील के सिर पर उसके नीचे के हिस्से से मारें तो वह मुझे पा सकेंगे।"

इतना कह कर सब मोरनियॉ उड़ गयीं और राजकुमार की नींद खुल गयी।

राजकुमार ने तुरन्त ही अपने नौकर से पूछा कि क्या वे वहाँ आयी थीं। नौकर बोला — "हाँ सरकार वे आयी थीं। उनमें से एक जो आपके घोड़े पर आपके साथ बैठी थी उसने मुझे आपसे यह कहने के लिये कहा है कि जब वह कील के सिर पर उसके नीचे के हिस्से से मारें तो वह मुझे पा सकेंगे।"

जब राजकुमार ने अपने नौकर के मुँह से यह सुना तो तुरन्त ही अपनी तलवार निकाल कर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। उसके बाद वह अकेला ही दुनियाँ में यात्रा करता रहा।

काफी लम्बी यात्रा करने के बाद वह एक साधु के पास आया। उसने उस साधु से पूछा कि क्या वह नौ सुनहरी मोरनियों के बारे में कुछ जानता था।

साधु बोला — "ओह मेरे बेटे तुम भाग्यवान हो। भगवान ने तुम्हें ठीक रास्ते पर भेजा है। इस जगह से उनकी जगह केवल आधा दिन की दूरी पर है। बस तुम यहाँ से सीधे चले जाओ।

सीधे जा कर तुम एक बहुत बड़े फाटक के पास आओगे उसमें से तुम अन्दर चले जाना। अपने दाँये हाथ को ही चलना तो तुम मोरनियों के शहर में पहुँच जाओगे। वहीं उनका महल है।"

अगली सुबह राजकुमार उठा और साधु को धन्यवाद दे कर उसके बताये रास्ते पर वहाँ से सीधा चल दिया। कुछ समय बाद वह उस बड़े से फाटक पर आ पहुँचा। फाटक में अन्दर घुसा और दाँयी तरफ चल दिया। उसने यह शहर दोपहर को देखा।

खिली हुई धूप में शहर बिल्कुल सफेद चमक रहा था। वह उस शहर को देख कर बहुत खुश हुआ। शहर में आ कर उसने महल देखा जहाँ वे नौ मोरनियाँ रहती थीं। जब वह उसके फाटक से अन्दर जाने लगा तो चौकीदार ने उसे अन्दर जाने से रोका और उससे पूछा कि वह कौन था और अन्दर क्यों जाना चाहता था।

जब उसने उसके इन सवालों के जवाब दे दिये तो वह यह बात बताने के लिये रानी के पास गया। जब रानी ने यह सुना तो दौड़ी दौड़ी महल के फाटक के पास आयी और उसका हाथ पकड़ कर महल में ले गयी।

वह एक नौजवान सुन्दर लड़की थी सो जब उसने कुछ ही दिनों मे राजकुमार से शादी कर ली तो महल में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। वह वहीं रहता रहा।

कुछ समय बाद एक दिन रानी बाहर सैर पर निकली। राजकुमार घर में ही था। जाने से पहले रानी ने राजकुमार को 12 कमरों की चाभियाँ दीं और उससे कहा कि वह 11 कमरों में से किसी भी कमरे में जा सकता था सिवाय 12वें कमरे के। उसको वह किसी भी हालत में न खोले नहीं तो उसको जान से हाथ धोना पड़ेगा।

यह कह कर वह वहाँ से चली गयी। अब जैसे ही रानी वहाँ गयी तो राजकुमार ने आश्चर्य से सोचा कि रानी उसको 12वें कमरे में जाने से क्यों मना करके गयी। उस कमरे में ऐसा क्या है। जल्दी ही उसने सब कमरों को एक एक कर के खोलना शुरू कर दिया।

जब वह **12**वें कमरे पर आया तो पहले तो वह कमरा खुल कर ही न दे तो उसने फिर से यह सोचना शुरू कर दिया कि रानी ने उसको वह कमरा खोलने से क्यों रोका। ऐसा उसमें क्या है।

आखिर उसने उसका ताला खोल ही लिया। उसने देखा कि उस कमरे के बीच में एक बैरल रखा हुआ था। उसमें एक छेद है और वह तीन जगह से लोहे की पत्तियों से बॅधा हुआ है।

उस बैरल में से आवाज आ रही थी “मुझे बचाओ मुझे बहुत प्यास लगी है। मैं प्यास से मरा जा रहा हूँ। मुझे कोई पानी पिलाओ।”

राजकुमार ने एक गिलास पानी लिया और उसे बैरल में उॅडेल दिया। जैसे ही उसने यह किया कि बैरल का एक लोहे का छल्ला टूट कर नीचे गिर पड़ा। उसमें से फिर आवाज आयी — “भाई मुझे बहुत प्यास लगी है मुझे पानी और चाहिये। मेहरबानी कर के मुझे एक गिलास पानी और दो।”

राजकुमार फिर से एक गिलास पानी लाया और उसे भी बैरल में उॅडेल दिया। ऐसा करने के बाद उस बैरल का दूसरा लोहे का छल्ला भी टूट कर नीचे गिर गया।

तीसरी बार उसमें से फिर आवाज आयी — “भाई मुझे बहुत प्यास लगी है मुझे पानी और चाहिये। मेहरबानी कर के मुझे एक गिलास पानी और दो।”

राजकुमार फिर से एक गिलास पानी लाया और उसे भी उसने बैरल में उँडेल दिया। ऐसा करने के बाद उस बैरल का तीसरा और आखिरी लोहे का छल्ला भी टूट कर नीचे गिर गया और बैरल टूट कर नीचे बिखर गया।

उसमें से एक ड्रैगन बाहर निकल कर बाहर उड़ गया। वह कमरे से बाहर उड़ गया और रास्ते में जाती रानी को पकड़ लिया और ले गया।

नौकर जो रानी के साथ गया था तुरन्त ही महल लौटा और राजकुमार को वह बताया जो वहाँ हुआ था। अब बेचारे राजकुमार को तो यह पता ही नहीं कि इस हालत में वह क्या करे। वह तो इतना निराश हो गया कि अपने आपको गालियाँ देने लगा।

आखिर जब वह थोड़ा सा होश में आया तो उसने तय किया कि वह उसको खोजने जायेगा और वह उसको खोजने के लिये निकल पड़ा।

लम्बी यात्रा के बाद वह एक झील के पास आया। उसके पास एक छोटे से गड्ढे में एक छोटी सी मछली उछल कूद रही थी।

जब मछली ने राजकुमार को देखा तो वह उसकी ओर दया भरी दृष्टि से देखती हुई बोली — "भैया। भगवान के लिये मुझे यहाँ से निकाल कर पानी में डाल दो। किसी दिन मैं तुम्हारे काम आऊँगी। मेरी खाल का एक टुकड़ा निकाल लो और जब तुम्हें मेरी जरूरत हो तब इसको हलके से मल देना मैं तुरन्त आ जाऊँगी।"

राजकुमार ने उसकी खाल का एक टुकड़ा तोड़ लिया और उसे उस गड्ढे में से निकाल कर पानी में डाल दिया। खाल का टुकड़ा उसने अपने रूमाल में सँभाल कर रख लिया।

कुछ देर बाद उसको एक लोमड़ा मिला जो किसी शिकारी के जाल में फँसा हुआ था। उसने राजकुमार को देखा तो वह राजकुमार से बोला — "भाई मुझे इस जाल से निकाल दो मैं तुम्हारा बहुत ऐहसानमन्द होऊँगा। एक दिन तुम्हें मेरी जरूरत पड़ेगी सो तुम मेरी पूँछ से एक बाल तोड़ कर रख लो। जब भी तुम्हें मेरी जरूरत हो तो उसे हल्के से मल देना मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा।"

राजकुमार ने उसकी पूँछ का एक बाल तोड़ लिया उसे सँभाल कर अपने रूमाल में रख कर उसको जाल से आजाद कर दिया।

कुछ देर बाद वह एक पहाड़ पार कर रहा था तो उसको वहाँ भी जाल में फँसा एक भेड़िया नजर आ गया।

भेड़िया उसको देखते ही बोला — "भाई भगवान के नाम पर मुझको इस जाल से आजाद कर दो। मैं किसी दिन तुम्हारे काम जरूर आऊँगा। तुम मेरी पूँछ से एक बाल तोड़ लो और जब तुम्हें मेरी जरूरत महसूस हो तो बस उसे हाथ से ज़रा सा मल देना। मैं तुम्हारी सहायता के लिये तुरन्त ही पहुँच जाऊँगा।"

राजकुमार ने उसकी पूँछ का भी एक बाल तोड़ कर अपने पास रख लिया और उसे जाल से आजाद कर दिया। भेड़िया उसको धन्यवाद देता हुआ वहाँ से चला गया।

काफी आगे चलने के बाद अब राजकुमार को एक आदमी मिला। उसने उस आदमी से पूछा — "क्या तुमने कभी ड्रैगन राजा के किले का नाम सुना है?

आदमी ने उसको ड्रैगन राजा के किले का सही सही रास्ता बता दिया और साथ साथ में यह भी बता दिया कि वह वहाँ कितनी देर में पहुँच जायेगा। राजकुमार ने उसे धन्यवाद दिया और उसके बताये रास्ते पर चल दिया। वह तब तक चलता रहा जब तक वह उस शहर तक नहीं आ गया जहाँ वह ड्रैगन रहता था।

वहाँ पहुँच कर वह ड्रैगन के महल में गया जहाँ वह उसकी पत्नी से मिला। दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुए और आपस में सलाह करने लगे कि वहाँ से कैसे भागा जाये।

उन्होंने सोचा कि बस यहाँ से भाग ही लिया जाये और वे दोनों वहाँ से जल्दी जल्दी भागने की तैयारियाँ करने लगे। जब सब तैयार हो गया तो दोनों घोड़ों पर चढ़े और वहाँ से भाग लिये।

उनके जाने के बाद ही ड्रैगन घर वापस आ गया। वह भी घोड़े पर सवार था। घर आ कर उसने देखा कि उसकी पत्नी तो वहाँ

नहीं थी। उसने अपने घोड़े से पूछा — "अब हम क्या करें? पहले हम कुछ खा पी लें या फिर सीधे उनका पीछा करें?"

घोड़ा बोला — "पहले हम कुछ खा पी लेते हैं। आप कुछ ज़्यादा चिन्ता न करें हम उन्हें पकड़ ही लेंगे।"

सो ड्रैगन ने कुछ खाया पिया और फिर अपने घोड़ों पर सवार हो कर चल दिया। थोड़ी ही देर में उसने भागने वालों को पकड़ लिया।

उसने राजकुमार से अपनी रानी को छुड़ाया और बोला — "भगवान के नाम पर अब तुम यहॉ से चले जाओ। इस बार मैं तुम्हें माफ करता हूॅ क्योंकि तुमने मुझे वहॉ कमरे में पानी पिलाया था पर अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है तो अब इस तरफ तुम फिर कभी मत आना।" और वह अपनी पत्नी को ले कर चला गया।

दुखी राजकुमार अपने रास्ते चला गया पर वह कुछ ही देर तक गया होगा कि अपने आपको रोक न सका और अगले दिन वह फिर ड्रैगन के घर चला आया और देखा कि रानी वहॉ अकेली बैठी है और रो रही है।

उन्होंने फिर से वहॉ से भागने की योजना बनायी तो राजकुमार बोला — "अबकी बार ड्रैगन यहॉ आये तो तुम उससे यह पूछना कि उसका घोड़ा कहॉ से आया। तब तुम मुझे बताना तब मैं उसके मुकाबले का कोई दूसरा घोड़ा देखूॅगा तब शायद हम यहॉ से भाग सकें।"

इतना कह कर वह वहॉ से चला गया ताकि कहीं ड्रैगन वहॉ न आ जाये और उसे अपनी पत्नी के साथ न देख ले। कुछ देर बाद ड्रैगन घर आया तो रानी उसको प्यार से थपथपाने लगी और उससे मीठी मीठी बातें करने लगी।

आखिर उसने कहा — "ओह तुम्हारा घोड़ा कितना सुन्दर है। इतना शानदार घोड़ा तुमको कहॉ से मिला?"

ड्रैगन बोला — "जहॉ से मैंने यह घोड़ा पाया है वहॉ से और कोई नहीं पा सकता। एक पहाड़ है जहॉ एक स्त्री रहती है जिसकी घुड़साल में **12** घोड़े हैं। कोई नहीं बता सकता कि उनमें से कौन सा सबसे अच्छा है क्योंकि सभी एक से एक सुन्दर और बढ़िया हैं।

पर उसके घुड़साल के एक कोने में एक घोड़ा है जो देखने में ऐसा लगता है जैसे उसको कोढ़[18] हो गया हो पर वास्तव में वही सबसे अच्छा घोड़ा है। वह मेरे घोड़े का भाई है। जो कोई उस घोड़े को ले लेगा वह आसमान छू सकता है।

पर जो कोई भी उस घोड़े को उस स्त्री से लेने की इच्छा रखता है उसको तीन दिन और तीन रात उस स्त्री की सेवा करनी पड़ेगी। उसके पास एक घोड़ी है जिसके एक छोटा बच्चा है। जो कोई भी इस घोड़ी और उसके इस बच्चे की तीन दिन तीन रात तक देखभाल करेगा उसको वह अपना सबसे अच्छा घोड़ा दे देगी।

---

[18] Translated for the word "Leprosy"

जो कोई भी उन दोनों की रक्षा नहीं कर पाता है तो वह उसका सिर काट देती है।"

अगले दिन जब ड्रैगन घर से चला गया तो राजकुमार आया तो रानी ने उसे वह सब बताया जो उसका ड्रैगन ने बताया था। यह जान कर वह उसी पहाड़ पर चला गया जहाँ वह स्त्री रहती थी।

वहाँ जा कर उसने उस बुढ़िया को नमस्ते की — "भगवान आपकी सहायता करें ओ दादी माँ।"

स्त्री ने भी जवाब दिया — "भगवान तुम्हारी भी सहायता करे मेरे बेटे। तुम्हें क्या चाहिये।"

राजकुमार बोला — "मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ।"

स्त्री बोली — "अगर तुम मेरी घोड़ी और उसके बच्चे की तीन रात तक ठीक से देखभाल करो तो मैं तुमको अपना सबसे अच्छा घोड़ा दे दूँगी। पर अगर तुम ऐसा नहीं कर सके तो तुम्हें अपना सिर गँवाना पड़ेगा।"

कह कर वह उसको अपने आँगन में ले गयी जहाँ उसके सारे घोड़े खूँटियों से बँधे हुए थे। हर खूँटी पर एक आदमी का सिर लगा हुआ था केवल एक खूँटी ऐसी थी जिस पर कोई सिर नहीं था। वह चिल्लाया "दादी माँ मुझे भी एक सिर दो न।"

बुढ़िया ने यह सब राजकुमार को दिखाया और बोली — "ये सब उन लागों के सिर हैं जो यहाँ मेरी घोड़ी की देखभाल करने आये थे और कर नहीं पाये।"

पर राजकुमार इस बात से बिल्कुल भी डरा हुआ नहीं था सो वह उस स्त्री की सेवा के लिये राजी हो गया। जब शाम हुई तो वह घोड़ी को बाहर घुमाने ले गया। उसके पीछे पीछे उसका बच्चा भी गया। राजकुमार उस घोड़ी के ऊपर कस कर बैठा था कि उसने यह पक्का इरादा कर लिया था वह सोयेगा नहीं ताकि वह भागे नहीं।

पर आधी रात से पहले ही उसे कुछ नींद सी आने लगी। जब उसकी ऑख खुली तो उसने अपने आपको एक रेल पर बैठा पाया और घोड़ी की लगाम उसके हाथ में थी। घोड़ी और उसका बच्चा वहॉ से गायब था। यह देख कर तो वह बहुत चिन्तित हो गया और तुरन्त ही उस घोड़ी को ढूढने के लिये निकल पड़ा।

उन्हें ढूॅढते ढूॅढते वह एक नदी के पास आ निकला। जब उसने पानी देखा तो उसको मछली की याद आ गयी। उसने मछली की खाल के टुकड़े को रूमाल में से निकाला और उसे थोड़ा सा मला।

तुरन्त ही छोटी मछली वहॉ प्रगट हो गयी और राजकुमार से पूछा — “क्या बात है मेरे सौतेले भाई।”

राजकुमार बोला — “जब मैं बुढ़िया की घोड़ी की देखभाल कर रहा था तो वह पता नहीं कहॉ भाग गयी। अब मुझे पता नहीं है कि वह कहॉ है।”

मछली पलट कर बोली — “वे दोनों यहॉ है।” कहते हुए पहले वह एक मछली की तरफ घूमी और फिर दूसरी मछली की तरफ जो दोनों मछलियों में बदले हुए थे। फिर वह राजकुमार से

बोली पहले उसकी लगाम को पानी के ऊपर मारो और फिर चिल्ला कर उसे ज़ोर से पुकारो "ओ बुढ़िया की घोड़ी।" तो वे दोनों तुम्हारे पास आ जायेंगे।"

राजकुमार ने वैसा ही किया तो तुरन्त ही घोड़ी और उसका बच्चा पानी में से निकल कर बाहर किनारे पर आ गये। फिर उसने उसको लगाम पहनायी और उस पर चढ़ कर दोनों को साथ ले कर चल दिया।

जब वह घर पहुँचा तो बुढ़िया ने पहले उसको नाश्ता कराया। फिर वह अपनी घोड़ी को अस्तबल में ले गयी और एक डंडे से पीटते हुए बोली — "तुम मछली के साथ साथ नीचे क्यों नहीं चली गयीं।"

घोड़ी बोली — "मैं तो मछलियों के साथ साथ नीचे चली गयी थी पर मछलियाँ तो उसकी दोस्त हैं उन्होंने मेरे बारे में उसको सब बता दिया।"

बुढ़िया बोली — "तो जाओ अबकी बार लोमड़ी बन जाओ।"

जब शाम हुई तो राजकुमार फिर से उस घोड़ी को ले कर मैदान में निकल गया। घोड़ी का बच्चा उसके पीछे पीछे चलता रहा। वह आधी रात तक को घोड़ी की पीठ पर बैठा रहा पर उसके बाद पहले की तरह से उसको फिर से नींद आ गयी।

जब वह सो कर उठा तो फिर से उसने अपने आपको एक रेल पर बैठा पाया और लगाम उसके हाथ में थी। वह पहले की तरह से

फिर डर गया और घोड़ी की खोज में चल दिया। जब वह जा रहा था तो उसको बुढ़िया के शब्द याद आये जो उसने घोड़ी से कहे थे।

उसने तुरन्त ही अपना रूमाल निकाला और उसमें से लोमड़े का एक बाल निकाला और अपनी दोनों उँगलियों के बीच में हल्का सा मसल दिया। तुरन्त ही उसके सामने लोमड़ा आ खड़ा हुआ और उससे पूछा "क्या बात है मेरे सौतेले भाई।"

राजकुमार ने उससे भी वही कहा — "बुढ़िया की घोड़ी के देखभाल करते समय उसकी घोड़ी भाग गयी। अब मुझे नहीं पता कि वह कहाँ है।"

लोमड़ा बोला — "अरे वह तो हमारे साथ है। वह एक लोमड़ी में बदल गयी थी और उसका बच्चा एक लोमड़े के बच्चे में। पर तुम लगाम को एक बार जमीन पर मारो और चिल्ला कर पुकारो "ओ बुढ़िया की घोड़ी।" वह तुरन्त आ जायेगी।"

सो राजकुमार ने वैसा ही किया जैसे ही उसने घोड़ी की लगाम जमीन में मारी और चिल्लाया "ओ बुढ़िया की घोड़ी" बस घोड़ी और उसका बच्चा दोनों वहाँ प्रगट हो गये। राजकुमार ने उसको लगाम लगायी और घर की तरफ चल पड़ा। घोड़ी का बच्चा भी उसके पीछे पीछे चल पड़ा।

घर पहुँचने पर बुढ़िया ने राजकुमार को नाश्ता कराया और अपनी घोड़ी को अस्तबल में ले जा कर बहुत मारा और बोली — "तुम्हें जा कर लोमड़ा बन जाना था।"

घोड़ी बोली "मैं बनी तो थी पर उसके तो लोमड़े भी दोस्त निकले। उन्होंने उसको बता दिया कि मैं वहाँ थी।"

बुढ़िया बोली — "अगर ऐसी बात है तो तुम अबकी बार भेड़िया बन जाना।"

शाम को जब अँधेरा होने को आया तो राजकुमार फिर बुढ़िया की घोड़ी को ले कर मैदान की तरफ चल दिया। घोड़ी का बच्चा घोड़ी के पीछे पीछे भाग लिया। रात होने पर वह फिर से घोड़ी के ऊपर उसकी लगाम पकड़ कर बैठ गया। पर फिर वैसा ही हुआ कि जब आधी रात हुई तो वह फिर बहुत ज़ोर से सो गया।

सुबह को जब वह उठा तो बुढ़िया की घोड़ी और घोड़ी का बच्चा दोनों गायब थे। पहले की तरह से वह रेल पर हाथ में लगाम लिये बैठा था। पहले की तरह से वह फिर घोड़ी को ढूँढने के लिये चल दिया।

फिर उसको बुढ़िया के घोड़ी से कहे हुए शब्द याद आये सो उसने अपने रूमाल से भेड़िये का एक बाल निकाला और उसको हल्के से मला तो भेड़िया तुरन्त ही उसके सामने आ कर प्रगट हो गया और बोला "क्या बात है मेरे सौतेले भाई।"

राजकुमार ने उसे भी बताया कि वह रात को बुढ़िया की घोड़ी और उसके बच्चे की देखभाल कर रहा था कि वह सो गया और जब वह उठा तो घोड़ी और उसका बच्चा दोनों गायब थे। उसे पता नहीं कि वे कहाँ चले गये थे।

भेड़िया बोला — "वे दोनों यहाँ हैं न। तुम घोड़ी की लगाम जमीन में मारो और चिल्ला कर पुकारो "ओ बुढ़िया की घोड़ी।" तो वे दोनों तुरन्त ही आ जायेंगी।"

सो राजकुमार ने वैसा ही किया जैसे ही उसने घोड़ी की लगाम जमीन में मारी और चिल्लाया "ओ बुढ़िया की घोड़ी" बस घोड़ी और उसका बच्चा दोनों वहाँ प्रगट हो गये। राजकुमार ने उसको लगाम लगायी और घर की तरफ चल पड़ा। घोड़ी का बच्चा भी उसके पीछे पीछे चल पड़ा।

घर पहुँचने पर बुढ़िया ने राजकुमार को नाश्ता कराया और अपनी घोड़ी को अस्तबल में ले जा कर बहुत मारा और बोली — "मैंने तुम्हें कहा था कि जा कर भेड़िया बन जाना।"

घोड़ी बोली — "मैं बनी थी पर वहाँ तो भेड़िये भी उसके दोस्त थे। उन्होंने उसको बता दिया कि मैं उन्हीं में से एक थी।"

बुढ़िया अस्तबल से बाहर निकली तो राजकुमार ने उससे कहा — "ओ दादी। मैंने आपकी कितनी वफादारी से सेवा की है अब आप मुझे वह दो जिसको देने का आपने मुझसे वायदा किया था।"

बुढ़िया बोली — "जिस किसी चीज़ का वायदा किया जाता है उसको तो पूरा करना ही होता है। लो देखो ये **12** घोड़े हैं। इनमें से जो तुम्हें अच्छा लगे वह ले लो।"

राजकुमार बोला — "मुझे घोड़े को चुनने में इतना भी नखरे वाला क्यों होना चाहिये। बस मुझे तो आप वह कोने वाला घोड़ा दे

दें जिसको कोढ़ हो रखा है। मैं इतने बढ़िया घोड़ों के लायक नहीं हूँ।"

बुढ़िया ने उससे बहुत कहा कि वह कोई दूसरा घोड़ा ले ले। वह इतना बेवकूफ कैसे हो सकता है कि वह उस कोढ़ वाले घोड़े को ही चुने जबकि यहाँ इतने बढ़िया बढ़िया घोड़े और खड़े हुए हैं पर राजकुमार अपने इरादे का पक्का था।

उसने बुढ़िया से कहा — "आपने तो मुझे वही घोड़े को देने के लिये कहा था न जो मैं चाहता।"

जब बुढ़िया ने देखा कि वह राजकुमार का मन नहीं बदल सकी वह खुजली वाला घोड़ा उसको दे दिया। राजकुमार ने उससे विदा ली और घोड़े की लगाम पकड़ कर उसे ले कर चल दिया।

जब वह उसको ले कर एक जंगल में आया। वहाँ उसने उसको बहुत मला। इतना मला जब तक कि वह सोने की तरह से नहीं चमक गया। फिर वह उस पर चढ़ा तो वह घोड़ा चिड़िया की तरह से फुरती से उड़ चला।

कुछ ही पलों में वह ड्रैगन के महल तक आ गया। राजकुमार महल के अन्दर गया और जा कर रानी से बोला — "जल्दी से तैयार हो जाओ।"

वह बहुत जल्दी तैयार हो गयी सो दोनों घोड़े पर चढ़े और तुरन्त ही अपने घर की तरफ चल पड़े। कुछ देर बाद ही ड्रैगन घर लौटा तो उसने देखा कि वहाँ से तो रानी चली गयी है तो उसने घोड़े

से पूछा “क्या हम लोग अभी चल कर उसे पकड़ें या पहले कुछ खा पी लें।”

घोड़ा बोला — “चाहे हम खा लें पी लें या कुछ न करें कुछ फर्क नहीं पड़ता हम उन तक कभी नहीं पहुँच पायेंगे।”

यह सुन कर तो ड्रैगन उनके पीछे ही भाग लिया। जब राजकुमार और रानी ने देखा कि ड्रैगन उनके पीछे आ रहा है तो राजकुमार ने अपने घोड़े को और तेज़ भगाना शुरू कर दिया तो घोड़ा बोला — “डरो नहीं। मुझे तेज़ भगाने की कोई जरूरत नहीं है।”

कुछ पल बाद ही ड्रैगन उनके और पास आ गया तो ड्रैगन के घोड़े ने राजकुमार के घोड़े से कहा — “ओ मेरे भाई एक पल मेरा इन्तजार तो करो। अगर मैं तुम्हारे पीछे इस तरह से भागता रहा तो मैं तो मर ही जाऊँगा।”

राजकुमार का घोड़ा बोला — “पर तुम इस बेवकूफ को लिये हुए क्यों घूम रहे हो? अपनी एड़ी उठाओ और उसको उठा कर फेंक दो। फिर मेरे साथ आ जाओ।”

जब ड्रैगन के घोड़े ने यह सुना तो उसने अपनी एड़ी बहुत ज़ोर से हवा में उठायी और ड्रैगन को अपने ऊपर से उतार कर फेंक दिया। ड्रैगन के वहीं टुकड़े टुकड़े हो गये। और वह घोड़ा राजकुमार के घोड़े के पास तक आ गया।

रानी उस घोड़े पर सवार हो कर राजकुमार के साथ अपने राज्य चली गयी। वहाँ पहुँच कर दोनों ने बहुत सालों तक राज किया और वे शायद अभी भी राज कर रहे होंगे अगर मर नहीं गये होंगे।

5 पैपैलियूगा या सुनहरा जूता[19]

एक बार की बात है कि एक पहाड़ की चोटी के पास एक ऊँचे घास के मैदान में कुछ लड़कियाँ सूत कातती जा रही थीं और साथ में जानवर भी चराती जा रही थीं।

तभी वहाँ पर एक अजीब सी शक्ल वाला एक बूढ़ा आया जिसकी सफेद दाढ़ी उसकी कमर तक पहुँच रही थी।

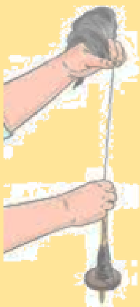

उसने उनसे कहा — "ओ सुन्दर लड़कियों, यहाँ पर ज़रा इस पहाड़ी के नीचे वाली खाई से सँभल कर रहना क्योंकि अगर तुममें से किसी की भी तकली[20] उसमें गिर गयी तो उसकी माँ तुरन्त ही गाय बन जायेगी।"

ऐसा कह कर वह बूढ़ा तो वहाँ से गायब हो गया पर वे लड़कियाँ उसकी इस बात से बहुत आश्चर्यचकित हो गयीं।

वे इस अजीब घटना के बारे में बात करती हुई उसी खाई की तरफ बढ़ीं जिसके बारे में वह बूढ़ा बात कर रहा था। असल में उस खाई में अब उनको कुछ कुछ रुचि होने लगी थी।

वे वहाँ जा कर उस खाई में झाँकने लगीं जैसे वे वहाँ कोई अजीब दृश्य देखने की उम्मीद में हों कि अचानक ही उन लड़कियों

---

[19] Papalluga, Or The Golden Slipper. (Tale No 4)

[20] Translated for the word "Spindle". See its picture above.

में जो सबसे सुन्दर लड़की थी उसके हाथ से उसकी तकली उस खाई में गिर गयी।

इससे पहले कि वह उसको पकड़ सकती वह तो कई चट्टानों से टकराती हुई उस खाई की गहराइयों में गिर पड़ी। वह बेचारी भौंचक्की सी आपने साथ की लड़कियों की तरफ देखती रह गयी।

जब वह शाम को घर वापस लौटी तब उसको उस बूढ़े के शब्दों की सच्चाई का अन्दाज लगा। उसकी मॉ उसके घर के आगे गाय बनी खड़ी थी।

कुछ समय बाद उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली। उसकी दूसरी पत्नी एक विधवा थी और जब वह अपने नये पति के घर आयी तो अपने साथ अपने पहले पति की एक बेटी को भी साथ ले कर आयी।

उसको अपने नये पति की यह बेटी बहुत अच्छी नहीं लगती थी क्योंकि उसके पति की यह बेटी बहुत सुन्दर थी और गुणवान थी। उसकी सौतेली मॉ को यह बिल्कुल पसन्द नहीं था कि कोई उसकी अपनी बेटी से ज़्यादा सुन्दर या गुणवान हो।

उस नयी पत्नी की यह जलन इतनी बढ़ी कि उसने उसको अपना चेहरा धोने के लिये, अपने बाल बनाने के लिये और कपड़े बदलने के लिये भी मना कर दिया। उसने उसकी हालत बहुत दर्दनाक बना दी थी।

एक दिन उसने उस लड़की को एक थैला भर कर रुई दी और कहा — "अगर तूने इस रुई को शाम तक बढ़िया सूत में नहीं काता तो तो तू शाम को घर मत लौटना। और अगर लौटी तो मैं तुझे मार दूँगी।"

वह लड़की बेचारी बहुत ही दुखी हो कर सूत कातती हुई जानवरों के पीछे पीछे चल दी। जब दोपहर हुई तो जानवर पेड़ों के नीचे साये में लेट गये। तब उसने देखा कि उसका तो बहुत ही कम सूत कता है। यह देख कर वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

वह दूसरे जानवरों के साथ अपनी माँ गाय को भी घास के मैदान में चराने के लिये ले जाया करती थी।

जब उसकी माँ गाय ने अपनी बेटी की आखों में आँसू देखे तो वह उसके पास आयी और बोली — "मेरी प्यारी बच्ची, थोड़ा धीरज रखो। तुम यह रुई मेरे मुँह में रखो। मैं उसको चबाऊँगी तो मेरे कान में से कता हुआ धागा निकलेगा।

तुम उस कते हुए धागे का एक सिरा पकड़ लेना और उसको एक अटेरन[21] पर लपेटती जाना।" लड़की ने वैसा ही किया।

सारी रुई बहुत जल्दी कत गयी। जब वह शाम को घर पहुँची और सारी कती हुई रुई अपनी सौतेली माँ को दी तो वह बहुत

[21] Translated for the word "Distaff". See its picture above.

आश्चर्य करने लगी कि इतनी सारी रुई इसने इतनी जल्दी कैसे कात ली पर रुई तो कत चुकी थी।

अगली सुबह उसकी सौतेली माँ ने उसको पहले दिन से दोगुनी रुई कातने के लिये दी पर उसकी अपनी माँ ने उसकी उस रुई को भी कातने में सहायता की और उसकी वह सब रुई बहुत थोड़ी देर में ही कात दी।

वह लड़की जब वह कती हुई रुई ले कर रात को घर पहुँची तो उसकी सौतेली माँ को लगा कि वह अकेली ही उस रुई को नहीं कात सकती थी। हो सकता है कि उसकी दोस्त लड़कियाँ उसको सहायता कर रही हों।

अगली सुबह उसने अपनी बेटी को उसके ऊपर निगाह रखने के लिये और उसने वहाँ और क्या क्या देखा यह उसको बताने के लिये उसके साथ भेजा।

उसकी अपनी बेटी ने जल्दी ही देख लिया कि एक गाय ने रुई को चबा कर उसका सूत बना कर उस बेचारी लावारिस लड़की की सहायता की। उस लड़की ने फिर उस कते हुए सूत को अटेरन पर लपेट लिया।

वह तुरन्त ही घर दौड़ी गयी और जा कर अपनी माँ को बताया कि उसने वहाँ क्या देखा। इस पर वह सौतेली माँ बहुत गुस्सा हुई और उसने अपने पति से कहा कि उसको फलाँ फलाँ गाय को मरवाना है।

पहले तो उसका पति थोड़ा हिचकिचाया पर जब उसकी पत्नी ने बार बार कहा तो वह उस गाय को मारने पर राजी हो गया। जब उस पिता की बेटी को अपने पिता के इस फैसले का पता चला कि वह उस गाय को मारने वाला है जो उसकी माँ है तो वह बहुत रोयी बहुत रोयी।

और जब उसकी माँ गाय ने देखा कि उसकी बेटी रो रही थी तो उसने अपनी बच्ची से पूछा कि वह क्यों रो रही थी तो उसने अपनी माँ गाय को बताया कि उसके साथ क्या होने वाला है।

उसकी माँ गाय ने उसको तसल्ली दी और कहा — "अपने आँसू पोंछ लो बेटी और रोओ नहीं। तुम एक काम करना जब वे मुझे मार दें तो तुम ख्याल रखना कि तुम मेरा माँस नहीं खाना।

बाद में तुम मेरी हड्डियाँ इकट्ठी कर लेना और उन्हें घर के पीछे वाले पत्थर के नीचे दबा देना। फिर जब भी तुमको मेरी सहायता की जरूरत हो तो तुम मेरी कब्र पर आ जाना तुमको वह सहायता मिल जायेगी।"

गाय को मार दिया गया और जब उसकी बेटी को उसका माँस खाने के लिये दिया गया तो उसने उसको खाने से मना कर दिया। उसने बहाना बनाया कि उसको भूख नहीं है।

सब लोगों के खाना खाने के बाद उसने गाय की हड्डियाँ इकट्ठी कीं और उनको उसने वहीं दबा दिया जहाँ उसकी माँ ने कहा था।

लड़की का नाम तो मैरी[22] था पर क्योंकि उसको घर का बहुत मुश्किल काम करना पड़ता था, जैसे पानी लाना, कपड़े धोना, सफाई करना। उसकी सौतेली माँ और सौतेली बहिन उसको पैपैल्यूगा या सिन्डरैला[23] कह कर बुलाती थीं।

एक रविवार को पैपैल्यूगा की सौतेली माँ और बहिन चर्च जाने के लिये तैयार हुई तो उसकी सौतेली माँ ने एक टोकरी भर कर बाजरा बिखेर दिया और बोली — "सुन ओ पैपैल्यूगा, अगर जब तक हम चर्च से वापस आये और तब तक तूने यह सारा बाजरा इकट्ठा नहीं किया और खाना नहीं बना कर रखा तो मैं तुझे जान से मार दूँगी।"

इतना कह कर वे दोनों माँ बेटी चर्च चली गयीं। उनके जाने के बाद वह लड़की बेचारी फिर रोने बैठ गयी। उसने सोचा कि "खाना तो ठीक है मैं बना लूँगी पर मैं यह इतना सारा बाजरा कैसे इकट्ठा करूँगी?"

तभी उसको अपनी माँ गाय के शब्द याद आये कि अगर कभी उसको कोई भी परेशानी हो तो वह उसकी कब्र पर चली आये। उसकी परेशानी दूर हो जायेगी।

सो वह तुरन्त ही घर के पीछे उस गाय की कब्र पर भागी भागी गयी तो उसने क्या देखा कि एक बक्सा उसकी कब्र पर खुला पड़ा

[22] Mary – the name of the daughter of the father.
[23] Pepelyouga or Cinderella

है और उसमें एक बहुत सुन्दर सी पोशाक और एक लड़की के सजने के लिये सारा जरूरी सामान रखा है।

दो फाख्ताऐं[24] उस बक्से के ढक्कन पर बैठी हुई थीं। जैसे ही वह लड़की उस बक्से के पास पहुँची तो वे फाख्ताऐं बोलीं — "मैरी, इनमें से जो भी पोशाक तुमको पसन्द हो वह ले लो। उस पोशाक को पहन कर और तैयार हो कर तुम चर्च जाओ। बाजरा इकट्ठा करने का और दूसरा काम हम देख लेंगे कि सारा काम ठीक से हो गया है या नहीं।"

मैरी को दोबारा कहने की जरूरत नहीं थी। उसने पहली सिल्क की पोशाक निकाल कर पहनी, तैयार हुई और चर्च चल दी।

जब वह वहाँ दरवाजे पर पहुँची तो चर्च में सारे लोग उसको देखने लगे। चाहे वह कोई आदमी हो या स्त्री सभी कोई उसकी सुन्दरता और कीमती पोशाक की तारीफ कर रहे थे।

पर वे सब यही सोच रहे थे कि वह कौन थी और कहाँ से आयी थी क्योंकि उनमें से कोई भी उसको पहचान नहीं पा रहा था।

इत्तफाक से राजा का बेटा राजकुमार भी उस समय चर्च में बैठा हुआ था। वह भी उस लड़की की तारीफ किये बिना न रह सका।

[24] Translated for the word "Dove". See its picture above.

चर्च की पूजा खत्म होने से ठीक पहले ही मैरी चर्च छोड़ कर अपने घर चली गयी। घर पहुँच कर उसने अपने चर्च वाले कपड़े उतारे और उनको वापस उसी बक्से में रख दिया। वह बक्सा भी तुरन्त ही बन्द हो गया और वहाँ से गायब हो गया।

वहाँ से मैरी फिर रसोईघर की तरफ भागी तो देखा कि खाना तो बिल्कुल तैयार था और बाजरा भी इकट्ठा कर के टोकरी में रखा हुआ था।

जल्दी ही उसकी सौतेली माँ और बहिन भी घर वापस लौट आयीं। उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि खाना तैयार था, बाजरा इकट्ठा कर के टोकरी में रखा था और घर की सारी चीज़ें तरतीब से रखी थीं।

सौतेली माँ के दिमाग में तो अब इस सब काम को इतनी जल्दी खत्म करने का भेद जानने की इच्छा हो आयी कि यह सब काम इस लड़की ने इतनी जल्दी कैसे खत्म कर लिया।

अगले रविवार को भी बिल्कुल ऐसा ही हुआ सिवाय इसके कि अबकी बार मैरी को उस बक्से में रुपहली पोशाक मिली। जब वह उस रुपहली पोशाक को पहन कर चर्च पहुँची तो राजकुमार को वह इतनी अच्छी लगी कि वह उसके ऊपर से अपनी आँखें ही नहीं हटा सका।

इस बार भी सब यही सोचते रहे कि वह कौन थी और कहाँ से आयी थी क्योंकि उसको फिर कोई नहीं पहचान सका।

तीसरे रविवार को मैरी की सौतेली माँ और बहिन फिर से चर्च जाने के लिये तैयार हुई। उन्होंने फिर से बाजरा जमीन पर बिखेर दिये और अपनी धमकियाँ फिर से दोहरा कर वे चर्च चली गयीं।

उनके जाने के बाद मारा फिर से अपनी माँ की कब्र पर गयी तो वहाँ उसने पहले की तरह से फिर से वह बक्सा खुला पाया और दो फाख्ता बैठी पायीं। उस बक्से में उसके लिये पोशाक थी और तैयार होने का सामान।

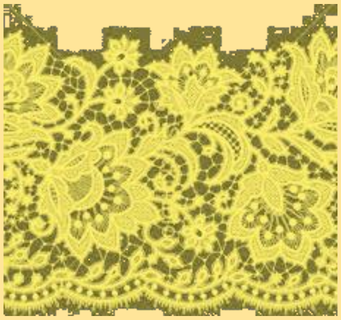

इस बार यह पोशाक सुनहरी लेस[25] लगी पोशाक थी। उसने जल्दी जल्दी वह पोशाक पहनी और तैयार हो कर चर्च चल दी। वहाँ पहले की तरह से लोगों ने फिर उसकी तारीफ की और अबकी बार पहले से भी ज़्यादा तारीफ की।

आज राजकुमार उस लड़की को अपनी आँखों से ओझल होने देने के लिये नहीं आया था बल्कि उसका पीछा कर के यह जानने के लिये आया था कि वह कहाँ जाती है।

जैसे ही चर्च की पूजा खत्म हुई मैरी वहाँ से पहले की तरह चुपचाप उठी और घर चल दी। पर राजकुमार भी उस पर निगाह जमाये बैठा था सो उसके उठते ही वह भी अपनी सीट से उठ गया और उसके पीछे पीछे चल दिया।

---

[25] Lace may be a trimmimg to beautify the dress or it may be the cloth of net work. See its picture above.

मैरी जल्दी जल्दी घर जा रही थी क्योंकि उसके पास घर पहुँचने के लिये बहुत समय नहीं था। इस जल्दी में उसका एक जूता उसके पैर में से निकल गया। जल्दी की वजह से वह उस जूते को उठाने के लिये भी नहीं रुक पायी और अपने घर की तरफ चलती ही चली गयी।

मैरी तो राजकुमार की ऑखों से ओझल हो गयी पर उसका सुनहरी जूता उसको मिल गया। उसने वह जूता उठा लिया और अपनी जेब में रख लिया।

घर पहुँच कर मैरी ने अपने कपड़े उसी बक्से में रखे दिये और घर की तरफ दौड़ गयी।

इधर राजकुमार ने तय किया कि वह अपने पिता के राज्य के घर घर में जा कर उस लड़की का पता चलायेगा जिसका वह जूता था। इसके लिये वह सब घरों की सुन्दर सुन्दर लड़कियों के पास गया और उनसे जूता पहन कर देखने के लिये कहा।

पर उसकी यह कोशिश नाकामयाब रही क्योंकि कुछ लड़कियों के पैर में यह जूता बड़ा था तो कुछ के पैर में छोटा। कुछ के पैर में यह तंग था तो कुछ के पैर के लिये चौड़ा। कोई भी लड़की ऐसी नहीं थी जिसके पैर में वह जूता ठीक से आ जाता।

घर घर भटकते हुए राजकुमार मैरी के पिता के घर आया। मैरी की सौतेली मॉ तो उसके आने की उम्मीद में ही बैठी थी। उसने

अपनी सौतेली बेटी को अपने ऑगन में एक बक्से के नीचे छिपा दिया।

जब राजकुमार ने पूछा कि क्या उसके कोई बेटी है तो उसने उसको बताया कि हॉ उसके एक बेटी है। कह कर वह अपनी बेटी को वहॉ ले आयी। राजकुमार ने उसको वह जूता पहन कर देखने के लिये कहा।

जब उस लड़की ने अपना पैर उस जूते में डाला तो उसने उसको जूते में घुसाने की बहुत कोशिश की पर उसके तो पैर की उॅगलियॉ जाने की जगह भी उसमें नहीं थी।

इस पर राजकुमार ने उस सौतेली मॉ से पूछा कि क्या यह सच था कि उसके घर में उसके अलावा कोई और लड़की नहीं थी। मॉ बोली हॉ यह सच है।

उसी समय एक मुर्गा उस बक्से पर कुकड़ूॅ करता हुआ उड़ा और बोला — "वह तो यहॉ बैठी है इस बक्से के नीचे।"

सौतेली मॉ गुस्से से चिल्लायी — "शशश। जा यहॉ से। भगवान करे तुझे गरुड़[26] पकड़ ले और उड़ा कर ले जाये।"

यह सुन कर राजकुमार की उत्सुकता और बढ़ गयी। वह बक्से के पास गया और उसको खोला तो उसके आश्चर्य का तो ठिकाना

[26] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

न रहा जब उसने देखा कि उस बक्से में तो वही लड़की बैठी हुई है जिसको उसने चर्च में तीन बार देखा था।

वह वहाॅ वही सुनहरी लेस की पोशाक पहने बैठी थी जो उसने आखिरी बार चर्च में पहनी थी और उसके पैर में अभी भी दूसरा सुनहरा जूता था। राजकुमार ने उसको तुरन्त ही पहचान लिया तो वह तो खुशी को मारे पागल हो उठा।

उसने उस लड़की को बड़ी सॅभाल कर उठाया और उसको अपने महल ले गया। बाद में उसने उससे शादी कर ली और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

6 सुनहरी खाल वाला भेड़[27]

एक बार की बात है कि एक शिकारी पहाड़ों पर शिकार करने के लिये गया तो वहाँ उसको सुनहरी खाल वाला एक नर भेड़ मिल गया। जैसे ही उसने उसे देखा तो उसको मारने के लिये उसने अपनी राइफल निकाल ली। पर वह ऐसा कर पाता कि इससे पहले ही भेड़ उसकी तरफ दौड़ पड़ा और उसको अपने सींगों से मार डाला।

उसके दोस्तों को वहाँ केवल उसकी लाश ही पड़ी मिली। वे उसको घर ले गये और उसको दफ़ना दिया। उन्होंने यह जानने की भी कोशिश नहीं की वह कैसे मरा। शिकारी की पत्नी ने उसकी राइफल एक खूँटी पर टाँग दी।

जब उनका बेटा काफी बड़ा हो गया तो एक दिन उसने अपनी माँ से राइफल माँगी ताकि वह शिकार करने के लिये जा सके। पर उसकी माँ ने उसे राइफल देने से मना कर दिया और कहा — "मेरे बेटे। दुनियाँ की कोई चीज़ मुझे तुझे शिकार पर भेजने के लिये नहीं उकसा सकती। इसी राइफल ने तेरे पिता की जान ली है। क्या तू भी इसी राइफल से अपनी जान लेना चाहता है?"

[27] The Golden-Fleeced Ram. (Tale No 6)
["Der Goldwollige Widder" – Grimm No 12]

बेटा चुप रह गया पर किसी तरह से उसने राइफल चुरा ली और पहाड़ों की तरफ शिकार के लिये चला गया।

जब वह जंगल में पहुँचा तो उसको भी सुनहरी खाल वाला भेड़ दिखायी दिया। वह उससे बोला — "मैंने ही तुम्हारे पिता को मारा था आज मैं तुम्हें मारूँगा।"

बेटे को यह सुन कर बड़ा धक्का लगा वह बोला — "हे भगवान मेरी सहायता करो।" कह कर उसने अपनी राइफल उठायी और निशाना लगा कर उसे मार दिया।

यह देख कर कि उसने सुनहरी खाल वाले भेड़ को मार दिया है वह बहुत खुश हुआ क्योंकि पूरे राज्य में ऐसा कोई दूसरा भेड़ नहीं था। वह उसकी खाल घर ले गया।

जल्दी ही इस बात की खबर राज्य भर में फैल गयी। राजा ने भी यह खबर सुनी तो लड़के को वह खाल उसके पास लाने के लिये कहा ताकि वह यह देख सके कि उसके राज्य में कौन कौन से भिन्न प्रकार के जानवर रहते हैं।

जब वह नौजवान लड़का भेड़ की खाल को ले कर राजा के पास गया और उसे राजा को दिखाया तो राजा ने पूछा — "तुम्हें इस खाल का कितना पैसा चाहिये।"

नौजवान बोला — "मैं इसको किसी कीमत पर भी बेचना नहीं चाहता।" अब हुआ यह कि इस लड़के का चाचा राजा का वजीर था।

सो बजाय इसके कि वह अपने भतीजे को प्यार देता वह उसका दुश्मन था। सो वजीर ने राजा से कहा कि अगर यह लड़का आपको यह खाल नहीं देता तो इससे कोई ऐसा काम करने के लिये कहिये जिसमें इसकी जान का खतरा हो। सबसे अच्छा प्लान तो यही होगा जिसमें इसको वही काम कराया जाये जो यह कर ही नहीं सकता हो।

सो इस प्लान के अनुसार उसने राजा को सलाह दी कि वह उस लड़के से कहे कि वह लड़का अंगूर का एक बागीचा लगाये जिसमें से एक हफ्ते के अन्दर अन्दर नयी वाइन निकाली जा सके।

लड़का तो यह सुनते ही रो पड़ा। उसने राजा से विनती की कि उसको ऐसा काम करने को न दिया जाये जिसमें चमत्कार की जरूरत पड़ती हो। पर राजा ने कहा कि अगर तुमने यह काम सात दिन में नहीं किया तो तुम्हें जान से हाथ धोना पड़ेगा।

यह सुन कर लड़का रोता हुआ अपनी माँ के पास गया और उसको सब बात बतायी तो उसकी माँ बोली — "बेटे क्या मैंने तुझसे पहले ही नहीं कहा था कि यह सुनहरे बालों वाला भेड़ तुझे भी मार डालेगा जैसे उसने तेरे पिता को मारा था।"

लड़का बेचारा रोता रहा और सोचता रहा कि अब वह क्या करे। घर में उसको बिल्कुल भी चैन नहीं था सो वह घर से बाहर गाँव से बाहर की तरफ चल दिया।

वह वहॉ से बहुत दूर चला गया। रास्ते में उसे एक छोटी सी और बहुत सुन्दर सी लड़की मिली।

उसने उससे पूछा — “भैया तुम क्यों रोते हो।”

कुछ गुस्से से उसने जवाब दिया — “भगवान के लिये तुम अपना रास्ता नापो और यहॉ से चली जाओ। तुम मेरी कोई सहायता नहीं कर सकतीं।”

कहता हुआ वह अपने रास्ते पर आगे चल दिया पर वह लड़की उसके पीछे पीछे चल दी। उसने उससे कई बार विनती की कि वह उसको यह बता दे कि वह क्यों रो रहा था। उसने यह भी कहा कि शायद वह उसकी कोई सहायता कर सके।

लड़का बोला “ठीक है तो फिर मैं तुम्हें बताता हूॅ। हालॉकि मुझे यह पूरा यकीन है कि भगवान के सिवा मेरी और कोई सहायता नहीं कर सकता।” सो उसने उसको अपनी सब कहानी बता दी। उसने उसको यह भी बता दिया कि राजा ने उससे क्या करने के लिये कहा था।

लड़की बोली — “भैया तुम रोओ नहीं। तुम राजा से जा कर कहो कि वह अंगूर का बागीचा लगाने के लिये तुमको कुछ जगह दे दे और वह उसको सीधी लाइनों में खुदवा दे। तब तुम एक थैले में बेसिल[28] की

[28] Basil is a kind of herb like cilanthro or parsley etc. It is kind of Tulasee plant of India.

एक डंडी ले कर खुद वहॉ जाना और जहॉ वह बागीचा बनना है उस जगह जा कर लेट जाना। हिम्मत रखना। डरना नहीं। एक हफ्ते में तुमको पके हुए अंगूर मिल जायेंगे।"

यह सुन कर वह घर लौट आया और अपनी मॉ को सब बताया कि किस तरह से उसे एक छोटी लड़की मिली थी और कैसे उसने अंगूर उगाने की तरकीब बतायी। हालॉकि उसको इस तरकीब में कोई विश्वास नहीं था फिर भी अपनी जान बचाने के लिये वह उसका बताया करने की कोशिश जरूर करेगा।

मॉ ने जब यह सुना तो बोली — "जा बेटे कोशिश कर के देखने तो कोई हर्जा ही नहीं है। वैसे भी तो तुझे मरना ही है। जा कोशिश कर ले।"

सो वह लड़का राजा के पास गया आर उससे अंगूर का बागीचा लगाने के लिये जगह मॉगी और साथ में यह भी विनती की कि वह उसको सीधी लाइनों में खुदवा दे। राजा ने जैसा उस लड़के ने चाहा था वैसा ही करवा दिया।

लड़के ने भी एक थैला लिया उसमें बेसिल की एक डंडी रखी और डरते हुए दुखी मन से उस खेत में लेटने के लिये चला गया।

जब वह सुबह उठा तो उसने देखा कि अंगूर की बेलें तो वहॉ किसी ने पहले से ही लगा दी हैं। दूसरी सुबह उन बेलों पर पत्ते आ गये थे। थोड़े में कहो तो एक हफ्ते में ही उन पर अंगूर आ कर पक गये। और वे भी जब जब उनका मौसम नहीं था।

उसने उन बेलों में से कुछ अंगूर तोड़े और उनकी वाइन बनायी एक दो अंगूरों के गुच्छे लिये और राजा के पास चल दिया। सारा दरबार यह देख कर आश्चर्य से भर गया।

यह देख कर लड़के का चाचा बहुत निराश हुआ सो उसने राजा का एक और तरकीब सुझायी जो उस लड़के के लिये करना बिल्कुल नामुमकिन थी। वह बोला हम इस लड़के को कोई ऐसा काम देंगे जिसे यह बिल्कुल ही न कर सके।

तब उसने राजा को यह सलाह दी कि वह उस लड़के को अपने पास बुलाये और उसको हाथी दाँत का महल बनाने के लिये कहे। नौजवान ने राजा का हुक्म सुना और पहले की तरह से रोता हुआ दुखी हो कर वहाँ से चला गया।

घर जा कर उसने फिर से अपनी माँ को राजा का हुक्म बताया और कहा — "माँ यह काम तो न मैं कर सकता है और ना ही कोई दूसरा।"

तब उसकी माँ ने उसे समझाया कि वह एक बार फिर से गाँव के बाहर हो कर आये ताकि हो सके तो वह लड़की उसे फिर से मिल जाये और उसका काम करा दे।

वह लड़का उठा और गाँव के बाहर की तरफ चल दिया। वह उसी जगह पहुँच गया जहाँ पहले इसको वह लड़की मिली थी। वहाँ वह लड़की उसको फिर से मिली तो वह उससे बोली — "क्या बात है भैया तुम आज भी पहले जैसे दुखी खड़े हो।"

तब उसने उसको सारी बातें बता कर कहा कि अबकी बार राजा ने उससे यह काम करने के लिये कहा है कि मैं हाथी दाँत का एक महल बना दूँ।

जैसे ही उसने यह सुना तो वह बोली — "यह भी बहुत आसान काम है। पर पहले तुम राजा के पास जाओ और उससे एक जहाज़ माँगो जिसमें **300** बैरल शराब हों, **300** बैरल ब्रैन्डी हो और **20** बढ़ई हों।

उसके बाद उन सबको ले कर दो पहाड़ियों के बीच की जगह में ले कर आओ। वहाँ पानी का एक डैम बना लो। फिर उसमें वह शराब और ब्रैन्डी डाल दो जो तुम राजा के पास से ले कर आये हो। तुरन्त ही उसकी खुशबू सूँघते हुए बहुत सारे हाथी वहाँ आ जायेंगे। वहाँ आ कर वे पानी पियेंगे और बेहोश हो कर गिर जायेंगे।

जैसे ही वे बेहोश हो हो कर नीचे गिरेंगे तो तुम्हारे **20** बढ़ई उनके दाँत काट लेंगे और उनको वहाँ ले जायेंगे जहाँ उनको वह महल बनाना है। तब तुम वहाँ सोने के लिये लेट जाना और सात दिन में तुम्हारा महल बन कर तैयार हो जायेगा।"

यह सुन कर वह नौजवान लड़का घर वापस आ गया और आ कर जो कुछ भी उस लड़की ने उससे कहा था वह सब अपनी माँ को बताया। माँ ने उससे लड़की की सलाह मानने के लिये कहा और

कहा कि जा यह काम जल्दी से कर ले। हो सकता है इसी में तेरी भलाई हो।

सो नौजवान अगले दिन ही राजा के पास पहुँचा और उससे **300** बैरल शराब **300** बैरल ब्रैन्डी और **20** बढ़ई माँगे। राजा ने वह सब कुछ उसको दे दिया जो उसने उससे माँगा था।

उन सबको ले कर नौजवान वहीं गया जहाँ उस लड़की ने उसे जाने के लिये कहा था। फिर वैसा ही किया जैसा उसने उससे करने के लिये कहा था।

लड़की के कहे अनुसार वहाँ बहुत सारे हाथी पानी के लिये आ गये और पानी पीते ही वे बेहोश हो हो कर नीचे गिरने लगे। बढ़इयों ने अपनी अपनी आरी ले कर उनके दाँत काट लिये।

उन सबको ले कर वे उस जगह पर गये जहाँ राजा का महल बनना था। शाम को उसने अपना थैला लिया बेसिल की डंडी निकाली और जा कर सो गया। सात दिन बाद हाथी दाँत का महल तैयार था।

राजा इस महल को देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उसकी बहुत प्रशंसा की। उसने अपने वजीर यानी उस लड़के के चाचा से कहा — "अब हम इस लड़के के साथ क्या करें?"

वजीर बोला — "अभी एक चीज़ और बाकी रह गयी है। अगर यह लड़का वह काम भी कर देगा तो इसका मतलब यह होगा कि यह लड़का कोई सामान्य आदमी नहीं है।"

सो वजीर की सलाह के अनुसार राजा ने उस लड़के को फिर बुलाया और उससे कहा — “जाओ फलाँ फलाँ राज्य के राजा की बेटी को यहाँ ले कर आओ। अगर तुम उसको यहाँ नहीं ला पाये तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा।”

लड़का दुखी होता हुआ फिर से अपने घर गया और अपनी माँ को राजा की नयी चाल के बारे में बताया। माँ फिर बोली — “जा बेटे जा तू फिर से उस लड़की को ढूँढ। हो सकता है कि वह तुझे तीसरी बार भी बचा ले।”

सो पहले की तरह वह फिर से गाँव के बाहर की तरफ चल दिया। वहाँ पहुँच कर वह फिर से उसी लड़की से मिला और उसको अपनी समस्या बतायी।

लड़की बोली — “अबकी बार तुम राजा के पास जा कर उससे एक जहाज़ माँगो जिसमें 20 दूकानें हों। हर दूकान में अलग अलग सामान हो और हर सामान उससे पहले वाले सामान से ज़्यादा अच्छा हो।

इसके अलावा उससे कहो कि वह 20 सबसे सुन्दर नौजवान लड़कों को चुने उन्हें बहुत सुन्दर तरीके से कपड़े पहनाये और उन दूकानों पर दूकानदार की तरह से खड़ा करे।

तब तुम उस जहाज़ को खे कर समुद्र में ले जाओ। रास्ते में सबसे पहले तुम्हें एक आदमी मिलेगा जिसके पास एक बहुत बड़ा गरुड़[29] होगा।

तुम उससे पूछना कि क्या वह गरुड़ तुमको बेचेगा या नहीं। वह कहेगा कि "हॉ मैं तुम्हें यह गरुड़ बेचूँगा।" तब तुम जो कुछ भी वह मॉगे वह उसे दे कर उससे वह गरुड़ खरीद लेना।

और आगे चलने पर तुमको एक आदमी और मिलेगा। जिसके पास एक मछली पकड़ने वाला जाल होगा जिसमें सुनहरे खाल वाली मछली होगी। तुम्हें उसे चाहे कुछ भी देना पड़े पर तुम उसकी मछली खरीद लेना।

और आगे चलने पर तुमको एक और आदमी मिलेगा जिसके पास एक ज़िन्दा फाख्ता होगा। इस फाख्ता को भी तुम खरीद ले लेना तुम्हें चाहे इसके लिये कुछ भी देना पड़े।

उसके बाद तुम गरुड़ की पूँछ से एक पंख निकाल लेना एक खाल का टुकड़ा मछली की खाल का निकाल लेना और एक छोटा सा पंख फाख्ता के बॉयी तरफ से निकाल लेना। और फिर तीनों को छोड़ देना।

[29] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

जब तुम उस राजकुमारी के राज्य में और उस शहर में पहुँचोगे जहाँ वह राजकुमारी रहती है तब तुम अपनी बीसों दूकानें खोल देना और बीसों दूकानदारों को उनकी दूकान के आगे खड़े होने के लिये कह देना।

इस पर शहर के लोग वहाँ आयेंगे और उन दूकानों में बिकने वाली चीज़ों की तारीफ करेंगे। और वे लड़कियाँ जो वहाँ पानी भरने के लिये आयेंगी वे शहर में जा कर कहेंगी कि जबसे यह शहर बना है हमने ऐसा जहाज़ ऐसी दूकानें ऐसी चीज़ें इससे पहले कभी नहीं देखीं।

यह खबर राजकुमारी के पास भी पहुँचेगी तो वह अपने पिता से विनती करेगी कि मैं ऐसे जहाज़ को ऐसी दूकानों को ऐसी चीज़ों को खुद अपनी आँखों से देखना चाहती हूँ।

जब वह अपने दोस्तों के साथ तुम्हारे जहाज़ पर आये तो तुम उसको एक एक करके अपनी सारी दूकानें दिखाना और जो भी तुम्हारे पास सबसे अच्छा सामान हो वह उसको दिखाना।

इस तरह से तुम उसको तब तक सामान दिखाने पर लगाये रखना जब तक कि शाम न हो जाये। शाम हो जाने पर जहाज़ को वहाँ से चलने का हुक्म दे देना। उस समय इतना अँधेरा हो जायेगा कि बाहर कुछ दिखायी नहीं देगा।

लड़की के कन्धे पर एक चिड़िया होगी। लड़की जब जहाज़ को चलते देखेगी तो वह अपने कन्धे से चिड़िया को महल की तरफ

यह कह कर उड़ा देगी कि वह वहॉ जा कर यह बताये कि उसके साथ क्या हुआ है।

उसी समय तुम गरुड़ का पंख आग में जला देना तो वह गरुड़ तुरन्त ही तुम्हारी सहायता करने आ जायेगा। तुम उससे कहना कि वह उस चिड़िया को महल जाने से रोके। वह तुम्हारा यह काम तुरन्त ही कर देगा।

उसके बाद वह लड़की एक पत्थर फेंकेगी जिससे तुम्हारा जहाज़ रुक जायेगा। तब तुम मछली की खाल का टुकड़ा जला देना तो वह मछली तुरन्त ही तुम्हारे पास आ जायेगी। तुम उसको तुरन्त ही कहना कि वह उस पत्थर को ढूँढे और उसे निगल जाये। मछली तुम्हारा यह काम कर देगी और तुम फिर से आगे बढ़ते जाओगे।

कुछ दूर चलने के बाद तुम दो पहाड़ों के बीच की जगह पहुँच जाओगे। वहॉ पहुँच कर तुम्हारा जहाज़ पत्थर का बनने लगेगा तब तुम डर जाओगे। लड़की तुमसे विनती करेगी कि तुम "ज़िन्दगी का पानी"[30] ले कर आओ तब तुम फाख्ता का पंख निकाल कर जला देना। फाख्ता तुरन्त ही उड़ कर तुम्हारे पास आ जायेगी।

तुम फाख्ता को एक छोटी सी बोतल दे देना वह तुम्हारे लिये उसमें ज़िन्दगी का पानी ले कर आ जायेगी। जब वह ले आयेगी

---

[30] Translated for the words "Water of Life".

तब तुम्हारा जहाज़ फिर से चलने लगेगा। और फिर तुम राजकुमारी के साथ साथ खुशी खुशी राजा के राज्य में लौट आओगे।"

नौजवान ने उसकी यह सलाह बहुत ध्यान से सुनी और घर लौट कर सब अपनी माँ से कहा। फिर वह राजा के पास गया और राजा से उन सारी चीज़ों की माँग की जो उस लड़की ने उसे बतायी थीं। राजा उन चीज़ों को उसे देने के लिये मना नहीं कर सका। उससे सब चीज़ें ले कर वह उस देश की तरफ चल पड़ा।

सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा कि उस लड़की ने उससे कहा था।

लड़का उस राजकुमारी को ले कर अपने देश आ गया। राजा और उसके वजीर ने खिड़कियों से देखा कि वह लड़का तो राजकुमारी को लिये चला आ रहा है। यह जहाज़ तो उन्होंने तभी देख लिया था जब वह किनारे से काफी दूर था।

वजीर ने राजा से कहा — "राजा साहब अब तो कोई ऐसा काम नहीं है जो इस लड़के को करने के लिये दिया जा सके सिवाय इसके कि जैसे ही यह किनारे पर आ कर जहाज़ से उतरे तो इसको मार दिया जाये।"

जब जहाज़ किनारे पर पहुँचा तो राजा की बेटी अपनी साथिनों के साथ किनारे पर सबसे पहले उतरी फिर वे **20** दूकानदार उतरे और वह लड़का सबसे बाद में अकेला ही उतरा।

पर राजा ने अपने पहरेदार उधर तैनात किये हुए थे कि जैसे ही वे लड़के को जमीन पर उतरते देखें वे उसका सिर काट दें। सो उन्होंने जैसे ही उसको देखा तो उसका सिर काट दिया।

राजा खुद उस लड़की के साथ शादी करना चाहता था। सो जैसे ही उसने जमीन पर अपना पैर रखा तो राजा उसकी तरफ भागा और उसको सहलाना शुरू किया।

पर राजकुमारी ने उसकी तरफ से मुँह फेर लिया और बोली — “वह कहाँ है जो मेरे लिये इतने दिनों से काम कर रहा है।”

उसने इधर उधर देखा तो तो उसे तो उसका सिर कटा दिखायी दिया। वह दौड़ी और ज़िन्दगी का पानी ले कर आयी जिसे उसने उसके शरीर पर छिड़क दिया। वह तो तन्दुरुस्त और ठीक उठ कर खड़ा हो गया।

जब राजा और उसके वजीर ने यह आश्चर्य देखा तो वजीर ने राजा से कहा — “यह आदमी तो अब पहले से भी ज़्यादा जान जायेगा। क्योंकि पहले तो यह मर गया था और अब तो यह ज़िन्दा खड़ा है।”

राजा को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि अगर कोई आदमी मर जाने के बाद ज़िन्दा होने पर पहले से भी ज़्यादा जान जाता है तो वह यह बात अपने ऊपर लागू कर के क्यों न देख ले।

सो अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये उसने अपने पहरेदारों से कहा कि वे उसका अपना सिर काट दें और उस लड़की

से कहा कि वह अपने ज़िन्दगी के पानी से उसको फिर से ज़िन्दा कर दे। यह सुन कर पहरेदारों ने राजा का सिर काट दिया पर राजकुमारी ने राजा को अपने ज़िन्दगी के पानी से उसको फिर से ज़िन्दा करने से मना कर दिया।

बजाय राजा को ज़िन्दा करने के उसने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी जिसमें उसने वह सब लिखा जो अब तक उसके साथ हुआ था और उस नौजवान से उसकी शादी कर देने की प्रार्थना की।

सो उसके पिता ने एक फरमान जारी किया कि वहाँ के लोग उस नौजवान को अपना राजा मान लें अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया तो वह उस राज्य पर हमला कर देगा।

लोगों ने अब नौजवान के गुणों को पहचान लिया था। उन्होंने उसको अपना राजा मान लिया। राजकुमारी की शादी उसके साथ हो गयी। राजा ने राजकुमारी की दोस्तों की शादियाँ अपने दूकानदारों से करवा दीं और सब आपस में खुशी खुशी रहने लगे।

7 जो कम मॉगता है ज़्यादा पाता है[31]

एक बार की बात है कि एक जगह तीन भाई रहते थे जिनके पास जायदाद के नाम पर केवल एक नाशपाती[32] का पेड़ था।

तीनों भाई उसकी बहुत अच्छे से देखभाल करते थे। बारी बारी से उसकी पहरेदारी करते थे। जब एक भाई पहरा दे रहा होता था तो दूसरे दोनों भाई मजदूरी करने के लिये बाहर जाते थे।

एक दिन भगवान ने अपना एक देवदूत[33] धरती पर यह देखने के लिये भेजा कि ये तीनों भाई कैसा कर रहे हैं। उसने देवदूत से यह भी कहा कि वह अगर यह देखे कि वे अपने दिन गरीबी में काट रहे हैं तो उनको अच्छा खाना देने की कोशिश करना।

जब देवदूत धरती पर आया तो उसने एक भिखारी का वेश बनाया और उन तीनों भाइयों के घर गया। वहाँ जा कर देखा तो एक भाई अपने नाशपाती के पेड़ की रखवाली कर रहा है। उसने उससे एक नाशपाती मॉगी।

---

31 Who Asks Little, Gets Much. (Tale No 7)
[“Wer Venig Verlangt, dem wird am Miesten gegeben” – Grimm No 14]

32 Pear Tree – see its picture above.

33 Translated for the word “Angel”.

उस भाई ने कुछ नाशपातियाँ पेड़ से तोड़ी और उन्हें उसे देते हुए कहा — "यह लो ये मेरे हिस्से की नाशपातियाँ हैं। इससे ज़्यादा मैं तुम्हें नहीं दे सकता क्योंकि बकी बची हुई नाशपातियाँ मेरे भाइयों के हिस्से की हैं। मैं उन्हें तुम्हें नहीं दे सकता।" देवदूत ने उससे नाशपातियाँ लीं उसको धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया।

अगले दिन दूसरा भाई उस पेड़ की रखवाली के लिये बैठा हुआ था। देवदूत वहाँ फिर आया और उससे एक नाशपाती माँगी। उस भाई ने भी पेड़ से कुछ नाशपातियाँ तोड़ी और उसको देते हुए कहा — "लो ये लो। ये मेरे हिस्से की नाशपातियों में से हैं। बाकी की नाशपातियाँ मेरे भाइयों के हिस्से की हैं। मैं उनमें से तुमको कुछ नहीं दे सकता।" देवदूत ने उससे भी नाशपातियाँ लीं धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया।

अगले दिन तीसरे भाई की बारी थी। देवदूत आज भी आया और उससे एक नाशपाती माँगी। तीसरे भाई ने भी कुछ नाशपातियाँ पेड़ से तोड़ी और उसको देते हुए कहा — "लो ये लो। ये मेरे हिस्से की नाशपातियाँ हैं। बाकी बची नाशपातियाँ मेरे भाइयों की है मैं वे तुम्हें नहीं दे सकता।

अगले दिन देवदूत ने एक साधु का वेश रखा और सुबह सवेरे बहुत जल्दी ही उनके घर पहुँच गया। उस समय तीनों भाई घर पर ही थे। उसने उनसे कहा — "आओ तुम लोग मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें उससे अच्छा खाना दूँगा जो अभी तुम्हारे पास है।"

बिना कुछ कहे तीनों भाई उसके पीछे पीछे चल दिये। वे सब पानी की एक ऐसी जगह आ गये जहाँ वह कई धाराओं में बह रहा था और बहुत आवाज कर रहा था।

देवदूत ने सबसे बड़े भाई से पूछा — "तुम क्या लेना पसन्द करोगे?"

बड़ा भाई बोला — "मैं चाहता हूँ कि यह सारा पानी शराब बन जाये और फिर यह सारी शराब मेरी ही हो।"

यह सुन कर देवदूत ने अपनी डंडी से हवा में क्रास का निशान बनाया और पल भर में ही सारा पानी शराब में बदल गया। नदी के किनारों पर बहुत सारे बैरल आ गये और बहुत सारे लोग बड़ी मेहनत से काम करने लगे। यों समझो कि वहाँ तो पूरा का पूरा एक गाँव ही बस गया।

इस तरह देवदूत ने उसकी इच्छा पूरी की और उसको वहाँ छोड़ कर चल दिया — "जिस चीज़ की तुमने इच्छा की थी वह सब यहाँ मौजूद है और यह सब तुम्हारी है।"

इसके बाद वह दूसरे दोनों भाइयों को साथ ले कर चला। आगे चल कर वह एक फाख्ताओं से भरे मैदान में आया तो उसने दूसरे भाई से पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये?"

दूसरा भाई बोला — "मैं चाहता हूँ कि ये सारी फाख्ताऐं भेड़ें बन जायें और वे सब मेरी हों।" पहले की तरह से देवदूत ने हवा में अपनी छड़ी से एक क्रास बनाया और सारी फाख्ताऐं भेड़ बन गयीं।

वहाँ पर और भी डेरी थीं जिनमे स्त्रियाँ दूध निकाल रही थी दूध पलट रही थीं मक्खन बना रही थीं चीज़ बना रही थीं। वहाँ एक कसाईखाना भी था जिसमे भेड़ों को काटा जा रहा था। कुछ उनको तौल रहे थे कुछ लोग माँस को बेच कर उससे जो पैसे मिले थे उन्हें गिन रहे थे।

देवदूत ने दूसरे भाई से कहा — "लो यह लो तुम्हारी इच्छा पूरी हुई। अब यह सब तुम्हारा है।" कह कर वह तीसरे भाई के साथ आगे चल दिया।

वे एक मैदान पार कर रहे थे तो देवदूत ने उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये?" उसने कहा "मुझे कुछ नहीं चाहिये केवल असली ईसाई खून की एक पत्नी चाहिये।"

यह सुन कर देवदूत बोला — "ओह यह तो मिलना बड़ा मुश्किल है। सारी दुनियाँ में केवल तीन स्त्रियाँ ही ऐसी हैं जो असली ईसाई खून की हैं जिनमें से दो की तो शादी हो चुकी है। तीसरी को दो लोग माँग रहे हैं।"

सो वह नौजवान और देवदूत उधर ही चल दिये जहाँ वह तीसरी लड़की रहती थी। बहुत दूर चलने के बाद वे दोनों एक शहर में पहुँचे जहाँ के राजा की बेटी असल ईसाई खून की लड़की थी।

जैसे ही वे लोग वहाँ पहुँचे तो राजा से उसकी बेटी का हाथ माँगने के लिये महल पहुँचे। जब वे महल में घुसे तो दो राजा वहाँ पहले से ही बैठे हुए थे।

शादी की भेंटें मेज पर लगी थीं। उन्होंने भी अपनी भेंट मेज पर लगा दी जो वे अपने साथ ले कर आये थे।

जब राजा ने उन्हें देखा तो उनके सामने खड़े हो कर बोला “अब मैं क्या करूँ? ये भेंटें हैं तो राजाओं की पर इस भिखारी की लायी हुई भेंट की तुलना में तो ये एक भिखारी की भेंटें लग रही हैं।”

देवदूत बोला — “मैं बताता हूँ कि आप क्या करें। इस मामले का फैसला हम इस तरह से करते हैं। लड़की अंगूर की तीन बेलें लेगी और उन्हें अपने बागीचे में लगा देगी – हर एक बेल एक उम्मीदवार के नाम की। अगले दिन जिस किसी की बेल पर अंगूर लगे होंगे लड़की उसी से शादी कर लेगी।”

सब लोग इस बात पर राजी हो गये। लड़की ने अपने बागीचे में तीन बेलें लगा दीं हर उम्मीदवार के नाम की।

अगली सुबह जब सब लोग उठे तो उन्होंने देखा कि केवल गरीब आदमी के नाम वाली बेल पर अंगूर आये हुए थे। सो राजा के पास अब और कोई चारा नहीं था कि वह उस गरीब लड़के से अपनी बेटी की शादी कर दे। तुरन्त ही चर्च में उनकी शादी हो गयी।

शादी के बाद देवदूत उन दोनों को जंगल ले जा कर छोड़ आया जहाँ वे पूरे एक साल तक शान्ति से रहे। एक साल के बाद भगवान ने देवदूत को फिर से धरती पर भेजा।

उसने कहा — “जाओ देवदूत। धरती पर फिर से जाओ और देखो कि वे गरीब लोग कैसे रह रहे हैं। अगर वे अभी भी गरीबी में रह रहे हो तो जा कर उनको अच्छा खाना खिलाओ।”

सो देवदूत एक बार फिर से धरती पर आया और एक भिखारी का रूप रख कर पहले वाले भाई के पास पहुँचा जिसके पास वाइन वाइन की नदी के किनारों से बाहर छलकी पड़ रही थी और उससे पीने के लिये एक गिलास वाइन माँगी।

पर उस आदमी ने उसे यह कहते हुए वाइन देने से मना कर दिया कि अगर वह सबको ऐसे ही वाइन देता रहा तो उसके अपने पास तो कुछ बचेगा ही नहीं।”

देवदूत ने जब यह सुना तो उसने अपनी डंडी से हवा में क्रास का निशान बनाया तो पहले तो नदी में पड़ी शराब का पानी बन गया फिर वह वहाँ से चलते समय बोला — “यह तुम्हारे लिये नहीं था। जाओ तुम अपने नाशपाती के पेड़ के पास वापस जाओ और उसकी देखभाल करो।”

उसके बाद वहाँ से देवदूत दूसरे भाई के पास चल दिया जिसके पास बहुत बड़े मैदान में चीज़ मक्खन दूध दही आदि बिखरे पड़े थे। वहाँ पहुँच कर उसने उससे एक कौर भेड़ के माँस का माँगा तो उसने उसे यह कहते हुए मना कर दिया कि “अगर मैं ऐसे ही सबको खिलाता रहा तो मेरे पास तो कुछ रह ही नहीं जायेगा।”

जब देवदूत ने यह सुना तो तो उसने अपनी डंडी से हवा में क्रास का निशान बनाया तो पहले तो उसके मैदान में खड़ी भेड़ें फाख्ताओं में बदल गयीं और तुरन्त ही उड़ गयीं। फिर वह वहाँ से चलते समय बोला — "यह सब तुम्हारे लिये नहीं था। जाओ तुम अपने नाशपाती के पेड़ के पास वापस जाओ और उसकी देखभाल करो।"

आखीर में देवदूत तीसरे भाई के पास गया कि वह देखे कि वह कैसा कर रहा है। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि वह तो अपनी पत्नी के साथ जंगल में बनी एक झोंपड़ी में बड़ी गरीबी में रह रहा है।

वहाँ पहुँच कर उसने उससे एक रात रहने की जगह माँगी तो उसने उसका बड़ी खुशी से घर में स्वागत किया और उससे माफी माँगते हुए कहा — "हम लोग बहुत गरीब लोग हैं। हमें जैसे आपका स्वागत करना चाहिये वैसा स्वागत तो हम आपका नहीं कर सकते हैं पर जो कुछ भी हमारे पास है वह आपका है।"

देवदूत बोला — "आप ऐसा मत बोलिये। जो कुछ भी आप मुझे देंगे मैं उसी से सन्तुष्ट हो जाऊँगा।"

फिर वे आपस में बात करने लगे कि अब उनको अपने मेहमान के लिये क्या करना चाहिये। उनके पास तो मक्का भी नहीं थी जिसके आटे की रोटी बना कर वे उसको खिला सकें क्योंकि वे तो एक पेड़ की छाल को पीस कर उसकी रोटी खाते थे।

इसलिये उसकी पत्नी ने उसी तरह की रोटी बना कर उसे चूल्हे में बनने के लिये रखा। जब वह रोटी चूल्हे में पक रही थी तो वे उस भिखारी से बात कर रहे थे।

कुछ देर बाद पत्नी यह देखने के लिये उठी कि उसकी रोटी पक गयी होगी तो अब वह जा कर उसे निकाल लेगी। वह जब वहाँ पहुँची तो क्या देखती है कि वहाँ तो असली रोटी बनी पड़ी है जो मेज पर रखने के लिये तैयार है।

जब उन्होंने यह देखा तो उनके मुँह से निकला — "हे भगवान तुम्हारा लाख लाख धन्यवाद है कि तुमने हमें अपने मेहमान को खिलाने के लायक रोटी दे दी।"

वह रोटी निकाल कर उन्होंने देवदूत के सामने रख दी और एक बर्तन भर कर पानी रख दिया। जब उन्होंने उसको पिया तो वहाँ तो पानी नहीं था बल्कि उस बर्तन में वाइन थी।

तब देवदूत ने अपने डंडे से उनकी झोंपड़ी पर एक क्रास बनाया। उसके क्रास के बनाते ही वह झोंपड़ी तो गायब हो गयी और उसकी जगह एक आलीशान महल खड़ा हो गया जिसमें जरूरत और सुख सुविधा की सब चीज़ें बहुतायत से मौजूद थीं।

देवदूत सबसे छोटे भाई और उसकी पत्नी को हमेशा फलने फूलने का आशीर्वाद दे कर चला गया। उसके बाद वे दोनों खुशी खुशी बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहे।

8 न्याय और अन्याय? कौन ज़्यादा अच्छा[34]

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा रहता था जिसके दो बेटे थे। उसका बड़ा बेटा थोड़ा चालाक और अन्यायी था और दूसरा बेटा न्यायपूर्ण और नम्र था।

एक दिन उनके पिता मर गये तो बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा — "अब तुम यहाँ से चले जाओ क्योंकि मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। यह लो **300** डकैट[35] लो और यह एक घोड़ा लो। बस यही तुम्हारे पिता की सम्पत्ति का तुम्हारा हिस्सा है। इसे ले लो और जाओ। क्योंकि इससे ज़्यादा तो मैं तुम्हारा कोई कर्जदार भी नहीं हूँ। और बस अब चले जाओ यहाँ से।"

छोटे भाई ने जो पैसा और घोड़ा उसको दिया गया था उसे ले कर घर छोड़ दिया। रास्ते में वह बोला — "हे भगवान देखो तो मेरी किस्मत ने मुझे कितना बड़ा राज्य दिया।"

कुछ दिन बाद इत्तफाक से दोनों भाई चलते चलते एक सड़क पर मिल गये। दोनों अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए कहीं जा रहे थे। छोटे भाई ने बड़े भाई को यह कह कर नमस्ते की "भगवान आपकी सहायता करे।"

---

[34] Justice or Injustice? Which is Best? (Tale No 8)
["Gerechtigkeit und Ungerechtigkeit?" – Grimm No 16]
[35] Ducat is the name of currency used in Europe in olden times.

तो बड़ा भाई बोला — "तुम हमेशा भगवान के बारे में ही बात क्यों करते हो। आजकल अन्याय न्याय से बड़ा है।"

छोटे भाई ने जवाब दिया — "मैं आपसे शर्त लगाता हूँ कि जैसा कि आप कहते हैं कि अन्याय न्याय से बड़ा है ऐसा नहीं है।"

सो दोनों ने 100 सोने के ज़ैकिन्स[36] दॉव पर लगाये और यह तय किया कि वे इस बात के फैसले को उस आदमी से करवायेंगे जो कोई भी सड़क पर उनको पहली बार आता दिखायी देगा।

वे दोनों थोड़ी दूर तक चले तो उनको एक आदमी आता हुआ दिखायी दिया। वह साधु के वेश में एक शैतान था। उन दोनों ने उससे पूछा कि दोनों में से कौन अच्छा है न्यायी और अन्यायी।"

शैतान ने कहा "अन्यायी।" और वहाँ से चला गया। और इस तरह से भले भाई को अपने बड़े भाई को 100 ज़ैकिन्स देने पड़े।

उसके बाद उन्होंने 100 ज़ैकिन्स की एक और शर्त लगायी और फिर 100 ज़ैकिन्स की तीसरी बार शर्त लगायी और हर बार शैतान ने जो अपना वेश छिपाने में सफल हो जाता था और यही फैसला देता था कि अन्यायी न्यायी से ऊँचा है।

इस तरह छोटे भाई का सारा पैसा और घोड़ा इस शर्त के मामले में ही खर्च हो गया। उसने फिर हाथ उठा कर भगवान को धन्यवाद देते हुए कहा — "हे भगवन तेरा बहुत बहुत धन्यवाद है कि अब

[36] Zechin was the then currency of Europe.

मेरे पास कोई पैसा नहीं है। पर अभी मेरे पास आँखें हैं। अब मैं अपनी आँखों की शर्त लगा कर यह साबित करने की कोशिश करूँगा कि न्याय अभी भी अन्याय से ऊँचा है।"

सो उसके अन्यायी भाई ने बिना किसी से पूछे अपने हाथ में अपना चाकू ले कर अपना फैसला कर लिया। उससे उसने अपने छोटे भाई की आँखें निकाल लीं और फिर बोला — "अब तेरे आँखें नहीं हैं। अब न्याय तेरी सहायता करेगा।"

पर न्यायपूर्ण भाई ने फिर भगवान को धन्यवाद देते हुए कहा — "मैंने भगवान के न्याय के लिये अपनी आँखें खो दीं पर इससे पहले कि तुम मुझे यहाँ से छोड़ कर जाओ ओ मेरे प्यारे भाई मेरे घाव धोने के लिये और गला तर करने के लिये मुझे थोड़ा सा पानी दे दो और मुझे यहाँ से दूर किसी पाइन के पेड़ के नीचे ले चलो जहाँ कोई नदी बहती हो।"

अन्यायी भाई ने वैसा ही किया कि उसने उसको थोड़ा पानी ला कर दे दिया और उसको एक पाइन के पेड़ के नीचे बिठा दिया। वह अभागा बेचारा वहीं जमीन पर ही बैठा रहा।

काफी रात गये वहाँ नदी में नहाने के लिये कुछ परियाँ आयीं। उनमें से एक ने दूसरी से कहा — "क्या तुम्हें मालूम है कि राजा की बेटी को कोढ़ हो गया है। राजा ने देश विदेश के डाक्टरों को उसके ठीक करने के लिये बुलवाया है।

पर काश राजा अगर यह जानता होता कि इस पानी से जिसमें हम नहा रहे हैं वह अगर अपनी बहिन को नहला दे तो **24** घंटों के अन्दर अन्दर उसका सारा कोढ़ ठीक हो जायेगा।

इसी तरह से अगर कोई लॅगड़ा हो लूला हो बहरा हो या अन्धा हो तो वह भी इस पानी में नहाने से ठीक हो सकता है।"

जब सुबह हो गयी और मुर्गे बोलने लगे तो वह भला भाई अपने फैले हुए हाथों से महसूस कर कर के उस नदी के पास पहुँच गया। उसके पानी से अपनी ऑखें धो लीं। तुरन्त ही उसकी ऑखों में रोशनी आ गयी।

उसने एक बर्तन में पानी भरा और राजा के महल पहुँच कर उसके पहरेदारों से कहा कि वह राजकुमारी जी को उनके कोढ़ से ठीक करने के लिये आया है। अगर वह मुझे एक बार कोशिश कर लेने दें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि वह इस रोग से **24** घंटे में ही ठीक हो जायेंगी।

जब राजा ने यह सुना तो उसने उसको तुरन्त ही अन्दर बुला लिया जहॉ वह लड़की लेटी हुई थी। वह पहुँच कर उसने उसको तुरन्त ही नदी के पानी से नहला दिया। एक दिन और एक रात के बाद तो लो वह लड़की तो बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गयी।

राजा इस बात से बहुत खुश हुआ उसने अपना आधा राज्य अपने बेटे को दे दिया और आधा राज्य उस भाई को दे कर उससे

अपनी बेटी की शादी कर दी। इस तरह से वह राजा का दामाद बन गया और उसके बाद राज्य का पहला आदमी[37] बन गया।

कुछ ही दिनों में यह खबर सारे देश में फैल गयी। साथ में सुनी यह खबर उसके अन्यायी भाई ने भी। उसने तुरन्त ही भॉप लिया कि यह तो मेरा न्यायपूर्ण भाई ही था जिसने यह सब किया।

उसकी यह अच्छी किस्मत उसी पाइन के पेड़ के नीचे खुली होगी। सो वह खुद इस बात को पक्का करने के लिये उस पेड़ के नीचे पहुँच गया कि उस पाइन के पेड़ के नीचे उसकी भी किस्मत बदलती है या नहीं।

वह अपने साथ एक पानी भरा बर्तन भी ले गया। उसने अपने आप ही अपनी ऑखें निकाल कर रख लीं। जब ॲधेरा सा हुआ तो वहॉ परियॉ फिर से आयीं। जब वे उस नदी में नहा रही थीं तो राजा की बेटी के ठीक होने के बारे में बातें कर रहीं थीं।

"यह तो हो ही नहीं सकता कि अगर कोई हमारी बात नहीं सुन रहा हो तो वह राजकुमारी ठीक हो जाये। हो सकता है कि आज भी कोई हमारी बात यहॉ सुन रहा हो। चलो देखते हैं।"

सो वे परियॉ घूम घूम कर चारों तरफ ढूँढने लगीं। ढूँढते ढूँढते वह उसी पाइन के पेड़ के नीचे आ गयीं जिसके नीचे वह अन्यायी भाई बैठा हुआ अपनी किस्मत के खुलने का इन्तजार कर रहा था।

[37] A President is usually called "The First Man" and his wife is called "First Woman". This expression is also used in the same context as after the King he was the new King of that kingdom.

उन्होंने उसको पकड़ लिया और उसके शरीर के चार टुकड़े कर के उन्हें चारों दिशाओं में फेंक दिया।

सो आखिर उसकी चालाकी उसके काम नहीं आयी। उसने तो अपनी ज़िन्दगी भी गॅवायी। इसलिये न्यायी ही अन्यायी से अच्छा है।

9 शैतान का खेल और भगवान की ताकत[38]

एक बार की बात है कि एक राजा का बेटा शिकार करने गया। जब वह बर्फ में चल रहा था तो उसके शरीर का कुछ हिस्सा कट गया तो उसमें से खून निकलने लगा। खून की कुछ बूँदें नीचे पड़ी बर्फ पर गिर पड़ीं।

जब उसने देखा कि उसका लाल रंग का खून सफेद बर्फ पर कितना सुन्दर लग रहा था तो उसके मन में एक ख्याल आया कि "काश मैं एक ऐसी लड़की से शादी कर सकता जो बर्फ की तरह सफेद हो और मेरे खून की तरह लाल हो।"

यह सोचते सोचते वह आगे चल दिया। चलते चलते उसे एक बुढ़िया मिली तो उसने उससे पूछा कि क्या उसे कोई ऐसी लड़की कहीं मिल सकती है जो बर्फ की तरह से सफेद हो और उसके खून की तरह लाल भी हो।

बुढ़िया बोली — "हॉ वहॉ उस पहाड़ पर उसको एक घर मिलेगा जिसमें दरवाजा नहीं होगा। उसमें आने जाने के लिये केवल एक खिड़की ही है। और उस घर में ओ मेरे बेटे वैसी ही एक लड़की रहती है जैसी कि तुम चाहते हो।

[38] Satan's Jugglings and God's Might. (Tale No 9)
["Das Hollische Blendwerk und die gottliche Macht" – Grimm No 19]

पर मैं तुम्हें एक बात और बता दूँ कि अब तक जितने भी नौजवान उससे शादी करने के लिये वहाँ गये उनमें से कोई वापस नहीं लौटा।"

राजकुमार बोला — "हो सकता है कि जो आप कह रही हैं वह ठीक हो पर फिर भी मैं जाऊँगा। बस मुझे आप वहाँ का रास्ता बता दीजिये।"

बुढ़िया ने जब उसका यह इरादा सुना तो उसको उस नौजवान के लिये बहुत दुख हुआ। फिर भी उसने अपने थैले में से रोटी का एक टुकड़ा निकाला और उसको देते हुए कहा कि वह उसको अपनी आँख की पुतली की तरह सँभाल कर रखे।"

राजकुमार ने वह रोटी ले ली उसे सँभाल कर रख लिया और आगे अपने रास्ते पर चल पड़ा। कुछ ही दूर जाने पर उसको एक और बुढ़िया मिली। उसने उससे पूछा — "बेटा तुम कहाँ जा रहे हो।"

उसने बताया कि वह उस पहाड़ पर रहने वाली लड़की को माँगने जा रहा है जो बिना दरवाजे के घर में रहती है। इस बुढ़िया ने भी उसको वहाँ जाने के लिये उसी तरह से मना किया जैसे उसे पहली वाली बुढ़िया ने किया था।

पर इसने इस बुढ़िया को वही जवाब दिया कि वह जो कह रही ही ठीक ही कह रही होगी पर वह वहाँ उससे शादी करने जरूर जायेगा चाहे वह वहाँ से वापस लौटे या न लौटे।

उसका यह इरादा सुन कर उस बुढ़िया ने उसको एक गिरी[39] दी और कहा कि तुम इस गिरी को हमेशा अपने पास रखना। यह तुम्हें कहीं न कहीं कभी न कभी जरूर सहायता करेगी।

राजकुमार ने वह गिरी भी उससे ले कर रख ली और अपने रास्ते चल दिया। चलते चलते वह एक और बुढ़िया से मिला जो सड़क के किनारे बैठी थी। उसने भी राजकुमार से पूछा — "बेटा तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार ने उससे भी यही कहा कि वह पहाड़ पर बने बिना दरवाजे वाले मकान में जो लड़की रहती है उसका हाथ माँगने जा रहा है।

यह सुन कर बुढ़िया रो पड़ी और उसने उसको पाने का विचार भी मन में न लाने की प्रार्थना की। उसने भी उसको वही चेतावनी दी जो उसको पहली मिली दो बुढ़ियों ने दी थी।

खैर यह सब तो उस राजकुमार को स्वीकार नहीं था। उसने तो अपना पक्का इरादा बना रखा था कि वह तो उसके पास जायेगा ही जायेगा। उसका इतना पक्का इरादा देख कर उसने उसको एक अखरोट दिया और कहा कि वह इसे रख ले यह उसके कभी काम आयेगा।

[39] Translated for the word "Nut". Nut is an edible thing inside the stone of a fruit, such as almond, coconut, walnut etc.

इन सब भेंटों पर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उसे धन्यवाद दिया और उससे पूछा कि पहली बुढ़िया ने उसे रोटी का टुकड़ा क्यों दिया था। दूसरी बुढ़िया ने उसे एक गिरी क्यों दी और अब उसने उसको एक अखरोट क्यों दिया।

तब उस बुढ़िया ने उसे बताया कि — "वह रोटी घर के सामने खड़े हुए जानवरों को खिलाने के लिये है ताकि वे तुम्हें खा न सकें। इसके अलावा जब तुम किसी भारी मुसीबत में हो तो पहले तुम गिरी से सहायता माँगने की कोशिश करना और बाद में इस अखरोट से।"

यह सुन कर राजकुमार फिर अपने रास्ते पर आगे चल दिया। चलते चलते वह एक घने जंगल में आ गया। वहाँ आ कर उसने देखा कि वहाँ तो सचमुच में ही केवल एक खिड़की वाला मकान खड़ा है।

जब वह उसके पास पहुँचा तो उसके ऊपर कई तरह के कई जानवरों ने हमला करना शुरू कर दिया। बुढ़िया की सलाह मानते हुए राजकुमार ने उनकी तरफ रोटी के कई टुकड़े फेंक दिये।

जानवर उधर आये और एक एक कर के उन्होंने उन रोटी के टुकड़ों को सूँघा। जैसे जैसे वे उनको सूँघते गये वे अपनी पूछें अपनी अपनी टाँगों के बीच में दबा कर बैठते गये।

अब घर में तो एक भी दरवाजा नहीं था सिवाय एक खिड़की के। और वह खिड़की भी जमीन से इतनी ज़्यादा ऊँची थी कि वह उसके ऊपर से चढ़ कर अन्दर नहीं कूद सकता था।

अचानक उसने देखा कि एक स्त्री अपने सुनहरे बाल नीचे की तरफ लटका रही है। यह देख कर वह दौड़ा और उसके बाल पकड़ कर ऊपर चढ़ने लगा। यह देख कर उस स्त्री ने अपने बाल पकड़ कर उसको उनके साथ ही ऊपर खींच लिया।

तब उसने देखा कि वह स्त्री तो वही थी जिसके लिये वह इस घर में आया था। राजकुमार और वह लड़की दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुए।

वह बोली — "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि अभी मेरी माँ घर पर नहीं है। वह जंगल में कोई जड़ी बूटी लाने गयी है जिससे वह हर उस आदमी को जानवर में बदल देती है जो मेरा हाथ माँगने आता है। उन जानवरों ने तो तुम्हें मार दिया होता अगर तुम भगवान ने तुम्हारी सहायता न की होती। पर अब हमको यहाँ से भाग जाना चाहिये।"

सो वे तुरन्त ही वहाँ से जंगल के रास्ते हो कर भाग लिये। जब उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि लड़की की माँ उनके पीछे भागती आ रही है। वे दोनों उसे इस तरह अपने पीछे आता देख कर बहुत डर गये। वह बुढ़िया तो अब तक उनके बहुत पास तक आ गयी थी। तभी राजकुमार को गिरी की याद आयी।

उसने गिरी निकाली और उससे पूछा — "ओ गिरी अब हमको क्या करना चाहिये।"

गिरी बोली — "तुम मुझे तोड़ लो।"

राजकुमार ने उसे तुरन्त ही तोड़ दिया। उसमें एक बहुत बड़ी नदी निकल पड़ी जिसकी वजह से लड़की की मॉ राजकुमार के पास तक नहीं आ सकी।

खैर लड़की की मॉ ने उसे अपने डंडे से छुआ तो पानी तुरन्त ही फट गया और वहॉ एक सूखी जमीन निकल आयी। उस रास्ते से हो कर वह राजकुमार और लड़की के पीछे तक फिर से भाग आयी।

जब राजकुमार ने फिर देखा कि लड़की की मॉ तो फिर से उसके पास ही आने वाली है तो उसने अपना अखरोट निकाला और उससे पूछा कि अब उसे क्या करना चाहिये। अखरोट बोला "तुम मुझे तुरन्त ही तोड़ दो।"

राजकुमार ने तुरन्त ही अपना अखरोट तोड़ डाला। लो उसमें से तो एक बहुत बड़ी आग निकल पड़ी। वह आग तो इतनी बड़ी थी कि जंगल का कोई हिस्सा उससे बच नहीं पा रहा था। पर देखो बुढ़िया ने उस आग पर ज़रा सा थूका तो वह तो पल भर में ही बुझ गयी।

राजकुमार ने देखा कि वहॉ तो कुछ शैतान खेल खेल[40] रहे थे। उसने तुरन्त ही पूर्व की तरफ मुँह किया क्रास का निशान बनाया और भगवान को अपनी सहायता के लिये पुकारा।

अचानक उसे बिजली के कड़कने की आवाज सुनायी दी और उसके चमकने की रोशनी दिखायी दी। वह बिजली कड़क कर लड़की की मॉ के ऊपर गिर गयी। वह गिर कर मर गयी।

इस तरह राजकुमार अपनी मनपसन्द की लड़की को ले कर अपने राज्य आ गया। लड़की को ईसाई बना लिया गया और राजकुमार ने उससे शादी कर ली।

---

[40] Translated for the word “Juggling”. See its picture above.

10 अक्लमन्द लड़की[41]

एक बार की बात है कि एक आदमी एक बहुत छोटे से मकान में रहता था। उसका दुनियाँ में अपना कहने वाला कोई नहीं था सिवाय उसकी एक बेटी के। उसकी वह बेटी बहुत अक्लमन्द थी। उसने अपने पिता को भीख माँगना और अक्लमन्दी से बात करना सिखाया।

एक दिन उसका पिता राजा के घर भीख माँगने गया। राजा ने उससे पूछा कि वह वहाँ कहाँ से आया है और इतना अच्छा बोलना उसे किसने सिखाया।

आदमी ने उसे अपने घर का पता बताया और कहा कि उसकी बेटी ने उसे यह सब सिखाया है कि कब किससे कहाँ क्या कहना चाहिये।

राजा ने पलट कर पूछा — "और तुम्हारी बेटी को यह सब किसने सिखाया।"

आदमी बोला — "सरकार भगवान और गरीबी ने उसे यह अक्लमन्दी दी है।"

राजा ने तब उसे **30** अंडे दिये और कहा — "यह लो ये **30** अंडे ले जाओ और उससे कहना कि अगर वह इन अंडों से चूज़े

---

[41] The Wise Girl. (Tale No 10)
["Von dem Madchen das Weisheit den Kaisar Ubertraf" – Grimm No 25]

निकाल देगी तो में उसे बहुत सारा पैसा दूँघा। पर अगर वह यह काम नहीं कर पायी तो मैं तुम्हें बहुत तकलीफ दूँगा।"

आदमी बेचारा उन **30** अंडों को ले कर रोता हुआ घर चला गया। घर पहुँच कर उसने बेटी को बताया कि उस दिन वह राजा के महल में भीख माँगने गया था और उस दिन उसके साथ वहाँ क्या हुआ था।

बेटी ने अपने पिता के हाथ से वे अंडे ले लिये। उनको उसने देखा तो तुरन्त पहचान गयी कि वे अंडे जो राजा ने उसके पिता को दिये थे वे तो उबले हुए थे।

उसने अंडे तो रख लिये और पिता को आराम से सो जाने के लिये कहा। उसने उनसे कहा कि उनको इस बारे में चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है वह देख लेगी।

पिता बेटी को अंडे दे कर सोने चला गया। जब वह सो रहा था तो उसने एक बर्तन में पानी भरा उसमें बीन्स डालीं और उनको उबाल दिया।

अगले दिन सुबह उसने अपने पिता से कहा कि वह एक हल और एक बैल ले लें और राजा के महल के पास वाले जंगल में जा कर जमीन पर हल चलायें। वहाँ से राजा अक्सर आता जाता है। जब आप राजा को अपनी तरफ आता देखें तो इस बर्तन में से एक मुट्ठी बीन्स खेत में यह कहते हुए फेंक दें — "चलते चलो मेरे बैलों

चलते चलो। भगवान से प्रार्थना करो कि मेरी इन उबली हुई बीन्स में फल लगें।"

यह सुन कर राजा जरूर आपके पास आयेगा और आपसे पूछेगा "तुम यह आशा कैसे करते हो कि तुम्हारी इन उबली हुई बीन्स में फल लग जायेंगे।"

तो आप उसे जवाब दीजियेगा — "हॉ लगने तो चाहिये उसी प्रकार से जैसे कि आप यह आशा करते हैं कि उबले अंडों में से चूज़े निकल आयेंगे।"

उस बेचारे गरीब आदमी ने अपनी बेटी की बात सुनी और जंगल में उन बीन्स को बोने के लिये पहुॅच गया। उनकी आशा के अनुसार राजा उधर से गुजरा तो आदमी ने ज़ोर से आवाज लागयी— "चलते चलो मेरे बैलों चलते चलो। भगवान से प्रार्थना करो कि मेरी इन उबली हुई बीन्स में फल लगे।"

यह सुन कर राजा उसके पास आया और उससे पूछा — "तुम यह आशा कैसे करते हो कि तुम्हारी इन उबली हुई बीन्स में फल लग जायेंगे।"

तो आदमी ने उसे वही जवाब दिया जो उसे उसकी बेटी ने सिखाया था — "हॉ लगने तो चाहिये उसी प्रकार से जैसे कि आप यह आशा करते हैं कि उबले अंडों में से चूज़े निकल आयेंगे।"

राजा को भी लगा कि यह जवाब तो उसको उसकी बेटी ने सिखाया होगा। राजा ने अपने नौकरों से कहा कि वह उस आदमी

को उसके पास ले कर आयें। जब वह उसके पास आ गया तो उसने उस आदमी को थोड़ी सी रुई दी और कहा — “लो यह रुई ले जाओ और इसका इतना कपड़ा बुन दो जिसमें कम से कम एक जहाज़ के पाल बन जाये। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।”

आदमी तो यह देख कर डर गया। डरते डरते उसने राजा से रुई ली और अपने घर चला आया। घर आ कर उसने सारी कहानी फिर अपनी बेटी से कही। बेटी ने पिता से लापरवाही से रुई ले ली और पिता से कहा कि वह शान्ति से सोये और इसको वह देख लेगी।

अगले दिन सुबह उसने अपने पिता को लकड़ी का एक छोटा सा टुकड़ा दिया और कहा कि वह राजा को यह लकड़ी का टुकड़ा दे और उससे कहे कि इस लकड़ी के टुकड़े से वह उसको रुई कातने के और बुनने के सब औजार बनवा कर दे दे जिनसे वह उस रुई को कात सके और बुन सके। उसके बाद ही वह राजा के हुक्म का पालन कर पायेगी।

राजा यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया और सोचने लगा कि अब वह क्या करे। आखिर वह बोला — “लो यह छोटा सा गिलास अपनी बेटी को दे देना और उससे कहना कि वह इससे समुद्र का पानी खाली कर दे जिससे अब जहॉ समुद्र है वहॉ जमीन निकल आये।”

गरीब आदमी ने राजा से वह गिलास ले लिया और फिर रोता हुआ घर जा कर अपनी बेटी को सब कुछ बताया। लड़की ने उससे कहा कि वह सुबह तक शान्त रहे कल सुबह को वह देखेगी कि उसका क्या करना है।

अगली सुबह लड़की ने पिता को एक पौंड रेत दिया और कहा कि वह राजा से कहे कि वह उससे सारी नदियों और झीलों को समुद्र में जाने से रोक दे फिर उसके बाद ही मैं समुद्र को खाली कर सकती हूँ।

बेटी का सन्देश ले कर गरीव आदमी एक बार फिर राजा के पास पहुँचा और जा कर उसको बेटी का सन्देश दिया। राजा ने समझ लिया कि यह लड़की उससे ज़्यादा अक्लमन्द है तो उसने उसके पिता से कहा कि वह उससे मिलना चाहता है।

जब वह उसके सामने आयी तो राजा ने उससे कहा — "सुन लड़की। सबसे ज़्यादा दूर तक क्या सुना जा सकता है।"

लड़की बोली — "बिजली की गरज और झूठ बहुत दूर तक सुना जा सकता है।"

लड़की का जवाब सुन कर राजा आश्चर्य से अपनी दाढ़ी सहलाने लगा। अपने दरबारियों की तरफ देख कर राजा बोला — "अच्छा यह बताओ कि मेरी दाढ़ी की क्या कीमत है।"

कुछ ने कहा इतनी है कुछ ने कहा उतनी है। पर लड़की ने राजा की तरफ देखा तो उसे ऐसा लगा कि राजा को अपने

दरबारियों की लगायी हुई कीमत ठीक नहीं लग रही है। उसने लड़की की तरफ देखा तो वह बोली — "राजा की दाढ़ी की कीमत तीन गर्मी के मौसम की बारिश है।"

यह सुन कर राजा का मुँह तो आश्चर्य से खुला का खुला रह गया। वह बोला — "अरे ऐसा क्या? यह लड़की ठीक कहती है।"

फिर उसने उससे पूछा कि क्या वह उसकी पत्नी बनेगी। और फिर आगे कहा कि अगर वह उसकी पत्नी बनना पसन्द करेगी तो वह उससे अभी शादी कर लेता है।

लड़की उसके सामने बहुत नीचे तक झुक कर बोली — "जैसा आपका हुक्म सरकार। पर मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि शादी से पहले आप यह समझौता लिख कर उस पर अपने दस्तखत कर दें कि अगर आप कभी भी मुझसे नाखुश हों या मुझे घर से बाहर निकालना चाहें तो मैं यहाँ से अपनी पसन्द की कोई भी एक चीज़ साथ ले जा सकूँ।"

राजा इस बात पर राजी हो गया और उसने उससे वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगा। राजा ने उस लड़की से शादी कर ली। काफी दिनों तक वे खुशी खुशी साथ साथ रहते रहे।

एक दिन राजा उससे किसी बात पर नाराज हो गया और बोला — "बस बहुत हो गया अब मैं तुम्हें इससे ज़्यादा अपनी पत्नी बना

कर नहीं रख सकता। मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम मेरे महल से निकल जाओ।"

रानी बोली — "जो हुक्म सरकार का। आज की रात तो आप मुझे अपने महल में सो लेने दें पर कल सुबह होते ही मैं इसे छोड़ कर चली जाऊँगी।"

इस बात को राजा मना नहीं कर सका। शाम के खाना खाने से पहले वाइन में रानी ने कुछ मिला दिया और उसे राजा को पीने के लिये दिया और कहा — "राजा साहब आप खुश हों। कल मैं और आप अलग हो जायेंगे। और मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि उसके बाद मैं उस समय से भी ज़्यादा खुश रहूँगी जितनी कि आपसे मिलने से पहले थी।"

राजा ने शराब पी और सो गया। उसके बाद रानी ने एक गाड़ी मँगवायी। राजा को उसमें डलवाया और उसको अपने साथ घर ले गयी।

सुबह को जब राजा की आँख खुली तो उसने देखा कि वह एक छोटे से मकान में है सो उसने पूछा कि वह कहाँ है। उसे वहाँ कौन लाया। रानी बोली — "आपको मैं ले कर आयी हूँ।"

राजा चिल्ला कर बोला — "तुमने ऐसा करने की हिम्मत ही कैसे की। क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि अबसे तुम मेरी पत्नी नहीं हो?"

इस पर रानी ने राजा का लिखा हुआ नोट निकाल कर उसे दिखाया और बोली — "जी हॉ आपने कहा तो था पर देखिये आपने यह लिखा भी था और वायदा भी किया था कि जब भी आप मुझे घर से बाहर निकालेंगे तो आप घर में से मुझे मेरी पसन्द की एक चीज़ ले जाने दे सकते हैं। मुझे आप पसन्द थे सो घर छोड़ते समय मैं आपको ले आयी।"

रानी के मुँह से यह सुन कर और उसके हाथ में अपने हाथ का लिखा हुआ कागज देख कर राजा मुस्कुरा उठा और अपने साथ उसको ले कर अपने महल वापस चला गया।

11 भले काम कभी बेकार नहीं जाते[42]

एक बार की बात है कि एक पति पत्नी रहते थे। उनके केवल एक बेटा था। जब वह बड़ा हो गया तो उन्होंने उसको कुछ ऐसा सिखाने की कोशिश की जिससे वह अपनी ज़िन्दगी सुख से गुजार सके।

वह लड़का बहुत दयालु और शान्त लड़का था। वह भगवान से भी बहुत डरता था। जब उसका स्कूल खत्म हो गया तो उसके पिता ने उसको एक जहाज़ दिलवा दिया। उसने उसे बहुत तरह का माल दिलवा दिया ताकि वह उसे बाजार में बेच कर कुछ पैसा कमा ले और अमीर आदमी बन कर बुढ़ापे में माता पिता की सेवा करे।

सो पिता ने बेटे को समुद्र में उतार दिया और वह चल पड़ा। रास्ते में उसे एक तुर्की जहाज़ मिला जिसमें से उसे बहुत सारी रोने चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं।

उसने पूछा — "आप मुझे मेहरबानी करके बताइये आपके जहाज़ पर यह इतना सारा रोना धोना क्यों हो रहा है।"

तो जहाज़ वालों ने उसे बताया — "हम अपने जहाज़ों में दास ले जा रहे हैं जिन्हें हमने कई देशों से पकड़ा है। उनमें से कुछ को हमने जंजीरों से बॉध रखा है वही रो चिल्ला रहे हैं।"

---

[42] Good Deeds Are Never Lost. (Tale No 11)

इस पर लड़का बोला — "तुम लोग अपने जहाज़ के मालिक से पूछ कर बताओ कि क्या वह मुझे नकद पैसे के बदले में दास देने को राजी है।"

जहाज़ का कप्तान तुरन्त ही इस सौदे के लिये राजी हो गया। काफी सौदेबाजी के बाद दासों का सौदा हो गया। लड़के ने सब सामान रखा अपना जहाज़ उसको दे दिया और उसका दासों वाला जहाज़ अपने आप लिया।

उसने हर दास को अपने सामने बुलाया और उससे पूछा कि वह कहॉ से आया था। फिर उसने यह कह कर उस जहाज़ के सारे दास आजाद कर दिये कि वे अब आजाद हैं और अब अपने अपने घर जा सकते है।

आखीर में एक बुढ़िया उसके पास आयी जिसके साथ एक नौजवान लड़की थी। उसने उनसे भी यही पूछा कि वे कहॉ से आयी हैं। बुढ़िया बोली कि वे किसी दूर देश से आयी हैं। यह लड़की जो उसके साथ है वह एक राजा की एकलौती बेटी है और वह बुढ़िया उसकी आया है। वह बचपन से उसकी देखभाल करती आयी है।

एक दिन दुखी हो कर राजकुमारी अपने बागीचे में घूम रही थी। उसका यह बागीचा महल से काफी दूर था। इन तुर्कों ने इसको वहॉ देख लिया और पकड़ लिया।

खुशकिस्मती से मैं वहीं पास में ही थी सो उसकी चीख सुन कर मैं उसकी सहायता के लिये दौड़ी तो उन्होंने हम दोनों को पकड़ कर

जहाज़ पर चढ़ा लिया और वहाँ से ले आये। अब क्योंकि हम अपने देश से इतनी दूर हैं और वहाँ लौट कर नहीं जा सकते हैं तो क्या तुम हमें अपने साथ ले चलोगे।"

सो उसने उस लड़की से शादी कर ली और वह उनको अपने साथ अपने घर ले आया। जब वह घर लौटा तो उसके पिता ने उसके जहाज़ और उसके सामान के बारे में पूछा। उसने उनको सब कुछ बता दिया कि रास्ते में क्या हुआ था।

कैसे उसने अपना सामान वाला जहाज़ दे कर एक दासों वाले जहाज़ को खरीद लिया और उन्हें बचा कर उन्हें आजाद कर दिया।

उसने आगे कहा कि यह लड़की किसी राजा की बेटी है और यह बुढ़िया इसकी आया है। क्योंकि ये लोग अपने घर वापस नहीं जा सके इसलिये मैंने इस लड़की से शादी कर ली है और मैं इन दोनों को अपने घर ले आया हूँ।

यह सुन कर उसका पिता बहुत गुस्सा हुआ और बोला — "ओ मेरे नाखुश बेटे। यह तूने क्या किया। तूने मेरा वह सब सामान अपनी इच्छा से इस तरह बिना किसी वजह के क्यों दे दिया।" कह कर उसने अपने बेटे को घर से बाहर निकाल दिया।

बेटा अपनी पत्नी और उसकी आया के साथ बहुत दिनों तक उसी गाँव में ही रहता रहा और हमेशा ही अपनी माँ और दोस्तों की सहायता से अपने पिता से सुलह की कोशिश करता रहा।

वह उससे इस बात की भी विनती करता रहा कि वह उसको एक मौका और दे ताकि वह सामान का एक दूसरा जहाज़ ले कर जाये और अबकी बार ज़्यादा अक्लमन्दी से काम कर के आये।

कुछ दिनों बाद उसके पिता को उसके ऊपर दया आ गयी तो उसने उसको उसकी पत्नी और बूढी आया के साथ अपने घर बुला लिया और कुछ समय बाद उसने उसके लिये एक और जहाज़ तैयार कराया। यह जहाज़ पहले जहाज़ से बड़ा था और इसका सामान भी पहले वाले जहाज़ के सामान से ज़्यादा कीमती था।

बेटे ने अपनी पत्नी और आया को अपने पिता के घर में छोड़ा और अकेला ही उस जहाज़ को ले कर चल दिया।

एक दिन वह एक ऐसे शहर में पहुँचा जहाँ पर कुछ सिपाही लोग कुछ अभागे गाँव वालों को जेल ले जा रहे थे। वहाँ पहुँच कर उसने उनसे पूछा — "भाइयो तुम इन लोगों के साथ ऐसा क्यों कर रहे हो। तुम इन बेचारे गरीब लोगों को जेल क्यों ले जा रहे हो।"

सिपाही लोग बोले — "इन लोगों ने राजा का टैक्स नहीं दिया है इसलिये हम इनको जेल ले कर जा रहे हैं।"

तब वह लड़का मजिस्ट्रेट के पास गया और उससे पूछा कि उनके ऊपर कितना टैक्स है। मजिस्ट्रेट ने उसको बता दिया कि उनको कितना टैक्स देना है। सो उसने अपना जहाज़ और उस पर रखा हुआ सामान बेच कर उनका टैक्स चुका कर उनको छुड़ा लिया। उसके बाद बिना कुछ कमाये वह घर चला आया।

घर आ कर पिता के पैरों पर गिर कर उसने उनसे फिर से माफी माँगी। पर इस बार उसका पिता उससे पहले से भी ज़्यादा गुस्सा था। उसने उसको फिर से घर से बाहर निकाल दिया। वह बेचारा सोचता रहा कि वह ऐसी हालत में क्या करेगा। वह तो भीख भी नहीं माँग सकता जिसका पिता इतना अमीर हो।

कुछ समय बाद उसके दोस्त फिर से उसको माफी दिलवाने में सफल हो गये। सो उसके पिता ने उसको फिर से उसे अपने घर बुला लिया। उसके लिये एक और जहाज़ जो पिछले दोनों जहाज़ों से बड़ा था और कीमती चीज़ों से भरा हुआ था अपने बेटे के लिये तैयार किया।

इस बार उसने अपनी पत्नी की तस्वीर उस जहाज़ पर ऊपर की तरफ बनवा ली थी और उसकी आया की तस्वीर उसकी तस्वीर के नीचे बनवा ली थी। फिर अपने माता पिता पत्नी और बूढ़ी आया सबसे विदा ले कर वह तीसरी बार समुद्री यात्रा पर चल दिया।

कुछ दिन समुद्र में चलने के बाद वह एक शहर में पहुँचा जहाँ उसका राजा भी रहता था। उसने अपने जहाज़ का लंगर वहीं डाल दिया और शहर की तरफ उसकी इज़्ज़त में एक तोप दागी।

शहर के सारे लोग ही नहीं बल्कि राजा भी यह नहीं बता सका कि उस अजीब अनजाने जहाज़ का कप्तान कौन था। शाम के समय राजा ने अपना एक वजीर उस जहाज़ की तरफ भेजा कि वह यह पता लगा कर लाये कि वह कौन था और क्या चाहता था।

वह वजीर राजा का यह सन्देश ले कर जहाज़ के कप्तान के पास पहुँचा कि राजा खुद अगले दिन सुबह नौ बजे उस जहाज़ को देखने आयेगा।

ज्ब वजीर उस जहाज़ पर उसके कप्तान से मिलने आया तो यह देख कर हैरान रह गया कि उस जहाज़ पर राजकुमारी और राजकुमारी की आया दोनों की तस्वीर बनी हुई थी।

उसको तो यह देखने की उम्मीद ही नहीं थी सो उसको तो इतना आश्चर्य हुआ कि उसको अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ क्योंकि इस राजकुमारी की शादी तो उससे बचपन में ही तुर्कों के पकड़ने से बहुत पहले ही पक्की हो गयी थी। पर वजीर ने यह बात किसी से कही नहीं कि उसने वहॉ क्या देखा।

अगले दिन सुबह नौ बजे राजा अपने वजीरों को साथ ले कर उस जहाज़ के कप्तान से मिलने के लिये उस जहाज़ पर आया। उसने कप्तान से पूछा कि वह कौन था और कहॉ से आया था।

जब वह जहाज़ को घूम घूम कर जहाज़ को देख रहा था तो उसने देखा कि उस जहाज़ पर तो उसकी बेटी और उसकी बेटी की आया की तस्वीर बनी हुई है। वह उन दोनों की तस्वीरें पहचान गया जिनको तुर्क लोग पकड़ कर ले गये थे।

उनकी तस्वीर देख कर उसकी खुशी भी इतनी ज़्यादा थी कि वह तो अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं कर सका। ऑखें फाड़े देखता ही रह गया।

उसने जहाज़ के कप्तान को अपने महल में उस शाम को उसकी कहानियाँ सुनने के लिये बुलाया। उसको उम्मीद थी कि शायद वह जो कुछ सोच रहा था वैसा ही कुछ हो।

शाम को राजा के बुलावे पर वह उसके महल पहुँचा। राजा ने उससे पूछा कि उसके जहाज़ पर उस लड़की और बुढ़िया की तस्वीरें क्यों बनी थीं।

लड़के ने तुरन्त ही भाँप लिया कि यह राजा ही उसकी पत्नी का पिता है सो उसने उसको शुरू से ले कर अब तक जो कुछ भी हुआ था वह सब कुछ सच सच बता दिया। कि कैसे उसको एक बार तुर्क जहाज़ मिल गया था कैसे उसने उस जहाज़ में कैद दासों को बचा लिया।

इस लड़की के पास अपनी आया के साथ जाने के लिये कोई जगह नहीं थी और क्योंकि इसका देश बहुत दूर था सो इन लोगों ने मेरे साथ रहने की विनती की तो मैंने उससे शादी कर ली और दोनों को अपने घर ले आया।

जैसे ही राजा ने यह कहानी सुनी तो बोला — “यह लड़की तो मेरी बेटी है। वे नीच तुर्क उसे और उसकी आया दोनों को उठा कर यहाँ से ले गये थे।

अब तुम क्योंकि उसके पति हो इसलिये अब तुम्हीं मेरे राज्य के वारिस हो। तुम जल्दी से अपने घर चले जाओ और मेरी बेटी को ले आओ ताकि मैं उसे मरने से पहले फिर देख सकूँ। तुम अपने

माता पिता और परिवार को भी ले आना। तुम अपनी जायदाद आदि जो कुछ भी तुम्हारे पास हो उसे उसी देश में बेच कर तुम सब यहीं आ कर रहने लगो।

तुम्हारे पिता मेरे भाई जैसे होंगे तुम्हारी माँ मेरी बहिन जैसी होंगी क्योंकि तुम मेरे बेटे हो मेरे राज्य के वारिस। हम सब एक साथ एक ही महल में रहेंगे।"

तब उसने अपनी रानी को बुलाया अपने वजीरों को बुलवाया और उन्हें सबको अपनी बेटी के मिल जाने के बारे में बताया। सब लोग यह सुन कर बहुत खुश हुए।

उसके बाद राजा ने अपने दामाद को अपना बड़ा वाला जहाज़ दिया ताकि वह उसमें उसकी बेटी और उसके परिवार को घर ला सके। इस पर लड़के ने अपना जहाज़ वहीं छोड़ दिया और राजा का जहाज़ ले कर अपने घर की तरफ चल दिया। साथ में उसने राजा का एक वजीर अपने साथ ले लिया ताकि कहीं ऐसा न हो कि वे लोग उस पर विश्वास ही न करें।

उधर राजा ने अपने उसी वजीर को उसके साथ कर दिया जिसके साथ उसने बहुत पहले कभी अपनी बेटी की शादी पक्की की थी।

वे लोग सुरक्षित रूप से बन्दरगाह पहुँच गये। लड़के का पिता अपने बेटे को एक इतने बढ़िया शानदार जहाज़ में इतनी जल्दी

वापस आया देख कर हैरान रह गया। तब उस लड़के ने पिता को बताया कि उसके साथ क्या हुआ।

उसकी माँ पिता पत्नी और आया ने यह खुशी की खबर सुनी तो वे सब भी सुन कर बहुत खुश हुए। क्योंकि राजा का वजीर इस सबका गवाह था सो किसी को कोई शक नहीं हुआ।

माता पिता अपनी सारी जायदाद बेचने के लिये और राजा के महल में रहने के लिये तैयार हो गये। पर राजा के वजीर ने तो यह सोच लिया था कि वह राजा के इस दामाद को मार देगा क्योंकि राजकुमारी की शादी तो बहुत पहले ही उससे पक्की हो चुकी थी।

जब वे किनारे से बहुत आगे निकल आये तो वजीर ने लड़के को जहाज़ के डैक पर ऐसे ही बात करने के लिये बुला लिया। लड़का बहुत शान्त और भले स्वभाव का था सो उसे कोई शक नहीं हुआ। वह तुरन्त ही वहाँ आ गया। वजीर ने भी उसे अचानक पकड़ कर जहाज़ से बाहर समुद्र में फेंक दिया।

जहाज़ समुद्र में जल्दी जल्दी बहा जा रहा था सो लड़का उसको पकड़ ही नहीं सका बल्कि समुद्र में काफी पीछे छूट गया। वजीर उसको समुद्र में फेंक कर चुपचाप सोने चला गया।

खुशकिस्मती से समुद्र की लहरें लड़के को बहा कर किनारे पर पड़ी एक चट्टान पर छोड़ आयीं। इत्तफाक से वह एक ऐसा देश था जिस पर कोई नहीं रहता था इसलिये वहाँ उसकी सहायता करने वाला भी कोई नहीं था।

अगले दिन जहाज़ पर जब लोग सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि राजा का दामाद और वारिस तो वहाँ था ही नहीं। उन्होंने यह सोच कर वहाँ रोना और चिल्लाना शुरू कर दिया कि लगता है कि रात को वह जहाज़ के ऊपर से गिर गया है और डूब गया है। उसकी पत्नी खास तौर पर बहुत रो रही थी क्योंकि वे आपस में एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

जब जहाज़ राजा के शहर पहुँचा और इस भयानक घटना के बारे में राजा को बताया तो राजा तो बहुत परेशान हो गया। दरबारी भी बहुत दुखी हुए।

राजा ने उस नौजवान के माता पिता और परिवार को अपने पास ही रख लिया पर वे अपने खोये हुए बेटे और पति के इस दुख में किसी तरह भी तसल्ली नहीं पा रहे थे।

इस बीच राजा का दामाद दुखी हो कर उसी चट्टान पर बैठा रहा और उस मौस को खा कर ज़िन्दा रहा जो वहाँ उगती थी और वहाँ की झुलसती धूप को सहता रहा जिससे उसको कोई रक्षा नहीं थी। उसके कपड़े मैले हो गये थे और फट गये थे। इस समय कोई उसे देख लेता तो वह तो उसे पहचान भी नहीं सकता था। वहाँ कोई ऐसी ज़िन्दा चीज़ नहीं थी जिससे उसको कोई सहायता मिल जाती।

आखिरकार **15** दिन और **15** रात के बाद उसको समुद्र के किनारे एक बूढ़ा दिखायी दिया। वह एक डंडे के सहारे बैठा था और मछली पकड़ रहा था।

राजा के दामाद ने उससे ज़ोर से चिल्ला कर कहा कि वह उसको उस चट्टान से उतरने में सहायता करे।

मछियारा बोला — "अगर तुम मुझे कुछ दो तो।"

लड़का बोला — "मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ जबकि तुम देख रहे हो कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है यहाँ तक कि मेरे तो कपड़े भी मैले और फटे हुए हैं।"

बूढ़ा बोला — "ओह वह कोई बात नहीं। यह लो कागज और पैन्सिल और तुम मुझे यह नोट लिख दो कि जब भी कभी तुम्हें कोई भी चीज़ मिले तो उसमें से आधी तुम मुझे दे दोगे।"

नौजवान यह सुन कर बहुत खुश हो गया। बूढ़ा पानी में से हो कर उसके पास तक गया और उसे किनारे ले आया। उसके बाद वह जंगल से जंगल गाँव से गाँव घूमता फिरा – नंगे पैर भूखा और दुखी। अपने लिये पुराने कपड़े माँगते रहते हुए।"

इस तरह उसको वहाँ एक महीना बीत गया। एक महीने बाद उसकी खुशकिस्मती उसको उस शहर के राजा के महल की तरफ ले आयी। वह उसके महल के पास जा कर बैठ गया। उसकी उँगली में उसकी शादी की अँगूठी पड़ी हुई थी। उस पर उसका और उसकी पत्नी दोनों का नाम खुदा हुआ था।

शाम को राजा के नौकर उसको महल में ले गये। वहाँ उन्होंने उसको अपने खाने में से बचा हुआ खाना खिलाया। अगले दिन वह बागीचे के दरवाजे पर जा कर बैठ गया।

पर जब वहाँ माली आया और उसने उसे देखा तो उसने उसे यह कहते हुए वहाँ से भगा दिया कि राजा और उसका परिवार वहाँ अभी आने वाला है इसलिये वह वहाँ से हट जाये।

सो उसको वहाँ से हट जाना पड़ा। पर वह वहाँ से कहीं दूर नहीं गया वह वहीं पास के एक कोने के पास जा कर बैठ गया। कुछ देर बाद ही उसने राजा को अपने परिवार के साथ वहाँ आते देखा।

उसने देखा कि राजा के साथ उसके अपने माता पिता थे उसकी अपनी पत्नी थी और वह वजीर था जो उसका पक्का दुश्मन था।

उसकी अभी अपने आपको उनको दिखाने की इच्छा नहीं थी पर जैसे ही वे उसके पास से गुजरे तो उन्होंने उसको कुछ भीख दी जिसके लिये उसने अपना हाथ बढ़ाया तो उसकी पत्नी ने उसके उस हाथ की एक उँगली में अपनी शादी की अँगूठी देख ली जिसको उसने भीख माँगने के बाहर निकाल था।

पत्नी बोली — "ज़रा मुझे अपनी अँगूठी दिखाना तो।"

वह वजीर जो उसके साथ साथ ही चल रहा था यह देख कर कुछ डर गया और उससे बोला — "चलिये चलिये आप ऐसे चिथड़े पहने आदमी से ऐसे कैसे बात कर सकती हैं।"

पर राजकुमारी ने उसकी सुनी हीं नहीं। उसने उससे अँगूठी ले ली और उस पर लिखा हुए अपना और अपने पति का नाम पढ़ कर तो वह बहुत परेशान हुई कि यह अँगूठी उसके पास कहाँ से आयी।

जब वे महल लौट आये तो उसने यह बात अपने पिता से कही कि उसने उस गरीब के हाथ में पहनी अँगूठी को पहचान लिया था। वह उसकी शादी की अँगूठी थी। अगर वह उसको वहाँ से बुलवा ले तो उससे यह पूछा जा सकता है कि उसके पास यह अँगूठी कहाँ से आयी।

राजा ने जब यह सुना तो उसने अपने नौकरों को उसे लाने के लिये भेजा। वे उसको महल ले आये तो राजा ने उससे पूछा कि वह कहाँ से आया है और उसके पास यह अँगूठी कहाँ से आयी।

तब वह अपने आपको न रोक सका उसने राजा को सब बता दिया कि किस तरह से नीच वजीर ने उसे जहाज़ से पानी में फेंक दिया था। फिर कैसे उसे **15** दिन उस नंगी चट्टान पर गुजारे और फिर कैसे वह बचा।

वह आगे बोला — "देखा कि किस तरह से मेरे ठीक व्यवहार ने मुझे अपने पिता और पत्नी से फिर मिला दिया।"

जब उन सबने यह सुना तो वे तो खुशी के मारे कुछ बोल ही नहीं सके। फिर राजा ने अपने दामाद के माता पिता को बुलवाया और उन्हें बताया कि उनके बेटे को क्या हुआ था।

नौकर तुरन्त ही एक बहुत कीमती पोशाक ले आये उसे नहलाया धुलाया और उसके कपड़े बदलवाये। राजा के हुक्म से वजीर को पकड़ लिया गया और उसे राजा के दामाद को दे दिया गया कि वह अपनी इच्छा अनुसार उसकी सजा नियत करे।

पर नौजवान राजा ने उसको मारने का हुक्म नहीं दिया बल्कि उसे इस शर्त पर माफ कर दिया गया कि वह अब उसके राज्य में कभी कहीं दिखायी नहीं देगा।

कुछ दिन बाद वह बूढ़ा जिसने नौजवान राजा की जान बचायी थी अपने हाथ में उसके हाथ का लिखा हुआ नोट ले कर वहाँ आया।

नौजवान राजा ने उससे वह नोट लिया और पढ़ कर उससे कहा — "ओ बूढ़े आओ। यहाँ बैठो। आज मैं राजा हूँ पर अगर मैं भिखारी भी होता तब भी मैं अपने दस्तखत पहचान लेता और अपना वायदा पूरा करता। इसलिये मेरे पास जो कुछ भी है हम वह आधा आधा बाँट लेते हैं।"

सो उसने किताब निकाली और शहरों को आधा आधा बाँटना शुरू किया — "यह मेरा है यह तुम्हारा है।" ऐसा कहते हुए उसने एक कागज पर सब शहर बाँट लिये सबसे अमीर शहर से ले कर सबसे गरीब झोंपड़ी तक।

बूढ़े ने अपना हिस्सा स्वीकार कर लिया पर फिर उसको यह कहते हुए भेंट कर दिया — "अब यह तुम्हीं रखो। मैं कोई बूढ़ा नहीं हूँ। मैं तो भगवान का भेजा हुआ देवदूत[43] हूँ जिसको भगवान ने मुझे तुम्हें तुम्हारे अच्छे कामों की वजह से बचाने के लिये भेजा

[43] Translated for the word "Angel"

था। अब तुम इस देश पर राज करो खुश रहो। भगवान करे तुम्हारा राज्य खूब अमीर रहे।”

इतना कह कर देवदूत गायब हो गया और राजा ने खुशी खुशी बहुत दिनों तक राज किया।

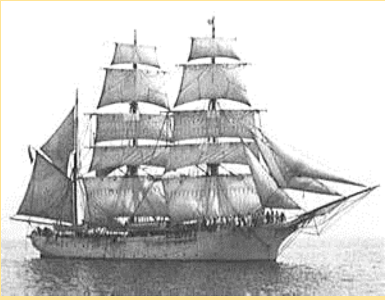

12 झूठ बोलने की शर्त[44]

एक दिन एक पिता ने अपने एक बेटे को मक्का ले कर उसका आटा पिसवाने के लिये चक्की पर भेजा। पर उसके जाने से पहले उसके पिता ने उससे कहा कि वह अपनी मक्का उस चक्की पर पिसवाने के लिये न ले जाये जिस पर "बिना दाढ़ी वाला"[45] मौजूद हो।

पर वह लड़का जब चक्की पर मक्का पिसवाने के लिये आया तो वहाँ तो एक "बिना दाढ़ी वाला" मौजूद था।

उसने उससे कहा — "भगवान तुम्हारा भला करें ओ बिना दाढ़ी वाले।"

आदमी बोला — "भगवान तुम्हारा भी भला करें बेटे।"

लड़का बोला — "क्या मैं यहाँ अपनी मक्का पीस सकता हूँ?"

वह आदमी बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। मेरी मक्का जल्दी ही खत्म हो जायेगी उसके बाद तुम अपनी मक्का जब तक चाहे तब तक पीस सकते हो।"

---

[44] Lying For a Wager. (Tale No 12)
"Die Luge und Die Wette" – Grimm No 44.

[45] Translated for the words "Yankee Beardless" – Beardless in Serbian national tales is the personification of craft or sharpness – a sort of Ultra

तब लड़के को अपने पिता की कही हुई बात याद आयी तो उसने वह चक्की छोड़ दी और आगे किसी दूसरी चक्की की तरफ चल दिया। पर बिना दाढ़ी वाले ने थोड़ी सी मक्का ली और एक छोटा रास्ता देख कर वह भी उसी चक्की की तरफ चल दिया जिस तरफ वह लड़का जा रहा था।

वह वहाँ लड़के से भी पहले पहुँच गया। उसने अपने साथ लायी मक्का चक्की में पिसने के लिये डाल दी।

जब लड़का वहाँ पहुँचा तो बिना दाढ़ी वाले को वहाँ भी देख कर वह तो भौंचक्का रह गया। वह वहाँ से भी भागा और तीसरी चक्की की तरफ जाने की कोशिश करने लगा। मगर बिना दाढ़ी वाला फिर से एक छोटा सा रास्ता ले कर अपनी मक्का के साथ तीसरी चक्की पर भी पहुँच गया।

उसने चौथी चक्की पर भी ऐसा ही किया। यह करते करते लड़का थक गया और यह सोचते हुए कि बिना दाढ़ी वाला तो हर चक्की पर उसको मौजूद मिलेगा ही सो उसने अपना थैला वहीं रख दिया और सोचा कि अबकी बार वह अपनी मक्का वहीं पिसवा कर ले जायेगा हालाँकि बिना दाढ़ी वाला वहाँ भी खड़ा था।

जब लड़के की मक्का पीसने की बारी आयी तो बिना दाढ़ी वाले ने कहा — "सुनो मेरे बेटे। चलो तुम्हारे आटे की एक रोटी बनाते हैं।"

लड़के के दिमाग में उसके पिता के कहे हुए शब्द अभी तक घूम रहे थे पर जब बिना दाढ़ी वाले ने ऐसा कहा तो वह अपने आपको रोक न सका और बोला “ठीक है। चलो बनाते हैं।”

बिना दाढ़ी वाला उठा उसने चक्की में पानी डालना शुरू किया और जब तक डालता रहा जब तक कि उसमें से उसका सारा आटा पिस कर निकला। अब उस आटे की रोटी तो बहुत बड़ी बनती।

उन्होंने एक बहुत बड़ी आग बनायी और उसमें रोटियाँ सिकने के लिये रख दीं। जब वे रोटियाँ सिक गयीं तो उनको दीवार के सहारे रख दिया गया।

यह कर के बिना दाढ़ी वाला बोला — “सुनो मेरे बेटे। अगर हमें अब ये रोटियाँ बाँटनी हैं तो हममें से किसी के लिये भी ये रोटियाँ काफी नहीं रहेंगी। तो ऐसा करते हैं कि हम लोग एक दूसरे से कुछ झूठ बोलते हैं और जिसका झूठ सबसे बड़ा होगा यह सारी रोटी उसी को मिलेगी।”

लड़के ने सोचा “अब तो मैं पीछे हट नहीं सकता सो मैं भी अपना सबसे अच्छा करने की कोशिश करता हूँ।” सो उसने बिना दाढ़ी वाले से कहा — “ठीक है पर पहले तुम शुरू करो।”

बिना दाढ़ी वाले ने कई झूठ बोले और जब वह झूठ बोलते बोलते थक गया तो लड़का बोला — “ओह मेरे प्यारे बिना दाढ़ी वाले। अगर तुम बस इतना ही जानते हो तब तो तुम कुछ नहीं

जानते। तुम बस सुनो और थोड़ा धीरज रखो और मैं तुम्हें अब सच्चा सच बताता हूँ।

अपने बचपन के दिनों में जब मैं बूढ़ा था तो हमारे घर में बहुत सारे शहद की मक्खी के छत्ते लगे हुए थे। अब यह मेरा काम था कि हर सुबह मैं उठ कर उन्हें गिनूँ। अब मेरे लिये यह बहुत आसान था कि मैं उन सबको गिन लूँ पर मैं उन सारे छत्तों को कभी नहीं गिन सका।

एक दिन जब मैं शहद की मक्खियाँ गिन रहा था कि उनमें से जो सबसे अच्छी मक्खी थी वह वहाँ नहीं थी। सो मैंने एक मुर्गे पर जीन सजायी उस पर चढ़ गया और अपनी मक्खी को ढूँढने के लिये चल दिया।

मैंने उसको समुद्र के किनारे ढूँढ लिया और देखा कि वह तो समुद्र के ऊपर उड़ गयी। मैंने उसका पीछा किया। जब तक मैं वहाँ पहुँचा तो मैंने देखा कि एक आदमी ने उसे पकड़ लिया और उसको अपने हल में जोत कर उससे अपना खेत जोतने लगा जिसमें वह बाजरा जोतने वाला था।

मैंने उस आदमी को पुकार कर कहा — "ओ भाई। यह तो मेरी मक्खी है। यह तुमको कैसे मिली।"

आदमी बोला — "अगर यह तुम्हारी मक्खी है तो इसे तुम ले लो। यह मक्खी तुम्हारी है।" और उसने मेरी मक्खी मुझे वापस कर दी और एक बड़ा थैला भर कर बाजरा भी दे दिया।

तब मैंने बाजरे का थैला अपनी कमर पर रखा। अपनी जीन मुर्गे की पीठ से हटा कर मक्खी पर रखी। मैं मक्खी पर चढ़ा और मुर्गे को अपने पीछे आने के लिये कहा ताकि उसको भी कुछ देर के लिये आराम मिल जाये।

जब मैं समुद्र पार करके आ रहा था तो अचानक से मेरे थैले का एक धागा टूट गया और उससे बने छेद में से उसका सारा बाजरा पानी में गिर गया।

जब तक मैं किनारे पर आया तब तक अँधेरा हो चुका था। मैं मक्खी से नीचे उतरा और उसको घास खाने के लिये छोड़ दिया। मुर्गे को मैंने अपने पास ही बाँध लिया और उसको कुछ भूसा खाने के लिये दे दिया। उसके बाद मैं सोने के लिये लेट गया।

पर जब मैं सुबह को उठा तो मैंने देखा कि भेड़ियों ने मेरी मक्खी को मार दिया है और उसे खा गये हैं। सारी घाटी में शहद भरा पड़ा है – टखनों तक गहरा।

तब मैं सोचने लगा कि मैं यह शहद किसमें इकट्ठा करूँ। तब मुझे याद आया कि अरे मेरे पास तो एक कुल्हाड़ी पड़ी है। मैं उसे ले कर जंगल गया और वहाँ कुछ जानवर मारने की कोशिश की ताकि मैं उनकी खालों से एक थैला बना सकूँ।

जंगल में मैंने दो हिरन एक एक पैर पर नाचते देखे तो मैंने उनकी एक टॉग अपनी छोटी सी कुल्हाड़ी से काट दी और दोनों को पकड़ लिया। दो हिरनों से मैंने तीन खालें निकालीं और उनके तीन थैले बनाये जिनमें मैंने सारा शहद भर लिया।

शहद से भरे तीनों थैले मैंने मुर्गे की पीठ पर रखे और जल्दी जल्दी घर चल दिया।

जब मैं घर पहुँचा तो मुझे पता चला कि मेरे पिता का तो अभी अभी जन्म हुआ है सो उन्होंने मुझे "पवित्र पानी"[46] लाने के लिये स्वर्ग भेजा।

मैं यह सोच ही रहा था कि यह पवित्र पानी लाने के लिये मैं ऊपर कैसे जाऊँ तो मुझे उस समय उस बाजरे की याद आयी जो समुद्र में गिर पड़ा था। सो मैं फिर समुद्र की तरफ भागा तो क्या देखता हूँ कि बाजरा तो बढ़ कर आसमान को छू रहा है।

बस मैं उसी बाजरे के सहारे सहारे ऊपर तक पहुँच गया। जब मैं स्वर्ग तक पहुँचा तो मैंने देखा कि बाजरा तो खूब बढ़िया पक गया है। और जिससे मैं वहॉ मिला उसने उसे काट लिया था और उसकी रोटी बना ली थी। उसके कुछ छोटे छोटे टुकड़े उसने गर्म दूध में भी डुबो लिये थे वह उस समय उनको खा रहा था।

मैंने उससे कहा — "भगवान तुम्हारी सहायता करे।"

---

[46] Translated for the words "Holy Water"

उसने भी यही कहा — "भगवान तुम्हारी सहायता करे।"

फिर उसने मुझे पवित्र पानी दिया और मैं उसे ले कर वापस चल पड़ा। इस बीच मैंने देखा कि वहाँ तो बहुत ज़ोर की बारिश हो चुकी है। समुद्र का पानी इतना बढ़ गया था कि वह मेरा बाजरा ही बहा कर ले गया था।

अब मैं क्या करूँ। अब मैं धरती पर कैसे उतरूँ।

तभी मुझे याद आया कि मेरे तो अपने बाल ही बहुत लम्बे हैं। अगर मैं सीधा खड़ा होऊँ तो वे धरती तक पहुँचते थे और जब मैं बैठता था तो वे मेरे कानों तक ही रहते थे।

सो मैंने एक चाकू लिया और एक एक कर के मैंने अपने बाल काटने शुरू कर दिये और जैसे जैसे मैं उनके सहारे सहारे नीचे उतरता गया उनको मैं एक दूसरे से बाँधता गया।

इस बीच अँधेरा हो गया। अब मैं बिना रोशनी के कैसे करूँ। मेरे पास दियासलाई की एक डिबिया तो थी पर मेरे पास लकड़ी नहीं थी। तभी मुझे याद आया कि मेरे ओवरकोट की किसी जेब में एक सुई पड़ी थी। वह सुई मुझे मिल गयी। मैंने उसे बीच में से तोड़ दिया और उससे आग जला ली।

जब उस आग से मैं काफी गर्म हो गया तो मैं उसी आग के पास लेट कर सो गया। मैं बहुत गहरी नींद सो गया पर बदकिस्मती से आग की एक चिनगारी मेरे बाल पर आ गिरी तो मैं भी सिर के बल नीचे आ गिरा तो कमर तक जमीन में धँस गया।

मैंने अपने चारों तरफ देखा कि ऐसे मैं वहाँ से कैसे निकलूँ। जब मुझे वहाँ कोई सहायता नहीं दिखायी दी तो मैं फावड़ा लाने के लिये पिता के पास भागा। तब उस फावड़े से मैंने अपने चारों तरफ की मिट्टी हटायी और मैं वहाँ से बाहर निकला। उसके बाद मैं पवित्र पानी ले कर पिता के पास लौटा।

जब मैं घर लौट कर आया तो काटने वाले लोग मक्का के खेतों में काम कर रहे थे। मक्का इतनी ऊँची खड़ी थी कि उसको काटने वाले उसको काटते काटते बहुत गर्म महसूस कर रहे थे।

तो मैंने उनसे चिल्ला कर कहा — "तुम लोग हमारी घोड़ी को यहाँ ले कर क्यों नहीं आते जो दो दिन लम्बी है डेढ़ दिन चौड़ी है और जिसकी पीठ पर बहुत बड़े बड़े पेड़ उगे हुए हैं। तुम उसको यहाँ ले आओ ताकि वह खेत पर थोड़ी छाया कर सके।"

मेरे पिता तुरन्त ही उस घोड़ी को वहाँ ले आये और फसल काटने वाले उसकी छाया में आराम से काम करते रहे। उसके बाद मैं थोड़ा पानी लेने गया पर वहाँ जा कर देखा तो पानी तो जमा पड़ा था सो मैंने अपना सिर लिया और उससे वह बर्फ तोड़ दी।

तब में उस पानी को ले कर फसल काटने वालों के लिये ले कर गया। मुझे देखते ही वे चिल्लाये — "अरे तुम्हारा सिर कहाँ है।"

मैंने अपने सिर को महसूस करने के लिये अपने हाथ उठाये तो देखा कि अरे मेरा सिर तो मेरे कन्धों पर ही नहीं था। असल में जब

मैंने अपने सिर से बर्फ तोड़ी थी तभी शायद मैं उसे वहीं छोड़ आया था। सो मैं उधर ही चल पड़ा।

पर एक लोमड़ा मुझसे पहले ही वहाँ पहुँच गया और मेरे सिर से मेरा दिमाग खाने के लिये निकाल रहा था। मैं धीरे से उसके पीछे पहुँचा और गुस्से में आ कर उसको बहुत ज़ोर से मारा। उसने भागना शुरू कर दिया।

जब वह भाग रहा था तो उसकी जेब से एक किताब निकल कर नीचे गिर पड़ी। मैंने वह किताब खोल कर पढ़ी तो उसमें लिखा था "सारी रोटी तुम्हारी है और बिना दाढ़ी वाले का कुछ भी नहीं है।"

और यह कह कर लड़के ने रोटी पकड़ ली ओर उसको ले कर घर भाग गया। बिना दाढ़ी वाला वहीं बैठा बैठा उसको पीछे से भागते देखता रहा।

13 नीच सौतेली माँ[47]

एक बार की बात है कि एक सौतेली माँ अपनी सौतेली बेटी से बहुत नफरत करती थी क्योंकि वह उसकी अपनी बेटी से बहुत ज़्यादा सुन्दर थी। अपनी बेटी को वह अपने साथ ही ले कर आयी थी। धीरे धीरे उसका पिता भी उसको नफरत करने लगा। वह अपनी पत्नी को खुश करने के लिये उसको डाँटता और पीटता भी था।

एक दिन उसकी दूसरी पत्नी ने कहा — "तुम्हारी बेटी को कहीं दूर भेज देते हैं। अब उसको अपनी देखभाल अपने आप करने दो।"

इस पर पिता ने पूछा — "पर हम उसे कहाँ भेज देंगे। वह बेचारी लड़की अकेली कहाँ जायेगी।"

तो उसकी दूसरी पत्नी ने कहा — "अगर तुम उसको कहीं छोड़ कर नहीं आये तो मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगी। अच्छा हो कि तुम उसको कल ही कहीं बाहर छोड़ आओ। तुम उसे जंगल ले जा सकते हो फिर वहाँ उसे चुपके से उसे वहीं छोड़ कर आ सकते हो।"

उसने इस बात को इतनी बार कहा कि आदमी को उसकी बात माननी ही पड़ी। फिर भी उसने उससे कहा कि वह उसकी बेटी के

---

[47] The Wicked Stepmother. (Tale No 13)
"Die Stiefmutter und ihr Stiefkind" – Grimm No 34.

लिये रास्ते के लिये कुछ खाने के लिये तैयार कर दे ताकि वह अपनी यात्रा के पहले दिन ही भूखी न मर जाये।

इस पर अगले दिन सौतेली माँ ने उसके लिये एक केक बना दी और अगले दिन बहुत सुबह उस लड़की का पिता उसे ले कर दूर चल दिया। वह उसको बीच जंगल में ले गया वहाँ उसे छोड़ा और घर वापस लौट गया।

लड़की बेचारी अपने पिता का शाम तक इन्तजार करती रही। वह सारा दिन जंगल में जंगल से बाहर जाने का रास्ता ढूँढती रही पर वहाँ से बाहर निकलने का उसे कोई रास्ता नहीं मिला। जब रात हो गयी तो रात बिताने के लिये वह एक पेड़ पर चढ़ गयी कि कहीं ऐसा न हो कि रात को जंगली जानवर आ कर उसे खा जायें।

वहाँ तो वास्तव में सारी रात उस पेड़ के नीचे से भेड़ियों के चिल्लाने की आवाजें आती रही। इतनी आवाजें सुन कर तो वह लड़की इतना डर गयी कि वह बड़ी मुश्किल से अपने आपको पेड़ से गिरने से बचा पायी।

सुबह होने पर वह पेड़ से नीचे उतरी और फिर से इधर उधर घूमती रही ताकि उसे जंगल से बाहर निकलने का शायद कोई रास्ता मिल जाये। पर जितना ज़्यादा वह जंगल में घूमती जाती थी उतने ही घने जंगल में पहुँचती जाती थी। लगता था जैसे उस जंगल का कहीं कोई अन्त ही नहीं था।

शाम को जब वह फिर से रात को रुकने के लिये किसी पेड़ की तलाश में थी कि उसको जंगल में कोई चीज़ चमकती दिखायी दी। वह उधर की तरफ ही चल दी। उसने सोचा कि शायद वहाँ पर रात को रुकने की कोई जगह मिल जाये सो चलती चलती वह वहाँ तक आ गयी। वहाँ आ कर उसने देखा कि वहाँ तो एक बड़ा सा मकान खड़ा है।

मकान के दरवाजे खुले हुए थे सो वह अन्दर चली गयी। वहाँ उसने कई बड़े बड़े कमरे देखे तो वह उनमें चक्कर काटती रही। हर दूसरा कमरा पहले कमरों से ज़्यादा अच्छा था। एक कमरे में एक मेज पर मोमबत्ती जल रही थी।

उसको लगा कि यह घर तो लगता है डाकुओं का है। पर वह डरी नहीं क्योंकि उसका अपना तर्क यह था कि डाकुओं से तो अमीर लोग डरते हैं और उसके पास तो कुछ है ही नहीं। वे लोग कुछ पूछेंगे तो वह कह देगी कि वह उनके पास रोटी के लिये काम करने को तैयार है।

उसने अपने थैले में से केक निकाली खाने के पहले की प्रार्थना कही और उसे खाना शुरू कर दिया। जैसे ही वह उसे खाने वाली थी कि एक मुर्गा उस कमरे में आया और उसकी केक लेने के लिये उसकी मेज पर कूद कर बैठ गया।

लड़की ने केक के कुछ टुकड़े किये और उसमें से एक टुकड़े का चूरा कर के उसकी तरफ फेंक दिया।

उसके बाद एक कुत्ता आया और बड़े दोस्ताना अन्दाज में उसके पास आ कर बैठ गया। उसने उसके लिये भी अपनी केक से एक छोटा सा केक का टुकड़ा तोड़ा और खिला दिया। फिर उसको अपने घुटनों पर बिठा लिया और पुचकारा। इसके बाद एक बिल्ला भी आया तो लड़की ने उसे भी खिलाया।

काफी देर बाद लड़की ने बहुत ज़ोर की आवाज सुनी जैसे कोई जंगली जानवर चला आ रहा हो। वह तो उसे देख कर बहुत डर गयी जब उसने उसके कमरे में कदम रखा। वह तो एक शेर था। पर शेर ने उसको देख कर अपनी पूँछ कुछ इस तरह से हिलायी कि उसको शेर पर दया आ गयी। उसने उसको भी केक का एक टुकड़ा खिलाया।

शेर ने उसके हाथ से केक खाया और उसका हाथ चाटने लगा जिससे लड़की का डर चला गया। उसने उसको प्यार से सहलाया और बाकी बचा केक भी उसको खिला दिया।

इसके बाद उसने अचानक ही बहुत सारे हथियारों की आवाज सुनी और यह देख कर तो वह बेहोश सी हो गयी जब उसने देखा कि कोई भालू की खाल पहने उस कमरे के अन्दर आया।

उसको देखते ही मुर्गा कुत्ता बिल्ला शेर सभी बहुत खुश होते हुए उससे मिलने चल दिये और वहाँ पहुँच कर उसके चारों तरफ घूमने लगे।

लड़की बेचारी को तो यह जानवर बहुत ही अजीब लगा। उसको लगा कि वह अभी अभी उसके ऊपर कूद कर उसे मार देगा।

पर उस डरावनी चीज़ ने अपनी भालू वाली खाल जिसने उसको सिर से पैर तक ढक रखा था उतार कर रख दिया। अब क्या था अब तो वह कमरा उस खाल के नीचे पहने उसके सुनहरे कपड़ों से चमकने लगा।

जब उसने देखा कि उसके सामने तो एक बहुत सुन्दर नौजवान चमकते कपड़े पहने खड़ा है तो वह लड़की तो उसको देखते ही बेहोश सी हो गयी।

वह उसके पास तक आया और बोला — "प्रिये डरो नहीं। मैं कोई बुरा आदमी नहीं हूँ। मैं एक राजा का बेटा हूँ और जब भी मुझे शिकार खेलना होता है तो मैं यहाँ आ जाता हूँ। मैं यह भालू की खाल पहन कर यहाँ आता हूँ ताकि मुझे कोई पहचान न ले।

जो मुझे देखते हैं वे यह समझते हैं कि मैं कोई भूत हूँ और मुझसे दूर भाग जाते हैं। कोई इस मकान में आने की हिम्मत भी नहीं कर सकता क्योंकि वह यह जानता है कि मैं यहाँ अक्सर ही आता रहता हूँ।

तुम पहली इन्सान हो जिसने इस महल में आने की हिम्मत की है। तुम्हें कैसे पता चला कि मैं भूत नहीं हूँ।"

तब उसने उसे बताया कि उसने न तो उसके बारे में और न ही कभी उसके इस मकान के बारे में कुछ सुना था। उसकी सौतेली माँ ने तो बस उसको घर से बाहर निकाल दिया था। और फिर जो कुछ भी उसके साथ घटा था वह सब उसने उसको बता दिया।

जब राजकुमार ने उस लड़की का हाल सुना तो उसको उस पर बहुत दया आयी। दुखी हो कर वह बोला — "लगता है कि तुम्हारी सौतेली माँ तुमसे बहुत ज़्यादा नफरत करती है पर देखो भगवान तुम्हें बहुत प्यार करता है। अगर तुम राजी हो तो मैं तुमसे शादी करने को तैयार हूँ। मुझसे शादी करोगी?"

लड़की बोली "हाँ।" अगले दिन वह उसको अपने पिता के महल ले गया और वहाँ उससे शादी कर ली।

कुछ समय बाद लड़की ने राजकुमार से विनती की कि वह अपने पिता को देखने जाना चाहती है। राजकुमार ने उसको जाने की इजाज़त दे दी। उसने बहुत सारा सोने का गहना पहना और अपने पिता के घर चली गयी।

इत्तफाक से उसका पिता घर पर नहीं था। सौतेली माँ उसको घर में आता देख कर बहुत डर गयी कि कहीं ऐसा न हो कि वह उससे बदला लेने आयी हो।

सो वह जल्दी जल्दी उसका घर में स्वागत करने के लिये आगे बढ़ी और बोली — "देख न। वह मैं थी जिसने तुझे खुशी के रास्ते पर भेजा।"

सौतेली बेटी ने अपनी सौतेली माँ को चूमा और अपनी सौतेली बहिन को गले लगाया और बोली कि उसको बहुत दुख था कि वह अपने पिता को घर पर नहीं देख पायी। जाते समय उसने अपनी सौतेली माँ को बहुत सारे पैसे दिये और चली गयी।

जब वह लड़की चली गयी तो सौतेली माँ ने बड़े ज़ोर से अपनी मुट्ठी हिलायी और चिल्लायी — "ज़रा रुक तो सही। तू अकेली ही नहीं है जो इतने अच्छ कपड़े पहने और इतनी अच्छी तरह से सजे। कल को मैं अपनी बेटी को भी तेरे पीछे पीछे वहाँ भेजूँगी।"

रात को जब उसका पति घर आया तो उसने उस दिन दिन में क्या हुआ उसको सब बता कर उससे कहा — "क्या यह ठीक नहीं होगा कि हम मेरी बेटी को भी उसकी किस्मत आजमाने के लिये जंगल भेज दें। क्योंकि तुम्हारी बेटी जिसको हमने जंगल भेजा था अभी तक तो वापस नहीं आयी पर वह आज ही वापस आयी तो सोने से चमकती हुई।"

आदमी ने एक लम्बी साँस भरी और तैयार हो गया। अगले दिन माँ ने अपनी बेटी के लिये बहुत सारी केक बना कर तैयार कर दीं। भुना हुआ माँस तैयार कर दिया। और यह सब दे कर उसको उसके पिता के साथ जंगल भेज दिया।

पिता उसको जंगल में बहुत दूर तक ले गया जैसे वह अपनी बेटी को ले गया था और वहाँ उसे छोड़ कर चला आया। जब उसे पता चला कि उसका पिता उसे छोड़ कर चला गया और वापस नहीं

आया तो उसने जंगल में जंगल से बाहर जाने का रास्ता ढूँढना शुरू किया। जल्दी ही उसको भी वही मकान दिखायी दे गया जिसमें उसकी सौतेली बहिन गयी थी।

वह उस मकान में घुस गयी। उसने देखा कि वहाँ कोई नहीं था सो उसने अन्दर से उसका दरवाजा अन्दर से यह कहते हुए बन्द कर लिया कि "अब अगर भगवान खुद भी यहाँ आयें तो मैं उनके लिये दरवाजा नहीं खोलूँगी।"

फिर उसने अपना थैला खोला। अपनी केक और भुना हुआ माँस निकाला और खाना शुरू कर दिया। जब वह खा रही थी तो मुर्गा कुत्ता बिल्ला वहाँ अचानक से आ गये और इस आशा में उसके पास प्यार से खेलने लगे कि वह उन्हें कुछ खाने के लिये दे देगी।

पर वह उनको देख कर बहुत गुस्सा हो गयी और बोली — "तुम सबको शैतान उठा कर ले जाये। यह खाना तो मेरे अपने लिये ही काफी नहीं है तो फिर तुम क्या सोचते हो कि मैं इसमें से तुमको कुछ दूँगी।" कह कर उसने उनको मारना शुरू कर दिया।

इस पर कुत्ता भौंकने लगा तो शेर वहाँ दहाड़ता हुआ आ गया। उसने लड़की को पकड़ लिया और मार कर उसे खा गया।

अगले दिन राजकुमार अपनी पत्नी के साथ वहाँ शिकार करने के लिये आया तो उसकी पत्नी ने अपनी बहिन की पोशाक पहचान ली। उसने उसके शरीर के छोटे छोटे टुकड़े इकट्ठे किये और अपनी सौतेली माँ के पास ले गयी।

इस बार उसको अपना पिता भी घर में मिल गया। वह यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि उसकी बेटी की शादी एक राजकुमार से हो गयी थी।

पर जब उसने सुना कि उसकी दूसरी पत्नी की बेटी मर गयी तो उसे बहुत दुख हुआ। फिर भी वह बोला — "उसको भगवान के हाथों यही मिलना चाहिये था क्योंकि वह तुझे बेकार में ही नफरत करती थी। वह वहॉ कुॅए पर है मैं जा कर उसे बताता हूॅ।"

जब सौतेली मॉ ने यह सुना कि उसकी बेटी के साथ यह क्या हो गया है तो उसने अपने पति से कहा — "मैं तुम्हारी बेटी को बिल्कुल सहन नहीं कर सकती। मैं तो उसकी तरफ देख भी नहीं सकती। हमको उसे और उसके पति को मार देना चाहिये। अगर तुम मुझे इसकी इजाज़त नहीं दोगे तो मैं इसी कुॅए में कूद कर अपनी जान दे दूॅगी।"

पति बोला — "मैं अपनी बेटी को खुद नहीं मार सकता।"

यह सुन कर वह चिल्लायी — "ठीक है अगर तुम उसे मार नहीं सकते और मैं उसे सहन नहीं कर सकती तो... ।"

कह कर वह कुॅए में कूद गयी।

14 चिड़िया लड़की[48]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके केवल एक ही बेटा था। जब उसका बेटा बड़ा हो गया तो उसने उसको दुनियाँ में घूमने के लिये भेजा। उसने उसको इसलिये भी बाहर भेजा था ताकि शायद उसको उसकी पसन्द की कोई लड़की मिल जाये जो उसकी पत्नी बनने के लायक हो।

राजा का बेटा अपनी यात्रा पर चल दिया। वह सारी दुनियाँ घूमा पर उसको उसकी पसन्द की कोई लड़की नहीं मिली जिसको वह इतना प्यार करता कि उसको अपनी पत्नी बना सकता।

यह देख कर कि उसने कितनी मुश्किलें उठायी हैं इतना समय और पैसा लगाया है जिससे उसे कोई फायदा नहीं हुआ तो उसने अपने आपको मारने की सोची।

यह सोच कर वह एक बड़े से पहाड़ पर चढ़ गया। उसने सोचा कि रात को उसकी चोटी से कूद जायेगा। क्योंकि उसकी इच्छा यह भी थी कि मरने के बाद उसकी हड्डियों तक का पता न चले।

जब वह पहाड़ पर चढ़ गया तो उसने तेज़ धार वाली एक चट्टान पहाड़ से बाहर की तरफ निकलती देखी। उसने सोचा कि वह

[48] The Bird Girl. (Tale No 14)

वहीं से कूदेगा तो वह उसी की तरफ बढ़ने लगा। जब वह वहाँ से कूदने ही वाला था कि उसके पीछे से एक आवाज आयी।

"रुक जाओ ओ आदमी रुक जाओ। **365** के लिये रुक जाओ जो एक साल में होते हैं।"

यह आवाज सुन कर उसने पीछे पलट कर देखा तो उसे कोई दिखायी नहीं दिया। उसने पूछा "यह कौन है जो मुझसे बोल रहा है। मेरे सामने आओ ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ। जब तुम्हें पता चलेगा कि मैं कितना अभागा हूँ तो तुम भी मुझे मरने से नहीं रोकोगे।"

उसके मुँह से बस ये शब्द निकले ही होंगे कि एक बूढ़ा उसके सामने प्रगट हो गया। उसके बाल इतने सफेद थे जैसे ऊन। प्रगट होते ही वह बोला — "मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूँ। फिर भी मेरी बात सुनो। तुम वह ऊँची पहाड़ी देख रहे हो न?"

"हाँ देख तो रहा हूँ।" राजकुमार बोला।

"और वहाँ तुम्हें बहुत सारे संगमरमर के टुकड़े भी उसके ऊपर दिखायी दे रहे हैं?"

राजकुमार बोला — "हाँ दिखायी दे रहे हैं।"

बूढ़े ने अपना बोलना जारी रखा — "उस पहाड़ की चोटी पर एक बुढ़िया रहती हे जिसके बाल सुनहरे हैं। वह एक चिड़िया को दिन रात अपनी छाती से लगाये वहीं बैठी रहती है। जो भी इस

चिड़िया को अपने हाथ में ले लेगा वह दुनियाँ का सबसे खुशकिस्मत आदमी होगा।

पर ध्यान रखना। अगर तुम्हारी उस चिड़िया को लेने की इच्छा हो तो उसके तुम्हें देखने से पहले तुम्हें उसके बाल पकड़ने होंगे। अगर वह तुम्हारे उसके बाल पकड़ने से पहले तुम्हें देख लेती है तो तुम वहीं की वहीं उसी जगह पत्थर के बन जाओगे।

इसी लिये ऐसा हुआ कि जो कोई भी उस चिड़िया को पकड़ने गया उसे बुढ़िया ने पहले ही देख लिया और वह संगमरमर का बन गया।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसने सोचा कि मेरे लिये तो यह एक ही बात है चाहे मैं यहाँ मरूँ या वहाँ मरूँ। अगर मैं उस चिड़िया को पकड़ लेता हूँ तब तो मेरे लिये वैसे ही बहुत अच्छा हे और अगर नहीं पकड़ पाया तो जैसा मैंने सोचा है मैं मर जाऊँगा।

सो वह उस पहाड़ी पर चढ़ गया। जब वह उस बुढ़िया के पास पहुँचा तो वह बहुत ही सावधानी से उसके पास पहुँचा ताकि वह बुढ़िया की नजर से बचा रहे। क्योंकि खुशकिस्मती से वह उसकी तरफ पीठ कर के लेटी हुई थी। वह धूप सेक रही थी और चिड़िया से खेल रही थी।

जब वह उसके काफी पास पहुँच गया तो वह एकदम से उसके ऊपर कूद गया और उसके बाल पकड़ लिये। जब उसको लगा कि

वह उसकी पकड़ से नहीं छूट सकती थी तब वह बोली — "तुमको मुझसे क्या चाहिये?"

वह बोला "मुझे वह चिड़िया चाहिये जो तुम्हारे पास है। और साथ में तुम इन सब ईसाई आत्माओं को ज़िन्दा कर दो।"

बुढ़िया राजी हो गयी। उसने उसे चिड़िया दे दी। फिर उसने अपने मुँह से नीले रंग की एक हवा उन संगमरमर के टुकड़ों पर फेंकी तो वे सब मूर्तियाँ ज़िन्दा हो गयीं।

राजा का बेटा अपने हाथ में चिड़िया लिये हुए इतना खुश था कि उसने उसको चूम लिया। जैसे ही उसने उसे चूमा कि वह तो दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की बन गयी।

एक जादू करने वाली ने इस लड़की को चिड़िया में बदल दिया था ताकि वह बहुत सारे लोगों को आकर्षित कर सके। उस लड़की को देख कर राजा का बेटा बहुत खुश हो गया। वह उसको साथ ले कर अपने घर वापस लौटने लगा।

जब वे पहाड़ी से नीचे उतर रहे थे तो रास्ते में लड़की ने उसको एक छोटा सा डंडा दिया और कहा — "यह लो। यह डंडा वह सब काम करेगा जो भी तुम इससे करने के लिये कहोगे।"

सो राजकुमार ने उसे एक बार एक पत्थर पर मारा तो उसमें से बहुत सारे सोने के सिक्के निकल आये। उनमें से बहुत सारे सिक्के उन्होंने रास्ते के लिये रख लिये।

जब वे चलते जा रहे थे तो वे एक बहुत बड़ी नदी के पास आ पहुँचे। वहाँ उनको कुछ ऐसा नहीं दिखायी दे रहा था जिससे वे नदी पार कर सकें। तो राजकुमार ने नदी की तली पर डंडा एक बार मारा तो वहाँ पानी अलग हो कर सूखा रास्ता निकल आया। अब वे लोग उस सूखे रास्ते पर चल कर नदी पार कर गये।

कुछ दूर और आगे चले तो उनको भेड़ियों का एक झुंड मिला। भेड़ियों ने उनके ऊपर हमला बोल दिया पर राजकुमार ने उनको अपनी डंडी से मारा तो वे सब चींटी बन कर इधर उधर भाग गये।

आखिर राजकुमार अपनी पत्नी को ले कर अपने राज्य वापस आ गया। घर आ कर उन दोनों की शादी हो गयी और फिर वे बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे।

15 सर पैपरकौर्न[49]

एक बार तीन भाई एक जंगल में गये जहॉ से उनको बिल्डिंग बनाने के लिये पेड़ चुन कर काट कर लाने थे। जाने से पहले उन्होंने अपनी मॉ से कहा कि वह उनकी बहिन को उनका खाना ले कर उस जंगल में भेजना नहीं भूले।

मॉ ने उससे जैसा कहा गया था वैसा ही किया। उसने अपनी बेटी को खाना ले कर जंगल में भेज दिया। लड़की जब जंगल की तरफ जा रही थी तो रास्ते में उसको एक बड़े साइज़ का आदमी[50] मिल गया। वह उसे उठा कर एक गुफा में ले गया जहॉ वह रहता था।

भाइयों ने सारा दिन अपनी बहिन का इन्तजार किया पर वह नहीं आयी। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि उनकी मॉ ने उसके हाथ उनके लिये खाना क्यों नहीं भेजा।

आखिर दो दिन जंगल में रहने के बाद वे इस देर के लिये बहुत चिन्तित और गुस्सा हो गये तो घर गये। घर जा कर उन्होंने अपनी मॉ से पूछा कि उसने उनकी बहिन को खाना ले कर जंगल क्यों नहीं भेजा।

---

[49] Sir Peppercorn. (Tale No 15)

[50] Translated for the word “Giant”

माँ ने बताया कि उसने तो उसको तीन दिन पहले ही उनके लिये खाना ले कर भेजा था बल्कि वह तो आश्चर्य कर रही थी कि वह अभी तक वापस क्यों नहीं आयी।

जब उन तीनों ने यह सुना तो वे भी अपनी बहिन के लिये बहुत परेशान हुए। सबसे बड़े भाई ने कहा — "ठीक है मैं जंगल जाता हूँ और अपनी बहिन को ढूँढ कर लाता हूँ।" सो वह वहाँ से उसकी खोज में चल दिया।

कुछ देर तक इधर उधर घूमने के बाद उसको एक जानवर चराने वाली स्त्री मिली जो भेड़ चरा रही थी। उसने भेड़ चराने वाली से बड़ी उत्सुकता से पूछा कि क्या उसने उसकी बहिन को जंगल में कहीं देखा है। या फिर क्या वह यह बता सकती है कि उसकी बहिन कहाँ है।

भेड़ चराने वाली ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। मैंने एक लड़की को यहाँ से खाना ले जाते देखा था। पर रास्ते में उसको एक बड़े साइज़ का आदमी मिल गया जो उसको उठा कर अपनी गुफा में ले गया।"

इस पर नौजवान ने उस बड़े साइज़ के आदमी की गुफा का रास्ता पूछा जो उस स्त्री ने उसे बता दिया। उसकी गुफा एक गहरी घाटी में छिपी पड़ी थी। भाई तुरन्त ही वहाँ गया और अपनी बहिन का नाम ले कर उसे पुकारने लगा।

कुछ ही देर में लड़की गुफा के दरवाजे पर आ गयी।

अपने बड़े भाई को सामने खड़ा देख कर उसने उसको घर के अन्दर बुलाया। जब वह इस गुफा में अन्दर घुसा तो वह तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि वह केवल गुफा ही नहीं वह तो एक बहुत बड़ा शानदार महल था।

जब वह वहाँ खड़ा खड़ा अपनी बहिन से बात कर रहा था कि उसको अपन नया घर कैसा लगा कि तभी उसने अपने सिर के ऊपर घिर्र की आवाज सुनी और उसके बाद एक बहुत भारी गदा गुफा के सामने ऊपर से नीचे फर्श पर गिरती हुई सुनी।

पहले तो वह डर गया पर फिर उसकी बहिन ने उसे बताया कि यह उस बड़े साइज़ के आदमी के घर लौटने के बताने का तरीका था कि वह अपने आने के समय से तीन घंटे पहले अपनी गदा यहाँ फेंक देता था ताकि वह उसके लिये खाना बनाना शुरू कर दे।

जब ॲधेरा होने लगा तो बड़े साइज़ का आदमी घर आया। उसको तुरन्त ही पता चल गया कि कोई अजनबी उसके घर में है। उसके गुस्से भरे सवाल के जवाब में लड़की ने जवाब दिया कि वहाँ केवल उसका भाई था जो उससे मिलने आया था।

जब बड़े साइज़ के आदमी ने यह सुना तो गुफा के दरवाजे पर गया और एक चरवाहे से अपनी भेड़ों के झुंड में से एक सबसे मोटी भेड़ भूनने के लिये कहा।

जब उसका मॉस तैयार हो गया तो उसने अपने साले को बुलाया भेड़ को दो बराबर हिस्सों में बॉटा और उससे कहा — “मेरे

प्यारे साले साहब। अब जो मैं आपसे कह रहा हूँ आप उसे ध्यान से सुनिये। अगर आप मेरे खाने से पहले अपना खाना खत्म कर लेंगे तो मैं आपको इजाज़त देता हूँ कि आप मुझे मार सकते हैं।

पर अगर मैं अपना खाना आपसे पहले खत्म कर लेता हूँ तो मैं निश्चित रूप से आपको मार दूँगा।"

यह सुन कर तो साले साहब डर के मारे थर थर कॉपने लगे। बुरा सोचते हुए उसने जल्दी जल्दी खाना शुरू किया। उसने अभी तीन कौर ही खाये होंगे कि उसने देखा कि बड़े साइज़ के आदमी ने तो अपने हिस्से का खाना खत्म कर लिया था।

अब तो वह कुछ नहीं कर सकता था। अपनी धमकी के अनुसार उसने अपने साले साहब को खा लिया।

अब कुछ समय तक तो दोनों भाइयों और उनकी मॉ ने उस लड़के का बेचैनी से इन्तजार किया कि वह आता होगा पर फिर जब भाई और बहिन दोनों में से किसी का पता नहीं चला तो दूसरा भाई बोला कि अबकी बार वह उन दोनों की तलाश में जायेगा।

सो वह भी उसी जंगल की तरफ चल पड़ा जिधर उसका भाई गया था। उसी रास्ते में उसको भी वही भेड़ चराने वाली स्त्री मिली। उसने उससे पूछा कि क्या उसने किसी आदमी या लड़की को देखा था।

उसने इस भाई को भी वही जवाब दिया जो उसने उसके बड़े भाई को दिया था कि लड़की को एक बड़े साइज़ का आदमी उठा

कर अपनी गुफा में ले गया था। उसने भी उससे उस बड़े साइज़ के आदमी की गुफा का रास्ता पूछा। चरवाहिन ने उसको रास्ता बता दिया तो वह भी उधर ही की तरफ चल दिया। और गुफा तक पहुँच गया।

वहाँ पहुँच कर उसने अपनी बहिन को उसके नाम से पुकारा। बहिन बाहर निकल कर आयी और उसको घर के अन्दर ले गयी। वहाँ पहुँच कर उसका भी वही हाल हुआ जो उसके बड़े भाई का हुआ था।

क्योंकि वह भी अपने हिस्से का खाना बड़े साइज़ के आदमी से जल्दी नहीं खा सका सो उसने अपने इन दूसरे साले साहब को भी मार दिया।

जल्दी ही तीसरे भाई ने कहा कि अबकी बार अपने भाइयों और बहिन को ढूँढने के लिये वह जायेगा। सो वह भी चला और चरवाहिन के बताये रास्ते पर चल कर अपनी बहिन के घर पहुँच गया। बहिन ने उसको भी घर में अन्दर बुला लिया।

उसको भी आधी भेड़ खाने के लिये कहा गया या फिर उसे मार दिया जायेगा। अपने दूसरे भाइयों की तरह से वह भी अपने हिस्से का खाना बड़े साइज़ के आदमी से जल्दी नहीं खा सका सो उसका भी वही हाल हुआ जो उसके दोनों भाइयों का हुआ था।

इस तरह लड़की के तीनों भाई मारे गये। सो जब कोई भी लौट कर नहीं आया तो माँ ने भगवान से प्रार्थना की कि अब अपने तीनों

बेटों के खो जाने के बाद भगवान उसको एक बेटा और दे दे चाहे वह एक काली मिर्च के दाने[51] के बराबर ही बड़ा क्यों न हो।

जैसे ही माता पिता ने प्रार्थना की कि उनकी इच्छा पूरी हुई। कुछ दिनों बाद उनके एक बेटा हुआ। वह साइज़ में इतना छोटा था कि उन्होंने उसका नाम ही काली मिर्च[52] रख दिया।

जब वह लड़का कुछ बड़ा हो गया तो वह दूसरे लड़कों के साथ खेलने के लिये बाहर जाने लगा। एक दिन बच्चों में आपस में कुछ झगड़ा हुआ तो एक लड़के ने उससे कहा — "भगवान करे तेरे साथ भी वही हो जो तेरे तीनों बड़े भाइयों के साथ हुआ।"

यह सुन कर काली मिर्च तुरन्त ही घर दौड़ गया और अपनी माँ से पूछा कि जो कुछ उस लड़के ने उससे कहा उसका क्या मतलब था। सो माँ को मजबूरन अपने चारों बच्चों की कहानी उसको बतानी पड़ी।

उसने कहा कि तुम्हारे तीन बड़े भाई अपनी खोयी हुई बहिन के ढूँढने गये थे और फिर कभी नहीं लौटे। जैसे ही काली मिर्च ने यह सुना तो उसने सारे घर में पुराने लोहे के टुकड़ों को ढूँढना शुरू कर दिया।

[51] Translated for the word "Peppercorn"

[52] Mr Peppercorn

जब उसे कुछ टुकड़े मिल गये तो वह उनको एक लोहार के पास ले गया ताकि वह उनसे एक गदा बनवा सके। लोहार ने कहा कि वह कल आ कर अपनी गदा ले जाये।

अगले दिन जब वह अपनी गदा लेने गया तो लोहार ने उसको जो गदा उसने बनायी थी दे दी और बोला "अब इसके बनाने की मजदूरी दो।"

इस पर काली मिर्च ने कहा — "पहले मुझे यह तो देख लेने दो कि यह गदा मजबूत भी है या नहीं।"

कह कर उसने वह गदा ऊपर हवा में उछाल दी और अपना सिर आगे कर दिया ताकि वह उसे अपने सिर पर सँभाल ले। जैसे ही वह उसके सिर पर गिरी वह टूट गयी। काली मिर्च ने जब उसे इस तरह टूटते हुए देखा तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उस लोहार को मार दिया।

फिर उसने लोहे के उन टुकड़ों को बटोरा और उन्हें एक उससे ज़्यादा अच्छे लोहार के पास ले गया। जल्दी ही उसको एक और अच्छा लोहार मिल गया पर वह उससे गदा बनाने का एक डकैट[53] मॉग रहा था।

काली मिर्च बोला कि वह उसको गदा बनाने का एक डकैट जरूर दे देगा अगर उसने उसको सचमुच मजबूत गदा बना कर दे दी

[53] Ducat – European currency in those times

तो। सो अगली सुबह वह अपनी गदा लेने के लिये वहा पहुँचा और गदा माँगी।

लोहार बोला "पर पहले तुम मुझे एक डकैट दो तब मैं तुम्हें तुम्हारी गदा दूँगा।"

काली मिर्च बोला — "तुम्हारा डकैट मेरी जेब में रखा है। पर उसे तुम्हें देने से पहले मैं यह तो देख लूँ कि मेरी यह गदा मजबूत भी बनी है या नहीं।"

कह कर उसने उससे गदा ली और हवा में ऊपर उछाल दिया और फिर उसको अपने सिर पर लेने के लिये अपना सिर आगे कर दिया। जैसे ही वह उसके सिर से टकरायी उसके टुकड़े टुकड़े हो गये। यह देख कर उसे बहुत गुस्सा आया और उसने इस दूसरे लोहार को भी मार दिया।

उसने अपने लोहे के टुकड़े फिर से उठाये और उनको ले कर एक तीसरे लोहार के पास ले गया। उसने वायदा किया कि वह उसके लिये एक बहुत ही मजबूत गदा बना देगा पर इसके लिये उसको उसे एक डकैट देना पड़ेगा।

अगले दिन जब काली मिर्च अपनी गदा लेने गया तो उसने उसकी बनायी हुई गदा को तीन बार ऊपर उछाला और तीनों बार

उसे अपने सिर पर लिया। तीनों बार उसने उसके सिर पर गूमड़[54] डाल दिया पर वह खुद नहीं टूटी।

काली मिर्च ने उसको एक डकैट दिया और अपनी गदा ले कर वहॉ से चल दिया। अब तो उसके पास बहुत अच्छी गदा थी सो वह सीधा उसी जंगल की तरफ चल दिया जिसमें उसके तीनों भाई और बहिन खो गये थे।

कुछ देर बाद वह भी उसी जगह आ गया जहॉ वह चरवाहिन भेड़ें चरा रही थी। उसने उससे अपने भाइयों और बहिन के बारे में पूछा तो वह बोली कि लड़की को तो एक बड़े साइज़ वाला आदमी उठा कर ले गया है। और तीन भाइयों को उसने उधर जाते तो देखा है पर वापस आते नहीं देखा।

काली मिर्च की समझ में कुछ नहीं आया तो वह भी उसी गुफा में जा पहॅुचा और अपनी बहिन का नाम ले कर पुकारा। बहिन ने सोचा "मेरे तो तीन भाई थे तीनों इस राक्षस ने मार डाले हैं तो अब कौन है जो मुझे मेरे नाम से पुकार रहा है।"

वह गुफा के दरवाजे तक गयी और पूछा — "यह कौन है जो मुझे बुला रहा है। मेरा तो कोई भाई ही नहीं है।"

काली मिर्च बोला — "मैं तुम्हारा भाई हॅू मैं तुम्हारे घर छोड़ने के बाद पैदा हुआ था। मेरा नाम काली मिर्च है।"

---

[54] Translated for the word "Bump"

अब सब जानने के बाद तो उसके बाद बिल्कुल ही समय नहीं था कि वह अपनी बहिन से कुछ बात कर पाता। कि इतने में ही उसने घिर्र की आवाज सुनी और बड़े साइज़ के आदमी की गदा गुफा के सामने आ पड़ी।

एक पल को तो काली मिर्च बहुत डर गया पर जल्दी ही सॅभल भी गया। उसने जमीन में से राक्षस की गदा खींच ली और पलट कर उसी को मारी। राक्षस को तो यही समझ में नहीं आया कि यह कौन था जो उसकी गदा से उसी को मार रहा था। उसने सोचा कि शायद आज उसे उसी की टक्कर का कोई आदमी लड़ने के लिये मिल गया है।

जब वह बड़े साइज़ का आदमी घर में घुसा तो उसने उससे पूछा "घर में कौन है?"

लड़की बोली — "यह मेरा सबसे छोटा भाई है।"

जैसे उसने पहले उसके भाइयों के लिये एक मोटी भेड़ काटने और भूनने का हुक्म दिया था इस बार उसने इसके लिये एक भेड़ लाने का हुक्म दिया।

जब भेड़ उसके पास आ गयी तो उसने उसे अपने हाथों से मारा और उसे भूनने के लिये तैयार करने लगा। जब वह यह कर रहा था तो वह काली मिर्च से बोला — "क्या तुम मॉस को उलट पलट दोगे? आग को ज़रा सा ठीक से देख लोगे?"

काली मिर्च बोला — "मैं जंगल से लकड़ी लाना और फिर आग जलाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

कह कर वह चला गया और अपनी गदा से उसने कई बड़े बड़े पेड़ गिरा दिये। उनको ला कर उसने गुफा के मुँह पर ला कर रख दिया और उन्हें जला कर एक बहुत बड़ी आग सुलगा दी।

जब भेड़ भुन गयी तो बड़े साइज़ के आदमी ने उसे दो हिस्सों में बाँट दिया। उनमें से एक हिस्सा उसने काली मिर्च को देते हुए कहा — "लो यह आधा हिस्सा तुम लो और इसका दूसरा आधा हिस्सा मैं लेता हूँ। अगर इसको तुम मेरे खाने से पहले खा गये तो तुम मुझे मारने के लिये आजाद हो और अगर नहीं खा पाये तो मैं निश्चित रूप से तुम्हें मार दूँगा।"

सो काली मिर्च और बड़े साइज़ का आदमी दोनों अपना अपना खाना खाने बैठे – जितना जल्दी वे खा सकते थे उतनी जल्दी खाते हुए बड़े बड़े टुकड़े निगलते हुए गले में फँसते हुए।

आखिर काली मिर्च ने एक चाल खेली। वह अपना हिस्सा जल्दी खाने में सफल हो गया सो शर्त के अनुसार उसने बड़े साइज़ के आदमी को मार दिया। इसमें उसकी बहिन ने उसकी सहायता की।

फिर उसने उसका सारा खजाना उठाया और उसके महल में एक जगह पर इकट्ठा कर के रख दिया और फिर वह खजाना और

अपनी बहिन को साथ ले कर घर लौट आया। उनके माता पिता उन लोगों को देख कर बहुत खुश हुए।

काली मिर्च कुछ समय तक अपने माता पिता और बहिन के साथ बड़े साइज़ के आदमी के खजाने पर रहा। जब उसने देखा कि उसका खजाना खत्म होने पर आ रहा है तो वह अपनी किस्मत आजमाने के लिये दुनियाँ में निकल पड़ा।

X X X X X X X

काफी जगह घूमने के बाद वह एक बड़े से शहर में आया। वहाँ उसने देखा कि एक जगह बहुत सारी भीड़ इकट्ठी हो रखी है। उस भीड़ के बीच में एक आदमी था जिसके हाथ में लोहे का एक भाला सा था।[55] वह जब तब उस लोहे को दबा कर उसमें से पानी निचोड़ देता था।

उसकी यह ताकत देख कर पास खड़े लोग उसकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे और आश्चर्य प्रगट कर रहे थे। काली मिर्च उसके पास गया और उससे बोला – "क्या तुम किसी ऐसे आदमी को जानते हो जो दुनियाँ में तुमसे ज़्यादा ताकतवर है?"

---

[55] Translated from the word "Pikeman"

वह बोला — "हॉ। ऐसा केवल एक आदमी ज़िन्दा है जो मुझसे ज़्यादा ताकतवर है और वह है काली मिर्च। उसके सिर पर अगर कोई गदा भी मार दो तो उसके सिर पर कोई असर नहीं पड़ता।"

यह सुन कर काली मिर्च ने उसको बताया कि वह कौन था और उससे कहा कि अच्छा होगा कि वे दोनों साथ साथ दुनियाँ घूमें।

भाले वाला आदमी इस बात पर राजी हो गया और बोला — "इससे ज़्यादा खुशी की बात मेरे लिये और क्या हो सकती है कि मुझे तुम्हारे जैसा भरोसे वाला आदमी मिल जाये।"

और वे दोनों निकल पड़े। चलते चलते वे एक और शहर में आ पहुँचे। एक जगह भीड़ इकट्ठी देख कर वे उधर की तरफ चल दिये कि "देखें यहाँ क्या मामला है।"

वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक नदी के किनारे बैठा है और नौ चक्कियों के पहियों को अपनी छोटी उँगली से घुमा रहा है।

उन्होंने उससे पूछा — "क्या कोई और आदमी भी है जो तुमसे भी ज़्यादा ताकतवर हो?"

वह बोला — "हॉ है। मुझसे ज़्यादा ताकतवर दो आदमी है – एक तो काली मिर्च और दूसरा भाले वाला।"

यह सुन कर काली मिर्च और भाले वाले ने उसको बताया कि वे कौन थे और उससे कहा कि वह भी दुनियाँ घूमने के लिये उनके

साथ चल सकता है। चक्की घुमाने वाला भी उनके साथ घूमने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गया। सो तीनों एक साथ यात्रा पर चल दिये।

चलते चलते वे फिर एक बड़े से शहर में आये जहाँ सब लोग परेशान से घूम रहे थे क्योंकि किसी ने वहाँ के राजा की तीन बेटियाँ चुरा ली थीं।

राजा ने सारे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा रखा था कि जो कोई भी उसकी तीनों बेटियों को ढूँढ लायेगा वह उनको बहुत बड़ा इनाम देगा पर फिर भी उनको ढूँढने के लिये जाने की किसी की हिम्मत नहीं थी।

जैसे ही काली मिर्च और उसके दोनों साथियों ने यह बात सुनी तो वे तीनों राजा के पास गये और उससे उसकी तीनों बेटियों को ढूँढने की इजाज़त माँगी और 100000 या एक लाख गाड़ी भर कर लकड़ी माँगी।

राजा ने उनको वह दे दिया जो उन्होंने माँगा था। उस लकड़ी से उन्होंने शहर के चारों तरफ एक बाड़ बना दी। यह करके अब वे वहाँ की पहरेदारी करने लगे।

पहली सुबह उन्होंने अपने खाने के लिये एक बैल तैयार किया और एक दूसरे से पूछा कि कौन आदमी उस माँस की निगरानी रखेगा जबकि दूसरे दो उस बाड़े की पहरेदारी करेंगे।

भाले वाला आदमी बोला कि वह उन दोनों के पीछे वहीं रुकेगा और मॉस की निगरानी करेगा। जब वे लोग शाम को बाड़े की पहरेदारी से वापस लौटेंगे तो वह उनके लिये शाम का खाना तैयार करके रखेगा।

जब भाले वाले आदमी ने देखा कि उसका बैल अच्छी तरह भुन चुका है तो किसी आवाज को सुन कर वह डर गया। उसने देखा तो उसके सामने एक आदमी खड़ा था जिसका माथा तीन फीट ऊँचा था और उसकी दाढ़ी नौ इंच लम्बी थी।

इस आदमी ने भाले वाले आदमी से कहा — "गुड मौर्निंग।"

पर भाले वाला आदमी उसको अचानक इस तरह से आया देख कर इतना ज़्यादा डर गया कि बजाय उसको कोई जवाब देने के वह वहॉ से भाग गया।

तीन फीट माथे वाला और नौ इंच दाढ़ी वाला इससे बहुत सन्तुष्ट था। उसने आराम से बैठ कर वहॉ अपना खाना खाया और जल्दी ही सारा बैल खत्म कर लिया। खाना खा कर वह वहॉ से उठा और चला गया।

कुछ देर बाद ही सर काली मिर्च और चक्की घुमाने वाला खाना खाने के लिये वापस लौटे और क्योंकि वे बहुत भूखे थे इसलिये वे दूर से ही चिल्लाते हुए आ रहे थे — "हमें जल्दी खाना दो हमें बहुत भूख लगी है।"

पर चक्की घुमाने वाला तो डर के मारे झाड़ियों में छिपा बैठा था। वह वहीं से बोला — "अब हमारे पास कोई खाना नहीं है। अभी थोड़ी देर पहले तीन फुट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला यहाँ आया था। वह सारा का सारा बैल खा गया उसने एक कौर भी नहीं छोड़ा। मैं तो उसको देख कर बहुत डर गया था सो मैं तो उसके सामने कुछ बोल ही नहीं सका।"

काली मिर्च और चक्की घुमाने वाले दोनों ने भाले वाले को अपना खाना बर्बाद करने के लिये बहुत डाँटा पर उसने उसका एक बार भी विरोध नहीं किया।

चक्की घुमाने वाला बोला — "कल माँस की रखवाली मैं करूँगा और अगर वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला कल आया तो मैं उसे कल जरूर रोकूँगा।"

सो अगले दिन चक्की घुमाने वाला माँस के पहरे पर बैठा और उसे भूनना शुरू किया। काली मिर्च और भाले वाला बाड़ की पहरेदारी करने चले गये जो उन्होंने शहर के चारों तरफ बनायी थी।

पहले की तरह से खाने के समय के ठीक पहले वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला जंगल में से निकल कर फिर वहाँ आया और सीधा बैल की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने लालचीपने से उसको लेने के लिये अपना हाथ बढ़ाया।

चक्की घुमाने वाला भी उसको इस तरह अचानक आया देख कर इतना डर गया कि वह भी वहाँ से भाग लिया और जा कर छिप गया।

काली मिर्च और भाले वाला जब अपना काम खत्म कर के खाना खाने के लिये लौटे तो देखा कि वहाँ तो कुछ भी नहीं था। सो उन्होंने चिल्ला कर पूछा "हमारा खाना कहाँ है?"

इस पर चक्की घुमाने वाले ने कहा — "यहाँ कोई माँस नहीं है। वह तीन फुट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला यहाँ आया था वही सब खा गया। वह देखने में इतना भयानक लग रहा था कि मेरी तो उससे कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं हुई।"

अब शिकायत करना तो बेकार था सो काली मिर्च बस यही बोला — "कल बैल की रखवाली मैं करूँगा और तुम दोनों बाड़ की रखवाली करना। मैं देखता हूँ कि हम तीसरे दिन बिना खाना खाये कैसे रहते हैं।"

सो अगले दिन भाले वाला और चक्की घुमाने वाला दोनों तो बाड़ पर पहरा देने चले गये और काली मिर्च खाना बनाने के लिये रह गया।

जैसे पहले दो दिन हुआ था उसी तरह से उस दिन भी खाना तैयार होने से थोड़ी देर पहले ही वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला वहाँ आया और माँस लेने के लिये आगे बढ़ा।

मगर काली मिर्च ने उसको एक ज़ोर का धक्का दे दिया और बोला — "तुम्हारी वजह से मैंने दो दिन से कुछ नहीं खाया है पर जब तक मेरे कन्धों पर मेरा सिर रखा है यानी मैं ज़िन्दा हूँ तीसरे दिन मैं ऐसा नहीं होने दे सकता।"

वह आदमी उसकी बहादुरी देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह बोला — "ख्याल रखना कि तुम मुझसे झगड़ा नहीं करना। इस दुनियाँ में कोई भी ऐसा नहीं है जो मुझे जीत सके – सिवाय काली मिर्च के।"

अब काली मिर्च तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। वह तो बिना सोचे समझे बूझे उसके ऊपर कूद पड़ा और कुछ ही समय में उसको जमीन पर पटक दिया और बाँध दिया। फिर उसने उसको एक ऊँचे से पाइन के पेड़ के साथ बाँध दिया।

जब भाले वाला और चक्की घुमाने वाला लौट कर आये तो यह देख कर बहुत खुश हुए कि उनका खाना सुरक्षित था। वे खाना खा ही रहे थे कि वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला एक झटके से उठा जिससे पाइन का वह पेड़ जड़ से उखड़ गया जिससे वह बँधा हुआ था।

वह धरती पर निशान बनाते हुए वहाँ से भाग लिया ऐसा लग रहा था जैसे तीन हल निशान बनाते जा रहे हों।

उसको भागते देख कर भाले वाला और चक्की घुमाने वाला उसके पीछे भागे पर काली मिर्च ने उनको वापस बुलाते हुए कहा कि

वे पहले अपना खाना खत्म कर लें उसको बाद में देखेंगे क्योंकि खाना खत्म करने के बाद भी उनके पास उसको पकड़ने का बहुत समय होगा।

सो तीनों फिर से खाना खाने बैठ गये। खाना खत्म करने के बाद वे उन लाइनों के सहारे सहारे उसका पीछा करने लगे जिनको तीन फीट ऊँचे माथे वाले और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाले ने भागते समय बनायीं थीं।

कुछ दूर जाने के बाद वे जमीन में बने एक अँधेरे गहरे गड्ढे के पास आ गये। जब उन्होंने उसको चारों तरफ से देखने की कोशिश की तो अँधेरा और गहराई की वजह से कुछ नहीं देख पाये।

वे लोग वहाँ से वापस आये और राजा से **1000** मील लम्बी और मजबूत रस्सी माँगी ताकि वे उस कुँए में उतर कर देख सकें कि उसमें क्या है।

राजा ने तुरन्त ही अपने नौकरों को उन्हें वे सब चीज़ें देने के लिये कह दिया जो उनको चाहिये थीं। जब उनको लम्बी और मजबूत रस्सी मिल गयी तो वे उस गड्ढे में नीचे उतरने चले गये।

जब वे रास्ते में जा रहे थे तो वे आपस में बात करते जा रहे थे कि उन तीनों में से पहले नीचे कौन उतरेगा। तय हुआ कि सबसे पहले भाले वाला नीचे जायेगा। पर साथ में उसने उनसे वायदा करा

लिया कि जैसे ही वह नीचे से रस्सी हिलायेगा तो वे उसको ऊपर खींच लेंगे।

उसको नीचे उतारा गया। वह नीचे थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसने रस्सी खींच दी और जैसा कि उन्होंने उससे वायदा किया था उसके दोनों साथियों ने उसको ऊपर खींच लिया।

उसके बाद चक्की घुमाने वाला बोला "ठीक है अब मैं जाता हूँ।" सो दूसरे दोनों ने उसको नीचे उतारा। पर पल दो पल में ही उसने रस्सी इतने ज़ोर से हिलायी कि उनको उसे भी ऊपर खींच लेना पड़ा।

अब काली मिर्च बहुत गुस्सा हुआ और बोला — "मुझे नहीं मालूम था कि तुम लोग इतने कायर हो कि तुम एक अँधेरे गड्ढे से डर रहे हो। चलो अब मुझे नीचे उतारो।"

सो उन्होंने उसको उस गड्ढे में नीचे उतार दिया। वे उसको तब तक नीचे उतारते गये जब तक उसके पैर नीचे ठोस जमीन नहीं छूने लगे। यह देख कर कि वह अब तली में पहुँच गया है उसने अपने चारों तरफ देखना शुरू किया।

उसने देखा कि वह तो एक बहुत सुन्दर हरे भरे मैदान में खड़ा है। वह मैदान इतना सुन्दर था कि वह देखने में ही बहुत अच्छा लग रहा था। उस मैदान के एक तरफ बहुत ही शानदार महल खड़ा हुआ था।

काली मिर्च उस महल को ठीक से देखने के लिये उसके पास तक गया तो उस महल के बागीचे में घूमती उसको दो लड़कियाँ मिलीं। उसने उनसे पूछा कि क्या वे राजा की बेटियाँ हैं। उन्होंने जवाब दिया "हाँ हम राजा की बेटियाँ हैं।"

तो उसने पूछा "तुम्हारी तीसरी बहिन का क्या हुआ।"

उन्होंने कहा कि उनकी सबसे छोटी बहिन तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाले की मरहम पट्टी कर रही है। ये घाव उसको किसी काली मिर्च नाम वाले आदमी ने दिये हैं।

तब काली मिर्च ने उनको बताया कि वह कौन है और यहाँ वह उन तीनों को आजाद करवा कर राजा के पास ले जाने की नीयत से आया है।

यह अच्छी खबर सुन कर दोनों राजकुमारियाँ बहुत खुश हुईं। उन्होंने काली मिर्च को बताया कि वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला और उनकी बहिन कहाँ मिलेंगे।

पर साथ में उन्होंने उसको यह चेतावनी भी दी कि वह उसके ऊपर दौड़ कर न जाये बल्कि उसके पास बहुत ही धीमे कदमों से जाये और पहले उसके पलंग के सिरहाने की तरफ की दीवार पर लटकी हुई तलवार लेने की कोशिश करे।

क्योंकि इस तलवार में किसी भी आदमी को मारने की एक ऐसी खास ताकत है जिससे वह उस आदमी को भी बिना निशाना चूके मार सकती है जो उसकी जगह से एक दिन की दूरी पर हो।

काली मिर्च ने राजकुमारियों की बात मानने का वायदा किया। वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाले के सोने वाले कमरे में चुपचाप घुसा और जब वह उसके पलंग के पास पहुँच गया तो अचानक से कूद कर दीवार से उसकी वह खास तलवार उतार ली।

जैसे ही घायल राक्षस ने अपनी तलवार काली मिर्च के हाथ में देखी तो वह तुरन्त ही वहाँ से उठ कर भाग लिया। काली मिर्च ने उसका पीछा किया पर फिर जल्दी ही उसे राजकुमारियों की कही हुई बात याद आ गयी कि उसकी तलवार में तो कितनी आश्चर्यजनक ताकत थी।

कुछ देर बाद ही उसने अपनी तलवार गर्दन काटने के लिये हवा में चलायी उसी पल उसके दुश्मन की गर्दन कट कर नीचे गिर गयी।

काली मिर्च तीनों राजकुमारियों को ले कर ऊपर की दुनियाँ में जाने यानी कुँए से बाहर निकलने की तैयारी करने लगा।

जब वह उस जगह आया जहाँ वह रस्सी से नीचे उतरा था उसने एक सबसे बड़ी टोकरी ली और उसमें सबसे बड़ी राजकुमारी को बिठा कर ऊपर भेज दिया।

उसने उसके साथ एक परचा भी लिख कर रख दिया कि यह राजकुमारी भाले वाले आदमी के लिये है। फिर उसने ऊपर खड़े

खींचने वाले को खींचने का इशारा किया और उसे ऊपर खींच लिया गया।

जब ऊपर से टोकरी खाली आयी तो उसने उसमें दूसरी राजकुमारी को बिठा दिया। उसने उसको भी एक परचा दे दिया कि यह राजकुमारी चक्की घुमाने वाले के लिये है।

जब तीसरी बार ऊपर से टोकरी खाली आयी तो उसने उसमें सबसे छोटी वाली राजकुमारी को बिठा दिया। यह राजकुमारी तीनों राजकुमारियों में सबसे सुन्दर राजकुमारी थी। उसने उसको भी एक परचा दिया जिसमें लिखा था "यह राजकुमारी मेरी है।"

जैसे ही भाले वाले और चक्की घुमाने वाले ने टोकरी ऊपर खींचनी शुरू की तो राजकुमारी ने काली मिर्च को एक छोटा सा डिब्बा दिया और कहा "जब तुम किसी परेशानी में पड़ जाओ तो इसे खोल लेना।"

जब भाले वाले और चक्की घुमाने वाले ने उसकी टोकरी खींच ली तो उन्होंने देखा कि यह राजकुमारी तो बहुत सुन्दर थी। सो उन्होंने काली मिर्च को नीचे ही छोड़ने का और उन दोनों राजकुमारियों के साथ अकेले ही राजा के महल जाने का इरादा कर लिया। अब वहाँ उनको देखना था कि सबसे छोटी राजकुमारी किसकी पत्नी बनती थी।

काली मिर्च काफी देर तक इन्तजार करता रहा कि रस्सी अब आती है अब आती है पर कोई रस्सी नीचे नहीं आयी।

आखिर उसने समझ लिया कि उसके दोनों साथियों ने उसको धोखा दे दिया है और वे उसको छोड़ कर चले गये हैं। उसने देखा कि अब तो वह काफी इन्तजार कर चुका अब और इन्तजार करना बेकार है तो वह वहाँ से चल दिया जहाँ भी सड़क उसको ले जाये।

X X X X X X X

काफी देर तक चलने के बाद वह एक बड़ी सी झील के पास आ पहुँचा। वहाँ उसने चीखने चिल्लाने की आवाजें सुनी तो उसने इधर उधर देखना शुरू किया तो कुछ ही देर में उसको बहुत सारे सजे बजे लोग वहाँ आते दिखायी दिये। लग रहा था जैसे वहाँ किसी की शादी हो रही हो।

एक सजी धजी लड़की को उस झील के किनारे पर बिठा कर लोग वहाँ से चले गये। उसको लगा कि वह लड़की बहुत दुखी थी सो वह उसके पास गया और उससे पूछा कि उसके दोस्त लोग उसको वहाँ अकेला छोड़ कर क्यों चले गये और वह इतनी दुखी क्यों है।

लड़की बोली — "इस झील में एक ड्रैगन रहता है जो हर साल एक नौजवान लड़की को खाता है। आज मेरी बारी है। मेरे लोग मुझे ड्रैगन की पत्नी की तरह सजा कर यहाँ बिठा गये हैं ताकि वह आये और मुझे निगल जाये।"

यह सुन कर काली मिर्च बोला कि वह बहुत थका हुआ है सो उसके पास बैठ कर वह कुछ देर के लिये आराम करना चाहता है।

लड़की तुरन्त ही बोली — "नहीं नहीं। इससे तो अच्छा है कि तुम यहाँ से कहीं और चले जाओ ओ मेरे बहादुर। मुझे तो मरना ही है पर इसका यह मतलब तो नहीं है कि मेरे साथ साथ तुमको भी मरना पड़े।"

काली मिर्च बोला — "तुम मेरे बारे में सोच कर अपने आपको परेशान न करो। बस मुझे अपने पास बैठ कर आराम करने की इजाज़त दे दो। मैं वाकई में बहुत थका हुआ हूँ। जब ड्रैगन आ जायेगा तभी भी मेरे पास भागने के लिये काफी समय होगा।"

इतना कह कर वह लड़की के पास बैठ गया और कुछ पल में ही सो गया। वह बहुत देर तक नहीं सोया होगा कि झील के पानी की सतह बड़े ज़ोर ज़ोर से हिलने लगी और पानी में ऊँची ऊँची लहरें उठने लगीं।

इससे काली मिर्च की आँख खुल गयी तो उसने देखा कि ड्रैगन पानी में से अपना सिर बाहर निकाल रहा है। वह तुरन्त ही झील के किनारे की तरफ बढ़ा जहाँ लड़की बैठी हुई थी। साफ जाहिर था कि वह लड़की को तुरन्त ही निगल जाना चाहता था।

यह देख कर लड़की बहुत ज़ोर से चिल्लायी और उसका एक आँसू काली मिर्च के गाल पर जा पड़ा। काली मिर्च तुरन्त ही उठ

गया। उसने कूद कर अपनी तलवार निकाली और हवा में घुमा दी और वह ड्रैगन वहीं का वहीं मर गया।

उसने लड़की का हाथ पकड़ कर उठाया और उसको शहर वापस ले गया। वहाँ पहुँच कर उसे पता चला कि वह लड़की तो उस देश के राजा की अकेली बेटी थी।

राजा को यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि ड्रैगन मारा गया और उसकी बेटी सुरक्षित घर वापस आ गयी। सो उसने काली मिर्च से जिद की कि वह उसकी बेटी से शादी कर ले। उसने राजकुमारी से शादी कर ली और फिर वे सब बहुत दिनों तक हँसी खुशी रहे।

X X X X X X X

कुछ समय बाद काली मिर्च को फिर से दूसरी दुनियाँ[56] देखने की इच्छा हुई और वह दिन पर दिन उदास होता गया। जब उसकी पत्नी ने उसमें वह बदल देखी तो वह अक्सर उससे पूछती कि उसको किस बात का दुख है तो बहुत समय तक तो उसने उसको कुछ नहीं बताया क्योंकि वह उसको तंग करना नहीं चाहता था पर फिर आखिर वह इस भेद को भेद नहीं रख सका।

उसने उसको बताया कि अब उसकी बहुत इच्छा थी कि वह अब ऊपर की दुनियाँ में जाये। यह सुन कर उसकी पत्नी बहुत

[56] You remember he was still in the pit and was wandering here and there. Now he wanted to come to the world on Earth.

दुखी हुई फिर भी उसने उससे कहा कि वह खुद राजा से उसके वहॉ से जाने की इजाज़त लेगी क्योंकि काली मिर्च की अपनी बहुत इच्छा थी वहॉ जाने की। और ऐसा उसने किया भी।

राजा ने जब यह सुना तो वह पहले तो राजी ही नहीं हुआ क्योंकि वह अपना इतना अच्छा दामाद खोना नहीं चाहता था। पर राजकुमारी ने कहा — "पिता जी उनको जाने दीजिये। उन्होंने मेरी जान बचायी है पर हम उनको उनकी इच्छा के खिलाफ क्यों रखें। मेरे तीन बेटे हम लोगों को तसल्ली देने के लिये काफी हैं।"

यह सुन कर राजा राजी हो गया और बोला — "ठीक है। फिर वैसा ही होने दो जैसा वह चाहता है। क्योंकि तुम भी कुछ नहीं बोल रहीं और उसी का पक्ष ले रही हो।

तुम अपने उस भला चाहने वाले से कह दो कि वह झील के किनारे चला जाये जहॉ उसको एक बहुत बड़ी चिड़िया मिलेगी। वह जा कर उसे मेरा नमस्कार कहे और कहे कि राजा ने उससे कहा है कि वह इस आदमी को ऊपर की दुनियॉ में छोड़ आये।"

राजकुमारी अपने पति के पास गयी और उसे जा कर वह बताया जो उसके पिता ने उससे कहने के लिये कहा था। फिर उसने उसकी यात्रा के लिये सामान तैयार किया। जब यह सब तैयार हो गया तो राजा ने चिड़िया को देने के लिये अपनी चिट्ठी तैयार की।

काली मिर्च ने अपनी पत्नी से विदा ली और झील के किनारे चल दिया। वहॉ उसको जल्दी ही बड़ी चिड़िया का घोंसला मिल

गया। उसमें उसके छोटे बच्चे भी थे हालाँकि वह खुद वहाँ नहीं थी। सो वह उसी पेड़ के नीचे उसके आने के इन्तजार में बैठ गया। जब वह वहाँ बैठा हुआ था तो उसने चिड़ियों के चींचीं करने की आवाज सुनी। वे बहुत बेचैनी से चीं चीं किये जा रही थीं।

इतने में उसने देखा कि झील के पानी में बड़ी बड़ी लहरें उठ रही हैं। वह सोचने लगा कि अब यहाँ कौन आ गया। कि इतने में ही वहाँ से एक राक्षस निकला और चिड़िया के बच्चों को खाने लिये उधर की तरफ बढ़ा।

काली मिर्च को सोचने में बहुत देर नहीं लगी। उसने तुरन्त ही अपनी आश्चर्यजनक तलवार निकाली और उस राक्षस को मार दिया।

अब ऐसा हुआ कि इसी समय बड़ी चिड़िया घर वापस आ रही थी। उसने काली मिर्च को अपने घोंसले वाले पेड़ के नीचे देखा तो डर के मारे काँप गयी और चीख कर उसे मारने के लिये दौड़ी।

वह बोली — "आज मैंने तुम्हें पकड़ लिया। तुम ही तो वह हो न जो हर साल मेरे बच्चे खा जाते हो। आज तुम्हें इसका हरजाना देना ही पड़ेगा क्योंकि मैं अब तुम्हें मारने वाली हूँ।"

यह सुन कर उसके छोटे छोटे बच्चे अपने घोंसले में से ही चिल्लाये — "माँ इसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाना। इसने तो हमारी एक राक्षस से जान बचायी है जो इस झील में से हमें खाने के लिये आ रहा था।"

इस बीच काली मिर्च ने उसे राजा की चिट्ठी दी।

बड़ी चिड़िया ने उसे सावधानी से पढ़ा और फिर बोली — "तुम घर जाओ और **12** भेड़ मारो। उनकी खालों में पानी भरो और उनको उनके मॉस के साथ यहॉ ले कर आओ।"

काली मिर्च राजा के पास वापस गया और उससे कहा कि वह उसे **12** भेड़ का मॉस और **12** भेड़ों की पानी से भरी हुई खाल दे दे। राजा ने उसको यह सब दे दिया तो वह उनको ले कर फिर से झील के किनारे आया।

बड़ी चिड़िया ने पानी से भरी हुई भेड़ों की **12** खाल अपने बॉये पंख के नीचे रखीं और **12** भेड़ों का मॉस अपने दॉये पंख के नीचे रखा और काली मिर्च को अपने पीठ पर बिठाया।

यह कर के उसने काली मिर्च से कहा कि वह उसको ध्यान से देखता रहे कि वह क्या कर रही है। जब वह अपनी चोंच बॉयी तरफ को घुमाये तो वह उसको पानी पिला दे और जब वह अपनी चोंच दॉयी तरफ को घुमाये तो वह उसे मॉस खिला दे।

काली मिर्च से यह कह कर वह बड़ी चिड़िया तीन तरह का बोझा ले कर सीधी ऊपर की तरफ उड़ चली। उड़ते समय वह अपनी चोंच कभी बॉयी तरफ मोड़ लेती थी तो कभी दॉयी तरफ। उस समय काली मिर्च उसको कभी मॉस खिला देता तो कभी पानी पिला देता।

आखिर सारा मॉस खत्म हो गया सो बड़ी चिड़िया ने जब अपनी चोंच दॉयी तरफ घुमायी तो काली मिर्च के पास तो अब सारा मॉस खत्म हो चुका था तो उसको लगा कि अगर उसने उसको मॉस खाने के लिये नहीं दिया तो कहीं उसके साथ कुछ बुरा न हो जाये उसने चाकू निकाला और अपने दॉये तलवे से थोड़ा सा मॉस काटा और उसको खाने को दे दिया।

चिड़िया को उस मॉस के स्वाद से ही पता चल गया कि वह भेड़ का मॉस नहीं था बल्कि काली मिर्च के अपने पैर से काटे गये मॉस का टुकड़ा था इसलिये उसने उसको निगला नहीं बल्कि अपनी जीभ के नीचे रख लिया और उसको वहीं दबाये रखा जब तक कि वह दूसरी दुनियॉ में नहीं पहुॅच गयी।

ऊपर पहुॅच कर उसने काली मिर्च को अपने ऊपर से नीचे उतारा और चलने के लिये कहा। पर नीचे उतर कर उसने चलना चाहा तो वह तो ठीक से चल नहीं सका। वह लॅगड़ा कर चल रहा था क्योंकि उसके एक पैर में घाव हो रहा था।

बड़ी चिड़िया ने पूछा — "यह तुम लॅगड़ा कर क्यों चल रहे हो?"

इस पर काली मिर्च बोला — "कुछ नहीं। तुम इसकी चिन्ता न करो।"

पर चिड़िया ने उससे उसका दॉया पैर ऊपर उठाने के लिये कहा। और जब उसने वैसा किया तो उसने अपनी जीभ के नीचे

रखा उसके पैर के मॉस का टुकड़ा उसके पैर में वहीं लगा दिया जहॉ से उसे काट कर उसने बड़ी चिड़िया को खिलाया था।

फिर उसने उस जगह को अपनी चोंच से दो तीन बार थपथपाया ताकि वह जगह उसके पैर के तलवे के दूसरी जगहों जैसी एकसार हो जाये।

अब काली मिर्च वहॉ से चल दिया। कुछ दूर चलने पर उसको राजा की सबसे छोटी राजकुमारी के दिये हुए डिब्बे की याद आयी तो उसने उसको खोला तो उसमें से एक मक्खी और एक शहद की मक्खी निकल पड़ीं।

उन्होंने उससे पूछा कि उसको क्या चाहिये। काली मिर्च ने जवाब दिया कि उसको एक अच्छा सा घोड़ा चाहिये जो उसे जल्दी जल्दी राजा के महल पहुँचा सके। और उसको राजा से मिलने के लायक पहनने के लिये एक बहुत अच्छा जोड़ा चाहिये।

अगले ही पल एक बहुत सुन्दर शानदार साज सजा घोड़ा वहॉ तैयार खड़ा था और साथ में पहनने के लिये एक बढ़िया कीमती जोड़ा भी।

उसने कपड़े उठाये अपने घोड़े पर चढ़ा और राजा के शहर चल दिया। राजा के शहर में घुसने से पहले उसने वह बक्सा एक बार फिर खोला और मक्खी और शहद की मक्खी से कहा – "अब इस समय तो मुझे यह घोड़ा नहीं चाहिये।"

सो वे मक्खियॉ उसको ले कर अपने डिब्बे में चली गयीं। उधर काली मिर्च शहर में एक बुढ़िया के घर में रहने के लिये चला गया।

अगली सुबह मुनादी पीटने वाला कह रहा था — “क्या कोई इतना ताकतवर है जो राजा के दामाद यानी भाले वाले आदमी से लड़ सके।”

काली मर्च यह मुनादी सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने फिर से अपना बक्सा खोला और मक्खियों से कहा कि उसको लड़ने के लिये एक सूट चाहिये और एक मजबूत डंडा चाहिये ताकि वह भाले वाले से जा कर लड़ सके।

दोनों मक्खियों ने उसको वह सब दे दिया जो उसको चाहिये था और वह तैयार हो कर उस मैदान में चल पड़ा जहॉ उसको भाले वाले से लड़ाई लड़नी थी।

वहॉ जा कर उसने देखा कि भाले वाला बेचैनी उस किसी का इन्तजार कर रहा था जिससे उसको लड़ना था। सो काली मिर्च और भाले वाला आपस में लड़े और कुछ ही देर में राजा का पहला दामाद मारा गया।

काली मिर्च यह लड़ाई लड़ कर जल्दी से घर वापस लौट गया और अपना डिब्बा खोल कर मक्खी और शहद की मक्खी से कहा कि वे अपने कपड़े और घोड़ा वापस ले जायें।

राजा उस अजनबी को तलाश करता रहा जिसने उसके पहले दामाद को मारा था पर वह उसे कहीं नहीं मिला। किसी और को भी उसके बारे में कुछ पता नहीं था।

सो कुछ दिन बाद मुनादी पीटने वाला फिर से शहर में मुनादी पीटता हुआ सुना गया। अगर किसी की हिम्मत हो तो राजा का दूसरा दामाद चक्की घुमाने वाला लड़ने के लिये तैयार है

काली मिर्च ने एक बार फिर से अपना डिब्बा खोला और मक्खी और शहद की मक्खी पिछले वाले से बढ़िया घोड़ा और लड़ाई के कपड़े माँगे। इस बार उन्होंने उसको बहुत ही शानदार सूट और सबसे सुन्दर काला घोड़ा दिया।

वह भी सूट पहन कर घोड़े पर चढ़ कर उसी लड़ाई के मैदान में चल दिया। उसने चक्की घुमाने वाले को भी मार दिया और तुरन्त ही वहाँ से घर चला गया। तुरन्त ही उसने अपना डिब्बा खोला और मक्खियों को कपड़े और घोड़ा ले जाने के लिये कहा।

अब तो न केवल राजा ही बल्कि राज्य के सारे लोग पशोपेश में पड़ गये कि यह कौन है जो इस तरह से राजा के दामाद को मार कर तुरन्त ही गायब हो जाता है।

सो इस आदमी की कड़ी खोज शुरू हुई। उसे सारे लोग सब जगह ढूँढने लगे। पर किसी को कुछ पता नहीं चला। क्योंकि जैसे घोड़े पर सवार हो कर और जैसे कपड़े पहन कर वह लड़ने के लिये आया था वैसे घोड़े और कपड़े तो राज्य भर में कहीं नहीं थे।

राजा के दोनों दामादों के मरने के बाद फिर कुछ दिन बीत गये। लोग शान्त पड़ गये थे। उन्होंने उसको ढूँढ निकालने की सारी आशाऐं छोड़ दी थीं।

तब काली मिर्च ने राजा की सबसे छोटी बेटी को एक चिट्ठी लिखी और जिस बुढ़िया के घर में वह रहता था उसके हाथों उसे राजकुमारी को भिजवा दिया।

उस चिट्ठी में उसने राजकुमारी को वह सब लिख दिया जो उसके साथ तबसे अब तक हुआ था जबसे उसने राजकुमारी को टोकरी में बिठाया था। साथ में उसने यह भी लिखा कि वे दोनों गद्दार न्यायपूर्ण लड़ाई में उसी ने मारे थे।

छोटी राजकुमारी न जैसे ही यह चिट्ठी पढ़ी तो वह अपने पिता के पास दौड़ी गयी और उससे विनती की कि वह काली मिर्च को माफ कर दें।

राजा ने भी देखा कि वह भी अपनी बेटी की इस विनती को मना नहीं कर सकता था क्योंकि उन्होंने अपने उस दोस्त को धोखा दिया था उसे छोड़ दिया था वे गद्दार थे जिसकी हिम्मत के बिना वे राजा के दामाद कभी नहीं बन सकते थे।

यह सोचते हुए कि काली मिर्च अगर उसकी तीनों बेटियों को नहीं निकाल कर लाता तो वे तो वहीं उसी राज्य में घुट घुट कर मर जातीं जहाँ वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला उनको ले गया था।

यह सब सोचने के बाद कि उसने बेटी से कहा कि उसने अपनी मर्ज़ी से ही काली मिर्च को माफ कर दिया और वह उसको अब महल में बुला सकती है।

काली मिर्च ने राजा के सामने जाने लायक बढ़िया कपड़े पहने और महल पहुँचा जहाँ उसका बड़े प्रेम से स्वागत हुआ।

कुछ ही दिन बाद काली मिर्च की शादी छोटी राजकुमारी से कर दी गयी। राजा ने उन दोनों के रहने के लिये अपने महल के पास ही एक और महल बनवा दिया जिसमें वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

उसके बाद काली मिर्च की कहीं बाहर घूमने की कोई इच्छा नहीं हुई।

16 बाश चालक या सच्चा लोहा[57]

यह पुरानी बात है कि एक बार एक राजा था जिसके तीन बेटे थे और तीन बेटियाँ थीं। उसको राज करते करते बहुत समय गुजर गया।

अब वह बूढ़ा हो गया था तो एक दिन उसने अपने तीनों बेटों और तीनों बेटियों को अपने पास बुलाया और अपने तीनों बेटों से कहा कि वह अपनी बहिनों की शादी उसी आदमी से कर दें जो उन्हें पहली बार माँगने आये। तुम ऐसा ही करना नहीं तो मेरा शाप तुम पर पड़ेगा। यह कह कर वह मर गया।

राजा की मौत के कुछ दिन बाद की बात थी कि रात को महल के दरवाजे पर किसी ने ज़ोर से दस्तक दी। उससे सारा महल हिल गया। बाहर से बहुत सारी चीं चीं की आवाजें और गाने और चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। महल में चारों तरफ रोशनी बिखर रही थी।

यह सब देख सुन कर महल के लोग डर गये। वे डर के मारे थर थर काँपने लगे। तभी बाहर से एक आवाज सुनायी दी "राजकुमारों दरवाजा खोलो।"

[57] Bash-Chalek or True Steel. (Tale No 16)

इस पर सबसे बड़े राजकुमार ने कहा “नहीं दरवाजा मत खोलना।” उसके दूसरा राजकुमार भी बोला “नहीं दरवाजा नहीं खोलना किसी हालत में भी नहीं खोलना। पर सबसे छोटा राजकुमार बोला “मैं जा कर दरवाजा खोलता हूँ।” कह कर वह कूद कर बाहर की तरफ भागा और दरवाजा खोल दिया।

जैसे ही उसने दरवाजा खोला तो बाहर से अन्दर की तरफ कोई चीज़ आयी। पर वह भाई यह नहीं देख सका कि वह क्या चीज़ थी वह तो बस इतना देख सका कि कमरे के एक कोने में कोई चमकीली रोशनी थी।

इस रोशनी ने कहा — “मैं तुम्हारी सबसे बड़ी बहिन का हाथ माँगने आया हूँ। मैं उसको अभी अभी अपने साथ ले जाऊँगा क्योंकि मैं किसी का इन्तजार भी नहीं करता और न मैं उसको माँगने के लिये दोबारा आऊँगा। इसलिये मुझे तुरन्त ही जवाब दो तुम उसे मुझे दोगे या नहीं।”

सबसे बड़े भाई ने कहा “नहीं मैं नहीं दूँगा।” दूसरे भाई ने भी कहा “मैं भी तुम्हें उसे इसी समय नहीं ले जाने दूँगा।”

तीसरा भाई बोला — “अगर तुम उसे नहीं ले जाने दोगे तो मैं उसे दे दूँगा। क्या तुम भूल गये कि हमारे पिता ने हमसे क्या कहा था?” कहते हुए उसने अपनी सबसे बड़ी बहिन का हाथ पकड़ा और उसे देते हुए कहा “भगवान करे कि यह तुम्हारे लिये खुशियाँ ले कर आये और ईमानदार साबित हो।”

जैसे ही बहिन ने कमरे की देहरी लाँघी वैसे ही महल के सारे लोग डर के मारे फर्श पर गिर पड़े क्योंकि उस रोशनी की चमक इतनी तेज़ थी और उसकी आवाज इतनी ज़्यादा थी कि वे उसको सह ही नहीं पा रहे थे।

ऐसा लगा जैसे सारे आसमान में आग लग गयी हो और सारा आसमान गड़गड़ा उठा हो। महल भी इतनी ज़ोर से हिल गया लगता था जैसे गिर ही जायेगा।

खैर यह सब तो खत्म हुआ और फिर दिन निकला। जब काफी रोशनी हो गयी तो भाई लोग यह देखने के लिये बाहर निकल कर गये कि देखें कि उस ताकत की कोई चीज़ बची है क्या जिसको उन्होंने अपनी बहिन दी है। ताकि वे उस रास्ते को ढूँढ सकें जिस रास्ते वे गये हैं।

पर वहाँ तो कुछ भी नहीं था जिसे वे लोग देख सकते या फिर सुन सकते।

अगली रात को उसी समय महल के चारों तरफ बहुत तेज़ आवाज सुनी गयी जैसे कोई फौज सीटी बजाते हुए वहाँ आ रही हो। कुछ ही देर में कोई और दरवाजे पर से चिल्लाया "ओ राजकुमारों दरवाजा खोलो।"

वह आवाज इतनी तेज़ थी कि वे उसको टाल नहीं सकते थे। उसका उनको पालन करना ही पड़ा। उन्होंने दरवाजा खोल दिया तो

फिर एक कड़कती आवाज ने कहा — "तुम मुझे अपनी दूसरी बहिन दे दो। मैं यहाँ उसे लेने के लिये आया हूँ।"

सबसे बड़े भाई ने कहा — "मैं अपनी बहिन को ऐसे तुमको नहीं दूँगा।" दूसरे भाई ने भी यही कहा — "मैं तुम्हें अपनी बहिन नहीं दूँगा।"

पर तीसरा सबसे छोटा भाई बोला — "भैया तुम लोग भूल गये हो कि पिता जी ने हमसे क्या कहा था। मैं अपनी बहिन तुमको देता हूँ।" सो उसने अपनी बहिन का हाथ पकड़ा और उसे उस ताकत को थमा दिया और कहा — "भगवान करे कि यह तुम्हारे लिये हमेशा वफादार रहे और खुशियाँ ले कर आये।"

इसके बाद सब अनदेखा शोर उसकी बहिन के साथ साथ ही चला गया।

अगले दिन जब सुबह हुई तो तीनों भाई उठ कर घर के चारों तरफ देखने गये कि कल रात के शोर का कोई निशान वहाँ बाकी है या नहीं। पर उनको न तो वहाँ कुछ दिखायी दिया और न कुछ सुनायी दिया।

तीसरी रात को लगभग उसी समय उनका महल फिर से उसकी नींव तक काँप गया। पहले तो बाहर बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया फिर बड़े ज़ोर से आवाज आयी — "दरवाजा खोलो।"

राजकुमार उठे और उन्होंने दरवाजा खोल दिया। दरवाजा खुलते ही जैसे कोई बहुत बड़ी ताकत उनके पास से गुजर गयी।

आवाज फिर बोली — “मुझे अपनी तीसरी बहिन दे दो। मैं उसे लेने आया हूँ।”

राजा के दोनों बड़े बेटे चिल्लाये — “हम तुम्हें तीसरी रात को भी अपनी बहिन को नहीं देंगे। इससे पहले कि हमारी बहिन यहाँ से जाये किसी भी तरह हमको यह मालूम होना चाहिये कि हम उसे किसे दे रहे हैं और वह हमारे घर से कहाँ जा रही है ताकि जब हमारी इच्छा हो हम वहाँ जा कर उससे मिल सकें।”

यह सुन कर सबसे छोटे भाई ने कहा — “तब मैं उसे तुमको देता हूँ। भैया क्या तुम भूल गये कि हमारे पिता जी ने मरते समय क्या कहा था। यह कोई बहुत पुरानी बात नहीं है।”

फिर उसने अपनी बहिन का हाथ पकड़ा और उसे उस आवाज को देते हुए कहा — “यह है वह। ले जाओ इसको। भगवान करे यह तुम्हारे लिये भी खुशी लाये और खुद भी खुश रहे।”

एक बहुत ज़ोर की आवाज के साथ वह ताकत वहाँ से चली गयी। अगले दिन सुबह भाई फिर से अपनी बहिन के बारे में जानने के लिये उत्सुक हो उठे पर उन्हें ऐसा कोई निशान नहीं मिला जिससे उन्हें यह पता चलता कि वे किधर गयीं किस रास्ते से गयीं आदि आदि।

कुछ समय बाद एक दिन तीनों भाई आपस में बैठे बात कर रहे थे कि एक भाई बोला — “हे भगवान। कितनी अजीब सी बात है कि हमें पता ही नहीं कि हमारी बहिनों का क्या हुआ। हमको उनका

कुछ पता ही नहीं है। हमारे पास उनकी कोई खबर ही नहीं है। हमको यह भी पता नहीं है कि वे गयी कहाँ।”

आखिर उन तीनों ने मिल कर यह निश्चय किया कि वे तीनों भाई अपने बहिनों को ढूँढ कर ही रहेंगे। वे तुरन्त ही अपनी यात्रा के लिये तैयार हो गये। कुछ पैसे उन्होंने साथ ले लिये और अपनी तीनों बहिनों की खोज में चल दिये।

वे लोग कुछ ही दूर चले होंगे कि एक जंगल से गुजरते हुए वे उसमें रास्ता भटक गये और सारा दिन उसी में घूमते रहे। जब अँधेरा हो आया तो उनको लग कि उनको किसी ऐसी जगह रुक जाना चाहिये जहाँ वे रात को रुक सकें और पानी पी सकें।

चलते चलते वे एक झील के पास आ पहुँचे तो उन्होंने यही सोचा कि पानी पी कर वे लोग यहीं सो जायेंगे सो उन्होंने वहाँ पहुँच कर खाना खाया और खा पी कर लेट गये।

सोते समय बड़ा भाई बोला — “ऐसा करते हैं कि मैं पहरा देता हूँ और तुम लोग सोओ।” सो दोनों छोटे भाई तो सो गये और बड़ा भाई पहरा देने लगा।

बीच रात में झील के पानी में इतनी ज़ोर का तूफान आने लगा कि बड़ा भाई जो पहरा दे रहा था बहुत ज़्यादा डर गया। खास कर के जब जबकि उसने देखा कि झील के बीच में कोई निकल कर उसकी तरफ बढ़ा आ रहा है।

जब वह उसके और पास आ गया तो उसने देखा कि वह तो एक भयानक मगर है जिसके दो बड़े बड़े कान हैं और वह उसकी तरफ भागा आ रहा है।

पर उसने भी अपना चाकू निकाल लिया और उसका सिर काट दिया। इसके बाद उसने उसके कान भी काट लिये और उनको अपनी जेब में रख लिया। बाद में उसका सिर और शरीर वापस उसी झील में फेंक दिया।

इस बीच सुबह होने लगी थी। उसके दोनों भाई सोते ही रहे। आखिर उसने उन्हें जगाया। उसने उनको कुछ बताया नहीं तो उनको तो पता ही नहीं चला कि रात में उनके भाई के साथ क्या हुआ था। वे फिर आगे अपनी यात्रा पर चल दिये।

अगले दिन की शाम को जब अँधेरा होने लगा तो फिर तीनों ने सोचा की कि इस रात को उनको कहाँ आराम करना चाहिये। कहाँ उनको पानी मिल पायेगा। साथ में उनको डर भी बहुत लग रहा था क्योंकि वे खतरनाक पहाड़ों की तरफ बढ़ते जा रहे थे।

रास्ते में उनको एक छोटी झील दिखायी दी तो उन्होंने तय किया कि उस रात वे वहीं आराम करेंगे। उन्होंने अपनी चीज़ें वहाँ रखीं आग जलायी और सोने की तैयारी करने लगे। इस बार दूसरा भाई बोला — "आज की रात आप सोयें मैं पहरा दूँगा।"

सो सबसे बड़ा और सबसे छोटा दोनों भाई तो सो गये और दूसरा भाई पहरा देने लगा। कि अचानक झील का पानी ज़ोर से

हिला और उसमें से एक दो सिर वाला मगर निकल कर उन तीनों को खाने के लिये दौड़ा। पर उस भाई ने जो वहाँ पहरा दे रहा था अपना चाकू निकाला और उससे उसने उसके दोनों सिर काट दिये।

फिर बाद में उसके दोनों सिरों से उसके चारों कान काट कर जेब में रख लिये और उसके शरीर और सिरों को झील में फेंक दिया।

दूसरे भाइयों को पता नहीं चल पाया कि दूसरे भाई के साथ रात में क्या हुआ था। वे रात भर आराम से सोते रहे। जब सुबह हुई तो दूसरे भाई ने अपने दोनों भाइयों को उठाया कि भाई लोगों उठो दिन निकल आया है। वे लोग तुरन्त ही उठ गये और फिर आगे की यात्रा की तैयारी करने लगे।

पर अब उनको यह नहीं मालूम था कि वे इस समय कौन से देश में थे। उनका खाना भी अब खत्म हो गया था। इस अनजाने देश में जल्दी ही अगर उनके खाने का कोई इन्तजाम नहीं हुआ तो वे तो वहाँ भूखे मर जायेंगे।

सो उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि वह उनको जल्दी ही किसी गाँव या शहर में पहुँचा दे या फिर कोई ऐसा आदमी भेज दे जो उनको किसी गाँव या शहर का पता बता दे। क्योंकि वे तीन दिन से उस जंगल में इधर उधर घूम रहे थे और फिर भी उनको उसका कोई अन्त नजर नहीं आ रहा था।

अगले दिन सुबह सवेरे जल्दी ही उनको एक बहुत बड़ी झील दिखायी दी तो उन्होंने तय किया कि अब वे वहाँ से नहीं जायेंगे दिन भर वहीं रहेंगे और रात भी वहीं गुजारेंगे। उन्होंने कहा कि अगर हम इसी तरीके से आगे चलते जायेंगे तो पता नहीं हमें दूसरी झील कब और कहाँ मिलेगी जिसके पास हम सो भी पायेंगे या नहीं। सो वे वहीं रह गये।

जब शाम हुई तो उन्होंने वहाँ फिर से आग जलायी अपना थोड़ा सा खाना पकाया और उसे खा पी कर सोने की तैयारी करने लगे। इस बार सबसे छोटे भाई ने कहा कि वह पहरेदारी करेगा और उसके बाकी दोनों भाई आराम से सोयेंगे। इस तरह से सबसे छोटा भाई तो पहरे पर बैठ गया और दोनों बड़े भाई सो गये।

पहरा देते समय उसकी आँखें खुली हुई थीं और बार बार झील की तरफ चली जाती थीं। रात का कुछ हिस्सा गुजर गया था कि तभी झील का पानी बहुत ज़ोर ज़ोर से हिलने लगा। वह उछाल उछाल कर उनकी जलायी आग पर भी पड़ने लगा कि वह आधी तो वहीं बुझ गयी।

तब उसने अपनी तलवार निकाली और आग के पास ही रख ली। तभी उसने देखा कि एक तीन सिर वाला मगर झील के पानी से निकल रहा है और उन तीनों की तरफ बढ़ रहा है जैसे कि उन्हें खा जायेगा।

सबसे छोटा भाई बहुत बहादुर था। उसने अपने भाइयों को नहीं जगाया। वह खुद ही उठा और मगर के तीनों सिरों पर एक के बाद एक उसने तीन वार किये और तीनों सिर काट डाले। फिर उसने उसके छहों कान काट कर अपनी जेब में रख लिये और उसको सिर और शरीर पानी में फेंक दिये।

जब वह यह सब कर रहा था उस बीच सारी आग बुझ गयी थी। इस समय उसके पास कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिससे वह उसे फिर से जला सकता साथ में वह अपने भाइयों को गहरी नींद में सोता छोड़ कर भी नहीं जाना चाहता था।

फिर भी वह कुछ दूर तक जंगल में गया कि हो सकता है उसको आग जलाने के लिये कुछ मिल जाये। फिर भी उसे वहॉ कुछ भी मिल नहीं रहा था।

X X X X X X X

खोजते खोजते वह एक बहुत ऊॅचे पेड़ पर चढ़ गया। वहॉ से उसने चारों तरफ देखा तो उसने देखा कि पास में कहीं आग जल रही है।

सो वह पेड़ से उतर कर नीचे आ गया और उस दिशा में चल दिया जिस दिशा में उसको आग दिखायी दी थी। उसने सोचा कि वह वहॉ से कोई जलती हुई लकड़ी उठा लायेगा और उससे अपनी आग दोबारा जला लेगा।

उसको अपना यह काम करने के लिये बहुत दूर तक चलना पड़ा क्योंकि वहाँ से वह आग बहुत पास दिखायी दे रही थी पर वास्तव में वह बहुत दूर थी।

अचानक उसके सामने एक गुफा आ गयी और उसने देखा कि वह आग तो उस गुफा के अन्दर जल रही थी। आग के चारों तरफ बड़े साइज़ के नौ आदमी[58] बैठे हुए थे और आग के ऊपर दो आदमियों को भून रहे थे। एक आदमी को आग के एक तरफ भूना जा रहा था दूसरे आदमी को आग के दूसरी तरफ।

इसके अलावा आग पर एक बर्तन रखा हुआ था जिसमें आदमियों के हाथ पैर उबलने के लिये रखे थे।

जब राजकुमार ने यह दृश्य देखा तो वह तो डर के मारे वहीं जम सा गया। उसको देख कर वह खुशी से वहाँ से भाग जाता पर इस समय यह मुमकिन नहीं था। सो वह बहुत ज़ोर से और खुशी से चिल्लाया — "गुड ईवनिंग मेरे साथियो। मैं तुम्हें कितने दिनों से ढूँढ रहा हूँ।"

उन्होंने उसका बड़े प्रेम से स्वागत किया और कहा — "आओ भाई आओ। अगर तुम हमारी जाति के हो तो तुम्हारा स्वागत है।"

वह बोला — "मैं तो हमेशा तुम्हारा ही रहूँगा और तुम्हारे लिये जान देने की जरूरत भी पड़ी तो जान भी दे दूँगा।"

---

[58] Translated for the word "Giant"

वे बोले — "अहा। अगर तुम हमारे जैसा ही बनना चाहते हो तो तुमको पता होना चाहिये कि तुमको आदमी का मॉस तो खाना ही है और साथ में हमारे साथ शिकार पर भी जाना चाहिये।"

राजकुमार बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। यकीनन। मैं वह सब करूँगा जो तुम लोग करोगे।"

वे सब राक्षस चिल्लाये — "तो फिर आओ हमारे पास बैठो।"

राजकुमार उनके साथ ही बैठ गया। सब लोग बर्तन में पड़ा मॉस खा रहे थे। राजकुमार खाने का केवल बहाना कर रहा था। वह मॉस का टुकड़ा उठाता तो था मुँह तक ले भी जाता था पर उसको खाता नहीं था अपने पीछे फेंक देता था।

जब उन्होंने सारा भुना हुआ मॉस खा लिया तो राक्षस लोग उठे और बोले — "चलो अब शिकार के लिये चलते हैं ताकि हमें कल के लिये मॉस मिल सके।"

सो सारे राक्षस यानी नौ राक्षस चल दिये राजकुमार भी उनके साथ चल दिया सो अब वे 10 थे।

उन्होंने राजकुमार से कहा — "आओ चलें। यहॉ पास में ही एक शहर है जहॉ एक राजा रहता है। हम लोग उस शहर के लोगों के खून पर बहुत सालों से गुजारा कर रहे हैं।"

जब वे उस शहर के पास आये तो उन्होंने बड़े ऊँचे ऊँचे पाइन के दो पेड़ जड़ सहित उखाड़ लिये और उनको अपने साथ ले चले।

जब वे शहर के पास आ गये तो उन्होंने पाइन का एक पेड़ दीवार के सहारे खड़ा किया और राजकुमार से उसके सहारे दीवार पर चढ़ जाने के लिये कहा और कहा कि उसके ऊपर चढ़ जाने के बाद वे उसको दूसरा पेड़ दे देंगे जिसको तुम उसकी चोटी से पकड़ कर शहर में फेंक देना।

ध्यान रखना कि तुम उसे चोटी से पकड़ना और हम उसके तने को पकड़ कर शहर में कूद जायेंगे। राजकुमार ने ऐसा ही किया पर ऊपर जा कर वह चिल्लाया — "मुझे नहीं पता अब मैं क्या करूँ। मुझे तो इस जगह के बारे में कुछ पता ही नहीं। इसके अलावा मुझे नहीं मालूम कि मैं पेड़ कहाँ फेंकूँ। मेहरबानी कर के तुममें से एक यहाँ आओ और मुझे बताओ कि मुझे क्या और कैसे करना है।"

तब नीचे खड़े राक्षसों में से एक राक्षस उस पेड़ के तने पर चढ़ा जो दीवार के सहारे रखा हुआ था। ऊपर चढ़ कर उसने दूसरे पेड़ की चोटी को पकड़ा और उसे पकड़े पकड़े उसने उसे दीवार के अन्दर फेंक दिया।

जिस समय वह इस तरह से खड़ा हुआ था राजकुमार ने अपनी तलवार निकाल ली और उसकी गर्दन पर मारी और उसका सिर काट दिया। उसका शरीर शहर के अन्दर गिर पड़ा।

उसको मारने के बाद उसने आठों राक्षसों को बुलाया और उनसे कहा — "देखो तुम्हारा भाई शहर के अन्दर है। तुम लोग भी एक

एक कर के यहाँ आ जाओ तो मैं तुमको भी शहर के अन्दर पहुँचा दूँगा।"

अब उन राक्षसों को तो यह पता नहीं था कि पहले राक्षस के साथ क्या हुआ था सो वे एक एक करके ऊपर चढ़ते गये और राजकुमार उनको एक एक कर के मार कर शहर के अन्दर फेंकता गया जब तक कि उसने नौओं राक्षसों को नहीं मार डाला।

उसके बाद वह खुद पाइन के पेड़ के सहारे सहारे नीचे उतरा और शहर में अन्दर चला गया। वहाँ वह बहुत सारी सड़कों पर इधर उधर घूमता रहा पर उसको वहाँ कोई भी ज़िन्दा प्राणी दिखायी नहीं दिया। ऐसा लगता था जैसे वहाँ के लोग शहर छोड़ कर चले गये हों।

उसने अपने मन में सोचा कि लगता है कि इन्हीं राक्षसों ने इस शहर को उजाड़ा है और वे ही यहाँ से सबको उठा कर ले गये हैं।

बहुत देर तक वहाँ घूमने के बाद वह एक बहुत ही ऊँची मीनार के पास आया। उस मीनार को ऊपर तक देखने पर उसको उसमें एक रोशनी जलती नजर आयी। सो उसने दरवाजा खोला और सीढ़ियों से ऊपर जा पहुँचा।

वह एक कमरे में घुसा। कितना सुन्दर कमरा था वह। वह सोने चाँदी और मखमल से सजा हुआ था। उस कमरे में केवल एक लड़की एक काउच पर सो रही थी।

जैसे ही राजकुमार कमरे में घुसा उसकी निगाह उस सोती हुई लड़की पर पड़ी। लड़की बहुत सुन्दर थी। तभी उसने देखा कि दीवार पर से एक बहुत लम्बा सॉप नीचे उतर रहा था।

लड़की के पास आ कर उसने अपना सिर आगे बढ़ाया और उस लड़की के माथे पर उसकी भौंहों के बीच में उसको काटने ही वाला था कि राजकुमार ने अपना चाकू निकाला और उसके सिर को दीवार से यह कहते हुए जड़ दिया कि "भगवान करे कि मेरा यह चाकू मेरे सिवा और कोई न निकाल सके।"

उसके बाद वह वहॉ से भाग लिया। पाइन के पेड़ों के सहारे शहर की दीवार पर चढ़ा और फिर नीचे उतरा। जब वह उस गुफा में आया जिसमें राक्षस बैठे हुए थे उसने वहॉ से एक जलती हुई लकड़ी उठायी और लौट कर वहॉ आया जहॉ वह अपने भाइयों को सोता छोड़ गया था। वे अभी भी वहॉ गहरी नींद सो रहे थे। उसने जल्दी से आग सुलगा दी।

इस बीच दिन निकल आया। वे सब उठे तैयार हुए और एक बार फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़े। उसी दिन वे उस सड़क पर आ गये जो शहर को जाती थी।

उस शहर में एक बहुत ही ताकतवर राजा रहता था जो हर सुबह शहर की सड़कों पर राक्षसों द्वारा किये गये नुकसान को रोता घूमता रहता था। राजा को डर था कि राक्षस उसकी बेटी को भी एक दिन उठा कर ले जायेंगे और खा जायेंगे।

उस दिन वह सुबह जल्दी ही उठा और शहर देखने के लिये निकला। शहर की सारी सड़कें खाली पड़ी थीं क्योंकि शहर के करीब करीब सारे लोग उन दुष्टों ने खा लिये थे।

घुमते घूमते एक जगह उसने शहर की दीवार के सहारे पाइन का एक पेड़ का तना खड़ा देखा जिसको जड़ सहित उखाड़ लिया गया था। यह सब किसने किया यह जानने की इच्छा से वह उसके पास तक गया तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि नौ राक्षसों के जो आदमियों के कट्टर दुश्मन थे शरीर और कटे हुए सिर पड़े थे।

राजा ने जब यह देखा तो वह तो बहुत खुश हुआ। जो कुछ थोड़े बहुत लोग उसके शहर में रह गये थे उसने उनको बुलाया और सबने साथ मिल कर भगवान की प्रार्थना की। साथ में उसकी तन्दुरुस्ती और खुशकिस्मती के लिये भी दुआ की जिसने उन राक्षसों का मारा था।

उसी समय एक नौकर भागता हुआ आया कि किसी सॉप ने उसकी बेटी को लगभग मार ही दिया है। यह सुन कर राजा तुरन्त ही अपनी बेटी के कमरे में भागा गया।

वहॉ जा कर उसने देखा कि एक सॉप अपने सिर से एक चाकू से दीवार पर जड़ा हुआ है। उसने चाकू को खींचने की पूरी कोशिश की पर वह तो उसको हिला भी न सका।

तब राजा ने अपने पूरे राज्य में मुनादी पिटवा दी कि जिस किसी ने भी नौओं राक्षसों को मारा है और साँप को दीवार से चाकू से जड़ा है वह राजा के पास आये राजा उसको बहुत इनाम देगा और अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर देगा।

राजा ने मुख्य मुख्य सड़कों पर जगह जगह सरायें बनवा दीं और जो भी लोग वहाँ से गुजरते थे उनसे सबसे पूछा जाता था कि उसने कोई ऐसा आदमी देखा है जिसने नौ राक्षस मारे हों।

और अगर कोई ऐसा यात्री जो इसको बारे में कुछ जानता हो मिल जाये तो उसको मेरे पास ले कर आया जाये। उससे उसकी बारे कुछ भी खबर मालूम होने के बाद उसको बहुत बड़ा इनाम दिया जायेगा।

कुछ समय बाद तीनों भाई अपनी बहिनों को ढूँढते हुए उस देश में आ पहुँचे और एक रात उन सरायों में से एक सराय में आ कर ठहरे। खाना खाने के बाद सराय का मालिक आया और अपनी करनियों का गुणगान करने लगा।

फिर उसने उन सबसे पूछा कि क्या उन लोगों में से भी कभी किसी ने ऐसा साहसिक काम किया है।

इस पर सबसे बड़ा भाई बोला — "जब मैं अपने भाइयों के साथ इस यात्रा पर निकल था एक रात हम सब जंगल के बीच में एक झील के किनारे आराम करने के लिये रुक गये। मेरे दोनों भाई सो गये और मैं उस रात पहरा देता रहा।

अचानक झील में से एक मगर बाहर निकला और हम सबको खाने ही वाला था कि मैंने अपना चाकू निकाला और उसका सिर काट दिया। अगर तुम्हें यकीन नहीं होता तो यह देखो कि मेरे पास उसके दोनों कान हैं।" कह कर उसने अपनी जेब से उसको दोनों कान निकाले और सराय के मालिक के सामने मेज पर फेंक दिये।

इसके बाद दूसरा भाई बोला — "दूसरे दिन भी हम एक झील के किनारे रुके। उस रात मैंने पहरा दिया। उस दिन झील के पानी से हम सबको खाने के लिये एक दो मुँह वाला मगर निकला।

मैंने भी अपना चाकू निकाला और उसके दोनों सिर काट दिये। मैंने भी उसके दोनों सिरों के चारों कान काट कर रख लिये। देखिये ये हैं वे।"

कह कर उसने भी चार कान अपनी जेब से निकाले और सराय के मालिक के सामने मेज पर निकाल कर रख दिये।

तीसरा भाई कुछ नहीं बोला चुप ही रहा तो सराय के मालिक ने उससे कहा — "तुम्हारे भाई तो बहुत ही बहादुर हैं। अब तुम कुछ बताओ कि क्या तुमने भी कभी कोई ऐसा ही कोई बहादुरी का काम किया है?"

सबसे छोटा भाई बोला — "मैंने भी कुछ किया तो है हो सकता है कि वह इतना बहादुरी का काम न हो। तीसरी रात को भी हम एक झील के पास ही रुके। मेरे दोनों भाई तो सो गये और मैं पहरे पर रहा।

आधी रात को झील के पानी में बहुत ज़ोर का उछाल आया और उसमें से एक तीन सिर वाला मगर हम लोगों को खाने के लिये बाहर निकला। पर मैंने अपनी तलवार निकाली और उसके तीनों सिर काट डाले और उसके छह कान काट डाले। अगर तुम्हें विश्वास न हो तो यह देखो ये छह कान।"

और यह कह कर उसने छहों कान सराय के मालिक के सामने मेज पर रख दिये। यह देख कर उसके दोनों भाई तो दंग रह गये।

वह फिर बोला — "इसी बाच हमारी आग बुझ गयी तो मैं आग ढूँढने चल दिया। मैं पहाड़ों में इधर उधर घूमते घामते एक गुफा के सामने आ गया जिसमें नौ राक्षस बैठे हुए थे।" इस तरह से उसने सारी कहानी सुना दी जो तबसे ले कर अब तक घटी थी।

यह कहानी सुन कर तो सराय का मालिक राजा के पास भागा गया। राजा ने तुरन्त ही उसको बहुत सारे पैसे दिये और उन तीनों भाइयों को अपने सामने लाने के लिये अपने कुछ आदमियों को भेज दिया।

जब वे राजा के सामने आ गये तो राजा ने सबसे छोटे राजकुमार से पूछा — "क्या शहर में ये सारे आश्चर्यजनक काम तुमने किये हैं – नौओं राक्षसों को मारना मेरी बेटी को सॉप से बचाना?"

राजकुमार बोला — "जी मैजेस्टी।"

राजा ने अपने वायदे के अनुसार उससे अपनी बेटी की शादी कर दी और उसको अपना वारिस बना दिया। इसके बाद उसने दोनों बड़े भाइयों से कहा कि अगर वे चाहें तो वह उनके लिये भी लड़की ढूँढ सकता है और महल बनवा सकता है। उन्होंने उसको धन्यवाद देते हुए बताया कि वे तो शादीशुदा थे।

इसी सिलसिले में उन्होंने राजा को बताया कि वे अपनी तीन बहिनों को ढूँढने निकले हैं। यह सुन कर राजा ने केवल सबसे छोटे भाई को यानी अपने दामाद को अपने पास रख लिया और दूसरे दोनों भाइयों को सोने से लदे हुए दो खच्चर दे दिये। खच्चर ले कर वे दोनों अपने राज्य लौट गये।

X X X X X X X

सारे समय छोटा भाई यही सोचता रहा कि हम तो अपनी बहिनों को ढूँढने निकले थे उनका क्या हुआ। कई बार उसने सोचा भी कि वह उनकी खोज में जाये पर वह अपनी पत्नी को भी छोड़ कर नहीं जाना चाहता था। राजा भी उसको वहाँ से जाने की इजाज़त नहीं देता सो वह चुपचाप से यह दुख झेलता हुआ वहीं रहता रहा।

एक दिन राजा शिकार करने गया तो राजकुमार से कहता गया — "तुम यहीं महल में ही रहना और लो ये नौ चाभियाँ लो इन्हें सँभाल कर रखना। अगर कभी तुम्हारी इच्छा हो तो तुम यहाँ के

3–4 कमरे खोल कर देख सकते हो। तुमको उनमें सोना चाँदी और और भी कई कीमती चीज़ें मिल सकती हैं।

अगर तुम्हारी कुछ ज़्यादा ही इच्छा हो तो असल में तुम आठ कमरे खोल कर देख सकते हो पर कभी भी किसी भी हालत में तुम नवाँ कमरा मत खोलना। अगर तुम उसे खोलोगे तो तुम्हें बहुत दुख उठाने पड़ेंगे।"

ऐसा कह कर राजा अपने दामाद को छोड़ कर चला गया तो तुरन्त ही दामाद उन कमरों के दरवाजे खोलने के लिये चल दिया और एक के बाद दूसरा कमरा खोलता गया।

आखीर में उसने आठवाँ दरवाजा भी खोल दिया। सब कमरों में कुछ न कुछ कीमती चीज़ें भरी पड़ी थीं। आठ कमरों का दरवाजा खोलने के बाद उसने सोचा कि अब तक तो मुझे कुछ हुआ नहीं है सो अबके बाद उसको नवें कमरे का दरवाजा नहीं खोलना चाहिये। पर फिर भी उसने उसका दरवाजा खोल ही दिया।

पर लो उस कमरे में उसने क्या देखा। उसमें एक आदमी जंजीरों से पैरों से घुटनों तक और हाथ से ले कर कोहनी तक कमरे के चारों कोनों में चारों खम्भों से बँधा पड़ा है।

उसकी सारी जंजीरें उसके गर्दन में पड़े एक छल्ले से जुड़ी हुई हैं। उसको इतनी कस कर बाँधा हुआ था कि वह किसी भी दिशा में किसी भी तरह हिल नहीं सकता था।

उसके सामने ही बहुत सारा पानी रखा था जिसमें से एक सोने की नली से पानी हो कर एक बर्तन में गिर रहा था। उसके पास ही एक सोने का गिलास रखा हुआ था जिस पर बहुत सारे कीमती रत्न जड़े हुए था।

वह आदमी पानी की तरफ बड़ी ललचाई हुई ऑखों से देख रहा था। वह उस पानी से कुछ पानी पीना चाह रहा था पर वह उसकी तरफ झुक ही नहीं पा रहा था क्योंकि वह तो हिल भी नहीं पा रहा था।

जब राजकुमार ने यह देखा तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। वह वापस जाने लगा तो आदमी चिल्लाया — "अन्दर आओ मेहरबानी कर के अन्दर आओ।"

यह सुन कर राजकुमार फिर से अन्दर की तरफ बढ़ चला। यह देख कर वह आदमी फिर चिल्लाया — "यहॉ से बाद की ज़िन्दगी के लिये कम से कम तुम एक तो अच्छा काम कर लो। मुझे एक गिलास पानी ही पिला दो। यकीन रखो तुम्हारी इस भलाई का फल तुमको जरूर मिलेगा।"

राजकुमार ने सोचा कि "यह तो बड़ा अच्छा है कि मुझे दो ज़िन्दगियॉ मिलेंगी सो उसने वहॉ रखा हुआ सोने का गिलास उठाया उसे पानी से भरा और उस आदमी को दे दिया। उसने भी उस पानी को तुरन्त ही पी लिया।

राजकुमार ने पूछा — "अब बताओ तुम्हारा नाम क्या है।"

आदमी बोला — "मेरा नाम "सच्चा लोहा"[59] है।"

सुन कर राजकुमार बाहर की तरफ जाने लगा पर उस आदमी ने फिर से प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मुझे एक गिलास पानी और दो। मैं तुम्हें इसके अलावा एक ज़िन्दगी और दूँगा।"

राजकुमार ने सोचा "एक ज़िन्दगी तो मेरी है ही दूसरी इसने मुझे दे ही दी और अब यह एक और। यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

सो उसने एक गिलास पानी उसको और पिला दिया। आदमी ने उसे भी पी लिया। राजकुमार ने दरवाजा बन्द करना शुरू कर दिया था कि उस आदमी ने उसको फिर से बुलाया और कहा — "वापस आ जाओ मेरे बहादुर। तुमने मेरे लिये दो अच्छे काम किये हैं। मेहरबानी कर के एक तीसरा काम और कर दो तो मैं तुम्हें तीसरी ज़िन्दगी दे दूँगा। यह गिलास उठाओ और उसमें पानी भर कर मेरे सिर पर डाल दो। इसके लिये मैं तुम्हें तीसरी ज़िन्दगी दूँगा।"

राजा के बेटे ने जब यह सुना तो उसने एक गिलास पानी भर कर उसके सिर पर डाल दिया। जैसे ही पानी उसके सिर से छुआ तो उसकी गर्दन का छल्ला लोहे की जंजीरें आदि सब टूट कर गिर गयीं।

सच्चा लोहा बिजली की तरह से कूद गया अपने पंख फैलाये और उड़ने लगा। साथ में उसने राजा की बेटी को भी ले लिया

---

[59] Translated for the words "True Steel"

यानी उस आदमी की पत्नी को जिसने उसे आजाद कराया था और गायब हो गया। अब क्या किया जा सकता था। राजकुमार तो राजा के गुस्से से डरा हुआ था।

जब राजा शिकार से वापस आया तो उसके दामाद ने उसे सब बताया। राजा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ और बोला — "पर तुमने ऐसा किया ही क्यों। मैंने तुमसे नवाँ कमरा खोलने से मना किया था।"

राजकुमार बोला — "आप मुझसे नाराज न हों मैं अभी जाता हूँ और अपनी पत्नी को ढूँढ कर लाता हूँ।"

राजा ने उससे बहुत मना किया कि वह उसका पीछा न करे। वह सच्चे लोहे को नहीं जानता। उसने मेरे बहुत सारे सिपाहियों की जानें और बहुत सारा पैसा ले लिया है जो भी उसे पकड़ने गया है। इसलिये तुम यहीं रहो। मैं तुम्हारे लिये कोई और लड़की ढूँढ दूँगा। तुम डरो नहीं मैं तुम्हें अपने बेटे जैसा ही प्यार करता हूँ। जो कुछ हुआ वह हुआ।"

राजकुमार उसकी यहाँ रहने की बात नहीं सुन रहा था। उसने यात्रा के लिये कुछ पैसा लिया घोड़े पर साज सजाया लगाम पकड़ी और सच्चे लोहे को ढूँढने चल दिया।

X X X X X X X

काफी देर तक चलने के बाद वह एक अजीब से शहर में घुसा। वहाँ वह इधर उधर घूम रहा था कि एक घर में से एक लड़की ने उसको पुकारा — "ओ राजकुमार तुम अपने घोड़े से उतर जाओ और आओ मेरे आँगन में आ जाओ।"

जब वह उसके आँगन में पहुँचा तो उस लड़की ने उसका स्वागत किया। उसने उसकी तरफ ध्यान से देखा तो लो वह तो उसकी सबसे बड़ी बहिन थी। दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया तो बहिन ने कहा — "आओ भैया आओ अन्दर आ जाओ।"

जब वे घर के अन्दर पहुँच गये तो राजकुमार ने उससे पूछा — "तुम्हारा पति कौन है।"

बहिन बोली — "मैं ड्रैगनों के राजा की पत्नी हूँ जो खुद भी एक ड्रैगन है। मुझे तुम्हें कहीं छिपा लेना चाहिये मेरे प्यारे भाई। क्योंकि मेरे पति कह रहे थे कि वह अपने साले को मार देंगे। बस वह एक बार उनको कहीं मिल जाये।

मैं पहले उनको देखती हूँ और अगर वह वायदा करें कि वह तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे तभी मैं उनको बताऊँगी कि तुम यहाँ हो।" सो उसने अपने भाई और उसके घोड़े दोनों को ठीक से छिपा दिया।

शाम को खाना बना। बहिन का पति आया। जब वह आँगन में उड़ कर आ गया तो वह वहीं से चिल्लाया — "मुझे आज घर में

से किसी आदमी की खुशबू आ रही है। मुझे सीधे सीधे बताओ कि यहाँ कौन है।"

बहिन ने कहा — "यहाँ तो कोई नहीं है।"

ड्रैगन बोला — "यह सच नहीं है।"

तब उसकी पत्नी ने उससे कहा — "प्रिय जो कुछ भी मैं तुमसे पूछूँ क्या तुम मुझे सच सच बताओगे? अगर मेरा कोई भाई मुझसे मिलने के लिये मेरे पास आता है तो क्या तुम मेरे भाई को कोई नुकसान पहुँचाओगे?"

ड्रैगन बोला — "हाँ अगर तुमसे मिलने के लिये तुम्हारा सबसे बड़ा वाला और बीच वाला भाई आयेगा तो मैं उसे पका कर खा जाऊँगा। पर मैं तुम्हारे सबसे छोटे भाई को कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।"

तब उसकी पत्नी बोली — "तब मैं तुमको बता सकती हूँ कि मेरा सबसे छोटा भाई यहाँ है।"

ड्रैगन बोला — "तब तुम उसको मेरे पास लाओ।"

उसकी पत्नी अपने भाई को ले कर उसके पास गयी। ड्रैगन ने उसे गले लगाया उसे चूमा और उसका स्वागत किया।

भाई बोला — "मुझे आशा है कि आप अच्छे हैं।" कह कर उसने ड्रैगन राजा को अपनी यात्रा का पूरा हाल बता दिया।

ड्रैगन राजा बोला — “तो फिर अब तुम कहाँ जा रहे हो? परसों ही तो सच्चा लोहा तुम्हारी पत्नी को ले कर इधर से गुजरा है। मैंने उसको पकड़ने के लिये अपने **7000** ड्रैगन भेजे पर उनमें से एक भी उसका बाल बाँका भी न कर सका।

तुम उस शैतान को छोड़ दो। मैं तुम्हें उतना पैसा दूँगा जितना तुम चाहोगे उसको ले कर तुम घर चले जाओ।”

पर राजकुमार की समझ में घर लौट जाने की बात नहीं आयी। अगली सुबह को वह फिर से अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

जब ड्रैगनों के राजा ने देखा कि वह उसका दिमाग न बदल सका तो उसने अपना एक पंख निकाला और उसके हाथ में देते हुए बोला — “जो बात मैं तुमसे अब कहने जा रहा हूँ इसको तुम ध्यान से सुनना।

यह मेरा एक पंख तुम्हारे पास है। अगर तुमको सच्चा लोहा कहीं मिल जाये और तुम उससे परेशान हो जाओ तो तुरन्त ही इस पंख को जला देना तो मैं अपनी पूरी सेना ले कर तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा।”

राजकुमार ने उसके हाथों से उसका पंख लिया और अपनी यात्रा पर चला गया। चलते चलते वह एक बहुत बड़े शहर में पहुँचा।

जब वह वहाँ की सड़कों पर घूम रहा था तो एक घर से एक लड़की ने चिल्ला कर उसे बुलाया — — "ओ राजकुमार तुम अपने घोड़े से उतर जाओ और आओ मेरे आँगन में आ जाओ।"

जब वह उसके आँगन में पहुँचा तो उस लड़की ने उसका स्वागत किया। उसने उसकी तरफ ध्यान से देखा तो लो वह तो उसकी दूसरी बहिन थी। दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया तो बहिन ने कहा — "आओ भैया आओ अन्दर आ जाओ।"

जब वे घर के अन्दर पहुँच गये तो उसने राजकुमार को अन्दर बिठाया उसके घोड़े को अस्तबल में बाँधा। राजकुमार ने उससे पूछा — "तुम्हारा पति कौन है।"

बहिन बोली — "मैं बाज़ों के राजा की पत्नी हूँ जो खुद भी एक बाज़ हैं। मेरे पति शाम को आने वाले हैं मुझे तुम्हें कहीं छिपा लेना चाहिये मेरे प्यारे भाई। क्योंकि मेरे पति कह रहे थे कि वह अपने साले को मार देंगे बस वह एक बार उनको मिल जाये।

सो मैं पहले उनको देखती हूँ अगर वह वायदा करें कि वह तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे तभी मैं उनको बताऊँगी कि तुम यहाँ हो।" सो उसने अपने भाई और उसके घोड़े दोनों को ठीक से छिपा दिया।

शाम को खाना बना। बहिन का पति आया। जब वह आँगन में उड़ कर आ गया तो वह वहीं से चिल्लाया — "मुझे आज घर में

से किसी आदमी की खुशबू आ रही है। तुम मुझे सीधे सीधे बताओ कि यहाँ कौन है।"

बहिन ने कहा — "यहाँ तो कोई नहीं है।"

बाज़ बोला — "यह सच नहीं है।"

तब उसकी पत्नी ने उससे कहा — "प्रिय जो कुछ भी मैं तुमसे पूछूँ क्या तुम मुझे सच सच बताओगे? अगर मेरा कोई भाई मुझसे मिलने के लिये मेरे पास आता है तो क्या तुम मेरे भाई को कोई नुकसान पहुँचाओगे?"

बाज़ बोला — "हाँ अगर तुमसे मिलने के लिये तुम्हारा सबसे बड़ा वाला और बीच वाला भाई आयेगा तो मैं उसे पका कर खा जाऊँगा। पर मैं तुम्हारे सबसे छोटे भाई को कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।"

तब उसकी पत्नी बोली — "तब मैं तुमको बता सकती हूँ कि मेरा सबसे छोटा भाई यहाँ है।"

बाज़ बोला — "तब तुम उसको मेरे पास लाओ।"

उसकी पत्नी अपने भाई को ले कर उसके पास गयी। बाज़ ने उसे गले लगाया उसे चूमा और उसका स्वागत किया।

भाई बोला — "मुझे आशा है कि आप अच्छे हैं।" कह कर उसने बाज़ राजा को अपनी यात्रा का पूरा हाल बता दिया। दोनों ने खाना खाया।

फिर बाज़ राजा बोला — "तो फिर अब तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार ने बताया कि वह सच्चे लोहे की तलाश में है तो बाज़ राजा ने उसको सलाह दी कि वह वहाँ से आगे न जाये। उसने कहा — "तुम्हारा उसके पास जाने का कोई फायदा नहीं है। मैं तुम्हें सच्चे लोहे के बारे में कुछ बताता हूँ। जिस दिन उसने तुम्हारी पत्नी को चुराया मैं उसी दिन उससे अपने 4000 बाज़ों के साथ लड़ा।

हम लोगों में बहुत भयानक लड़ाई हुई। खूब खून बहा। यहाँ तक कि वह घुटनों तक आ गया पर फिर भी हम उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सके। तो तुम क्या सोचते हो तुम अकेले ही उससे लड़ लोगे?

मैं तुम्हें यह सलाह दूँगा कि तुम उस शैतान को छोड़ दो और घर चले जाओ। मैं तुम्हें उतना पैसा दूँगा जितना तुम चाहोगे बस उसको ले कर तुम घर चले जाओ।"

पर राजकुमार की समझ में घर लौट जाने की बात नहीं आयी। उसने कहा — "आपकी सलाह के लिये बहुत बहुत धन्यवाद पर मैं वापस नहीं जा सकता। हर हाल में मुझे सच्चे लोहे को ढूँढना है।"

उसने सोचा यह कि उसके पास तो तीन ज़िन्दगियाँ हैं फिर वह क्यों डरे।

जब बाज़ राजा ने देखा कि वह उसका दिमाग न बदल सका तो उसने अपना एक पंख निकाला और उसके हाथ में देते हुए बोला — "लो मेरा यह एक पंख लो और जब भी कभी तुम किसी बड़ी मुसीबत में हो तो इस पंख को याद कर लेना।

यह मेरा एक पंख तुम्हारे पास है। अगर तुमको सच्चा लोहा कहीं मिल जाये और तुम उससे परेशान हो जाओ तो तुरन्त ही इस पंख को जला देना तो मैं अपनी सारी ताकत के साथ तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा।"

राजकुमार ने उसके हाथों से उसका पंख लिया और फिर अपनी यात्रा पर चल दिया। दुनियाँ में घूमते घूमते वह फिर एक बहुत बड़े शहर में पहुँचा तो एक लड़की ने उसको अपने घर से पुकारा — "ओ राजा के बेटे। घोड़े से उतर कर यहाँ मेरे घर के आँगन में आओ।"

जब वह उसके आँगन में पहुँचा तो उस लड़की ने उसका स्वागत किया। उसने उसकी तरफ ध्यान से देखा तो लो वह तो उसकी सबसे छोटी बहिन थी। दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया तो बहिन ने कहा — "आओ भैया आओ अन्दर आ जाओ।"

जब वे घर के अन्दर पहुँच गये तो राजकुमार ने उससे पूछा — "प्रिय बहिन। तुम्हारी शादी किससे हुई है। तुम्हारा पति कौन है।"

बहिन बोली — "मैं गरुड़ों के राजा की पत्नी हूँ जो खुद भी एक गरुड़ हैं। मुझे तुम्हें कहीं छिपा लेना चाहिये मेरे प्यारे भाई। क्योंकि मेरे पति कह रहे थे कि वह अपने साले को मार देंगे। बस वह एक बार उनको मिल जाये।

मैं पहले उनको देखती हूँ अगर वह वायदा करें कि वह तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे तभी मैं उनको बताऊँगी कि तुम यहाँ हो।" सो उसने अपने भाई और उसके घोड़े दोनों को ठीक से छिपा दिया।

शाम को खाना बना। बहिन का पति आया। जब वह आँगन में उड़ कर आ गया तो वह वहीं से चिल्लाया — "मुझे आज घर में से किसी आदमी की खुशबू आ रही है। मुझे सीधे सीधे बताओ कि यहाँ कौन है।"

बहिन ने कहा — "यहाँ तो कोई नहीं है।"

गरुड़ बोला — "यह सच नहीं है।"

तब उसकी पत्नी ने उससे कहा — "प्रिय जो कुछ भी मैं तुमसे पूछूँ क्या तुम मुझे सच सच बताओगे? अगर मेरा कोई भाई मुझसे मिलने के लिये मेरे पास आता है तो क्या तुम मेरे भाई को कोई नुकसान पहुँचाओगे?"

गरुड़ बोला — "हाँ अगर तुमसे मिलने के लिये तुम्हारा सबसे बड़ा वाला और बीच वाला भाई आयेगा तो मैं उसे पका कर खा

जाऊँगा। पर मैं तुम्हारे सबसे छोटे भाई को कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा बल्कि उसकी तो मैं सहायता ही करूँगा।"

तब उसकी पत्नी बोली — "तब मैं तुमको बता सकती हूँ कि मेरा सबसे छोटा भाई यहाँ है। वह मुझसे मिलने आया है।"

गरुड़ बोला — "तब तुम उसको मेरे पास लाओ।"

उसकी पत्नी अपने भाई को ले कर उसके पास गयी। गरुड़ों के राजा ने उसे गले लगाया उसे चूमा और उसका स्वागत किया।

भाई बोला — "मुझे आशा है कि आप अच्छे हैं।" कह कर उसने और गरुड़ों के राजा ने शाम का खाना खाया। इस बीच उन दोनों ने बहुत बातें कीं। राजकुमार ने गरुड़ राजा को अपनी यात्रा का पूरा हाल बता दिया।

गरुड़ों के राजा ने जब यह सब सुना तो बोला — "तो फिर अब तुम कहाँ जा रहे हो? तुम उस शैतान को छोड़ दो। वहाँ जाने का अपना विचार छोड़ दो और तुम मेरे पास यहीं रहो। मैं तुम्हारे लिये वैसा ही करूँगा जैसा तुम कहोगे।"

पर राजकुमार की समझ में घर लौट जाने की बात नहीं आयी। अगली सुबह को जब वह उठा तो सच्चे लोहे को ढूँढने के लिये फिर से अपनी यात्रा पर जाने की तैयारी करने लगा।

जब गरुड़ों के राजा ने देखा कि वह उसका दिमाग न बदल सका तो उसने भी अपना एक पंख निकाला और उसके हाथ में देते हुए बोला — "लो मेरा एक पंख अपने पास रख लो। जब भी कभी

तुम अपने को खतरे में महसूस करो तो तुरन्त ही आग जला कर इस पंख को जला देना तो मैं अपनी पूरी सेना ले कर तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा।"

राजकुमार ने उसके हाथों से उसका पंख लिया और अपनी यात्रा पर चला गया। वह बहुत दिनों तक इधर उधर घूमता रहा – एक शहर से दूसरे शहर में। रोज वह अपने घर से दूर ही होता जाता। आखिर एक गुफा में उसको उसकी पत्नी मिल गयी।

जब उसकी पत्नी ने उसे देखा तो वह दंग रह गयी। वह चिल्लायी — "भगवान के लिये मुझे बताओ कि तुम यहाँ कैसे आये हो?"

तब उसने उसे अब तक की अपनी सारी कहानी बतायी और उससे कहा "चलो हम यहाँ से भाग चलते हैं।"

"हम यहाँ से कैसे भाग सकते हैं। यह सच्चा लोहा तो हमको तुरन्त ही पकड़ लेगा। और जब वह हमारे पास आ जायेगा तो वह तुमको मार डालेगा और मुझे वापस ले जायेगा।"

पर राजकुमार ने सोचा कि उसके पास तो तीन ज़िन्दगियाँ हैं सो उसने अपनी पत्नी से अपने साथ चलने की जिद की और वे वहाँ से चल पड़े।

जैसे ही वे वहाँ से चलना शुरू हुए सच्चे लोहे को पता चल गया। वह तुरन्त ही उनके पीछे दौड़ गया। जब वह उनके पास

पहुँच गया तो वह दूर से ही चिल्लाया — "सो राजकुमार तुमने मेरी पत्नी को चुरा लिया।"

कह कर उसने अपनी पत्नी उससे वापस ले ली और बोला — "इस बार तो मैं तुम्हें माफ कर देता हूँ क्योंकि मुझे याद है कि मैंने तुम्हें तीन ज़िन्दगियाँ दे रखी हैं। पर अभी तुम यहाँ से चले जाओ और फिर अपनी पत्नी के पीछे कभी मत आना नहीं तो तुम मारे जाओगे।"

यह कह कर सच्चा लोहा तो अपनी पत्नी को ले कर वहाँ से चला गया और राजकुमार वहीं अकेला ही खड़ा रह गया। काफी देर के बाद राजकुमार ने सोचा कि अब उसे अपनी पत्नी के पास वापस चलना चाहिये सो वह फिर से चल कर उस गुफा में पहुँच गया जहाँ उसकी पत्नी रहती थी।

उसने वहाँ आ कर देखा कि वह शैतान तो वहाँ है नहीं तो उसने फिर अपनी पत्नी को वहाँ से लिया और भाग चला। कि सच्चे लोहे को फिर से पता चल गया उसकी पत्नी घर से चली गयी है तो वह भी उनके पीछे पीछे भाग लिया।

पर जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने अपना तीर कमान पर रखा और उससे पूछा — "ओ राजकुमार। तुम्हें कौन सी मौत पसन्द है तीर से मरने वाली या फिर तलवार से मरने वाली?"

राजकुमार ने उससे माफी माँगी तो सच्चा लोहा बोला — "ठीक है यह मैं तुम्हें अब दोबारा माफ करता हूँ पर मैं तुम्हें फिर चेतावनी

देता हूँ कि आज के बाद तुम अपनी पत्नी को लेने के लिये यहाँ फिर कभी मत आना क्योंकि इसके बाद मैं तुम्हें फिर कभी माफ नहीं करूँगा और तुम्हें देखते ही मार दूँगा।"

यह कह कर वह अपनी पत्नी को ले कर अपनी गुफा की तरफ चला गया और राजकुमार वहीं का वहीं यह सोचता खड़ा रहा गया कि वह अपनी पत्नी को उस सच्चे लोहे से कैसे छुड़ाये।

पर बाद में उसने सोचा कि "मुझे अभी से उससे डरने की क्या जरूरत है अभी तो मेरे पास दो ज़िन्दगियाँ हैं – एक तो मेरी अपनी ज़िन्दगी और दूसरी इसकी दी हुई मुझे भेंट की ज़िन्दगी। तो मैं फिर उससे अभी क्यों डरूँ।"

सो अगले दिन वह फिर गुफा में आ पहुँचा और देखा कि सच्चा लोहा तो वहाँ है नहीं। राजकुमार ने अपनी पत्नी से कहा कि वह उसके साथ भाग चले।

उसकी पत्नी बोली — "इस तरह भागने से कोई फायदा नहीं। हमारा भागना उसको पता चल ही जायेगा और वह हमको पकड़ ही लेगा।" पर उसके पति ने उससे जिद की तो दोनों वहाँ से भाग चले।

सच्चे लोहे को भी तुरन्त ही पता चल गया कि उसकी पत्नी को राजकुमार ने भगा लिया है। सो वह भी तुरन्त ही उनके पीछे पीछे दौड़ गया और बोला — "रुक जाओ। इस बार मैं तुम्हें माफ नहीं

करूँगा।" राजकुमार यह सुन कर डर गया और उससे इस बार भी माफ करने के लिये कहा।

सच्चे लोहे ने कहा — "तुम्हें याद है कि मैंने तुम्हें तीन ज़िन्दगियाँ दी थीं इसी लिये मैं तुम्हें यह ज़िन्दगी और देता हूँ। पर यह तुम्हारी तीसरी और आखिरी ज़िन्दगी है। अब तुम्हारे पास केवल एक ही ज़िन्दगी बची है सो जाओ और भगवान ने जो ज़िन्दगी तुम्हें दी है उसको खतरे में नहीं डालना।"

राजकुमार ने देखा कि वह तो इस बड़ी ताकत के आगे अब कुछ नहीं कर सकता तो वह वहाँ से वापस चल पड़ा। फिर उसके दिमाग में आया "अबकी बार मैं चौथी बार अपनी पत्नी को वापस लाने की कोशिश करके देखता हूँ। अगर मुझे अबकी बार कोई परेशानी हुई तो मेरे पास मेरे जीजाओं के दिये हुए पंख तो हैं ही। मैं देखता हूँ कि वे मेरी सहायता के लिये आते हैं या नहीं।"

यह सोच कर वह फिर से अपनी पत्नी को लाने के लिये गुफा की तरफ चल दिया। जब उसने देखा कि सच्चा लोहा घर से बाहर जा रहा है तो वह उसके घर के पास जा पहुँचा और अपने पत्नी के पास पहुँचा।

वह उसे वहाँ देख कर फिर से दंग रह गयी और डर गयी। वह बोली — "क्या तुम अपनी ज़िन्दगी से इतना थक गये हो कि तुम बार बार मेरे पास चले आते हो?"

तब उसने उसको अपने जीजाओं के बारे में बताया कि कैसे उन्होंने उसको अपना एक एक पंख दे रखा है और वायदा किया है कि वे मुसीबत में उसकी सहायता करने आयेंगे।

इसी लिये वह उसके पास उसको वहाँ से ले चलने के लिये एक बार फिर आया है। उनको तुरन्त ही वहाँ से चले जाना चाहिये। सो इन्होंने ऐसा ही किया। जैसे ही वे वहाँ से भागे तो सच्चे लोहे को भी पता चल गया कि उसकी पत्नी घर से भाग गयी है सो वह भी उनके पीछे पीछे दौड़ पड़ा।

जैसे ही राजकुमार ने सच्चे लोहे को अपने पास देखा तो उसने लकड़ी का बक्सा निकाला दो चकमक पत्थर निकाले और उन तीनों पंखों में आग लगा दी। जब राजकुमार यह कर रहा था कि तभी सच्चे लोहे ने आ कर अपनी तलवार से राजकुमार के दो टुकड़े कर दिये।

उसी समय ड्रैगनों का राजा गरुड़ों का राजा और बाज़ों का राजा तीनों अपने अपने ड्रैगनों गरुड़ों और बाज़ों को ले कर वहाँ आ पहुँचे। उन सबने मिल कर सच्चे लोहे के ऊपर एक साथ हमला बोल दिया। बहुत सारा खून बहा पर फिर भी सच्चा लोहा रानी को ले कर वहाँ से भाग लिया।

उसके बाद तीनों जीजाओं ने अपने साले के ऊपर ध्यान देना शुरू किया। उन्होंने उसको ज़िन्दा करने का फैसला किया। उन्होंने

तीन सबसे ज़्यादा ताकतवर ड्रैगनों को जोरडन नदी[60] का पानी कम से कम समय में लाने का हुक्म दिया।

“कौन ला सकता है सबसे कम समय में जोरडन नदी का पानी?”

एक बोला — “मैं आधे घंटे में ला सकता हूँ।”

दूसरा बोला — “मैं 10 मिनट के अन्दर अन्दर जा कर वापस आ सकता हूँ।”

तीसरा बोला — “मैं केवल 9 सैकंड में ही ला सकता हूँ।”

तब तीनों राजाओं ने तीसरे ड्रैगन से कहा कि वह तुरन्त ही जोरडन नदी का पानी ले कर आये। सो तीसरा ड्रैगन अपनी पूरी ताकत के साथ उड़ गया और जैसा कि उसने वायदा किया था 9 सैकंड में जोरडन नदी का पानी ले कर आ गया।

राजाओं ने उस पानी को राजकुमार के शरीर पर वहाँ वहाँ छिड़क दिया जहाँ जहाँ उसको घाव हो रहे थे। पानी के गिरते ही उसके सारे घाव भर गये उसके शरीर को दोनों हिस्से जुड़ गये और वह कूद कर खड़ा हो गया।

तीनों राजाओं ने उसे फिर सलाह दी कि कितनी मुश्किल से वह ज़िन्दा हुआ है सो उसको अब घर वापस चले जाना चाहिये। पर राजकुमार अपनी जिद पर अड़ा था। उसने कहा कि चाहे जो हो

[60] Jordan River

जाये पर वह अपनी पत्नी को वापस लाने की कम से कम एक कोशिश और करेगा।

राजकुमार के सव जीजा लोगों ने उससे फिर विनती की कि वह अब घर वापस लौट जाये क्योंकि अबकी बार अगर तुम गये तो भगवान ने तुम्हें जो एक ज़िन्दगी दी है वह भी नहीं रहेगी। पर राजकुमार तो उनकी बात सुनने वाला नहीं था।

जब राजाओं ने देखा कि राजकुमार उनकी बात नहीं सुन रहा है तो उन्होंने उससे कहा — "देखो साले साहब। अगर तुमने यह पक्का इरादा कर ही रखा है कि तुम अपनी पत्नी को वापस लेने जाओगे ही तो तुम हमारी सलाह मान कर एक आखिरी काम करना।

तुम अपनी पत्नी को वहाँ से तुरन्त ही ले कर मत चल देना। पहले तुम उससे कहना कि वह सच्चे लोहे से यह जानने की कोशिश करे कि उसकी ताकत कहाँ रहती है। तब तुम उसे हमें आ कर बताना ताकि फिर हम तुम्हारी उसको जीतने में सहायता कर सकें।"

राजकुमार फिर से अपनी पत्नी के पास पहुँचा और छिप कर उससे मिला। उसने उससे किसी तरह से यह जानने की कोशिश करने के लिये कहा कि वह सच्चे लोहे की ताकत की जगह मालूम करे वह कहाँ है। यह कह कर वह उसे छोड़ कर चला गया।

शाम को जब सच्चा लोहा घर वापस आया तो राजकुमार की पत्नी ने पूछा — "आपकी ताकत कहाँ बसती है?"

सच्चा लोहा बोला — “प्रिये मेरी ताकत मेरी तलवार में है।”

यह सुन कर वह उसकी तलवार की तरफ घूमी और उसकी प्रार्थना करने लगी तो सच्चा लोहा बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — “ओ बेवकूफ मेरी ताकत मेरी तलवार में नहीं है बल्कि मेरे तीर कमान में है।”

यह सुन कर वह उसकी तीर कमान की तरफ घूमी और उसकी प्रार्थना करने लगी।

इस पर सच्चा लोहा बोला — “ओह प्रिये। ऐसा लगता है कि तुम्हारा गुरू कोई बहुत अच्छा गुरू है जिसने तुम्हें यह बहुत अच्छी तरह से समझाया है कि तुम मेरी ताकत कहॉ है यह अच्छी तरह जान लो। मैं यकीन के साथ कह सकता हॅू कि यह सब तुम्हारे पति ने तुम्हें समझाया है और वह अभी ज़िन्दा है।”

पर उसने उसे विश्वास दिलाने की कोशिश की कि ऐसा नहीं है उसको किसी ने नहीं सिखाया है क्योंकि अब उसके पास ऐसा कोई है ही नहीं जो उसको ऐसा सिखा सके।

कुछ दिन बाद राजकुमार अपनी पत्नी के पास आया तो पत्नी ने उसे बताया कि वह इस बारे में उससे कुछ पता नहीं कर पायी तो उसने उसे फिर से कोशिश करने के लिये कहा।

जब सच्चा लोहा फिर घर आया तो उसकी पत्नी ने फिर से उससे पूछना शुरू किया। वह बोला — “क्योंकि तुम मेरी ताकत के

बारे में जानने की इतनी इच्छा रखती हो तो मैं अबकी बार तुम्हें सच सच बता ही देता हूँ कि वह कहाँ है।

यहाँ से काफी दूर पर एक बहुत बड़ा पहाड़ है। उस पहाड़ पर एक लोमड़ी रहती है। लोमड़ी का एक दिल है जिसमें एक चिड़िया रहती है। उस चिड़िया में मेरी ताकत है।

उस लोमड़ी को पकड़ना कोई आसान काम नहीं है क्योंकि वह अपने आपको बहुत सारे जानवरों में बदल सकती है।" यह सुन कर उसकी पत्नी कुछ चिन्तित हो गयी।

अगले दिन सच्चे लोहे के घर से जाने के बाद राजकुमार फिर वहाँ आया तो उसने उसे जो कुछ भी पता लगाया था सब बता दिया। राजकुमार तुरन्त ही वहाँ से अपने जीजाओं के पास दौड़ गया जो उसके आने का बहुत ही बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। वे जानना चाहते थे कि उसकी ताकत कहाँ बसती थी।

जैसे ही राजकुमार ने उन्हें बताया तो वे चारों उस पहाड़ की तरफ चल पड़े। वहाँ पहुँच कर उन्होंने गरुड़ों को लोमड़ी की खोज पर लगा दिया। उधर वह लोमड़ी पहाड़ के बीच में बनी एक झील की तरफ भाग गयी और अपने आपको एक छह पंखों वाली सुनहरी चिड़िया में बदल लिया।

इस पर बाज़ों ने उसका पीछा किया और उसको झील से बाहर की तरफ खदेड़ दिया। वह वहाँ से बादलों में उड़ गयी। पर वहाँ उसका पीछा करने के लिये ड्रैगन थे। सो वह फिर से लोमड़ी में

बदल गयी और जमीन पर इधर उधर भागने लगी। बाकी बचे गरुड़ों ने उसको रोक लिया घेर लिया और उसको पकड़ लिया।

तीनों राजाओं ने उसको मारने का और उसका दिल निकालने का हुक्म दिया। बहुत बड़ी आग जलायी गयी। लोमड़ी के दिल में से चिड़िया निकाली गयी और उसको आग में फेंक दिया गया। उसी पल सच्चा लोहा भी मर गया।

राजकुमार ने भी अपनी पत्नी को साथ लिया और अपने घर वापस चला गया।

17 चरवाहा और राजा की बेटी[61]

बहुत दिनों पहले की बात है कि एक किसी जगह एक गरीब स्त्री रहती थी जिसके पास केवल एक बेटा था और चार भेड़ें थीं। उसका बेटा अपनी चारों भेड़ों को रोज सुबह घास चराने के लिये ले जाया करता था और रोज रात को घर वापस ले आया करता था।

एक दिन क्या हुआ कि उसकी चारों भेड़ें वहाँ के राजा के गर्मी वाले महल के आस पास वाले मैदान में दिन भर घास चरती रहीं।

कि राजा की बेटी अपने महल से बाहर निकली और छोटे चरवाहे से बोली कि वह उनमें से एक भेड़ उसको दे दे। लड़के ने कहा कि मैं तुम्हें इन भेड़ों में से एक भेड़ भी नहीं दे सकता क्योंकि अगर मैं तुम्हें उनमें से एक भेड़ दे दूँगा तो मेरी माँ बहुत नाराज होगी क्योंकि हमारे पास केवल ये ही चार भेड़ें हैं।

राजकुमारी को वे भेड़ें इतनी अच्छी लगीं कि उसको मना करना मुश्किल हो गया। आखिर में वह बोली — "अच्छा ठीक है। पर तुम मुझे कम से कम वह वाली भेड़ दे दो। मैं उसकी तुम्हें वही कीमत दूँगी जो तुम माँगोगे।"

जब लड़के ने देखा कि यह लड़की बिना भेड़ लिये नहीं मानेगी तो वह कुछ देर तक यही सोचता रहा कि वह उससे कैसे बचे।

---

[61] The Shepherd and the King's Daughter. (Tale No 17)

कुछ सोच कर वह बोला — "मैं तुम्हें यह वाली भेड़ दे दूँगा अगर तुम मुझे अपना दॉया कन्धा दिखा दो।"

लड़का तो आश्चर्य से दंग रह गया जब लड़की ने बिना किसी हिचक के अपना शाल अपने दॉये कन्धे से खिसकाया और उसको अपनी दॉयी नंगी गोरी बॉह दिखा दी। उसने देखा कि उसके दॉये कन्धे पर एक तारे का निशान था।

अब तो उसको अपने वायदे के अनुसार वह भेड़ उसको देनी ही पड़ी। रात को जब वह भेड़ों को ले कर अपने घर पहुँचा तो उसने अपनी मॉ को बताया कि उस दिन दोपहर को उसकी ऑख लग गयी थी। और जब उसकी ऑख खुली तो उसकी चारों भेड़ों में से एक भेड़ भाग गयी। फिर वह उसको कहीं नहीं मिल सकी।

यह सुन कर उसकी मॉ ने उसे बहुत डॉटा और कहा कि वह कल यह देखेगी कि उसके साथ न्याय हो। जब वह अगले दिन अपनी तीन भेड़ें चराने जाये तो घर से जल्दी ही निकले और भेड़ों के चराने के साथ साथ अपनी चौथी भेड़ को भी ढूँढे।

अगर वह अपनी चौथी भेड़ को ढूँढ कर शाम को न ला सके तो उसको अपना मुँह न दिखाये।

सो सुबह सुबह जल्दी ही लड़का अपनी तीन भेड़ों को ले कर घास के मैदान चल दिया। मैदान पहुँच कर उसने अपनी तीनों भेड़ें तो चरने के लिये छोड़ दीं और खुद घास पर बैठ कर यह सोचने लगा कि वह अपनी खोयी हुई चौथी भेड़ वापस कैसे लाये।

दोपहर को जब वहॉ कोई नहीं था तो राजा की बेटी फिर महल से बाहर निकल कर आयी और चरवाहे से बोली — “ओ नौजवान चरवाहे। मेहरबानी कर के मुझे एक भेड़ और दो और उसके बदले में तुम मुझसे जो चाहे सो मॉग लो।”

लड़का बोला — “नहीं मैं तुम्हें दूसरी भेड़ तो बिल्कुल भी नहीं दे सकता। मुझे उसी भेड़ के लिये काफी डॉट पड़ चुकी है जो मैंने तुम्हें कल दी थी। सो मेहरबानी कर के यहॉ से चली जाओ और मेरी कल वाली भेड़ मुझे वापस ला कर दे दो।”

राजकुमारी ने ऐसा करने से मना कर दिया कि इस तरह की बातें करना बिल्कुल बेवकूफी है। पर तुम मुझे यह बताओ कि कल जब मैंने तुम्हें अपना कन्धा दिखाया था तो क्या तुमने उसके ऊपर कोई खास निशान देखा था?”

“हॉ देखा था। एक तारा।”

राजकुमारी तुरन्त बोली — “आहा। तुम मुझे उस तारे को देखने की कीमत कभी नहीं दे सकते और तुम भेड़ लौटाने की बात कर रहे हो।”

उन्होंने आपस में लड़ना शुरू कर दिया क्योंकि राजकुमारी उससे एक भेड़ और दे देने के लिये जिद करती रही और लड़का उससे उसे उसकी पुरानी वाली भेड़ वापस कर देने के लिये कहता रहा।

चरवाहे ने देखा कि इस तरह से तो उसके भेड़ माँगने का कोई अन्त ही नहीं है तो लड़के ने फिर कहा — "मैं तुम्हें दूसरी भेड़ भी दे दूँगा अगर तुम मुझे अपना दूसरा कन्धा भी दिखा दो।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही बिना किसी हिचक के अपना दूसरा कन्धा भी उसको दिखा दिया। चरवाहे ने देखा कि उसके दूसरे कन्धे पर भी एक तारा था।

इस तरह से उसकी दूसरी भेड़ भी गयी। जब शाम हुई तो वह बहुत दुखी हो कर घर पहुँचा। उसको यकीन था कि आज तो उसकी माँ उसको बहुत डाँटेगी और शायद घर में भी न घुसने दे। और यही उसने किया भी।

आज उसने उसको पहली बार से कहीं ज़्यादा डाँट लगायी। कई गालियाँ दीं और पीटने की धमकी दी। आज तो लड़का वाकई अपने किये पर पछता रहा था कि उसने राजकुमारी की विनती पर ध्यान ही क्यों दिया। पर अब वह क्या कर सकता था।

अगले दिन राजकुमारी फिर उसके पास आयी और तीसरी भेड़ देने के लिये इतनी ज़्यादा और इतनी देर तक जिद की लड़का अपना धीरज खो बैठा और उसको शर्मिन्दा करने के लिये उसने उससे कहा कि वह तीसरी भेड़ देने के बदले में उसको अपनी गर्दन दिखा दे।

उसके आश्चर्य की तो हद ही नहीं रही जब उसने अपना शाल नीचे गिरा कर उसको अपनी गर्दन दिखा दी। उसने देखा कि उसके

गले पर तो दोयज का चॉद[62] बना हुआ था। इस तरह लड़के ने तीसरी भेड़ भी राजकुमारी को दे दी।

अब इसके बाद लड़के की शाम को घर जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी और न राजकुमारी के बारे में बताने के बारे में बताने की हिम्मत हो रही थी। पर फिर भी वह रात को ॲधेरा होने पर केवल एक भेड़ के साथ घर पहुॅचा।

यह देख कर वास्तव में उसकी मॉ बहुत दुखी थी कि उसके बेटे ने एक एक कर के तीन भेड़ें दिन में सो कर खो दी थीं। उसने उसको बद्दुआ दी कि तू तो किसी काम का नहीं तू तो अपनी मॉ से भीख मॅगवायेगा।

मॉ की डॉट की परवाह न करते हुए जब अगले दिन वह अपनी आखिरी भेड़ को चराने के लिये गया तो राजकुमारी को अपनी चौथी भेड़ देने से मना नहीं कर सका। हालॉकि उसको उसे देने में बहुत देर लगायी।

जब वह उसके मॉगने से थक गया तो चिल्ला कर बोला — "ठीक है मैं तुम्हें भेड़ दे दूॅगा पर पहले तुम अपना ब्लाउज़ उतारो।" लड़के को बिल्कुल भी आशा नहीं थी कि वह ऐसा करेगी पर उसने तो अपना ब्लाउज भी उतार दिया। उसने देखा कि उसकी छाती पर सूरज का निशान बना हुआ था।

---

[62] Translated for the word "Crescent"

इस तरह से नौजवान चरवाहे ने अपनी सारी भेड़ें राजकुमारी को दे दीं। बहुत दिनों तक फिर वह अपनी माँ के साथ बहुत गरीबी में रहता रहा। समय गुजरता रहा। दोनों बच्चे बड़े हो गये। राजा को अब राजकुमारी की शादी करनी थी।

राजा ने अपनी बेटी की शादी के लिये यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई उसके शरीर के ऊपर के जन्म के निशान[63] बतायेगा वह उसी से उसकी शादी करेगा।

नौजवान चरवाहे ने भी उसकी यह मुनादी सुनी तो जब वह शाम को घर पहुँचा तो उसने अपनी माँ से कहा — "माँ मैं कल राजा के घर जाऊँगा मेरे सबसे अच्छे कपड़े निकाल देना।"

"और राजा के घर में तुम क्या करोगे?"

"भगवान मेरी सहायता करे मैं राजा की बेटी से शादी करना चाहता हूँ।"

"बस बस छोड़ तू यह सब। सपने मत देख। इससे अच्छा तो यह होगा कि तू काम पर जा और एकाध पियास्टर[64] कमा कर ला बजाय इसके कि बिना सिर की मक्खी जैसा उड़े। उन सपनों को देखना छोड़ दे जो आसमान से भी ऊँचे हैं।"

पर नौजवान को रोकना नामुमकिन था। उसने अगले दिन अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और राजा के घर चल दिया। घर से

---

[63] Translated for the word "Birthmarks"

[64] Piaster – currency. One Piaster is equal to 1 Pence.

बाहर निकलने से पहले उसने अपनी चिन्तित माँ से कहा — "नमस्ते माँ।"

वह अभी घर से कुछ ही दूर गया होगा कि रास्ते में उसको एक जिप्सी[65] मिल गया।

उसने उससे पूछा — "ओ नौजवान तुम किधर चले।"

लड़का बोला — "मैं राजा के महल जा रहा हूँ। मेरा मतलब है कि भगवान मेरी सहायता करे मैं राजा की बेटी से शादी करने जा रहा हूँ।"

जिप्सी उसके कान में बोला — "लेकिन मेरे प्यारे साथी। ज़रा यह तो बताओ कि वह तुमसे शादी कैसे कर सकती है। मेरा मतलब है कि तुम तो इतने गरीब हो – केवल एक चरवाहा।"

लड़का बोला — "क्योंकि मैं जानता हूँ कि उसके शरीर पर कौन कौन से जन्म के निशान कहाँ कहाँ पर हैं। और राजा ने केवल यही मुनादी पिटवायी है कि जो कोई भी उसके शरीर पर उसके जन्म के निशान बतायेगा वह उसकी शादी उसी से करेगा।"

चालाक जिप्सी बोला — "तब तो मैं खुद भी तुम्हारे साथ राजा के महल चलूँगा।"

लड़का यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि चलो सड़क पर अच्छा साथ रहेगा। दोनों राजा के महल की तरफ चल दिये। चलते चलते

[65] Gypsy

वे राजा के महल आये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा तो वहाँ तो बहुत सारे लोग जमा थे।

वे सब अपनी अपनी किस्मत आजमाने के लिये आये हुए थे कि चलो राजकुमारी के जन्म के निशानों का अन्दाजा लगाते हैं। पर उनका यह समय बेकार ही गया क्योंकि हर एक को जब भी वह राजा के सामने से गुजरता और राजकुमारी के जन्म के निशानों का अन्दाजा लगाता उसको वहाँ से अपना समय बेकार करके बिना किसी फायदे के ही जाना पड़ता।

आखीर में राजा के सामने जाने की नौजवान चरवाहे की बारी आयी तो वह गया। जिप्सी उसके बिल्कुल बराबर बराबर चल रहा था ताकि वह यह सुन सके कि उसने राजा से क्या कहा।

नौजवान राजा के सामने से गुजरा और बोला — "राजकुमारी के दोनों कन्धों पर एक एक तारे का निशान है। उसके गले पर एक दोयज के चाँद का निशान है... ।"

इसी समय जिप्सी चिल्ला पड़ा — "यही तो मैं कहने जा रहा था... ।"

बीच में ही लड़के ने टोका — "चुप रहो। या फिर तुम कोई और जन्म का निशान जानते हो तो बोलो।"

जिप्सी जल्दी से बोला — "नहीं नहीं। तुम बोलो। पहले जो कुछ तुम जानते हो वह तुम बताओ उसके बाद मैं बताऊँगा जो कुछ मैं जानता हूँ।"

लड़का फिर से राजा से बोला — "और उसके सीने पर एक सूरज का निशान है।"

जिप्सी फिर चिल्लाया — "यही तो मैं कहने जा रहा था कि उसके सीने पर सूरज का एक निशान है।"

राजा तो यह सुन कर बहुत ही आश्चर्यचकित हो गया। उसने अपने सलाहकारों के सामने यह स्वीकार किया कि नौजवान चरवाहे को सब कुछ सही सही मालूम था। पर न तो राजा और न ही उसके सलाहकारों को यह बात पच रही थी कि वे राजकुमारी की शादी की शादी एक गरीब चरवाहे से कर दें।

अब वे सब मिल कर इस बात पर विचार करने लगे कि कैसे राजा की मुनादी को रखते हुए वे एक गरीब चरवाहे से राजकुमारी की शादी रोकें।

आखिर वे लोग इस नतीजे पर पहुँचे कि राजा को यह कहना चाहिये कि "क्योंकि जिप्सी और चरवाहे दोनों ने राजकुमारी के जन्म के निशानों के बारे में ठीक बताया है मैं यह ठीक से यह फैसला नहीं कर सकता कि मैं अपनी बेटी की शादी किससे करूँ।

इसलिये मैं ऐसा करता हूँ कि मैं दोनों को **70–70** पियास्टर[66] देता हूँ। ये दोनों बाहर जायें और एक साल तक इस पैसे से व्यापार

---

[66] Piaster. Piaster is the currency of Middle-Eastern countries in those days. 1 Piaster = I Pence

करें। साल खत्म होने पर जो कोई भी मुझे सबसे ज़्यादा पैसे कमा कर ला कर देगा मैं उसी से अपनी बेटी की शादी कर दूँगा।"

और इस तरह दोनों को पैसा दे दिया गया। दोनों दो दिशाओं में अपनी अपनी किस्मत आजमाने चल दिये।

जैसे बिना सिर के मक्खी उड़ती है उसी तरीके से यह पता न होने के बावजूद कि वे कहाँ जा रहे थे कुछ समय तक यात्रा करने के बाद चरवाहा रात को सोने के लिये एक बुढ़िया के घर रुका। यह बुढ़िया तो उसकी अपनी माँ से भी बहुत ज़्यादा गरीब थी।

जब वह शाम को बुढ़िया के पास बैठा हुआ था कि उसने सोचा कि वह उससे पूछे कि उसके पास 70 पियास्टर हैं तो वह उनको किस तरीके से सबसे अच्छी तरह से पैसा कमाने में काम में ला सकता है। इस बात पर उसकी सलाह ले।

सो वह बोला — "माँ जी। मेरे पास व्यापार करने के लिये 70 पियास्टर हैं। क्या आप मुझे इस बारे में कुछ बता सकती हैं कि मैं उन्हें किस तरह से खर्च करूँ कि मुझे उससे कुछ फायदा हो जाये।"

बुढ़िया ने जवाब देने से पहले कुछ देर सोचा फिर बोली — "कल यहाँ बाजार लगने वाला है। तुम वहाँ खुद जाओ और वहाँ कोई अपनी कमजोर सी गाय बेचने के लिये आयेगा तो तुम उसको खरीदने की कोशिश करना।

वह गाय एक चितकबरी गाय होगी बहुत ही पतली दुबली सी होगी और कम खाना खायी हुई होगी। पर तुम किसी भी कीमत पर

उसे खरीद लेना। जैसे ही तुम उसे खरीद लो तो उसको मेरे पास ले आना।"

नौजवान ने उसकी बात मानने का वायदा किया और अगले दिन गाय खरीदने के लिये बाजार चल दिया। लो वहाँ तो उसको वैसी गाय वाला एक आदमी उसे बेचता हुआ मिल गया।

बहुत सारे लोग उस गाय को खरीदने के लिये दौड़े पर नौजवान ने उसके सबसे ज़्यादा दाम लगाये। उस गाय को खरीदने में उसके सारे 70 पियास्टर खर्च हो गये।

गाय खरीद कर वह बुढ़िया के पास मकान में आ गया और आ कर सो गया। जब बुढ़िया को लगा कि कोई आ रहा था तो वह बाहर निकल कर आयी तो उसने जवाब दिया — "मैं हूँ माँ जी। मैं गाय ले कर आ गया हूँ। अब हम इसका क्या करेंगे। इसको खरीदने में तो मेरे सारे पैसे खर्च हो गये।"

बुढ़िया बोली — "गाय को काट दो मेरे बच्चे और इसके टुकड़े कर दो।"

नौजवान चरवाहा कुछ हिचकिचाते हुए बोला जैसे वह पहले यह पक्का कर लेना चाहता हो कि वह बुढ़िया की बात माने या न माने — "पर इस तरह से हम अपना पैसा फायदे सहित कैसे वापस पा सकेंगे।"

बुढ़िया बोली — "डरो नहीं बेटे। जैसा मैं कहती हूँ वैसा ही करो।" सो उसने गाय को मार दिया और उसके टुकड़े कर दिये।

उसने फिर पूछा — "अब क्या करूँ।"

बुढ़िया ने बड़ी शान्ति से कहा — "अब हम इसका मॉस खायेंगे और इसकी चर्बी पिघला कर किसी बर्तन में रख देंगे जिसको हम फिर कभी काम में लेंगे।"

चरवाहे को बुढ़िया की यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं आयी क्योंकि वह यह सोच ही नहीं सका कि इस तरह से गाय को इस्तेमाल करने से उसको उसके पैसे का क्या फायदा मिलेगा पर अब क्योंकि उसके पास और कोई और चारा नहीं था सो उसको उसकी यह बात माननी ही पड़ी।

उसने सोचा "मैं भी क्या बेवकूफ था जो मैंने इस बुढ़िया की बात दो बार मान ली तो मुझे अब तीसरी बार भी इसकी सलाह माननी पड़ेगी।"

वह बुढ़िया के साथ बहुत दिनों तक तब तक रहा जब तक कि गाय के मॉस का आखिरी टुकड़ा खत्म नहीं हो गया। फिर वह अपनी इन सारी घटनाओं पर सोच विचार करने लगा और सोचते सोचते बहुत दुखी हो गया।

एक दिन उसको लगा कि अब इससे ज़्यादा अच्छा तो कुछ और हो नहीं सकता था सो एक दिन उसने दुखी हो कर बुढ़िया से कहा — "मॉ जी। मैंने आपका कहना मान कर राजा का सारा पैसा खर्च कर दिया और अब मैं बिल्कुल गरीब हो गया हूँ।"

बुढ़िया बोली — "डरो नहीं बेटे। अब तुम गाय की चर्बी का बर्तन उठाओ और इसे काली दुनियाँ[67] में जाओ जहाँ इतने काले आदमी रहते हैं जितना कि पकाने वाला बर्तन होता है। इसको तुम वहाँ बेच आओ वहाँ यह बहुत ऊँचे दाम पर बिक जायेगा। क्योंकि इसमें आदमी का रंग साफ करने की ताकत है।"

गरीब चरवाहा यह सुन कर बहुत खुश हो गया। अगले दिन उसने गाय की चर्बी का बर्तन अपने कन्धे पर रखा और काली दुनियाँ में चल दिया। गरीब चरवाहा चलते चलते एक अजीब से दिखायी देने वाले देश में आ गया।

कुछ दूर आगे चलने के बाद उसे एक बहुत काला आदमी दिखायी दिया जैसा कि बुढ़िया ने कहा था — "वे लोग बहुत काले हैं जैसे कि आग पर चढ़ाने वाला बरतन।"

वह तुरन्त ही उसकी तरफ अपनी गाय की चर्बी बेचने के लिये जाने ही वाला था कि वह काला आदमी एक गोरे आदमी को देख कर उससे दूर भाग लिया। और दूसरे काले आदमियों ने जब उसे भागते देखा तो वे भी उससे दूर भागने लगे।

पर कुछ और लोगों ने जब यह देखा कि वह किस सीधेपन से अपना बर्तन लिये चला जा रहा है तो वे भी हिम्मत बटोर कर एक

[67] Black World means where the black people live.

के बाद एक उसके पास आये जब तक कि उसके पास एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी नहीं हो गयी। ।

तब वह बोला — “मैं एक सफेद आदमी हूॅ एक सफेद देश से आया हूॅ। साथ में आप सबके लिये एक ऐसा तेल ले कर आया हूॅ जिसे अगर आप लोग इस्तेमाल करेंगे तो आप भी गोरे हो जायेंगे।”

यह सुन कर पहले तो वे कुछ भौंचक्के रह गये पर फिर उन्होंने सोचा कि वे खुद भी गोरे हो जाना चाहेंगे सो उन्होंने कहा कि वे उसको उसकी मनचाही कीमत पर उस तेल को खरीद लेने को तैयार हैं।

हालॉकि उनको इस बात में बहुत शक था कि उस तेल से वे सचमुच में गोरे हो जायेंगे इसलिये उन्होंने कहा कि वे पहले उसको जॉचना चाहेंगे।

सो उसने वह बर्तन नीचे रख दिया और उसके चारों ओर घूम घूम कर कुछ अजीब से शब्द बोलता जा रहा था। जैसे वह उस पर कुछ जादू सा कर रहा हो।

फिर उसने अपने बर्तन में से थोड़ा सा तेल बाहर निकाला और एक काले आदमी के शरीर पर मल दिया। पल भर में ही उसके शरीर का रंग वहॉ से सफेद हो गया जहॉ उसने उस आदमी के तेल मला था।

यह देख कर और बहुत सारे काले आदमी उसके पास घिर आये कि वह उनको भी गोरा कर दे। सब उसको एक दूसरे से

ज़्यादा पैसा देने को तैयार थे ताकि वह उनको जल्दी से जल्दी गोरा बना दे।

नौजवान चरवाहे ने सबके शरीर पर वह तेल मल दिया जब तक कि वह बहुत थक नहीं गया और उसने बहुत सारा पैसा नहीं बना लिया। उन्होंने उसको बहुत सारे पैसे दिये क्योंकि वहाँ बहुत सारे आदमी थे और सब बहुत अमीर थे।

जैसे ही उसने वहाँ खड़े आदमियों में से आखिरी आदमी को गोरा किया कि उनमें से एक बोला — "अरे वाकई तुम तो बड़े कमाल के आदमी हो। हमारा राजा जो हमारा राजा होने के नाते हम सब में सबसे ज़्यादा काला है।

अगर तुम यह सोचते हो कि तुम उसके कालेपन को हमेशा के लिये हटा दोगे जो कि तुम हटा सकते हो तो वह गोरा हो कर बहुत खुश होगा और तुमको बहुत अधिक पैसा देगा जितना कि तुम सोच भी नहीं सकते हो।"

चरवाहा बोला — "अरे क्यों नहीं। यह काम तो मैं बड़ी खुशी से करूँगा। क्योंकि मैं तुम्हें यह बता दूँ कि मैं यह काम इतना पैसे के लिये नहीं कर रहा जितना कि दूसरों का भला करने के लिये कर रहा हूँ।"

यह सुनते ही वे सब राजा के महल की तरफ उससे पहले ही भाग लिये। वह भी उनके पीछे पीछे कन्धे पर अपना बरतन रखे भाग लिया। जब वे राजा के महल पहुँचे तो उनमें से एक बोला —

"तुम अभी यहीं ठहरो मैं ज़रा जल्दी से पहले राजा को तुम्हारे कारनामों की खबर दे आऊँ और तुम्हारा स्वागत करने के लिये कह आऊँ।"

चरवाहा वहीं खड़ा खड़ा उसका इन्तजार करता रहा जबकि और बहुत सारे लोग उसके इधर उधर इकट्ठे होते रहे। वे उसको और उसके बर्तन को देखते रहे। तभी वह आदमी वहाँ आया और बोला कि "चलिये राजा साहब आपका इन्तजार कर रहे हैं।"

सो उसने अपना तेल का बर्तन उठाया और उस आदमी के पीछे पीछे चल दिया। उसने देखा कि उन कालों का राजा तो उन सबसे भी बहुत काला था।

इतना काला आदमी तो उसने इससे पहले कभी देखा ही नहीं था। पर यह तेल तो उसको भी गोरा बना देगा। सो उसने जाते ही राजा को गुड मौर्निंग की। राजा ने भी सबको गुड मौर्निंग की।

राजा फिर चरवाहे से बोला — "मैंने सुना है कि तुम तो बड़े आश्चर्यजनक काम कर सकते हो। तुम तो बड़े कमाल के काम करते हो। तुमने तो बहुत सारे लोगों को गोरा कर दिया है।

भगवान के लिये तुम इससे मेरा भी काला रंग हटा दो। इसके बदले में तुम्हें जो तुम चाहोगे जो भी तुम माँगोगे मैं तुम्हें वही दूँगा। यहाँ तक कि अगर तुम मेरा आधा राज्य भी माँगोगे तो मैं तुम्हें वह भी दूँगा।"

चरवाहा बोला — "आप ठीक कह रहे हैं योर मैजेस्टी। मैं आपको भी गोरा बनाने की पूरी कोशिश करूँगा।"

कह कर उसने बहुत सारा तेल लिया और राजा की गरदन और चेहरे पर मल दिया। पल भर में ही राजा की गरदन और चेहरा दोनों बर्फ की तरह सफेद हो गये।

यह देख कर लोग बहुत खुश हो गये पर लोग इतने खुश नहीं हुए जितना खुश कि राजा हुआ। उसने फिर कहा — "तुम मुझसे कुछ भी माँग लो मैं तुम्हें वही दे दूँगा जो तुम मुझसे माँगोगे चाहे वह मेरा राज्य ही क्यों न हो।"

चरवाहे ने बड़ी नम्रता से — "यह तो आपकी बड़ी कृपा है कि आप मुझे इस काम के बदले में अपना राज्य भी देने को तैयार हैं पर मुझे वह नहीं चाहिये पर अगर आप मुझे केवल तीन जहाज़ सोने और चाँदी से से भरे हुए दे दें। और कुछ होशियार नाविक दे दें जो इनको ठीक से चला सकें और तोपें दे दें जो इनकी समुद्री डाकुओं से रक्षा कर सकें। तो मुझे लगेगा कि मुझे आपने मुझे काफी दे दिया है।

ये तीनों जहाज़ और इनके नाविकों को मैं तुरन्त ही वापस कर दूँगा जैसे ही मेरी ये चीजें मेरे घर पहुँच जायेंगीं। राजा ने तुरन्त ही तीनों जहाजों को बुलवा भेजा उन्हें सोने चाँदी से भर कर और उनमें तोपें रखवा कर भेज दिया गया। अगर कोई समुद्री डाकू आया तो सब लोग लड़ने के लिये तैयार थे।

उस पर सवार हो कर वह वहाँ से राजा और उसकी प्रजा से विदा के ले कर कर घर चल दिया। वहाँ की प्रजा उससे बहुत खुश थी कि उसने वहाँ सारी प्रजा को गोरा कर दिया था। उन सबसे विदा ले कर वह उनमें से एक जहाज़ पर चढ़ा। वह घर जा रहा था सो बहुत खुश था उसके पीछे पीछे सोने चाँदी से भरे दो जहाज़ थे।

काफी देर तक समुद्र में चलने के बाद वे अपने राज्य के किनारे आ पहुँचे जहाँ राजा जिप्सी और चरवाहे का बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा था कि वह अपनी बेटी किसको देगा।

एक दिन चरवाहे ने अपने जहाज़ों को एक बन्दरगाह में ला कर खड़ा कर दिया। उसने देखा कि शहर में बहुत हल्ला गुल्ला मचा हुआ है तो वह शहर देखने निकला।

वहाँ उसने देखा कि एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा है। उसने लोगों से पूछा कि वहाँ क्या हो गया है जो इतनी भीड़ इकट्ठा है। उन्होंने बताया कि वहाँ एक जिप्सी को फाँसी की सजा दी जा रही है।

वह जिप्सी 70 पियास्टर ले कर उस शहर में आया था। उसने वे सारे पैसे न केवल पीने में खर्च कर दिये हैं बल्कि 70 पियास्टर और उधार ले कर भी खर्च कर दिये हैं जिनको अब वह चुकाने के लायक नहीं है। इसी लिये वे अब उसे फाँसी पर चढ़ाने जा रहे हैं।

कुछ पलों बाद फाँसी लगाने वाला भी जिप्सी को लिये वहाँ आ पहुँचा। अरे यह तो वही जिप्सी था जिसने उससे धोखा कर के राजकुमारी के जन्म के निशान बताने की कोशिश की थी।

नौजवान ने अपने दुश्मन को तुरन्त ही पहचान लिया। उसने उसके पास जा कर कहा — "अरे मेरे दोस्त यह तुम्हें क्या हुआ। तुम इस हालत को कैसे पहुँचे।"

जैसे ही जिप्सी ने चरवाहे को देखा तो उसने रोना और आहें भरना शुरू कर दिया और कहा कि वह उसे इस फन्दे से बचा ले। वह उसकी सारी ज़िन्दगी सेवा करेगा।"

जहाँ तक राजकुमारी का सवाल था उसने उसके बारे में चालाकी से कहा — "उसकी आशा तो मैंने अब बिल्कुल ही छोड़ दी है बस अब तो मुझे अपनी ज़िन्दगी की ही चिन्ता में हूँ कि मेरी अपनी ज़िन्दगी बच जाये।"

यह सुन कर दयालु चरवाहे के दिल में उसे रोते चिल्लाते देख कर उसके ऊपर बहुत दया आयी। उसने लोगों से कहा कि अगर वे लोग उसको इजाज़त दें तो वह उनके पैसे लौटा कर उस जिप्सी को मरने से बचाना चाहता है।

लोग तैयार हो गये। चरवाहे ने न केवल उसके पैसे वापस दिये बल्कि उसके लिये एक अच्छे कपड़े का एक अच्छा सा जोड़ा भी खरीदा। एक गाड़ी खरीदी और एक जोड़ी घोड़े खरीदे।

उसको वहाँ छोड़ कर फिर वह अपने जहाज़ पर चला गया और किनारे किनारे राजा के महल की तरफ चल दिया। इधर जिप्सी ने भी अपने कपड़े बदले अपनी गाड़ी में बैठा और वह भी अपनी गाड़ी में बैठ कर राजा के महल की तरफ चल दिया।

राजा के महल में पहुँच कर उसने अपनी गाड़ी और घोड़ा तो महल के कम्पाउंड में छोड़ा और तुरन्त ही राजा के पास गया और उससे जा कर कहा — "योर मैजेस्टी आपको याद होगा कि अभी इस बात को एक साल भी नहीं हुआ जब आपने मुझे व्यापार करने के लिये **70** पियास्टर दिये थे। देखिये मैं एक साल पूरा होने से पहले ही इतने अच्छे कपड़े पहन कर आ गया।

आप देखिये कि आपके महल के कम्पाउंड में मेरे बहुत सुन्दर दो घोड़ों वाली एक बढ़िया घोड़ा गाड़ी भी खड़ी है। जहाँ तक कि नौजवान चरवाहे का सवाल है उसके बारे में मैंने सुना है कि उसने न तो आपका सारा का सारा पैसा खर्च कर दिया है बल्कि उसने लोगों से और उधार भी ले लिया है जिसे वह दे नहीं पा रहा है।

अब लोग उसको फाँसी पर लटका रहे हैं। इसलिये अब आप उसका इन्तजार न करें बस राजकुमारी की शादी मुझसे कर दें।"

राजा को वह जिप्सी अपने दामाद के रूप में बिल्कुल पसन्द नहीं था सो वह सोच रहा था कि उसको थोड़ी देर टालने के लिये वह क्या बहाना बनाये। कि तभी उसकी निगाह तीन अजीब से

दिखायी देने वाले जहाज़ों पर पड़ी जो उसके सामने ही किनारे पर लग रहे थे।

यह देख कर वह बोला — "मुझे तीन विदेशी जहाज़ किनारे की तरफ आते दिखायी दे रहे हैं। लगता है कि कोई विदेशी मुझसे मिलने आ रहे हैं। अभी मुझे विदेशियों से मिलने के लिये बहुत काम करना है इसलिये हम शादी के काम को अभी कुछ समय के लिये रोक देते हैं।"

पर जिप्सी शादी के लिये बार बार जिद करता रहा। उसने बल्कि राजा को यह भी धमकी दी कि अगर उसकी शादी अभी नहीं की गयी तो वह उसके लिये बिल्कुल इन्तजार नहीं करेगा।

राजा ने उसकी ये सब ऊटपटॉग बातें सुनने से इनकार कर दिया सो जिप्सी ने जब देखा कि उसका प्लान तो फेल हो गया तो वह बहुत गुस्से में भर कर वहॉ से चला गया।

कुछ घंटों में ही वे तीनों जहाज़ किनारे पर आ गये और उन्होंने अपना राजा के महल के सामने ही अपने लंगर डाल दिये। नौजवान चरवाहा उसमें से उतर कर राजा के पास आया। राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ।

और यह देख कर तो दंग ही रह गया कि वह उसके 70 पियास्टर के बदले में वह तीन जहाज़ सोना चॉदी ले आया है।

राजा अब उसको अपना दामाद बनाने के लिये पूरी तरीके से सन्तुष्ट था। उसने बातों बातों में चरवाहे को बताया कि उससे पहले

जिप्सी उसके पास आया था और कह रहा था कि तुम कर्जदार हो गये हो और इस जुर्म में तुमको फाँसी लगा दी गयी है।

तब नौजवान चरवाहे ने राजा को बताया कि कैसे उसकी मुलाकात उस जिप्सी से हुई और फिर कैसे उसने जिप्सी का कर्जा उतार कर उसको बचाया।

यह सुन कर राजा को बहुत गुस्सा आया। उसने अपने लोगों को हुक्म दिया कि वह उसको ढूँढ कर तुरन्त ही उसके सामने पेश करें। राजा के लोगों ने चारों तरफ जिप्सी को ढूँढा पर वे जिप्सी कोई पता ठिकाना नहीं पा सके।

तब राजा ने हुक्म दिया कि बहुत सारे हथियारबन्द आदमी उसके राज्य में चारों तरफ फैल जायें ताकि उसको पकड़ कर राजा के सामने लाया जा सके।

वह पकड़ लिया गया और राजा के सामने लाया गया तो राजा ने ऐसे आदमी को फाँसी की सजा सुना दी जिसने एक ऐसे आदमी को सजा दिलवायी जिसने उसकी जान बचायी। साथ ही उसने राजा को भी धोखा देने की कोशिश की।

नौजवान कुछ दिन राजा के पास रहा। उसने उसको काली दुनियाँ की कहानियाँ सुनायीं। इस बीच शादी की तैयारियाँ की गयीं। और बड़ी धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गयी। उसके बाद राजा ने अपने दामाद और बेटी के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज्य किया।

18 एक अच्छा काम दूसरे अच्छे काम का अधिकारी है[68]

एक बार की बात है कि बहुत दिन पहले एक राजा एक जंगल में शिकार खेलने गया। वहाँ उसने रोजमर्रा के शिकार की बजाय एक अजीब सा आदमी पकड़ लिया। राजा उस अजीब से आदमी को पकड़ लाया और उसे अपने महल ले गया और उसको सुरक्षित रूप से रखने के लिये एक तहखाने में रख दिया।

उसके बाद उसने यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी उस आदमी को वहाँ से आजाद करेगा उसको मौत की सजा मिलेगी। अब जैसा जिसकी किस्मत में लिखा रहता है। यह तहखाना राजा के सबसे छोटे बेटे के सोने के कमरे के बिल्कुल नीचे था।

वह अजीब आदमी भी उस तहखाने में बन्द रह कर अपनी आजादी के लिये हमेशा रोता रहता सिसकता रहता। उसकी आवाजें राजकुमार के कमरे तक पहुँचतीं। उन्हें सुन सुन कर उसका दिल पिघल गया और इतना पिघला कि एक रात वह नीचे गया उसने तहखाने का दरवाजा खोल दिया और बन्दी को आजाद कर दिया।

अगली सुबह जब राजा के दरबारियों और उसके काम करने वालों को रोने की कोई आवाज सुनायी नहीं पड़ी तो राजा ने सोचा

---

[68] One Good Turn Deserves Another. (Tale No 18)

जरूर कहीं कोई गड़बड़ है। वह यह देखने के लिये खुद नीचे गया कि उसके बन्दी का क्या हुआ। जब उसने देखा कि तहखाने का कमरा नीचे खाली है।

तो वह बहुत गुस्से में ऊपर आया और सबसे पूछा — "मेरे हुक्म को न मानने की जुर्रत किसने की। किसने उस बन्दी को वहाँ से आजाद किया।"

सारे दरबारी और वहाँ खड़े लोग सब इतने डर गये कि डर के मारे किसी के बोलने की कोई हिम्मत नहीं हुई। यहाँ तक कि कोई यह भी नहीं बोल सका कि वह बेकुसूर था।

फिर राजा का सबसे छोटा राजकुमार अपने पिता के पास गया और उससे कहा कि दिन रात के रोने चिल्लाने से वह इतना परेशान हो गया था कि उसने खुद ही उस कमरे का दरवाजा खोल दिया।

जब राजा ने यह सुना तो राजा को बहुत दुख हुआ क्योंकि अब अपने हुक्म के अनुसार उसको अपने बेटे को ही मौत की सजा देनी थी नहीं तो उसका हुक्म झूठा हो जाता।

राजा के दरबारियों ने देखा कि इस बात को ले कर राजा तो बहुत परेशान है तो उन्होंने राजा से कहा कि राजकुमार को मारा नहीं जाता। उसको अगर आप राज्य से बाहर निकाल देंगे वह भी उसको मारे जाने के समान ही होगा।

यह सुन कर राजा बहुत खुश हो गया और उसने अपने छोटे बेटे को अपने राज्य से बाहर निकाल दिया। उससे वहाँ फिर कभी

न आने के लिये कहा, काफी सारे पैसे दिये और एक दूर के राजा के नाम कई प्रशंसापत्र दिये। उसने अपने दरबार का एक नौकर भी उसके साथ भेज दिया।

छोटा राजकुमार और उसका नौकर दोनों अगले दिन राज्य छोड़ कर चल दिये। कुछ समय चलने के बाद राजकुमार को प्यास लग आयी। उसको पास ही में एक कुँआ भी दिखायी दे गया तो वह वहाँ पानी पीने के लिये उतर गया।

वहाँ जा कर उसने देखा तो कुँए में पानी तो बहुत था पर उसको खींचने के लिये कोई बर्तन और रस्सी नहीं थी। यह देख कर छोटे राजकुमार ने अपने नौकर से कहा — "तुम मेरे पैर कस कर पकड़ लो और मुझे इस कुँए में नीचे की तरफ लटका दो ताकि मैं पानी पी सकूँ।"

ऐसा कह कर वह कुँए की दीवार पर नीचे की तरफ झुक गया और नौकर ने भी उसके पैर कस कर पकड़ कर उसे नीचे लटका दिया। जब राजकुमार पानी पी चुका तो उसने नौकर से कहा कि वह अब उसे वापस ऊपर खींच ले।

तो नौकर ने उसे यह कह कर ऊपर खींचने से मना कर दिया कि अब अगर वह इस बात पर राजी नहीं हो जाता कि वह उस नौकर से उसके कपड़े बदल ले उसके बाद राजकुमार नौकर बन जाता और नौकर राजकुमार बन जाता तो वह उसको कुँए में फेंक सकता था।

राजकुमार ने देखा कि "मैं तो अपनी ही बेवकूफी से नौकर के जाल में फँस गया हूँ।" तो उसने नौकर की सारी बातें मान लीं जो भी उसने उससे कहीं और कहा कि बस वह उसे बाहर निकाल ले।

पर उस बेवफा नौकर ने राजकुमार की बातों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया और बोला — "तुम मेरे सामने यह कसम खाओ कि तुम इस बदलाव के बारे में किसी से भी कुछ भी नहीं कहोगे।"

अब क्योंकि राजकुमार मजबूर था तो उसने इस बात की भी कसम खा ली कि वह ऐसा कुछ नहीं करेगा। नौकर ने उसको कुँए में से ऊपर खींच लिया। नौकर ने राजकुमार के बढ़िया कपड़े पहन लिये और राजकुमार ने नौकर के कपड़े पहन लिये।

इस हालत में दोनों काफी देर तक चलते रहे नौकर राजकुमार के वेश में आगे आगे और राजकुमार नौकर के वेश में उसके पीछे पीछे। अब वे उस राजा के देश में आ गये थे जिस देश के राजा के लिये राजकुमार के पिता राजा ने चिट्ठी दी थी।

राजकुमार तो अपने वायदे का पक्का था सो वह बेचारा उस राजा के महल में अपने नौकर का शाही सत्कार आदि देखता रहा। जबकि उस पर कोई ध्यान ही नहीं दे रहा था। वह बाहर वाले कमरे में खड़ा हुआ इन्तजार ही करता रहा। राजा के नौकर लोग भी उससे उसी तरह का व्यवहार करते रहे जैसे कि वे अपने बराबर वालों से करते।

कुछ दिन तक राजा की दी गयीं सुविधाओं का आनन्द उठाने के बाद नकली राजकुमार को लगा कि शायद उसका मालिक यानी नकली नौकर इस तरह के रहने सहने से थक कर अपना वायदा भूल जाये और राजा को सच सच बता दे कि वह सच में क्या है।

ऐसी बातों को सोच कर अब वह यह सोचने लगा कि किस तरह से वह अपने मालिक से छुटकारा भी पा जाये और उसकी बात भी न बिगड़े।

एक दिन उसको लगा कि उसको रास्ता मिल गया। उसने तुरन्त ही अपना यह बेरहम प्लान काम में लाने का सोच लिया।

जिस राजा के पास यह नकली राजकुमार और यह नकली नौकर ठहरे हुए थे उसके पास एक बहुत बड़ा बागीचा था। उस बागीचे में राजा ने बहुत सारे जंगली जानवर बड़े बड़े पिंजरों में बन्द कर के रखे हुए थे।

एक सुबह जब यह नकली राजकुमार राजा के साथ इस बागीचे में घूम रहा था तो अचानक उसने राजा से कहा — "राजा साहब। आपके पास तो बहुत ही शानदार जंगली जानवर हैं। ये मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।

पर मुझे कभी कभी यह लगता है कि आप इन्हें हमेशा ही बन्द रखते हैं और इनके खाने के ऊपर इतना सारा पैसा खर्च करते हैं। आप इनको किसी आदमी के साथ जंगल में अपना खाना खाने के लिये क्यों नहीं भेज देते हैं।

मैं योर मैजेस्टी से विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मैं आपको एक ऐसे आदमी का नाम बता सकता हूँ जो इनको खाना खिलाने के लिये सुबह सुबह जंगल ले जा सके और शाम को सुरक्षित घर वापस ला सके।"

राजा ने पूछा — "क्या तुम सचमुच में यही सोचते हो कि तुम ऐसा कोई आदमी जानते हो।"

नकली राजकुमार बिना किसी हिचक के तुरन्त ही बोला — "हाँ हाँ राजा साहब। क्यों नहीं। ऐसा एक आदमी तो आपके दरबार में ही बैठा है। मेरा मतलब है कि वह मेरा अपना नौकर है।

बस आपको उसको बुला कर धमकी देते हुए उससे यह कहना होगा कि "अगर तुमने यह काम नहीं किया तो तुम्हारा सिर कटवा दिया जायेगा।" और उसको इस काम करने पर मजबूर करना होगा।

मुझे पूरा यकीन है कि पहले वह इस काम को मना करेगा "कि यह काम तो बिल्कुल ही नामुमकिन है।" पर आपको इस बात पर ज़ोर देना है कि या तो वह इस काम को अगर मना करे तो भी और या न करे तो भी दोनों हालतों में उसको मार दिया जायेगा।

जहाँ तक मेरा सवाल है मैं आपको पूरा अधिकार देता हूँ कि उसके हुक्म न मानने पर आप उसको जान से भी मार सकते हैं।"

जब राजा ने यह सुना तो उसने नकली राजकुमार के नकली नौकर को बुलाया और उससे कहा — "मैंने सुना है कि तुम तो

कमाल के काम कर सकते हो। कि तुम जंगली जानवरों को पालतू जानवरों की तरह जंगल में ले जा कर उनको खाना खिला कर शाम को सुरक्षित रूप से उनके पिंजरे में घर वापस ला सकते हो। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा।"

यह सुन कर बदनसीब नकली नौकर राजकुमार ने कहा — "राजा साहब मैं यह काम नहीं कर सकता सो अच्छा हो कि आप मेरा सिर ही काट दें।"

पर राजा तो उसकी बात सुन ही नहीं रहा था। वह तो बस यही कहे जा रहा था कि "मैं कल शाम तक तुम्हारा इन्तजार करता हूँ उसके बाद अगर तुम मेरे सारे भालू वापस ले कर नहीं आये तो मैं यकीनन तुम्हारा सिर काट दूँगा।"

अब उस बेचारे नकली नौकर के पास कोई और रास्ता नहीं था सिवाय इसके कि वह भालुओं के पिंजरों के दरवाजे खोले और उनको बाहर जंगल में ले जा कर खाना खिला कर वापस ले कर आये।

जैसे ही उसने भालुओं के पिंजरों के दरवाजे खोले कि सारे भालू बड़े जंगलीपन से उनमें से बाहर निकल आये और भाग कर पेड़ों में जा कर गुम हो गये।

नकली नौकर उनके पीछे भागा पर वे तो वहाँ से भाग चुके थे सो वह एक गिरे हुए पेड़ के तने पर जा कर बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। क्योंकि अब उसको इस बात की कोई आशा ही

नहीं रह गयी थी कि वह उनको फिर से इकट्ठा कर के घर वापस ले जा सकेगा और इस तरीके से अपनी जान गॅवा बैठेगा।

जब वह बैठा बैठा वहॉ रो रहा था तो आदमी की शक्ल का एक प्राणी पास की घनी झाड़ी से निकल कर वहॉ आया। उसके सारे शरीर पर बाल ही बाल थे। उसने नकली नौकर से पूछा कि वह वहॉ बैठा बैठा इस तरह से क्यों रो रहा था।

तब नकली नौकर ने उसको अपनी सारी कहानी सुना दी और कहा कि जबकि सारे भालू वहॉ से भाग गये हैं तो उसको पूरा यकीन है कि रात को भालू वापस न ले जाने पर उसका सिर काट दिया जायेगा।

यह सुन कर उस जंगली आदमी ने उसको एक छोटी सी घंटी दी और कहा — "डरो मत। बस इस घंटी का ख्याल रखना। जब तुम चाहो कि अब तुम्हें अपने भालुओं को ले कर जाने का समय आ गया है इसको बहुत ही धीरे से हिला देना। वे तुरन्त ही शान्ति से तुम्हारे पास आ जायेंगे और तुम्हारे पीछे पीछे अपने अपने पिंजरों में घुस जायेंगे।"

यह कह कर और घंटी उसे दे कर वह वहॉ से चला गया।

जब सूरज नीचे जाने लगा तो नकली नौकर ने वह घंटी धीरे से बजा दी। उसको यह देख कर बड़ी खुशी हुई कि उसके घंटी बजाते ही सारे भालू उसके चारों तरफ आ कर इकट्ठा हो गये। फिर वे

उसके पीछे पीछे राजा के बागीचे की तरफ चल दिये जैसे कोई भेड़ का झुंड चरवाहे के पीछे पीछे जाता है।

यह देख कर वह बहुत खुश हुआ और उसी खुशी में उसने अपनी बाँसुरी बजानी शुरू कर दी। इस तरह से वह फिर से उन्हें बिना किसी मुश्किल के उनके पिंजरों में लाने में सफल हो गया।

यह देख कर तो दरबार का हर आदमी आश्चर्य में डूब गया। और नकली राजकुमार तो सबसे ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गया पर अपना आश्चर्य वह दिखा नहीं सका।

उसने राजा से कहा — "देखा योर मैजेस्टी आपने। मैंने आपसे कितना ठीक कहा था। मुझे यकीन है कि अगर आप कल की तरह से इसको धमकी दें तो यह मेरा नौकर आपके भेड़ियों को भी इसी तरह से जंगल से खाना खिला कर वापस ला सकता है।"

सो अगले दिन राजा ने बेचारे नकली नौकर को फिर से बुलाया और अबकी बार उसने उससे अपने भेड़ियों को जंगल ले जा कर खाना खिला कर शाम को सुरक्षित वापस ला कर उन्हें उनके पिंजरे में बाँधने के लिये कहा नहीं तो उसको जान से हाथ धोना पड़ेगा।"

नकली नौकर ने उससे बेकार में ही प्रार्थना की कि यह मुमकिन नहीं है पर पिछले दिन की तरह से राजा उसकी बात सुन ही नहीं रहा था बस वह तो यही कहे जा रहा था — "देख लो। तुम मना करो तो भी या इस काम को करने में असफल हो जाओ तो भी तुम्हारा सिर कटवा दिया जायेगा।"

यह सुन कर नकली नौकर को भेड़ियों के पिंजरों के दरवाजे खोलने पड़े। जैसे ही उसने दरवाजे खोले सभी जानवर अपने अपने पिंजरों में से निकल कर पास की झाड़ियों जा कर गायब हो गये जैसा कि भालुओं ने किया था।

वह धीरे धीरे बढ़ा और एक पेड़ के नीचे बैठ गया और रोने लगा। जब वह ऐसे बैठे रो रहा था तो पिछले दिन की तरह से वह जंगली आदमी फिर वहॉ आया और उससे पूछा कि आज वह वहॉ क्यों रो रहा था।

नकली नौकर ने उसे सब बता दिया तो उस जंगली आदमी ने उसको एक और घंटी दी और कहा कि जब तुम अपने भेड़ियों को घर ले जाने के लिये बुलाना चाहो तो इस घंटी को धीरे से बजा देना। वे सब तुम्हारे पास आ जायेंगे और तुम्हारे पीछे पीछे चल कर अपने अपने पिंजरों में बन्द हो जायेंगे।

यह कह कर वह नकली नौकर को वहॉ बैठा छोड़ कर चला गया और जंगल में जा कर गायब हो गया। शाम होने से पहले पहले नकली नौकर ने उस घंटी को बजाया तो सारे भेड़िये उसके पास आ गये और उसके पीछे पीछे राजा के महल की तरफ चलने लगे। नौकर आगे आगे और भेड़िये पीछे पीछे। और जा कर वे सब अपने अपने पिंजरों में बन्द हो गये।

यह देख कर तो राजा और नकली राजकुमार दोनों ही आश्चर्य से दंग रह गये पर नकली राजकुमार का उद्देश्य तो अभी पूरा नहीं

हुआ था सो राजा को सलाह दी कि वह अबकी बार उसे चिड़ियों को खाने के लिये भेजे। राजा ने भी उसके साथ वैसा ही किया जैसा पिछले दो दिनों में किया था।

अगले दिन राजा ने उससे कहा कि वह उसकी सारे जंगली फाख्ताओं को जंगल में खाना खिलाने के लिये ले जाये और शाम तक सबको सुरक्षित घर ला कर उनके पिंजरों में बन्द कर दे।

नकली नौकर ने ऐसा ही किया। जैसे ही उसने जंगली फाख्ता पिंजरों से बाहर निकाले तो वे सारे के सारे फाख्ता जंगल में उड़ गये। सो नकली नौकर फिर से जंगल में जा कर एक पेड़ के नीचे बैठ गया और रोने लगा।

इस बार तो वह इतना दुखी हुआ कि अपनी बदकिस्मती पर बहुत ज़ोर से रो पड़ा और कहने लगा कि वह कैसी मुसीबत में फँस गया है। अब वह इससे बाहर कैसे निकले।

उसका रोना शुरू करते ही वह जंगली आदमी फिर से उसके पास आया और उसको एक तीसरी घंटी दे कर कहा "जब भी तुम्हें इन फाख्ताओं को घर ले जाने की इच्छा हो तब इस घंटी को धीरे से बजा देना। सारी फाख्ताऐं तुम्हारे पास आ जायेंगी और तुम्हारे पीछे पीछे तुम्हारे घर तक चली जायेंगी और अपने अपने पिंजरे में अपने आप ही बन्द हो जायेंगी।

अब राजा की खुशी के लिये नकली राजकुमार के पास एक और काम था जो जानवरों और चिड़ियों को इकट्ठा करने से ज़्यादा

मुख्य था। और वह था राजा की बेटी के लिये उसका दुलहा ढूँढना।

इसके लिये राजा ने अपने राज्य में मुनादी पिटवा दी कि इस काम के लिये वह अपने राज्य में तीन दिन तक दौड़ रखेगा। और जीतने वाले को हर दिन एक सोने का सेब दिया जायेगा। जो कोई भी तीनों दिन वह सेब जीतेगा वह अपनी बेटी की शादी उसी से करेगा।

अब राजा की बेटी तो दुनियाँ भर में सबसे ज़्यादा सुन्दर थी। उसको पाने के लिये दुनियाँ भर के राजा और राजकुमार लालायित थे। जब नकली नौकर ने यह सुना तो वह अपनी बदकिस्मती पर बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह तो इस राजकुमारी से प्यार करने लगा था। पर वह अब उसे जीते कैसे।

अब वह दिन रात चिन्ता में पड़ा रहता कि कैसे वह इस समस्या को हल करे। कैसे वह भी इस दौड़ में हिस्सा ले सके। आखिर उसने उसी जंगल में जाने का इरादा किया और उसी जंगली आदमी से सहायता माँगने का निश्चय किया जिसने पिछले तीन दिन उसकी सहायता की थी। वह वहाँ गया और जंगली आदमी को पुकारा।

अपना नाम सुन कर जंगली आदमी झाड़ियों में से बाहर निकल कर आया और उसकी सारी बातें सुनी कि यह नौजवान राजकुमार राजा की बेटी को कितना चाहता था।

वह तुरन्त गया और कुछ बहुत बढ़िया कपड़े और एक बहुत बढ़िया घोड़ा ले कर वहाँ आ गया।

उन्हें उसको देते हुए बोला — "जब तुम अपनी दौड़ शुरू करो तो शुरू में ही उसको बहुत मत भगाना। जब तुम अपने पहुँचने की जगह पहुँचने वाले हो बस तब तुम उसको थोड़ा सा सहला देना। तब तुम यकीनन दौड़ में जीत जाओगे। और हाँ जैसे ही तुम्हारे हाथ में वह सोने का सेब आये तुम उसे मेरे पास लाना मत भूलना।"

जैसा उस जंगली आदमी ने कहा था वैसा ही हुआ। नकली नौकर ने पहले दो दिन सोने के सेब जीत लिये। पर क्योंकि वह उन सेबों को लेते ही वहाँ से गायब हो गया तो कोई यह न जान सका कि वह कौन था और कहाँ चला गया। और उसे उन कपड़ों में कोई पहचान भी न सका।

जहाँ तक राजा का सवाल था राजा तो इस सबसे बहुत ही परेशान था। उसने तय किया कि अगले दिन वह उस अजनबी को इस तरह से भागने नहीं देगा।

सो उसने दौड़ के आखीर में एक बहुत बड़ा गड्ढा और उसके बाद एक बहुत ऊँची दीवार बनवा दी। उसने सोचा कि वह भागने वाले को इस तरह वहाँ से भागने नहीं देगा और उसको पकड़ लेगा।

नकली नौकर ने जब राजा का हुक्म सुना तो वह फिर से जंगली आदमी के पास गया और उससे पूछा कि अब वह क्या करे। तो

जंगली आदमी ने उसको एक और बढ़िया दौड़ने वाला घोड़ा ला कर दिया और पहले से भी ज़्यादा अच्छे कपड़े ला कर दिये। और इस तरह उसे दूसरे उम्मीदवारों के साथ बैठने के लायक बनाया।

उसने तीसरी बार भी सोने का सेब जीत लिया पर राजा और दूसरे लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने अपने घोड़े को एक ज़रा सी एड़ मारी और घोड़ा उस गड्ढे और दीवार को पार कर जंगल में गायब हो गया।

उसने इस बार भी अपना सोने का सेब जीत लिया था। राजा ने उसको ढूँढने की बहुत कोशिश की। यह पता लगाने की बहुत कोशिश की उसके तीनों सेब कौन ले गया है पर उसका पता न चल सका।

एक दिन राजकुमारी अपने बागीचे में टहल रही थी कि उसको नकली नौकर दिखायी दिया। उसने देखा कि उसके सीने के पास उसके तीन सोने के सेब छिपे हुए हैं।

यह देख कर वह तुरन्त ही अपने पिता के पास दौड़ी और जा कर उसको बताया कि उसने क्या देखा था। राजा को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने नौकर को अपने पास बुलाया।

राजकुमार ने सोचा कि अब समय आ गया है जब उसको अपनी बदकिस्मती का अन्त कर देना चाहिये। सो उसने राजा से अपनी बदकिस्मती का पूरा हाल बता दिया।

उसने उसको बताया कि कैसे उसने एक जंगली आदमी को आजाद कर के अपने पिता को गुस्सा किया और उसके पिता ने उसे एक नौकर दे कर ज़िन्दगी भर के लिये राज्य से बाहर निकाल दिया।

फिर कैसे उसके नौकर ने उसे धोखा दिया। और फिर किस तरीके से उस जंगली आदमी ने उसके नौकर के बिछाये हुए जाल से बचने में उसकी सहायता की।

यह सब सुन कर राजा ने अपनी बेटी की शादी खुशी खुशी उस राजकुमार से कर दी। और उस नौकर को फॉसी की सजा देने का हुकुम दे दिया।

इसके बाद राजकुमार और राजकुमारी बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे। राजा के मरने के बाद राजकुमार उस देश का राजा बन गया।

19 खाने वाले का टुकड़ा[69]

एक बार की बात है कि बहुत दिन पहले एक आदमी था जो जब भी लोगों को यह शिकायत करते सुनता कि उसको तो अपने कितने सारे बेटों की देखभाल करनी पड़ती है तो वह हमेशा हॅसता और कहता "काश मुझे भगवान ने 100 बेटे दिये होते।"

हालॉकि यह सब वह हॅसी में ही कहता पर कुछ ऐसा हुआ कि समय बीतते न बीतते उसके भी पूरे 100 बेटे हो गये।

उसको उन सबके लिये अलग अलग व्यापार चुनने में मुश्किल होने लगी। पर जब वे सब अपने अपने व्यापार में ठीक से लग गये तो वे सब मेहनत से अपना काम करने लगे और बहुत सारा पैसा कमाने लगे।

एक दिन उसका सबसे बड़ा बेटा उसके पास आया और बोला — "पिता जी। मुझे लगता है कि अब मुझे अपनी शादी कर लेनी चाहिये।"

उसने अभी यह मुश्किल से ही यह कहा था कि उसका दूसरा बेटा वहॉ आ पहुॅचा और बोला — "पिता जी लगता है कि अब समय आ गया है कि आप मेरी शादी कर दें।"

---

[69] The Biter-Bit. (Tale No 19)

पल भर के बाद ही उसका तीसरा बेटा भी वहाँ आ पहुँचा और बोला — "पिता जी। क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि अब समय आ पहुँचा है जब आपको मेरे लिये एक पत्नी ढूँढनी चाहिये।"

इसी तरह से फिर चौथा पाँचवाँ छठा और फिर उसके सभी यानी 100 के 100 बेटे उसके पास अपनी अपनी शादी के लिये आ गये। सभी बेटे शादी करना चाहते थे और वे चाहते थे कि उनके पिता उनके लिये लड़कियाँ ढूँढें।

पर वह बूढ़ा इस बात से बिल्कुल भी परेशान नहीं हुआ। उसने अपने बेटों से कहा — "बिल्कुल। तुम लोगों की अब शादी हो जानी चाहिये। पर इसमें मुझे एक मुश्किल दिखायी देती है। तुम लोग 100 हो जिनको शादी करनी है और मुझे शक है कि हमें हमारे पड़ोस में जो 15 गाँव हैं उनमें इतनी सारी शादी के लायक लड़कियाँ मिल भी पायेंगी।"

यह सुन कर बेटे बोले — "कोई बात नहीं पिता जी। आप ऐसा कीजिये कि आप अपने घोड़े पर चढ़िये और साथ में एक थैले में काफी सारी सगाई की केक[70] ले लीजिये।

आप अपने हाथ में एक डंडी भी ले लीजिये ताकि आप जिस लड़की को भी देखें उसके नाम की एक खरौंच उस डंडे पर लगा सकें। आप इस बात की चिन्ता न करें कि वह सुन्दर है या

---

[70] Translated for the words "Marriage Cake" – given to th would bride to settle one's boy's marriage to her. This custom is in Africa too.

बदसूरत, लॅगड़ी है या अन्धी। बस अपनी डंडी पर उसको देखने का एक निशान लगा दें।"

बूढ़ा बोला — "यह तो मेरे बेटों तुमने बहुत ही अक्लमन्दी की बात की है। मैं वैसा ही करता हूॅ जैसा तुमने कहा है।"

सो वह प्लान के अनुसार अपने घोड़े पर चढ़ा अपने कन्धे पर केक का एक थैला डाला एक डंडी हाथ में ली और अपने पड़ोस के गॉवों में चल दिया अपने बेटों की शादी के लिये लड़की देखने के लिये।

बूढ़ा गॉव गॉव घूमा। एक महीने में उसने जितनी भी लड़कियॉ देखीं उसका एक एक निशान अपने हाथ में लिये डंडे पर बना दिया। यह सब करते करते वह कुछ थक सा गया तो उसने सोचा कि वह अपने डंडे पर बनाये हुए निशान गिन ले कि उस पर कितने निशान हो गये।

उसने उनको सावधानी से गिना और बार बार गिना कि उसने सारे निशान गिन लिये या नहीं। उसने देखा कि उसकी डंडी पर केवल **74** निशान थे। अभी भी **26** निशान और बाकी थे **100** की गिनती पूरी करने के लिये।

एक महीने ताक घोड़े की सवारी करते करते वह इतना थक गया था कि उसने सोचा कि वह अब घर लौट चले। सो वह घर लौट चला।

जब वह जा रहा था तो उसने एक पादरी देखा जो अपने हल में बैल लगा कर उसे खींचता ले जा रहा था।

उसको लगा कि वह किसी तरह की गहरी सोच में सोचता चला जा रहा था। उसने देखा कि वह पादरी अपना ही मक्का का खेत जोत रहा था और उसके साथ कोई लड़का भी उसकी सहायता के लिये नहीं था।

यह देख कर वह चिल्लाया — "आप अपने ही खेत में हल क्यों चला रहे हैं पादरी जी?"

पादरी अपने ख्यालों में इतना खोया हुआ था कि उसने उसकी तरफ देखा भी नहीं और यह भी नहीं देखा कि उससे कौन बात कर रहा था और अपना हल चलाता रहा।

बूढ़े को लगा कि शायद उसने ज़ोर से नहीं कहा इसलिये वह सुन नहीं पाया होगा सो उसने बहुत ज़ोर से चिल्ला कर एक बार फिर पूछा — "ज़रा अपने बैल तो रोकिये और मुझे बताइये कि आप अपना खेत अकेले क्यों जोत रहे हैं। आपके पास तो कोई बच्चा भी नहीं है आपकी सहायता करने के लिये। और वह भी एक पवित्र दिन।"

पादरी इस कड़ी मेहनत से पसीने में तर बतर हो रहा था वह बोला — "मैं आपके इस बुढ़ापे की इज़्ज़त करते हुए कहता हूँ कि

आप मुझे अकेला छोड़ दें। मैं अपनी बदनसीबी आपको नहीं बता सकता।"

यह सुन कर तो वह बूढ़े की यह जानने की इच्छा और ज़्यादा बढ़ गयी कि वह ऐसा क्यों कर रहा था। उसने उससे और भी ज़्यादा नम्रता से सवाल पूछने शुरू कर दिये कि पादरी उस सेन्ट के दिन[71] क्यों अपना खेत जोत रहा था।

आखिर पादरी ने उसके सवालों से थक कर उसको जवाब दिया — "काश तुम इसकी वजह जान पाते। मैं अपने घर में अकेला ही आदमी हूँ और मेरे 100 बेटियाँ हैं।"

बूढ़ा तो यह सुन कर खुशी से उछल ही पड़ा। वह खुश खुश बोला — "यह तो बड़ी अच्छी बात है। मेरे 100 बेटे हैं। यही तो मैं चाहता हूँ। मेरे 100 बेटे हैं और आपके 100 बेटियाँ। बस हमारी आपकी दोस्ती पक्की।"

जैसे ही पादरी ने यह सुना तो वह भी खिल गया और फिर हँस हँस कर बातें करने लगा। उसने बूढ़े को अपने घर शाम के खाने पर बुलाया। उसने हल को तो वहीं मैदान में छोड़ा और खुद बैलों को ले कर गाँव चल दिया।

घर पहुँचने से थोड़ी दूर पहले ही पादरी ने बूढ़े से कहा कि वह घर के अन्दर जाये जबकि वह खुद बैलों को बाँध कर आता है।

[71] In Christianity there are some Saints' days which are considered Saint's Days and are regarded holy.

जैसे ही बूढ़ा पादरी के घर में घुसने ही वाला था कि पादरी की पत्नी हाथ में एक डंडा ले कर निकली और चिल्ला कर बोली — "हमारे घर में हमारी 100 बेटियों के लिये तो खाना नहीं है। हमको न तो कोई भिखारी चाहिये और न ही कोई मेहमान।"

और यह कहते हुए उसने उसे घर से बाहर निकाल दिया। कुछ देर में ही पादरी अपने बैल बॉध कर वहॉ आ गया और देखा कि बूढ़ा तो दरवाजे के बाहर सड़क पर बैठा है।

उसने बूढ़े से पूछा — "अरे जैसा कि मैंने आपसे कहा था आप अभी तक अन्दर नहीं गये?"

बूढ़ा बोला — "मैं गया तो था पर आपकी पत्नी ने मुझे घर से बाहर निकाल दिया।"

पादरी बोला — "अच्छा थोड़ी देर यहीं ठहरिये मैं अभी आपको अन्दर ले जाने के लिये आता हूॅ।"

कह कर वह जल्दी से अपने घर में घुसा और अपनी पत्नी को डॉटा — "यह तुमने क्या कर दिया कितना अच्छा मौका था और अब तुमने उसे खो दिया। वह आदमी जो बाहर बैठा है वह तो हमारा दोस्त बन जाने वाला है। क्योंकि उसके 100 बेटे हैं जो हमारी 100 बेटियों से शादी करने वाले हैं।"

जब पत्नी ने यह सुना तो उसने अपने कपड़े बदले अपना टोप बदला अपने बाल दूसरे ढंग से सॅवारे और मुस्कुराती हुई अपने बूढ़े मेहमान का स्वागत करने बाहर आयी।

पादरी और उसकी पत्नी उसको अन्दर ले गये। असल में उसने बहाना किया जैसे वह उस बूढ़े को जानती ही नहीं कि उसने उसको घर से बाहर निकाल दिया था।

और क्योंकि बूढ़ा अपने बेटों के लिये पत्नियॉ ढूॅढ रहा था उसने भी यह बहाना किया जैसे वह यह जानता ही नहीं था कि यह वही स्त्री थी जिसने उसको घर से बाहर निकाल दिया था।

सो बूढ़े ने वह रात पादरी के घर में बितायी। अगले दिन उसने पादरी से अपने 100 बेटों के लिये उसकी 100 बेटियॉ मॉगीं। पादरी ने कहा कि वह अपनी बेटियॉ उसको देने के लिये बिल्कुल तैयार था और उसने इस बारे में अपनी बेटियों से बात भी कर ली थी। वे भी शादी के लिये राजी थीं।

बूढ़े ने फिर सगाई वाली केक निकालीं और अपने बराबर में रखी मेज पर रख दीं और लड़की को शादी पक्की करने की रस्म में कुछ पैसे भी दे दिये। उधर हर लड़की ने एक छोटी छोटी भेंट अपने होने वाले पति के लिये भी उस बूढ़े को दे दी।

इन सारी भेंटों को बूढ़े ने उस थैले में रखा जिसमें वह सगाई की केक रख कर लाया था अपने घोड़े पर चढ़ा और खुशी खुशी घर लौट चला।

घर पहुॅच कर जब उसने यह खबर सुनायी तो घर में बहुत खुशियॉ मनायी गयीं कि पादरी की 100 बेटियॉ थीं जो शादी के

लायक थीं और उनके बेटों से शादी करने के लिये तैयार थीं। और ये लड़कियॉ भी केवल एक ही पादरी की बेटियॉ थीं।

बूढ़े के बेटों ने अपने पिता से जिद की कि वह उनकी शादी की तैयारियॉ जल्दी से जल्दी करें। उन्होंने उन लोगों को बुलावा भी भेजना शुरू कर दिया जिनको उनकी शादी में पादरी के घर जाना था और उनकी पत्नियों को वहॉ से ले कर आना था।

अब एक और समस्या उठ खड़ी हो गयी। बूढ़े बाप को 200 लड़कियॉ दुलहिन के साथ के लिये चाहिये थीं – दो लड़कियॉ हर लड़की के लिये। 100 कूम[72] चाहिये थे और 200 स्टारिस्वैट्स[73] 100 चैयस[74], 300 नौकर और बहुत सारे मेहमान चाहिये।

इतने सारे लोगों को ढूँढने के लिये बूढ़े पिता को पड़ोस के सब गॉवों में तीन साल तक चक्कर लगाना पड़ा। खैर किसी तरह से इन सबको इकट्ठा किया गया। एक दिन निश्चित किया गया और उस दिन ये सब लोग बूढ़े पिता के घर में इकट्ठा हुए।

बहुत हल्ले गुल्ले में खाना पीना खा लेने के बाद शादी की बारात बनायी गयी और वे सब पादरी के घर चले जहॉ 100 दुलहिनें पहले से ही अपने नये घर जाने के लिये तैयार थीं।

हबड़ा तबड़ी इतनी ज़्यादा थी कि बूढ़ा पिता अपने 100 बेटों में से एक बेटे को ले जाना भूल गया और एक दूसरे को नमस्ते

---

[72] Kooms means First Witness, or Godfather
[73] Stariisvats means Second Witness
[74] Chaious means running footmen who go before the processions

आदि करने में खाने पीने में जो लड़के वालों की तरफ से उसको करने थे उसमें उसको उसकी याद भी नहीं आयी।

अब उस नौजवान ने शादी के कामों में इतना ज़्यादा काम किया था कि वह थक गया था और जब तक नहीं उठा जब तक कि बारात चली नहीं गयी। अब हर एक के पास बहुत काम था करने के लिये तो उसके पिता को भी उसकी याद नहीं आयी।

बारात पादरी के घर समय से और ठीक से पहुँच गयी। वहाँ उसके घर में उन सबके खाने का इन्तजाम था। जो जो रस्में इस मौके पर करनी जरूरी थी वे सब करने के बाद सौओं दुलहिनें उनके दुलहों[75] को दे दी गयीं।

बारात घर वापस लौटने लगी। पर क्योंकि उनको वहाँ से निकलने में काफी देर हो गयी थी तो उन सबने सोचा कि रात वहीं कहीं सड़क पर ही गुजार ली जाये। रास्ते में एक नदी पड़ती थी जिसका नाम था "लकलैस"[76]।

अब क्योंकि अँधेरा सा हो चुका था तो कुछ लोगों ने सलाह दी कि रात यहीं नदी के इस पार पानी के किनारे ही गुजारी जाये बजाय उसे पार करने के बाद के।

---

[75] Here the word "Leader" is used and it has not been explained too as what does it mean. It seems that this leader may not be the bridegroom, in other case he may be a mediator between bride and bridegroom, otherwise when one bridegroom was left at home how can all the brides could be given to all the leaders, because one was missing.

[76] Luckless – means who doesn't have any luck

कुछ दूसरे लोगों ने कहा कि उनको नदी पार करके नदी के दूसरी तरफ आराम किया जाये। काफी देर की बहस के बाद यही तय किया गया और सब लोग नदी के ऊपर का पुल पार करने लगे।

जब बारात उस पुल के बीच में पहुँची तो पुल बीच में से झुकने लगा और पुल के दोनों तरफ के हिस्से पास आने लगे। और इतने पास आये कि लोग हिल तो सके ही नहीं बल्कि उनका दम भी घुटने लगा।

इसी हालत में वे कुछ देर तक तो खड़े रहे। कोई किसी पर चिल्ला रहा था कोई किसी को डॉट रहा था। कुछ लोग डर के मारे चुपचाप खड़े थे।

कुछ देर बाद उनको एक काला बड़े साइज़ का आदमी[77] दिखायी दिया जिसने उनके ऊपर बहुत ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया — "तुम सब लोग कौन हो? कहॅा से आये हो और कहॅा जा रहे हो?"

उनमें से कुछ लोग जो बहादुर थे बोले — "हम अपने एक पुराने दोस्त के घर जा रहे हैं। हम उसके 100 बेटों के लिये 100 दुलहिनें ले जा रहे हैं। पर हमारी बदकिस्मती कि हमको इस पुल को

[77] Translated for the word "Giant"

पार करने के लिये रात हो गयी और अब इस पुल ने हमें इतनी कस कर दबा लिया है कि हम सॉस भी नहीं ले पा रहे हैं।"

काले बड़े साइज़ वाले ने पूछा — "और तुम्हारा वह पुराना दोस्त कहॉ है?"

यह सुन कर शादी में आये सब मेहमानों की ऑखें बूढ़े की तरफ घूम गयीं। बूढ़े ने बड़े साइज़ के आदमी की तरफ देखा तो उसने बूढ़े से तुरन्त ही कहा — "सुनो ओ बूढ़े। अगर मैं तुम सबको यह पुल पार करने दूॅ तो क्या तुम मुझे वह दोगे जिसे तुम घर पर भूल आये हो?"

बूढ़ा कुछ देर तक सोचता रहा कि ऐसा क्या हो सकता है जिसे वह घर पर ही भूल आया है पर किसी और को भी यह याद नहीं आया कि बूढ़ा घर पर क्या भूल आया हो सकता है।

बहुत याद करने पर भी वह जब यह न सोच सका कि वह घर पर क्या भूल आया हो सकता है। साथ में सबके चीखने और चिल्लाने की आवाजें भी आ रही थीं सो वह जल्दी से बोला — "हॉ मैं तुम्हें वह दे दूॅगा अगर तुम मेरे लोगों को यह पुल पार करने दोगे तो।"

तब काले बड़े साइज़ के आदमी ने बारात से कहा — "तुम लोगों ने यह वायदा सुना तुम सब इसके गवाह हो। तीन दिन बाद मैं अपनी वह चीज़ लेने आऊॅगा जिसका मैंने अभी सौदा किया है।"

कह कर काले बड़े साइज़ के आदमी ने पुल चौड़ा कर दिया और सारे लोग सुरक्षित रूप से नदी के उस पार उतर गये। इस घटना के बाद अब कोई रात रास्ते में गुजारना नहीं चाहता था सो वे जल्दी जल्दी चल कर सब बूढ़े के घर चले गये और सुबह तक पहुँच गये।

हर आदमी रात की घटना की बात कर रहा था। बूढ़े का सबसे बड़ा बेटा जो घर पर ही छूट गया था को जल्दी ही समझ में आ गया था कि वहाँ क्या हुआ होगा।

उसने अपने पिता से कहा — "पिता जी आपने मुझे उस बड़े साइज़ वाले आदमी को बेच दिया है।"

यह समझ कर वह बूढ़ा तो बहुत ही दुखी और परेशान हो गया। पर उसके दोस्तों ने उसे समझाया — "परेशान मत हो । ऐसा कुछ भी नहीं होगा।"

शादी की रस्में बहुत धूमधाम से पूरी की गयीं। जब ये रस्में अपने पूरे ज़ोर पर थीं यानी तीसरे दिन काले और बड़े साइज़ वाला आदमी दरवाजे पर प्रगट हुआ और चिल्ला कर बोला — "लाओ मुझे वह दो जो तुमने मुझसे देने का वायदा किया था।"

बूढ़ा बेचारा काँपते हुए बढ़ा और उससे पूछा — "आपको क्या चाहिये?"

काले बड़े शरीर वाला आदमी बोला — "कुछ नहीं बस वही जिसका तुमने वायदा किया था।"

अब वह बूढ़ा अपना वायदा तो तोड़ नहीं सकता था सो वह अन्दर से बहुत दुखी था। फिर भी वह अन्दर से अपने सबसे बड़े बेटे को ले आया और बड़े शरीर वाले आदमी को उसे दे दिया।

बड़े शरीर वाले आदमी ने कहा — "अभी तो मैं इसको अपने साथ लिये जाता हूँ। तीन साल बाद तुम लकलैस नदी पर आ कर इसे मुझसे ले जाना।"

यह कह कर वह वहाँ से गायब हो गया। वह नौजवान को अपने साथ ले गया और उसको अपनी काम करने की जगह ले गया और वहाँ जादूगरी का काम सीखने के लिये रख लिया।

उसके बाद से तो बूढ़े की जैसे सारी खुशियाँ चली गयीं। वह हमेशा दुखी रहता चिन्तित रहता साल महीने दिन गिनता रहता जब तक कि तीसरे साल के आखिरी दिन की सुबह नहीं आ गयी।

उस दिन उसने सुबह सुबह अपना डंडा उठाया और लकलैस नदी के किनारे चल दिया। जैसे ही वह नदी के पास पहुँचा तो उसको वह बड़े साइज़ वाला आदमी मिल गया।

उसने बूढ़े से पूछा — "तुम यहाँ किसलिये आये हो।"

बूढ़ा बोला कि वह अपने समझौते के अनुसार अपना बेटा लेने आया है।

यह सुन कर बड़े साइज़ वाला आदमी अन्दर से एक तश्तरी ले आया जिस पर एक छोटी चिड़िया एक फाख्ता और एक क्वैल[78]

---

[78] Translated for the words "Sparrow", "Turtle-Dove" and "Quail"

चिड़िया बैठी हुई थीं। उसे उसको दिखा कर उसने कहा — "अगर तुम यह बता सको कि इसमें तुम्हारा बेटा कौन सा है तो तुम उसे ले जा सकते हो।"

बेचारे बूढ़े बाप ने उन तीनों की तरफ बड़े ध्यान से देखा कि कौन सा बेटा उसका हो सकता था पर वह यह न बता सका कि कौन सी चिड़िया उसका बेटा हो सकती थी। उसे कुछ समझ में भी न आ पाया कि वह क्या करे। इसलिये उन सबको वहीं छोड़ कर उसको अकेले ही वापस जाना पड़ा।

एक बार लौट जाने के बाद वह और दुखी हो गया था। वह घर वापस आया तो उसे लगा कि उसको फिर से नदी किनारे जाना चाहिये और उन तीनों में से वह वाली चिड़िया उठा लेनी चाहिये जो उसकी तरफ बड़े प्यार से देख रही थी।

जब वह दोबारा नदी के किनारे पहुँचा तो उसे फिर से वह काला बड़े साइज़ वाला आदमी मिल गया। इस बार वह एक तीतर एक चूहा और एक फंगस ले आया और उससे पूछा — "अब बताओ कि इनमें से तुम्हारा बेटा कौन सा है।"

बूढ़े पिता ने फिर से पहले एक चिड़िया की तरफ देखा और फिर दूसरी चिड़िया की तरफ देखा पर वह उनमें से किसी में भी अपना बेटा नहीं पहचान सका। वह बेचारा रोता हुआ फिर से वापस घर लौट गया।

जब यह बूढ़ा एक जंगल में से हो कर घर वापस जा रहा था जो लकलैस नदी और उसके घर के बीच में पड़ता था तो उसको वहाँ एक स्त्री मिली।

उसने उससे कहा — "ठहरो तुम्हें क्या परेशानी है? तुम इतनी जल्दी जल्दी कहाँ भागे जा रहे हो और तुम इतनी मुश्किल में हो ही क्यों?"

बूढ़ा बेचारा अपने आप में ही इतन मग्न था कि उसने उस स्त्री की तरफ पहले तो ध्यान ही नहीं दिया पर फिर भी जब स्त्री उसके पीछे पीछे चलती गयी और उसने दोबारा पूछा तो आखिर वह रुक गया और उसे बताया कि उसके ऊपर कैसी बदकिस्मती आ पड़ी है।

जब स्त्री ने उसकी सारी कहानी सुन ली तो वह खुशी से बोली — "अरे तुम डरो नहीं। इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। तुम वापस नदी पर जाओ और जब वह बड़े साइज़ वाला आदमी तीन चिड़ियें ले कर आये तो उनकी आँखों में नजर गड़ा कर देखना। इससे जो चिड़िया तुम्हारा बेटा होगी उसकी दाँयी आँख में आँसू आ जायेगा।

जिस चिड़िया की दाँयी आँख में आँसू आ जाये तुम उसी चिड़िया को कस कर पकड़ लेना क्योंकि वही एक आदमी की आत्मा होगी।"

बूढ़े ने उसको दिल से धन्यवाद दिया और फिर से तीसरी बार नदी की तरफ चल दिया। उसके वहाँ पहुँचते ही बड़े साइज़ का आदमी फिर से प्रगट हो गया।

इस बार वह एक तश्तरी में एक चिड़िया एक फाख्ता[79] और एक कठफोड़वा लिये हुए था और बहुत खुश था।

आ कर वह बोला — "ओ बूढ़े अब पता करो कि इनमें तुम्हारा बेटा कौन सा है।"

इस पर पिता ने उन तीनों चिड़ियों की आँखों में देखा तो उसको फाख्ता की दाँयी आँख से एक आँसू गिरता दिखायी दे गया। बस उसने तुरन्त ही उसे कस कर पकड़ लिया और बोला — "यह मेरा बेटा है।"

अगले ही पल उसने देखा कि उसके बेटे ने उसका कन्धा पकड़ रखा है। सो गाते बजाते वह उसको साथ ले कर घर आ गया और आ कर उसको अपनी सबसे बड़ी बहू को सौंप दिया।

X X X X X X X

इसके बाद वे कुछ दिन सब खुशी खुशी रहे। एक दिन बूढ़े के सबसे बड़े बेटे ने उससे कहा — "पिता जी जब मैं काले बड़े साइज़

---

[79] Translated for the words "Sparrow" and "Dove" – see their pictures above

वाले आदमी के काम करने की जगह काम करता था तो मैंने वहाँ कुछ जादूगरी सीखी।

देखिये मैं अब एक घोड़े में बदल जाता हूँ। तब आप मुझे बाजार ले जाइयेगा और मुझे अच्छे दामों में बेच दीजियेगा और ध्यान रखियेगा कि मेरी लगाम नहीं बेचियेगा।"

उसके पिता ने वैसा ही किया जैसा कि उसके बेटे ने उससे करने के लिये कहा। अगले बाजार दिन वह उस घोड़े को ले कर बाजार गया और उसको बेचने के लिये बैठ गया।

वह घोड़ा इतना शानदार था कि उसको खरीदने के लिये बहुत सारे खरीदार आये और उसके लिये बहुत सारी कीमत देने के लिये तैयार थे। बूढ़ा आखिर उसको **2000** डकैट[80] में बेच पाया।

जब उसने उसको बेच कर उसके पैसे ले लिये तो उसने ध्यान रखा कि उसने उसको घोड़े की लगाम नहीं दी। इस तरह से वह बहुत अमीर हो कर घर लौटा।

कुछ दिनों के बाद जिस आदमी ने वह घोड़ा खरीदा था उसने अपने घोड़े को अपने नौकर को दे कर उसे नहलाने के लिये भेजा। जब घोड़ा नदी में था तो वह नौकर के हाथों से फिसल गया और कूदता हुआ पास के जंगल में भाग गया।

वहाँ उसने फिर से अपने आपको अपने असली रूप में बदल लिया और घर आ गया। कुछ दिन बाद उसने अपने पिता से फिर

[80] Ducat was the European currency in those days.

कहा कि अबकी बार वह खुद को एक बैल में बदल रहा है। सो अबकी बार वह उसको बाजार ले कर अच्छे दामों पर बेच आयें पर ध्यान रहे कि उस रस्सी को न बेचें जिससे मुझे आप बॉध कर ले जायें।

सो अगले बाजार दिन बूढ़ा अपने बैल बने बेटे को बेच आया। उसको बहुत जल्दी ही एक खरीदने वाला मिल गया जिसने उसको बाजार में जितने का एक बैल मिलता था उसका दस गुना दाम दे कर खरीद लिया। बूढ़े ने ख्याल रखा कि उसने उसकी रस्सी जिससे बॉध कर वह उसे ले गया था नहीं बेची।

खरीदार ने उससे रस्सी भी दे देने के लिये कहा ताकि वह उसको उसके सहारे बॉध कर उसे अपने घर ले जा सके। पर बूढ़े ने पूछा कि तुम इस पुरानी सी रस्सी का क्या करोगे। इससे तो अच्छा है कि तुम कोई नयी रस्सी खरीद लो। ऐसा कह कर वह अपनी रस्सी ले कर वहॉ से चला गया।

उसी शाम जब खरीदार के नौकर बैल को ले जा रहे थे तो वह रस्सी तुड़ा कर भाग निकला और पास के जंगल में जा कर अपने आपको अपनी असली शक्ल में बदला और घर चला गया।

अगले बाजार दिन के पहले दिन की शाम को बेटे ने पिता से कहा कि वह अबकी बार अपने आपको एक सोने के सींग वाली गाय में बदल लेगा।

इस बार भी वह अगले दिन बाजार जा कर उसको अच्छे दामों पर बेच आये और यह ध्यान रखे कि उसकी बाँधने वाली रस्सी उसके साथ न बेचे।

सो अगले दिन सुबह को वह एक सोने के सींगों वाली एक गाय में बदल गया और शाम को उसका पिता ने उसकी कीमत **200** क्राउन[81] माँगी।

उधर उस झूठे जादूगर को यह पता चल गया कि उसके नीचे काम करने वाला उसका एक नौकर उसकी चालें खेल खेल कर खूब पैसे बना रहा है। वह उससे जल गया और इसका अन्त करने के लिये एक चाल सोची।

सो तीसरे दिन जब वह बूढ़ा सोने के सींगों वाली गाय को बाजार में बेचने के लिये ला कर रखा तो वह उसका खरीदार बन कर चल दिया।

जैसे ही उसने सोने के सींगों वाली सुन्दर गाय देखी उसने उसको तुरन्त ही पहचान गया कि वही उसका अपना शिष्य था।

वह बूढ़े के पास आया और उससे वह गाय खरीदने की इच्छा प्रगट की। उसने और दूसरे खरीदारों से सबसे ज़्यादा दाम लगा कर उसे खरीद लिया। यह कर के उसने उसको बाँधने वाली रस्सी पकड़ ली और उसको उस बूढ़े के हाथों से खींचने लगा।

---

[81] Crown is the European currency of those times.

बूढ़ा डर गया। बूढ़ा बोला — “पर मैंने तुम्हें यह रस्सी नहीं बेची। मेरी रस्सी मुझे दो।”

यह कह कर उसने रस्सी कस कर पकड़ ली।

खरीदार बोला — “नहीं नहीं। कानून और तौर तरीके सब मेरी तरफ हैं कि जो कोई गाय खरीदता है वह उसके गले की रस्सी भी खरीदता है जिससे उसे ले जाया जाता है।”

कुछ मजा लेने वालों ने इसे मजाक समझा और बोले — “हॉ यह बात तो यह आदमी ठीक कह रहा है।”

सो बूढ़े को गाय की रस्सी भी उसको गाय के साथ साथ ही बेचनी पड़ी। काला बड़े शरीर वाला आदमी अब अपनी खरीद से सन्तुष्ट था सो वह अपनी गाय ले कर अपने महल की तरफ चल दिया। घर पहुँच कर उसने अपनी गाय के पैरों में लोहे की जंजीरें बॉधीं और उसको एक तहखाने में रख दिया।

हर सुबह बड़े शरीर वाला आदमी गाय को चारा और पानी देता पर उसकी जंजीरें कभी नहीं खोलता।

एक शाम को गाय ने जंजीरों से काफी लड़ झगड़ कर अपनी जंजीरें तोड़ दीं और अपने सींगों से दरवाजा खोल कर वहॉ से भाग गयी।

अगली सुबह जब बड़े साइज़ वाला आदमी उसको चारा और पानी देने आया तो उसने देखा कि गाय तो जंजीर तोड़ कर भाग

गयी है तो उसने अपना चारा भी वहीं फेंका और अपना पानी भी वहीं छोड़ा और उसके पीछे पीछे भाग लिया।

कुछ दूर पीछा करने पर वह गाय उसको दिखायी दे गयी तो वह खुद एक भेड़िये में बदल गया और गुस्से से भर कर उसके पीछे पीछे भागा। पर उसके शिष्य ने जल्दी से अपने आपको एक भालू में बदल लिया।

बड़े साइज़ वाले ने आदमी अपने आपको तुरन्त ही एक शेर में बदला तो शिष्य भालू से एक चीते में बदल गया

गुरू शेर से एक मगर में बदल गया तो इस पर शिष्य चीता एक चिड़िया में बदल गया और उड़ गया।

यह देख कर बड़े साइज़ वाला मगर से एक बाज़ में बदल गया और चिड़िया का पीछा करने लगा। शिष्य तुरन्त ही एक बड़े खरगोश में बदल गया।

बडे साइज़ वाला आदमी बाज़ से शिकारी कुत्ते में बदल गया तो शिष्य बड़े खरगोश से फिर से बाज़ में बदल गया।

शिकारी कुत्ता फिर गरुड़ में बदल गया तो शिष्य फिर मछली बन गया।

बड़े शरीर वाला आदमी फिर चूहे में बदल गया तो यह देख कर शिष्य एक बिल्ली बन गया और चूहे के पीछे भागने लगा।

सो बड़े साइज़ वाला आदमी मुर्गी बन कर एक बाजरे[82] के ढेर में जा कर छिप गया। वहाँ शिष्य ने सारा बाजरा खा लिया केवल एक दाना छोड़ दिया जिसमें उसका मालिक था।

मालिक तब एक गिलहरी[83] बन गया तो शिष्य फिर एक बाज़ बन गया और गिलहरी के ऊपर कूद कर उसे मार दिया।

इस तरह से शिष्य ने अपने गुरू को मार दिया। बाज़ फिर से अपनी असली शक्ल में आ गया और खुशी खुशी अपने पिता के घर वापस लौट आया। उसने अपने पिता को बहुत अमीर बना दिया था।

[82] Translated for the word "Millet" – means Baajaraa – a kind of grain like wheat or corn. See its picture above.
[83] Translated for the Word "Squirrel" – see its picture above

20 काम जो कोई नहीं जानता[84]

एक बार की बात है कि बहुत दिन पहले कहीं एक बहुत ही गरीब बूढ़े पति पत्नी रहते थे। उनके केवल एक बेटा था। पत्नी बेचारी बच्चे के खाने पीने का बड़ी मुश्किल से इन्तजाम कर पाती। वे दोनों उसे इसी आशा में पाल रहे थे कि जब वह बड़ा हो जायेगा तो बुढ़ापे में उनकी देखभाल करेगा।

समय बीतता गया और बेटा बड़ा होता गया। माता पिता भी और बूढ़े हो गये। एक दिन बेटे ने माता पिता से कहा — "माँ मैं अब बड़ा हो गया हूँ अब मैं शादी करना चाहता हूँ। सो मैं चाहता हूँ कि आप लोग तुरन्त ही यहाँ के राजा के पास जायें और उनसे मेरे लिये राजा की बेटी माँगें।"

माता पिता को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वे उसको डाँटते हुए बोले — "तुम जानते भी हो कि तुम क्या कह रहे हो। हमारे पास तो रहने के लिये बस यह एक टूटी सी झोंपड़ी है और खाने के लिये रोटी भी मुश्किल से मिलती है। हम लोग तो राजा के सामने भी नहीं जा सकते। उससे उसकी बेटी माँगने की बात तो हम सोच ही नहीं सकते।"

---

[84] The Trade That No One Knows.   (Tale No 20)

पर बेटा जिद करता रहा कि वे वहाँ जायें और उसकी बेटी उसके लिये माँगें। उसने उनको धमकी भी दी कि अगर वह राजा से उसके लिये राजा की बेटी माँगने नहीं गये तो वह उन्हें छोड़ कर चला जायेगा।

यह देख कर कि वह यह बात वह बड़े गम्भीर रूप से कर रहा था उसके दुखी माता पिता इस बात पर राजी हो गये। अगले दिन माँ ने अपने बेटे के सामने शादी की केक[85] बनायी और जब वह बन गयी उसको एक थैले में रखा, कोने में रखा अपना डंडा उठाया और सीधी राजा के महल की तरफ चल दी जहाँ राजा रहता था।

जब वह वहाँ पहुँची तो राजा के नौकर उसको राजा के सामने उस कमरे में ले गये जहाँ वह गरीब लोगों से मिला करता था। वे वहाँ या तो दान माँगने के लिये आते थे या फिर उनको कोई शिकायत होती तो उसको कहने और सुलझवाने के लिये आते थे।

वह गरीब स्त्री कमरे में खड़ी थी अपने फटे पुराने कपड़ों पर शर्माती हुई। ऐसा लग रहा था जैसे कोई पत्थर की मूर्ति खड़ी हो। राजा ने उससे बड़ी दया से पूछा — "ओ बूढ़ी माँ आपको मुझसे क्या चाहिये।"

उस स्त्री की तो यह बताने की हिम्मत भी नहीं हो रही थी कि वह वहाँ किसलिये आयी थी।

---

[85] Translated for the words "Marriage Cake". In some societies the groom or bridegroom's family member takes the Marriage Cake to the other's house to settle the matrimony.

वह बेचारी हकलाते हुए बोली — "कुछ नहीं योर मैजेस्टी।"

यह सुन कर राजा थोड़ा सा मुस्कुराया और बोला — "शायद आप मुझसे कुछ दान माँगने आयी होंगी।"

यह सुन कर स्त्री शर्म से लाल हो गयी।

वह बोली — "जी योर मैजेस्टी। अगर आप इजाज़त दें तो।"

इस पर राजा ने अपने एक नौकर को बुलाया और उससे उस स्त्री को 10 क्राउन[86] देने के लिये कहा। उसने वे 10 क्राउन तुरन्त ही ला कर बुढ़िया को दे दिये।

ये पैसे ले कर उसने राजा को धन्यवाद दिया और घर वापस चली आयी। रास्ते में वह बुड़बुड़ाती चली आ रही थी — "मैं यह यकीन के साथ कह सकती हूँ कि जब मेरा बेटा इस पैसे को देखेगा तो फिर कभी बाहर जाने की बात भी नहीं करेगा।"

पर इस सोच में तो वह बिल्कुल गलत थी क्योंकि जैसे ही वह अपनी झोंपड़ी में घुसी उसका बेटा बड़ी बेचैनी से उसके पास आया और उससे पूछा — "माँ क्या आपने राजा से वह पूछा जो मैंने आपसे उससे पूछने के लिये कहा था।"

इस पर वह बोली — "तुम यह सब बिल्कुल छोड़ दो। यह सब सपने की बातें हैं मेरे बेटे। तुम मुझसे यह कैसे आशा कर सकते हो कि मैं तुम्हारे लिये राजा से उसकी बेटी का हाथ माँगूँ। यह उनके

[86] Crown is the name of the European currency in those times.

लिये तो सही लगता है जो बड़े कुलीन लोग होते हैं मगर हम लोग तो यह बात सपने में भी नहीं सोच सकते।

कुछ भी सही मैं तो यह बात राजा से कहने की हिम्मत नहीं जुटा पायी। पर उसने मुझे बहुत सारा पैसा दिया जो मैं ले कर आयी हूँ। अब तुम इस पैसे से अपने लिये कोई अच्छी सी पत्नी ढूँढ सकते हो। उसके बाद तुम राजा की बेटी को भूल जाना।"

बेटे ने माँ की जब ऐसी बातें सुनी तो उसे बहुत गुस्सा आया। वह बोला — "मैं राजा के इस पैसे का क्या करूँ माँ। मुझे तो उसकी बेटी की जरूरत है। अब मुझे पता चला कि अब तक आप लोग मुझसे खेल रहे थे। इसलिये अब मैं आपको छोड़ कर जाता हूँ। मैं कहीं भी चला जाऊँगा जहाँ भी मुझे मेरी आँखें ले जायें।"

उसके बेचारे गरीब बूढ़े माता पिता ने उससे बहुत विनती की कि इस बुढ़ापे में वह उनको अकेला छोड़ कर न जाये। पर वे उसको केवल इसी शर्त पर शान्त कर सके कि उसकी माँ अगले दिन फिर से राजा के पास जायेगी और इस बार उससे सचमुच में उसकी बेटी का हाथ माँगेगी।

बेचारी माँ क्या करती। सुबह उठ कर वह फिर से राजा के महल जा पहुँची। राजा के नौकर लोग उसको फिर से उसको राजा के उसी कमरे में ले गये जिसमें वे उसको पहले दिन ले गये थे।

राजा ने उसको फिर से देखा तो बोला — "ओ बूढ़ी स्त्री। अब आपको मुझसे क्या चाहिये।"

बेचारी बुढ़िया आज भी शर्म से झुकी हुई थी उसने हकलाते हुए कहा — "कुछ नहीं योर मैजेस्टी।"

राजा को लगा यह फिर से भीख माँगने आयी है सो राजा ने इस बार भी उसको **10** क्राउन दिलवा दिये।

बुढ़िया उन पैसों को ले कर फिर से अपने घर चली आयी। घर पहुँची तो उसके बेटे ने उससे फिर पूछा — "ऐसा लगता है माँ कि आज आप वह कर आयी हैं जो मैंने आपसे करने के लिये कहा था।"

माँ फिर बोली — "बेटे तू राजा की बेटी का ख्याल छोड़ दे उसे शान्ति से रहने दे। तू ऐसा सोचता ही कैसे है? अगर तू उसको शादी कर के घर ले भी आया तो उसे रखेगा कहाँ? इसलिये चुपचाप यह पैसे रख जो मैं राजा से तेरे लिये लायी हूँ।"

यह सुन कर तो बेटा पहले से भी बहुत ज़्यादा गुस्सा हो गया और कुछ तेज़ी से बोला — "मै देख रहा हूँ कि आप मुझे राजा की बेटी से शादी नहीं करने देंगी। मैं आपको अभी इसी हालत में छोड़ कर जा रहा हूँ और फिर कभी यहाँ नहीं आऊँगा।"

कह कर वह झोंपड़ी के दरवाजे की तरफ भाग गया।

उसके माता पिता यह कहते हुए उसके पीछे पीछे भागे कि वह कसम खाते हैं कि वे फिर से राजा के पास उसकी शादी की बात करने जरूर जायेंगे और सचमुच में उसकी शादी की बात करेंगे।

यह सुन कर नौजवान बेटा रुक गया और घर के अन्दर आ गया। वह अगले दिन तक इन्तजार करने के लिये तैयार था।

अगले दिन उसकी माँ भारी दिल से फिर से राजा के पास गयी। राजा के नौकर फिर से उसे उसी कमरे में ले गये जहाँ वे उसको पिछले दो दिन ले गये थे।

वहाँ उसको तीसरी बार देख कर राजा का धीरज छूट गया और वह बोला — "बूढ़ी माँ अब आपको क्या चाहिये।"

अब माँ की तो आवाज ही न निकले वह फिर सारी की सारी काँप गयी और हकलाते हुए बोली — "योर मैजेस्टी कुछ भी नहीं।"

राजा बोला — "यह नहीं हो सकता कि आपको किसी चीज़ की जरूरत ही नहीं है। आपको किसी चीज़ की तो जरूरत है जो आप कह नहीं पा रही हैं। आप मुझे बिना किसी हिचक के बताइये कि आपको क्या चाहिये। अगर आप अपनी ज़िन्दगी चाहती हैं तो मुझे सच सच बताइये कि आपको क्या चाहिये।"

अब तो माँ को बताना ही पड़ा कि उसे क्या चाहिये। उसने राजा को सारी कहानी बतायी कि किस तरह से उसका बेटा राजा की बेटी से शादी करने की इच्छा रखता था। और इसी लिये उसने उसको उसे राजा के सामने बात करने के लिये आने पर मजबूर किया।

राजा ने जब सारा हाल सुना तो वह बोला — "हूँ। मुझे कोई ऐतराज नहीं है अगर मेरी बेटी उससे शादी करने के लिये तैयार हो जाती है तो।"

कह कर उसने अपनो नौकरों को अन्दर भेज कर अपने बेटी को बुलवाया। जब वह वहाँ आ गयी तो उसने बेटी को सारी कहानी बतायी और उससे पूछा — "बेटी क्या तुम उससे शादी करने को तैयार हो?"

राजकुमारी तुरन्त ही बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। अगर वह कोई ऐसा काम जानता हो जो कोई नहीं जानता।"

इसके बाद राजा ने अपने नौकरों से बुढ़िया को कुछ और पैसे देने के लिये कहा। बुढ़िया का भी दिल हल्का हो गया था कि आज वह अपनी बात राजा से बिना किसी किसी बुरी घटना के घटे कह पायी। वह पैसे ले कर घर चली गयी।

जैसे ही वह घर में घुसी तो बेटे ने पूछा — "क्या आप मेरी शादी की बात पक्की कर आयीं?"

माँ बोली — "अरे ज़रा मुझे साँस तो ले लेने दे। सुन। आज मैंने सचमुच ही उसके साथ बात की थी। पर मैंने देखा कि उससे बात करने से कोई फायदा नहीं। उसकी बेटी ने साफ साफ कह दिया है कि वह तुझसे शादी नहीं करेगी जब तक तू कोई ऐसा काम करना नहीं सीख लेता जो किसी को न आता हो।"

बेटा बोला — "ओह मॉ आप उसकी चिन्ता न करें। अब मुझे अपनी शर्त पता चल गयी। यह ठीक है।"

अगले दिन बेटा अपनी यात्रा पर चल पड़ा एक ऐसे आदमी की खोज में जो उसको कोई ऐसा काम सिखा सके जो कोई न जानता हो। वह बहुत दिनों तक घूमता रहा पर उसे कोई ऐसा आदमी न मिला जिसको कोई ऐसा काम आता हो जो कोई नहीं जानता।

एक दिन वह रोज रोज के इस घूमने से तंग आ गया और थक कर वहीं सड़क के किनारे पड़े एक लकड़ी के एक लट्ठे पर बैठ गया।

उसको लकड़ी के लट्ठे पर बैठे हुए कुछ ही देर हुई होगी कि वहॉ एक बुढ़िया आयी। उसने एक नौजवान को इस तरह उदास बैठे देखा तो उसको उस पर बड़ी दया आयी।

उसने उससे पूछा — "मेरे बच्चे तुम इतने उदास और दुखी क्यों बैठे हो?"

वह बोला — "पूछने से क्या फायदा जबकि आप मेरी कोई सहायता नहीं कर सकतीं।"

पर वह बोली — "पर बेटा बताओ तो सही कि बात क्या है। शायद मैं तुम्हारी कोई सहायता कर पाऊॅ।

बेटा बोला — "अगर आप जानना ही चाहती हैं तो सुनिये। मैं इस दुनियॉ में बहुत दिनों से एक ऐसे आदमी की तलाश में घूम रहा

हॅू जो मुझे कोई ऐसा काम सिखा सके जो दुनियॉ में कोई न जानता हो।”

बुढ़िया बोली — “अरे बस इतनी सी बात है। अब तुम मेरी बात सुनो। तुम डरो नहीं बस तुम इस जंगल में चले जाओ जो तुम्हारे सामने पड़ा है। तुमको वहॉ वह मिल जायेगा जिसकी तुम्हें तलाश है।”

बेटा तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया और तुरन्त ही उठ कर जंगल की तरफ चल दिया। जब वह जंगल में काफी दूर चक चल लिया तो उसको उसमें एक बहुत बड़ा किला नजर आया। वह तो उसको खड़ा का खड़ा देखता रह गया।

वह उसको अभी देख ही रहा था कि चारों तरफ से चार बड़े साइज़ के लोग[87] उसकी तरफ चिल्लाते हुए दौड़े आये — “क्या तुम वह व्यापार सीखना चाहते हो जिसे कोई नहीं जानता।”

वह बोला — “हॉ मैं इसी लिये तो यहॉ आया हॅू।”

यह सुन कर वे उसको किले के अन्दर ले गये।

बड़े साइज़ के लोग अगले दिन सुबह शिकार पर जाने के लिये तैयार हुए और बेटे से बोले — “हम लोग शिकार पर जा रहे हैं। तुम खाने वाले कमरे के बराबर वाले कमरे में बिल्कुल मत जाना।”

[87] Translated for the word “Giants”

यह कह कर वे वहाँ से चले गये पर जैसे ही वे उसकी आँखों की सामने से ओझल हुए तो बेटे ने यह सोचना शुरू किया "मुझे तो ऐसा लगता है कि मैं किसी ऐसी जगह आ कर फँस गया हूँ जहाँ से मैं अब कभी नहीं निकल सकता। इसलिये मैं उस कमरे में जा कर देख सकता हूँ कि उस कमरे में क्या है। फिर जो भी होता है होता रहे।"

यह सोच कर वह उस कमरे तक गया उसका दरवाजा थोड़ा सा खोल कर उसके अन्दर झाँका तो देखा कि वहाँ तो एक सुनहरा गधा भूसा रखने वाली सुनहरी आलमारी से बँधा खड़ा था।

उसने उसको ज़रा सा ही देखा और दरवाजा बन्द कर के वहाँ से जाने लगा तो गधा बोला — "ज़रा मेरे सिर से मेरा यह लगाम का खाँचा उतार दो और इसे अपने पास छिपा कर रख लो। जब तुम यह जान जाओगे कि यह कैसे काम करता है तब यह तुम्हारी बहुत सहायता करेगा।"

यह सुन कर उसने उसके सिर से लगाम वाला खाँचा निकाल लिया और दरवाजा बन्द कर दिया। जल्दी से उसे अपने कपड़ों में छिपा कर वह वहाँ से चला गया।

उसे अपने कमरे में बैठे हुए अभी बहुत देर नहीं हुई थी कि बड़े साइज़ वाले लोग वहाँ आ गये। आते ही उन्होंने उससे पूछा — "क्या तुम उस कमरे में गये थे?"

यह सुनते ही वह तो बहुत डर गया पर तुरन्त ही बोला — "नहीं तो।"

बड़े साइज़ वाले लोग गुस्से में भर कर बोले — "पर हमें मालूम है कि तुम उस कमरे में गये थे।"

कह कर उन्होंने कुछ बड़ी बड़ी डंडियाँ उठायीं और उनसे उसे इतना ज़्यादा पीट दिया कि वह तो फिर खड़ा भी न हो सका। यह उसकी खुशकिस्मती थी कि गधे की लगाम वाला खाँचा अभी भी उसकी कमर में बँधा हुआ था नहीं तो शायद वह तो उनकी मार से मर ही जाता।

अगली सुबह बड़े साइज़ वाले लोग जब फिर से शिकार के लिये जाने लगे तो उन्होंने बेटे को चेतावनी दी कि अबकी बार वह खाने वाले कमरे से तीसरे कमरे में न जाये। पर जैसे ही वे बड़े साइज़ वाले लोग वहाँ से चले गये तो वह फिर उधर चल दिया।

वह इस बात को जान लेने के लिये बहुत उत्सुक था कि उस कमरे में क्या था। वहाँ पहुँच कर वह पहले तो थोड़ी देर तक खड़ा रहा और सोचता रहा "मैं तो अभी भी ज़िन्दा कम और मरा हुआ ज़्यादा हूँ। अब इससे ज़्यादा और बुरी हालत मेरी क्या होगी तो मैं यह कमरा भी देख ही लेता हूँ।" और उसने दरवाजा खोल दिया।

उसमें एक बहुत सुन्दर लड़की सुनहरे और रुपहले कपड़े पहने हुए अपने बालों में कंघी कर रही थी। उसके बालों में बहुत सारे हीरे लगे हुए थे। कुछ पल तो वह उसको देखता का देखता रह

गया फिर कमरे का दरवाजा बन्द कर के जाने लगा तो वह उससे बोली —

"ओ नौजवान ज़रा रुक जाओ। लो यह चाभी ले लो और देखो इसे सँभाल कर रखना यह तुम्हारे बहुत काम आयेगी अगर तुम इसका इस्तेमाल जानते होगे तो।"

सो वह फिर से अन्दर गया उससे चाभी ली और बाहर जाते हुए कमरे का दरवाजा बन्द करता गया। वह फिर वहीं जा कर बैठ गया जहाँ वह बैठा करता था।

उसे वहाँ पर बैठे बहुत देर नहीं हुई थी कि बड़े साइज़ वाले लोग घर वापस लौट आये थे। जैसे ही वे घर में घुसे उन्होंने बड़ी बड़ी डंडियाँ फिर से उठा लीं और उससे पूछा "क्या तुम उस कमरे में गये थे?"

डर से काँपते हुए उसने जवाब दिया "नहीं।"

वे फिर चिल्लाये — "पर हमें मालूम है कि तुम वहाँ गये थे।"

यह कह कर उन्होंने उसे पहले दिन से भी ज़्यादा बुरी तरह से मारना शुरू कर दिया।

अगले दिन बड़े साइज़ वाले लोग फिर से शिकार के लिये बाहर गये तो उन्होंने फिर कहा — "खाने वाले कमरे से आगे चौथे कमरे में कभी भी किसी हालत में भी नहीं जाना। क्योंकि अगर तुम गये तो पिछले दो दिन तो हमने तुम्हें छोड़ दिया था पर इस बार हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। हम तुम्हें उसी समय मार देंगे।"

कह कर वे शिकार के लिये चले गये। जैसे ही वे घर से बाहर निकले बेटे ने सोचा कि ये लोग दो दिनों तक तो मुझे खूब मार ही चुके हैं तो अब मेरी जान लेने से ज़्यादा और मेरे साथ क्या करेंगे सो वह उठा और खाने वाले कमरे से चौथे वाले कमरे की तरफ चल दिया।

वहॉ पहुॅच कर उसने दरवाजा खोल दिया। दरवाजा खोलते ही वह तो डर गया। उस कमरे में तो बहुत सारे लोगों की खोपड़ियॉ पड़ी हुई थीं। ये खोपड़ियॉ उन नौजवानों की थीं जो यहॉ उसी की तरह वह काम सीखने आये थे जो कोई नहीं जानता।

जिन्होंने उन बड़े साइज़ वालों के हुक्म को वफादारी से माना था और जिनको उन्होंने मार दिया था। नौजवान यह सोचते ही वहॉ से बाहर की तरफ भाग लिया।

कि एक सिर बोल पड़ा — "तुम डरो नहीं अन्दर आ जाओ।"

सो वह अन्दर चला गया। उस सिर ने उसे एक लोहे की जंजीर दी और कहा — "लो यह जंजीर लेते जाओ यह तुम्हारे बहुत काम आयेगी अगर तुम यह जानते होगे कि इसको कैसे इस्तेमाल करना है। इस जंजीर का ख्याल रखना।"

बेटे ने जंजीर उठायी दरवाजा बन्द किया और वहॉ से बाहर चला गया। जा कर वह वहीं बैठ गया जहॉ वह बैठा करता था। वह बड़े साइज़ के लोगों का इन्तजार कर रहा था। इन्तजार करते

करते उसका डर भी बढ़ता जा रहा था कि आज तो वे उसको मार ही देंगे।

आखिर वे आये। घर आते ही उन्होंने अपनी अपनी मोटी वाली डंडियाँ उठा लीं और बिना उससे कुछ पूछे उसको ज़ोर ज़ोर से मारना शुरू कर दिया। उन्होंने उसको इतना मारा इतना मारा कि बस वह केवल ज़िन्दा ही बचा था।

फिर उन्होंने उसको किले के बाहर फेंक दिया और कहा — "अब तुम यहाँ से जाओ क्योंकि तुमने वह काम सीख लिया है जो कोई भी नहीं जानता।"

ऐसा कह कर वे लोग तो अन्दर चले गये और वह बहुत देर तक वहीं जमीन पर ही पड़ा रहा। उसके अन्दर इतनी ताकत ही नहीं थी कि वह उठ भी सके। उसके सारे शरीर में बहुत दर्द हो रहा था।

आखिर थोड़ी देर बाद उसने हिलने की कोशिश की। उसने सोचा "अगर उन्होंने मुझे वह काम सिखा दिया है जो कोई और नहीं जानता तो राजा की बेटी को पाने के लिये मैं यह दर्द भी सह लूँगा। अगर मैं उसे पा सका तो।"

अब वह वहाँ से चल दिया। चलते चलते वह अपने उसी देश में आ गया जहाँ के राजा से वह शादी करना चाहता था। पर जब वह राजा के महल के सामने आ गया तो उसको देख कर वह बहुत दुखी हो गया।

उसे राजकुमारी के शब्द याद आये "मैं केवल उसी से शादी करूँगी जिसको ऐसा काम आता होगा जो किसी को नहीं आता।"

और आज जब वह कुछ सीख कर वहाँ आया है तो उसको लगा कि वह तो कुछ भी नहीं जानता। उसने तो वहाँ कोई काम सीखा ही नहीं था। और वह जान भी नहीं पाया कि वहाँ उसने ऐसी क्या चीज़ सीखी जिसे और कोई नहीं जानता था।

वह सोचे जा रहा था कि उसने वहाँ क्या सीखा क्या सीखा तो उसे सुनहरे गधे की लगाम और चाभी और लोहे की जंजीर की याद आयी जिनको जबसे उसने बड़े शरीर वालों का किला छोड़ा था और छिपा कर सँभाल कर रखा हुआ था।

उसने उनको निकाल लिया और बोला "देखता हूँ कि ये मेरे लिये क्या कर सकती हैं।" पहले उसने लगाम ली और उसको जमीन पर दे मारा तो तुरन्त ही हर तरीके से सजा हुआ एक बहुत सुन्दर घोड़ा उसके सामने आ कर खड़ा हो गया।

फिर उसने लोहे की जंजीर निकाली और उससे जमीन पर मारा तो तुरन्त ही एक बड़ा खरगोश[88] और एक ग्रेहाउन्ड कुत्ता[89] आ कर खड़े हो गये।

---

[88] Translated for the word "Hare" – Hare is an animal like rabbit but a little bigger in size than it. See its picture above.

[89] Greyhound dog is very powerful hunting dog.

बेटे का मुँह तो खुला का खुला रह गया। बड़ा खरगोश तो इधर उधर भागने लगा और कुत्ता उसका पीछा करने लगा।

पल भर में ही, बेटे को तो पता ही नहीं चला कि कब और कैसे, उसके शरीर पर एक शिकारी की पोशाक आ गयी और वह घोड़े पर सवार हो कर बड़े खरगोश का पीछा करने लगा।

अब इत्तफाक ऐसा हुआ वह बड़ा खरगोश भागते भागते उसे उसी सड़क पर ले गया जो राजा के महल के पास से हो कर जाती थी।

राजा भी उस समय इत्तफाक से अपनी खिड़की के सामने ही खड़ा था सो उसकी नजर सुन्दर ग्रेहाउन्ड कुत्ते और उसके पीछे पीछे भागते हुए शानदार घोड़े पर पड़ी जिस पर एक बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने एक शिकारी सवार था।

जब उसने यह दृश्य देखा तो वह तो उन सबको देखता का देखता ही रह गया। उसने तुरन्त ही अपने कुछ नौकरों को बुलाया और उनको उस शिकारी का पीछा करने का हुक्म दिया और कहा कि वे उसको महल ले कर आयें।

नौजवान ने जब देखा कि कुछ लोग उसके पीछे चिल्लाते हुए आ रहे हैं तो वह एक घनी झाड़ी के पीछे की तरफ जा कर छिप गया। फिर उसने लगाम और लोहे की जंजीर थोड़ी सी हिला दी।

पल भर में ही बड़ा खरगोश ग्रेहाउन्ड कुत्ता और उसके अपने शिकारी वाले कपड़े सभी कुछ गायब हो गया और उसने देखा कि वह तो अपने पुराने कपड़ों में एक पेड़ के नीचे बैठा है।

अब तक राजा के नौकर भी उसके पास तक आ पहुँचे थे। उसको वहाँ बैठा देख कर उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसने किसी शिकारी को उधर से जाते हुए देखा है।

पर उसने बड़े रूखेपन से उनको जवाब दिया "नहीं मैंने तो यहाँ से किसी को जाते हुए नहीं देखा और न मुझे किसी की इतनी चिन्ता है कि मैं यह देखूँ कि यहाँ से कौन आ जा रहा है।"

यह सुन कर राजा के नौकर वहाँ से चिल्लाते पुकारते जंगल में और अधिक दूर चले गये और वहाँ उसको ढूँढने लगे पर सब बेकार था। वे वहाँ काफी देर तक उसको ढूँढते रहे पर वह उनको मिल कर नहीं दिया।

आखिर वे लौट कर राजा के पास चले गये और उसको बताया कि शिकारी और उसका घोड़ा तो इतनी जल्दी वहाँ से भाग गये कि फिर कहीं दिखायी ही नहीं दिये।

बेटे ने सोचा कि अब वह अपने माता पिता के पास जायेगा। वह वहाँ पहुँचा तो उसके माता पिता उसको देख कर बहुत खुश हुए कि उनका बेटा वापस आ गया।

अगले दिन सुबह बेटे ने अपने पिता से कहा — “पिता जी आज मैं आपको दिखाता हूँ कि मैं क्या सीख कर आया हूँ। देखिये मैं अपने आपको एक सुन्दर घोड़े में बदल लेता हूँ।

आप उस घोड़े को यानी मुझे बाजार ले जाइयेगा और अच्छे दाम पर बेच दीजियेगा। पर याद रहे मेरी लगाम नहीं बेचियेगा। अगर आपने मेरी लगाम बेच दी तो फिर मैं घोड़े का घोड़ा ही रह जाऊँगा।”

सो पल भर में ही वह एक बहुत ही सुन्दर और शानदार घोड़े में बदल गया। उसके पिता ने उसको अपने साथ लिया और बाजार बेचने के लिये चल दिया। बहुत जल्दी ही लोग उस घोड़े के चारों तरफ घिर आये।

उसकी सुन्दरता को देखते हुए लोगों ने बड़े बड़े ऊँचे दाम लगाने शुरू कर दिये। यह देख कर बूढ़े ने भी उसके दाम ऊँचे और और ऊँचे बढ़ाने शुरू कर दिये।

यह खबर तो बहुत जल्दी ही शहर में फैल गयी कि बाजार में एक इतना सुन्दर घोड़ा आया है कि सभी लोग उसे खरीदना चाहते हैं। यह खबर राजा के पास तक पहुँची तो उसने निश्चय किया कि वह पहले उसे खुद देखेगा कि वह कैसा है।

सो उसने अपने कुछ नौकर उस घोड़े को लाने के लिये भेज दिये ताकि वह उस घोड़े को खुद ही देख सके। बूढ़ा तुरन्त ही अपने घोड़े को राजमहल के सामने ले गया। राजा कुछ देर तक तो

उसे खुद ही बड़ी प्रशंसा के साथ देखता रहा पर फिर वह बिना बोले नहीं रह सका।

वह बोला — "मेरे कहे की कसम हालाँकि मैं तो राजा हूँ फिर भी चढ़ने की बात तो छोड़ो मैंने इतना सुन्दर घोड़ा पहले कभी देखा तक नहीं।"

तब उसने उससे पूछा — "क्या तुम इसे मुझे बेचोगे?"

बूढ़े ने कहा — "क्यों नहीं। पर योर मैजेस्टी मैं इसकी लगाम को आपको नहीं बेचूँगा।"

राजा बड़ी ज़ोर से हँस कर बोला — "यह गन्दी सी लगाम मुझे चाहिये भी नहीं। मैं इस सुन्दर से घोड़े के लिये सोने की बहुत सुन्दर सी लगाम बनवाऊँगा।"

इस तरह बूढ़े ने यह घोड़ा राजा को बहुत ऊँचे दाम पर बेच दिया और बहुत सारे पैसे ले कर घर वापस आ गया।

अगली सुबह शाही घुड़साल में हलचल मच गयी। पिछले दिन राजा ने जो इतना मँहगा घोड़ा खरीदा था वह रात में ही कहीं गायब हो गया था। और जिस पल घुड़साल से वह गायब हुआ था उसी पल वह अपने घर में अपने माता पिता का बेटा बन कर प्रगट हो गया।

एक दो दिन बाद बेटे ने अपने पिता से कहा — "पिता जी देखिये अब मैं अपने आपको एक चर्च में बदल लेता हूँ और यह चर्च राजा के महल के पास ही होगा। अगर राजा उसको खरीदना

चाहे तो आप उसे उसको बेच दीजियेगा पर ध्यान रखियेगा कि उसको उसकी चाभी मत दीजियेगा। अगर आपने उसकी चाभी दे दी तो मैं फिर चर्च ही बना रह जाऊँगा।"

सो अगले दिन जब राजा सो कर उठा तो रोज की तरह अपने महल की खिड़की से बाहर झॉक रहा था कि उसने देखा कि उसके महल के आगे तो एक बहुत शानदार चर्च खड़ा है। यह चर्च तो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उसने तुरन्त ही अपने नौकरों को वहॉ यह जानने के लिये भेजा कि वह क्या है। उसके नौकरों ने आ कर बताया कि वह चर्च किसी बूढ़े तीर्थयात्री का है और अगर राजा उसे खरीदना चाहे तो वह उसे बेचना भी चाहता है।

राजा ने पुछवाया कि वह उसे कितने में बेचेगा तो तीर्थयात्री ने कहा कि यह बहुत मॅहगा है। राजा के नौकर लोग जब पिता से चर्च के लिये सौदा कर रहे थे तो वहॉ वही बुढ़िया आयी जिसने बूढ़े के बेटे को चार बड़े साइज़ के लोगों के पास भेजा था। वह खुद भी वहॉ रह चुकी थी और यह काम सीख चुकी थी जो कोई नहीं जानता।

वह तुरन्त ही सब कुछ समझ गयी और किसी दूसरे को अपने सौदे में शामिल नहीं करना चाहती थी सो उसने उस नौजवान बेटे को खत्म करने का इरादा कर लिया। इसलिये उसने उस चर्च की राजा से भी ज़्यादा कीमत लगानी शुरू कर दी।

उसने उसको इतने ज़्यादा पैसे दिये कि बूढ़ा तो चौंक ही गया कि वह क्या करे। आखिर उसने बुढ़िया के साथ सौदा करना मंजूर कर लिया। पर जब वह बुढ़िया के दिये पैसे गिन रहा था तो वह चाभी के बारे में बिल्कुल भूल गया।

पर कुछ देर बाद ही उसको याद आ गया कि उसके बेटे ने चर्च को बेचते समय खरीदार को उसकी चाभी नहीं देनी है नहीं तो वह चर्च ही बना रह जायेगा।

उसको लगा कि अब तो बहुत गड़बड़ हो जायेगी वह उससे चाभी वापस लेने के लिये बुढ़िया के पीछे भागा। पर बुढ़िया को चाभी वापस करने के लिये मजबूर नहीं किया जा सका।

वह बोली — "क्योंकि यह चाभी चर्च की है और चर्च को मैंने खरीद लिया है इसलिये मैं अब इसे वापस नहीं कर सकती।"

यह देख कर कि बुढ़िया चर्च की चाभी वापस नहीं कर रही है बूढ़ा बहुत दुखी हुआ। साथ में उसको डर भी लगने लगा कि कहीं उसके बेटे का कुछ बुरा न हो जाये। यह सोचते ही उसने बुढ़िया को उसकी गर्दन से पकड़ लिया और उसको चाभी गिराने पर मजबूर किया।

उसके हाथ से चाभी गिर गयी। उसको उठाने के लिये बुढ़िया ने बहुत कोशिश की पर बूढ़ा भी उस बुढ़िया से खूब लड़ा। इतने में चाभी तभी एक फाख्ता में बदल गयी और राजा के महल के बागीचे के ऊपर उड़ने लगी।

जब बुढ़िया ने यह देखा तो उसने अपने आपको एक बाज़ में बदल लिया और फाख्ता का पीछा करने लगा। जैसे ही बाज़ फाख्ता को पकड़ने वाला था कि फाख्ता एक फूलों के गुच्छे में बदल गया और जा कर राजकुमारी के हाथों में जा कर गिर पड़ा जो इत्तफाक से उसी बागीचे में टहल रही थी।

बाज़ फिर से अपने बुढ़िया के रूप में आ गया और वह बुढ़िया अब महल के दरवाजे पर खड़ी हो कर उस गुलदस्ते की भीख माँगने लगी। अगर वह उसको पूरा गुलदस्ता न देना चाहे तो कम से कम उसमें से एक फूल ही उसे दे दे।

राजकुमारी बोली — "नहीं किसी तरह भी नहीं। ये फूल तो मेरे पास स्वर्ग से आये हैं। मैं तुम्हें इनमें से एक फूल भी नहीं दे सकती"

पर बुढ़िया ने तो उस गुलदस्ते में से कम से कम एक फूल लेने का निश्चय तो कर ही रखा था। जब उसने देखा कि राजकुमारी तो सुन ही नहीं रही है तो वह राजा के पास गयी और उससे रोते हुए विनती की कि वह अपनी बेटी से उसके हाथ के गुलदस्ते में से केवल एक फूल उसको दिलवा दे।

राजा ने सोचा कि यह बुढ़िया शायद यह फूल किसी बीमारी के इलाज के लिये माँग रही होगी सो उसने अपनी बेटी को अपने पास

बुलवाया और उससे कहा कि वह अपने गुलदस्ते का केवल एक फूल उस भिखारिन को दे दे।

जैसे ही राजा ने यह अपनी बेटी से कहा तो गुलदस्ता राजकुमारी के हाथ से नीचे गिर पड़ा और एक बाजरे के ढेर में बदल गया और सारी जमीन पर फैल गया।

तब बुढ़िया ने अपने आपको एक मुर्गी में बदल लिया और बहुत जल्दी जल्दी उसके दाने खाने लगी। अचानक सारा बाजरा तो वहाँ से गायब हो गया और उसकी जगह वहाँ एक लोमड़ी प्रगट हो गयी। लोमड़ी मुर्गी पर कूद पड़ी और मुर्गी को खा गयी।

उसके बाद लोमड़ी ने अपने आपको नौजवान में बदल लिया और राजा से कहा कि वह वही लड़का है जो राजकुमारी से शादी करना चाहता था। और उसी की शर्त को पूरा करने के लिये वह दुनियाँ में घूमता फिरा ताकि वह कोई ऐसा काम सीख सके जो कोई नहीं जानता।

जब राजा और उसकी बेटी ने यह सुना तो यह देख कर कि लड़के ने अपना काम कितनी अच्छी तरह से पूरा कर दिया था बड़ी खुशी से राजा ने अपनी बेटी की शादी उस लड़के साथ कर दी।

उस गरीब बूढ़े माता पिता के बेटे से अपनी बेटी की शादी करने के बाद राजा ने अपने शहर के पास ही अपनी बेटी के लिये

एक बहुत बढ़िया महल बनवा दिया। वे वहाँ बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहे और उनके कई बच्चे हुए।

लोगों का कहना है कि उनके बच्चे अभी भी वहाँ रह रहे हैं। वे अभी भी उसी चर्च में पूजा करने जाते हैं। वह चर्च हमेशा खुला रहता है क्योंकि उसकी चाभी तो एक नौजवान में बदल गयी थी जिसने यह दिखाने के बाद कि वह वह काम जानता था जो कोई दूसरा नहीं जानता था राजकुमारी से शादी कर ली थी। जैसा कि वह चाहती थी।

21 तीन उम्मीदवार[90]

एक बार की बात है कि किसी दूर देश में एक राजा रहता था। उसके केवल एक ही बच्चा था और वह थी उसकी बेटी – बहुत सुन्दर।

जब वह बड़ी हो गयी तो उसका हाथ मॉगने के लिये बहुत सारे लड़के आने लगे। उन सबमें राजा को तीन उम्मीदवार बहुत पसन्द थे। और इत्तफाक से वे तीनों ही उम्मीदवार ऐसे थे जो उसको एक जैसे पसन्द थे। वह यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि वह अपनी प्यारी सी बेटी का हाथ किसके हाथ में दे।

सोचते सोचते एक तरकीब उसके दिमाग में आयी तो उसने उन तीनों भलेमानसों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा — "तुम लोग जाओ दुनियॉ घूमो। तुममें से जो कोई भी मेरे लिये सबसे ज़्यादा बढ़िया चीज़ ले कर आयेगा वही मेरा दामाद बनेगा।"

तीनों उम्मीदवार तुरन्त ही दुनियॉ में घूमने और कोई सबसे अजीब चीज़[91] लाने के लिये चल दिये।

उनमें से एक उम्मीदवार को अभी घूमते हुए बहुत दिन नहीं हुए थे कि उसको एक जादू का कालीन दिखायी दिया। उस पर जो

---

[90] The Three Suitors. (Tale No 21)
[91] Translated for the words "Remarkable Things"

कोई बैठ कर जहाँ जाने की इच्छा करता था वह उसको वही बात की बात में हवा में उड़ा कर पहुँचा देता था।

दूसरे उम्मीदवार को एक दूरबीन मिल गयी। उससे वह दुनियाँ की हर चीज़ चाहे वह कहीं भी क्यों न हो देख सकता था। यहाँ तक कि वह गहरे समुद्र की तली में पड़ी कई रंगों की रेत को भी देख सकता था।

तीसरे उम्मीदवार को एक ऐसा जादुई मरहम मिल गया जो दुनियाँ की हर बीमारी ठीक कर सकता था। यहाँ तक कि वह मरे हुओं में जान भी डाल सकता था।

जब ये तीनों चीज़ें तीनों उम्मीदवारों को मिली तो वे एक दूसरे से बहुत दूर थे। पर जब उस लड़के ने जिसको दूरबीन मिली थी अपने पुराने दोस्त और अभी के प्रतियोगियों को देखने की कोशिश की तो उसको अपना एक दोस्त कालीन कन्धे पर उठा कर ले जाते हुए देखा तो वह भी उसके पास चल दिया।

क्योंकि वह अपनी उस दूरबीन से सब कुछ देख सकता था। इसलिये उसे उस आदमी को ढूँढने में कोई परेशानीं नहीं हुई। जब दोनों मिले तो दोनों जादुई कालीन पर बैठे और वह उनको उड़ा कर ले चला और वे तीसरे उम्मीदवार से जा मिले।

एक दिन जब वे अपनी अपनी यात्रा का हाल एक दूसरे को सुना रहे थे कि उन्होंने अपनी अपनी यात्रा में क्या क्या देखा कि

एक लड़का अचानक बोला — "चलो देखते हैं कि हमारी राजकुमारी कहाँ है और क्या कर रही है।"

इस पर जिस कुलीन लड़के को दूरबीन मिली थी उसने अपनी दूरबीन से देखने की कोशिश की तो उसने बड़े आश्चर्य और दुख से देखा कि राजा की बेटी तो बहुत बीमार पड़ी है और अब मरने वाली हो रही है।

उसने यह बात अपने दोनों दोस्तों और प्रतियोगियों को बतायी तो यह सुन कर तो उनके ऊपर भी बिजली सी गिर पड़ी। पर यह सुन कर वह कुलीन लड़का जिसके पास जादुई मरहम था बोला — "मुझे लगता है कि मैं राजकुमारी को ठीक कर सकता हूँ अगर मैं किसी तरह से महल जल्दी से जल्दी पहुँच जाऊँ तो।"

यह सुन कर कालीन वाला कुलीन लड़का बोला — "मेरा यह कालीन किस दिन काम आयेगा। आओ इस कालीन पर बैठ जाओ और हम सब राजा के महल में बहुत जल्दी पहुँच जायेंगे।"

सो तीनों जादुई कालीन पर बैठ गये और जादुई कालीन उन सबको ले कर आसमान में बड़ी तेज़ी से उड़ चला।

राजा ने उनका तुरन्त ही स्वागत किया और बड़ी दुखभरी आवाज में कहा — "आओ मेरे बच्चों। मुझे बहुत अफसोस है कि तुम्हारी यह सारी यात्रा बेकार ही गयी। मेरी बेटी तो मरने वाली हो रही है इसलिये वह तुम तीनों में से किसी से भी शादी नहीं कर सकती।"

जादुई मरहम वाले कुलीन लड़के ने राजा से बड़ी नम्रता से कहा — "जनाब आप बिल्कुल चिन्ता न करें। मैं देखता हूँ कि राजकुमारी कैसे मरती है।"

राजकुमारी के कमरे में जिसमें राजकुमारी बीमार पड़ी थी जाने की इजाज़त मिलने के बाद उसने वह मरहम वहाँ रख दिया जहाँ से उसकी खुशबू उसके नाक में जा सके। कुछ ही पलों में वह होश में आने लगी। उसकी एक दासी ने थोड़ा सा जादुई मरहम उसके शरीर पर भी लगा दिया जिससे कुछ ही दिनों में वह पहले से भी ज़्यादा ठीक हो गयी।

राजा अपनी बेटी को मरी हुई से ज़िन्दा और ठीक देख कर इतना खुश हुआ कि जिसने उसे ज़िन्दा किया था उसी से उसने उसकी शादी करने का फैसला कर लिया।

पर अब तीनों कुलीन लड़कों में एक नया झगड़ा शुरू हो गया। मरहम वाले कुलीन लड़के के कहा कि "मैंने उसे ज़िन्दा किया है इसलिये उससे शादी करने का हक पहला मेरा है। अगर मुझे यह जादुई मरहम न मिला होता तो राजकुमारी तो मर ही जाती। इसलिये कोई और दूसरा इससे शादी कर ही नहीं सकता।"

दूसरा कुलीन लड़का जिसके पास दूरबीन थी बोला — "अगर मैंने अपनी दूरबीन से राजकुमारी को न देखा होता और इनको न बताया होता कि राजकुमारी मर रही है तो इसको तो राजकुमारी की बीमारी का पता ही नहीं चलता।"

इस पर तीसरा कुलीन लड़का जिसके पास जादुई कालीन था बोला — "और अगर मैं इनको अपने कालीन पर बिठा कर न लाया होता तो ये लोग यहाँ तक पहुँचते ही नहीं। तो राजकुमारी की सहायता कैसे करते। क्योंकि इतने थोड़े समय में ये यहाँ पहुँच ही नहीं सकते थे और तब तक राजकुमारी मर जाती। इसलिये इससे शादी करने का पहला अधिकार मेरा है।"

यह झगड़ा सुन कर राजा ने उन तीनों कुलीन लड़कों को अपने पास बुलवाया और बोला — "मेरे प्यारे लौर्ड। जो कुछ भी तुम सबने कहा उसके अनुसार तो मुझे लगता है कि मुझे तुममें से किसी को भी अपनी बेटी नहीं देनी चाहिये। इसलिये तुम सब लोग उससे शादी करने का विचार छोड़ दो। तुम सब लोग अपना झगड़ा भुला कर फिर से दोस्तों की तरह रहो।"

तीनों को लगा कि कि राजा जो कर रहा था वह सही कर रहा था। सो उन्होंने अपने अपने देश छोड़ दिये और दूर किसी टापू के रेगिस्तान में साधु की तरह से रहने के लिये चले गये। राजा ने राजकुमारी की शादी किसी और कुलीन आदमी से कर दी।

राजकुमारी की शादी को कई साल बीत गये। एक बार राजकुमारी के पिता ने अपने दामाद को कहीं दूर लड़ाई पर भेजा। कुलीन आदमी ने अपनी पत्नी को भी साथ ले लिया क्योंकि उसको पता नहीं था कि वहाँ उसको कितना समय लग जायेगा।

अब हुआ यह कि रास्ते में तूफान आ गया और उनका जहाज़ समुद्र की लहरों में ऊपर नीचे होने लगा। हिलते डुलते वह एक अजनबी देश के किनारे पर लग गया।

लहरें बहुत ऊँची थीं सो वह किनारे के पहाड़ों से टकरा गया और तुरन्त ही टुकड़े टुकड़े हो गया। जहाज़ के सारे लोग तूफान में नष्ट हो गये सिवाय राजकुमारी के जो एक नाव को कस कर पकड़े बैठी थी। धीरे धीरे वह किनारे जा कर लग गयी।

उसको लगा कि उस जमीन पर वहाँ कोई रहता नहीं था। वहाँ एक पहाड़ी में एक गुफा थी। वह उस गुफा में ही रहने लगी। इस तरह से वह जंगली फलों आदि पर वहाँ तीन साल तक रही।

वह रोज गुफा से बाहर निकलती और गुफा के चारों तरफ जो जंगल थे उनमें से जंगल से बाहर जाने का रास्ता ढूँढती पर उसको कोई रास्ता नहीं मिलता।

एक दिन वह अपनी गुफा से कुछ ज़्यादा ही दूर निकल गयी तो वहाँ उसे एक और गुफा दिखायी दे गयी। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि उसका एक छोटा सा दरवाजा भी है। उसने यह सोच कर कि वह वह रात उसी गुफा में ही गुजार लेगी उस दरवाजे को बार बार खोलने की कोशिश की पर उसकी सारी कोशिशें बेकार गयीं क्योंकि वह बहुत कस कर बन्द था।

आखिर गुफा के अन्दर से एक गहरी सी आवाज आयी — "दरवाजे पर कौन है।"

यह सुन कर राजकुमारी को बहुत आश्चर्य हुआ और वह डर गयी। कुछ पल बाद वह सँभली तो उसने कहा — "मेहरबानी कर के दरवाजा खोलिये।" दरवाजा तुरन्त ही अन्दर से खोल दिया गया।

दरवाजा खुलते ही वह दरवाजा खोलने वाले को देख कर डर गयी। वह एक बूढ़ा था जिसकी सफेद दाढ़ी उसके कमर से नीचे तक आ रही थी और लम्बे सफेद बाल कन्धों पर बिखरे पड़े थे।

वह इस बात से ज़्यादा डरी हुई थी कि वह बूढ़ा भी उसी रेगिस्तान में रह रहा था जिसमें कि वह तीन साल से रह रही थी और अब तक उसको कोई दिखायी नहीं दिया था।

साधु और राजकुमारी दोनों एक दूसरे को काफी देर तक बिना बोले ही देखते रहे। काफी देर के बाद बूढ़ा बोला — "तुम कोई परी हो जो दूसरी दुनियाँ से आयी हो या फिर इसी दुनियाँ की हो।"

राजकुमारी बोली — "बाबा मुझे एक मिनट आराम करने दो तो फिर मैं तुम्हें अपनी सारी कहानी बताती हूँ कि मैं यहाँ कैसे आयी।"

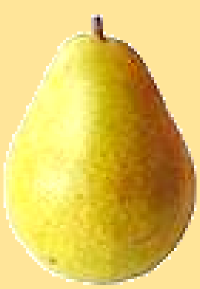

बूढ़ा उसको अन्दर ले गया उसने उसको कुछ जंगली नाशपातियाँ खाने के लिये दीं। नाशपातियाँ खाने के बाद राजकुमारी ने उसे अपनी कहानी सुनानी शुरू की। कि वह कौन थी और वहाँ कैसे पहुँची।

उसने कहा — "मैं एक राजा की बेटी हूँ। कई साल पहले एक बार तीन कुलीन नौजवान मेरे पिता के पास मेरा हाथ माँगने आये।

मेरे पिता इन तीनों को बहुत प्यार करते थे सो वह इन तीनों में से किसी को भी कोई दुख नहीं पहुँचाना नहीं चाहते थे।

उन्होंने उन तीनों को दूर देशों में यात्रा के लिये भेज दिया और वायदा किया कि जब वे अपनी यात्रा से लौट आयेंगे तभी वह शादी के बारे में कुछ भी निश्चय करेंगे।

वे तीनों कुलीन नौजवान काफी दिनों तक बाहर घूमते रहे। जब वे अभी विदेश ही में थे कि मैं बहुत भयानक रूप से बीमार पड़ गयी। मैं जब मरने ही वाली थी कि वे तीनों वापस लौट आये। उनमें से एक के पास एक जादुई मरहम था जिसने मुझे तुरन्त ही ठीक कर दिया।

दूसरे दो आदमियों के पास भी उसके टक्कर की बहुत आश्चर्यजनक चीज़ें थीं। एक के पास एक कालीन था जिसके ऊपर बैठ कर जल्दी से जल्दी कहीं भी पहुँचा जा सकता था। और दूसरे आदमी के पास एक दूरबीन थी जिससे वह कहीं कभी कितनी भी दूर का देख सकता था। यहाँ तक कि समुद्र की तली का भी।"

राजकुमारी ने उसको अभी अपनी कहानी केवल यहीं तक सुनायी थी कि साधु बीच में बोला — "और जो कुछ भी उसके बाद बीता मुझे मालूम है। और अगर तुम बताना चाहो तो तुम भी बता सकती हो।

मेरी तरफ देखो मेरी बेटी। मैं उन तीनों में से एक कुलीन लड़का हूँ जो तुम्हारा हाथ मॉगने के लिये तुम्हारे पिता के पास आये थे। और देखो यह है मेरी वह आश्चर्यजनक दूरबीन है।"

कह कर वह अन्दर गया और वहॉ से दूरबीन निकाल लाया।

उसने फिर कहा — "मेरे साथ मेरे दोनों दोस्त भी यहीं आ गये थे। हालॉकि फिर हम लोग अलग हो गये। अभी मुझे यह तो पता नहीं कि वे ज़िन्दा भी हैं या नहीं पर मैं अभी देख कर बताता हूँ।"

कह कर साधु ने अपनी दूरबीन से देखा तो पाया कि उसके दोनों दोस्त उसी जंगल में किसी दूसरी जगह उसके जैसी एक गुफा में रह रहे हैं। यह देख कर उसने राजकुमारी का हाथ पकड़ा और उसको साथ ले कर अपने साथियों की तरफ चल पड़ा।

जब सब एक जगह इकट्ठा हो गये तब राजकुमारी ने जहाज़ से ले कर अब तक की कहानी उनको सुनायी जिसमें उसका पति तो समुद्र में डूब गया था पर वह बच गयी थी।

तीनों साधु राजकुमारी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश थे। उन सबने यह निश्चय किया कि उनको उसे राजा के पास वापस भेज देना चाहिये। उन्होंने राजकुमारी के लिये एक भेंट बनायी जिसमें वह दूरबीन थी कालीन था और जादुई मरहम था और उसे उसकी भेंटों सहित उसके पिता के पास सुरक्षित भेज दिया।

जहॉ तक उन तीनों कुलीन साधुओं का सवाल है वे वहीं रह गये और शायद अभी भी रह रहे होंगे। कभी कभी वे आपस में

जरूर मिलते जुलते रहते होंगे ताकि उनको समय काटना मुश्किल न लगे। वे जब तब अपनी अपनी कहानियाँ भी एक दूसरे को सुनाते रहते होंगे।

राजा अपनी बेटी को सुरक्षित रूप से घर आया देख कर बहुत खुश था। राजकुमारी अपने पिता के साथ बहुत दिनों तक रही। पर न तो राजा और न राजकुमारी ही अपने उन तीनों उम्मीदवारों को भूल सके जो केवल उसकी वजह से उस अकेले टापू पर अकेले रेगिस्तान में बेचारे अकेले पड़े अपनी ज़िन्दगी काट रहे थे।

22 सुनहरे बालों वाले जुड़वॉ[92]

यह बहुत बहुत बहुत पहले की बात है, कि एक देश में एक नौजवान राजा रहता था। वह अब शादी करना चाहता था पर उसको यह पता नहीं था कि वह अपनी पत्नी कहॉ ढूँढे।

जैसा कि वहॉ का रिवाज था एक शाम वह वेश बदल कर अपनी राजधानी की सड़कों पर घूम रहा था कि वह एक मकान की खिड़की के सामने रुक गया। उसमें से उसे तीन लड़कियों के हॅस हॅस कर बात करने की आवाज आ रही थी।

वे तीनों उस खबर के बारे में बात करके हॅस रही थीं जो उसी दिन शहर में फैली थी – क्या? कि "राजा शादी करना चाह रहा था।"

उन तीनों में से एक बोली — "अगर राजा मुझसे शादी कर ले तो मैं उसको एक ऐसा बेटा दूॅगी जो दुनियॉ भर का हीरो हो।"

दूसरी लड़की बोली — "अगर राजा मुझसे शादी कर लेगा तो मैं उसको जुड़वॉ बेटे दूॅगी जिनके बाल सुनहरी होंगे।"

तीसरी लड़की बोली कि राजा उससे शादी कर ले तो वह उसको एक इतनी सुन्दर बेटी देगी जिसकी सुन्दरता का मुकाबला दुनियॉ भर में कोई नहीं कर पायेगा।

---

[92] The Golden-Haired Twins. (Tale No 22)

राजा ने सबकी बातें सुनीं और निश्चय किया कि वह उस लड़की से शादी करेगा जो उसको सुनहरे बालों वाले जुड़वॉ बच्चे देगी।

अपने दिमाग में यह बात सोच कर उसने हुक्म दिया कि उसकी शादी की तैयारियॉ शुरू की जायें और कुछ ही दिनों में जब शादी की सब तैयारिया हो गयीं तो उसने उन तीन लड़कियों में से दूसरी लड़की से शादी कर ली।

कई महीने बाद राजा की अपने एक पड़ोसी राजकुमार के साथ लड़ाई छिड़ गयी। लड़ाई से उसके पास खबर आयी कि उसकी सेना हार रही थी तो वह अपनी राजधानी छोड़ कर खुद वहॉ जा पहुॅचा। रानी को वह अपनी सौतेली मॉ की देखभाल में छोड़ गया।

राजा की सौतेली मॉ रानी को बिल्कुल नहीं चाहती थी। रानी बच्चे की आशा से थी सो जब उसके बच्चा होने का समय आया तो उसकी सौतेली सास ने कहा — "हमारे शाही घराने में यह रिवाज है कि बच्चे जो राजगद्दी के वारिस होते हैं वे ऐटिक[93] में पैदा होते हैं।

अब रानी तो राजमहल के इन सब रीति रिवाजों को जानती नहीं थी। जब से वह वहॉ आयी थी तभी से जो कुछ उसने राजा से

[93] Attic is a small, normally conical, habitable room on the top level of the house. See its picture above.

सुना था वही उसको मालूम था। सो उसने सास का कहना मान लिया हालाँकि उसको अपना बढ़िया आरामदेह कमरा छोड़ कर ऐटिक जैसी जगह जाने में बहुत बुरा लगा पर वह क्या करती।

समय आने पर रानी ने दो छोटे सुनहरे बालों वाले बेटों को जन्म दिया।

सौतेली माँ ने किसी तरह से पालने में से रानी के दोनों बच्चे चुरा लिये और उनकी जगह दो बदसूरत कुत्ते रख दिये। दोनों सुन्दर बच्चों को उसने महल के बागीचे में कहीं किसी अकेली सी जगह ज़िन्दा गाड़ देने के लिये कहा और राजा को खबर भेज दी कि जैसी कि राजा को बिल्कुल आशा नहीं थी रानी ने सुनहरे बालों वाले बच्चों की जगह दो कुत्तों को जन्म दिया है।

नीच सौतेली माँ ने खुद चिट्ठी में राजा को लिखा कि इस बात से उसको कोई आश्चर्य नहीं था पर वह भी यह देख कर निराश बहुत थी। जहाँ तक सौतेली माँ का सवाल था बहुत दिनों से उसको यही लग रहा था कि रानी का सम्बन्ध भूत प्रेतों और दूसरी बुरी आत्माओं से था।

जब राजा ने माँ की चिट्ठी पढ़ी तो उसको तो गुस्से का दौरा सा पड़ गया क्योंकि उसने उस लड़की से शादी इसी लिये की थी क्योंकि उसको उससे सुनहरे बालों वाले जुड़वाँ बच्चे चाहिये थे। जैसा कि वह अपने घर में अपनी दोस्तों से कह रही थी।

सो उसने अपनी मॉ को वापस लिखा कि उसकी पत्नी को किसी सबसे ज़्यादा सीलन वाले तहखाने में रख दिया जाये। राजा के इस हुक्म का नीच रानी ने तुरन्त ही पालन कर दिया।

सो इस हुक्म के अनुसार उसने बेचारी रानी को एक सीलन भरे तहखाने में डाल दिया। वहॉ उसे खाने के लिये केवल रोटी और पीने के लिये पानी दिया जाता था।

इस जेल में केवल एक ही छोटा सा छेद था जिससे केवल थोड़ी से रोशनी और हवा आती थी फिर भी नीच रानी मॉ ने कई आने जाने वालों को उधर से आने जाने के लिये आकर्षित कर लिया था।

और उनसे वहॉ थूकते हुए यह भी कहने को मजबूर कर दिया था — "क्या तुम वास्तव में रानी हो? क्या तुम ही वह लड़की हो जिसने रानी बनने के लिये राजा को धोखा दिया? तुम्हारे सुनहरे बालों वाले जुड़वॉ कहॉ हैं? तुमने राजा को धोखा दिया तुमने अपनी दोस्तों को धोखा दिया इसलिये जादूगरनियॉ[94] अब तुम्हें धोखा दे रही हैं।"

पर राजा हालॅकि रानी से बहुत गुस्सा था और निराश भी था पर फिर भी बहुत दुखी और परेशान होने की वजह से महल लौटना नहीं चाहता था। सो वह पूरे नौ साल महल से दूर रहा।

[94] Translated for the word "Witches".

आखिरकार वह घर लौटने के लिये राजी हो गया। पर जब वह घर लौटा तो उसने देखा कि उसके बागीचे में दो छोटे छोटे सुन्दर से नये पेड़ खड़े हैं। वे अपने साइज़ और आकार दोनों में बिल्कुल एक से थे।

इन दोनों पेड़ों की पत्तियाँ और फूल दोनों ही सुनहरे थे। ये पेड़ अपने आप ही पैदा हो गये थे। यह वही जगह थी जहाँ नीच रानी ने राजा के जुड़वाँ बच्चों को उनके पालने में से चुरा कर ज़िन्दा दफ़न करवा दिया था।

राजा ने जब ये पेड़ देखे तो उसको ये पेड़ बहुत अच्छे लगे। वह उनको देखते कभी थकता नहीं था। जब रानी माँ को इस बात का पता चला तो उसको यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। क्योंकि उसको मालूम था कि जहाँ ये पेड़ खड़े थे वहीं उसी जगह उसके बच्चे भी दफ़नाये गये थे। उसको हमेशा ही यह डर लगा रहता था कि कहीं वह उसकी बुरी करनी के बारे में कहीं कुछ सुन न ले।

सो एक दिन उसने बहाना बनाया कि वह बहुत बीमार है और वह उन दोनों पेड़ों की लकड़ी का अपने लिये एक पलंग बनवाना चाहती है जिन पर वे सुनहरे फूल पत्तियाँ लगे हुए थे।

क्योंकि राजा उसके मरने की जिम्मेदारी अपने सिर नहीं लेना चाहता था अपने नौकरों को हुक्म दिया कि रानी माँ की इच्छाओं का पालन किया जाये। अब इस बात को तो कहने की कोई जरूरत ही नहीं कि इन पेड़ों को कटवाने का उसको बहुत दुख था।

जल्दी ही उन पेड़ों की लकड़ी का एक पलंग बनवा दिया गया और बीमार रानी माँ उस पर लिटायी गयी जैसा कि प्लान था। वह बहुत खुश थी कि सुनहरी पत्तियाँ अब बागीचे से गायब हो गयी थीं।

पर जब आधी रात हुई तो वह तो बिल्कुल ही नहीं सो पायी। क्योंकि उसको लगा कि जिन तख्तों का वह पलंग बना हुआ था वे आपस में बात कर रहे थे।

आखिर उसने एक तख्ते को साफ साफ यह कहते हुए सुना — “मेरे भैया तुम कैसे हो।”

तो दूसरे तख्ते ने जवाब दिया — “मैं ठीक हूँ तुम कैसे हो।”

पहल तख्ता बोला — “मैं भी ठीक हूँ पर मुझे नहीं पता कि हमारी बेचारी माँ उस अँधेरे तहखाने में कैसे रह रही होगी। शायद वह भूखी होगी प्यासी होगी।”

ऐसी ऐसी बातें सुन कर तो रानी माँ बिल्कुल ही नहीं सो पायी। सो अगली सुबह वह कुछ जल्दी उठी और राजा के पास गयी। उसने उसको अपनी इच्छा पूरी करने के लिये धन्यवाद दिया और कहा कि अब वह पहले से बहुत अच्छा महसूस कर रही है।

पर उसे इस बात का भी यकीन था कि वह पूरी तरीके से कभी ठीक नहीं हो सकती जब तक कि उस पलंग को तोड़ कर उसके तख्ते जला न दिये जायें।

राजा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ कि उसके दोनों प्यारे पेड़ों के तख्ते भी अब जला दिये जायेंगे। फिर भी वह इस बात को ना नहीं कर सका क्योंकि इससे तो रानी माँ बिल्कुल ठीक हो जाने वाली थीं। सो नया पलंग तोड़ दिया गया और उसके तख्ते आग में डाल दिये गये।

जब तख्ते आग में जल रहे थे और उनके जलने की आवाजें आ रही थीं तभी उनमें से दो चिनगारियाँ निकल कर महल के कम्पाउंड में जा पड़ीं। अगले ही पल वे दो बहुत सुन्दर सुनहरे बालों वाले भेड़ के बच्चे बन गये और वहीं बने हुए तालाब के पास घूमने लगे।

राजा को वे मेमने[95] भी बहुत प्यारे लगे और उसने अपने नौकरों से पूछना शुरू किया कि उनको वहाँ कौन लाया था और वे किसके थे। यहाँ तक कि उसने शहर में मुनादी पीटने वाले भी भेजे कि वे यह पता करें कि उसके बागीचे में दो सुनहरे बालों वाले मेमने हैं वे जिसके भी हों वह आ कर उनको ले जाये।

पर उनको लेने के लिये कोई नहीं आया सो राजा ने सोचा कि जब कोई उन्हें लेने नहीं आया तो उनको वही रख लेता है। राजा उन दोनों मेमनों की बहुत ज़्यादा अच्छी तरह से देखभाल करता था

[95] Translated for the “Lamb”. By the way a lamb can be both – a baby goat also and a baby sheep also

कि उनको ठीक से खाना मिल रहा है या नहीं। उनकी हर जरूरत का ख्याल रखा जा रहा है या नहीं।

अब यह भी रानी माँ को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा कि उन सुनहरी खाल वाले और सुनहरे सींग वाले मेमनों को राजा का इतना ध्यान मिले। वह उनको एक आँख नहीं देख सकती थी क्योंकि वे उसको सुनहरे बालों वाले जुड़वाँ बच्चों की याद दिलाते थे।

सो कुछ दिन बाद ही उसने दोबारा बीमार होने का नाटक किया और कहा कि अगर उसे दोनों सुनहरे बालों वाले मामनों का माँस खाने को नहीं मिला तो वह तो यकीनन ही मर जायेगी।

राजा अब अपने उन दोनों मेमनों को उन सुनहरे फूल और पत्तियों वाले पेड़ों से भी कहीं ज़्यादा प्यार करने लगा था। रानी माँ की यह बात सुन कर वह अपने आँसू बहुत देर तक न रोक सका और रो रो कर रानी माँ की अच्छी तन्दुरुस्ती की प्रार्थना करने लगा। क्योंकि वह वाकई बहुत बीमार लग रही थी।

पर मेमनों को काट दिया गया और एक नौकर को उनकी सुनहरी खाल ले कर नदी की तरफ भेज दिया गया ताकि वह उनका खून आदि सब साफ कर सके।

पर जब नौकर ने उनको पानी में धोने के लिये पानी में लटकाया तो वे दोनों खालें किसी तरह से उसके हाथों से फिसल गयीं और नदी में बह गयीं।

अब ऐसा हुआ कि कहीं आगे जा कर नदी के किनारे किनारे एक शिकारी जा रहा था। उसकी नजर पानी पर पड़ी तो उसने देखा कि उसमें कोई अजीब सी चीज़ जा रही थी।

वह तुरन्त ही नदी में चला गया उसने नदी में से एक छोटा सा बक्सा निकाला और उसे वह अपने घर ले गया। घर जा कर उसे खोला तो वह तो दंग रह गया। उस बक्से में तो सुनहरे बालों वाले दो लड़के थे।

शिकारी के अपना कोई बच्चा नहीं था सो वह उनको देख कर बहुत खुश हुआ और उनको खुद ही पालने पोसने का इरादा कर लिया। समय निकला और बच्चे बड़े हो कर नौजवान बन गये।

एक दिन उनमें से एक लड़के ने अपने शिकारी पिता से कहा — "आप हमें भिखारियों जैसे कपड़े दे दें हम बाहर निकल कर बाहर की दुनियाँ देखना चाहते हैं।"

शिकारी बोला — "नहीं नहीं मै तुम्हें भिखारियों जैसे कपड़े क्यों दूँ बल्कि मैं तुम्हारे लिये बहुत अच्छे सूट बनवा कर दूँगा जैसे कि किसी कुलीन आदमी को पहनने चाहिये।"

पर जुड़वाँ बच्चों ने जिद की कि नहीं उसको उनके ऊपर बढ़िया सूट बनवाने के लिये इतने सारे पैसे खर्च करने की जरूरत नहीं है क्योंकि वे भिखारी के वेश में ही बाहर घूमना चाहते हैं।"

शिकारी अपने बच्चों को बहुत प्यार करता था सो उसने उनकी इच्छा मान ली और उनके लिये सस्ते से कपड़ा का इन्तजाम कर

दिया। दोनों बच्चों ने अपनी भिखारियों वाली पोशाक पहनी और अपने सुनहरे बाल जितने ज़्यादा छिपाये जा सकते थे छिपाये और घर से बाहर निकल पड़े।

उन्होंने अपने साथ एक एकतारा और एक मॅजीरा ले लिया और गाते बजाते चल पड़े।

इस तरह से वे कुछ समय तक घूमते रहे कि एक दिन वे राजा के महल के पास आ गये। वहॉ तक पहुँचते पहुँचते उनकी शाम ढल चुकी थी सो उन्होंने सोचा कि रात को वहीं कहीं राजा की शाही बिल्डिंग में सो लिया जाये। क्योंकि वे गरीब लोग थे और शहर में नये थे।

इत्तफाक से रानी मॉ वहॉ कहीं पास में ही थी तो उसने उनको देख लिया और उनकी विनती सुन कर बड़ी तीखी आवाज में बोली — "भिखारियों को महल के किसी भी हिस्से में रहने की इजाज़त नहीं है।"

भिखारी बोले — "इसके बदले में हम आपको गा बजा कर सुनायेंगे।" इतना कह कर एक ने तो एकतारा बजा कर गाना शुरू भी कर दिया और दूसरे ने मॅजीरा बजाना शुरू कर दिया।

रानी मॉ के ऊपर उनके इस गाने बजाने का कोई असर नहीं पड़ा। बल्कि वह तो उनको वहॉ से जाने की जिद करती रही।

जब वह उनको वहॉ से वापस भेज रही थी कि दोनों बच्चों की खुशकिस्मती से तभी वहॉ राजा आ गया और उसने अपने नौकरों

को उन बच्चों के ठहरने का इन्तजाम करने के लिये और उनको बढ़िया खाना खिलाने के लिये कहा।

उसने नौकरों से यह भी कहा कि जब बच्चे खाना खा लें और आराम कर लें तो वे उन्हें उसके पास ले आयें ताकि वह उनके संगीत का आनन्द ले सके और उसका दुखी समय कुछ आनन्द से कट सके।

सो जब वे बच्चे खाना खा चुके तो राजा के नौकर उनको राजा के पास ले गये और उन्होंने गाने में उसको यह कहानी सुनानी शुरू की —

"एक सुन्दर स्वैलो चिड़िया[96] ने एक राजा के महल में अपना एक सुन्दर घोंसला बनाया। वहॉ उसने अपने दो बच्चों को बड़ी खुशी से पाला।

एक काली बदसूरत चिड़िया उसकी खुशी को नष्ट करने के लिये उसके बच्चों को मारने के लिये उसके घोंसले में आयी। वह काली बदसूरत चिड़िया अपने काम में सफल हो गयी। पर बच्चे किसी तरह से बच गये।

जब वे बड़े हो गये और उड़ने लायक हो गये तो महल को देखने के लिये महल वापस आये जहॉ उनकी मॉ सुन्दर स्वैलो ने अपना घोंसला बनाया था।"

---

[96] Swallow bird, found on every continent, is a symbol of happiness and love. For this reason two lovers can have tattoos of swallow bird on their bodies. If you have a tattoo of swallow bird it means that you are very successful in your life. See its picture above.

दोनों भिखारियों ने यह गाना इतना मीठा गाया कि राजा तो उसे सुन कर उनकी तरफ मोहित सा रह गया। उसने उनसे पूछा कि उनके इस गीत का क्या मतलब था।

इस पर दोनों बच्चों ने अपने अपने सिरों से अपने अपने टोप हटा लिये और टोप हटाते ही उनके सुनहरे लम्बे लम्बे बाल उनके कन्धों पर फैल गये। उनके बालों की चमक से कमरे में रोशनी भर गयी।

इसके बाद वे आगे बढ़े और राजा को वह सब बताया जो जो उनके और उनकी माँ के साथ हुआ था। उन्होंने राजा को विश्वास दिला दिया कि वे ही राजा के जुड़वाँ बेटे थे।

राजा ने जब अपनी बेरहम सौतेली माँ की इन हरकतों की कहानी सुनी तो वह तो गुस्से से पागल हो गया। उसने तुरन्त ही उसको ज़िन्दा जलाने का हुक्म सुना दिया।

फिर वह दोनों सुनहरे बालों वाले राजकुमारों को ले कर उस तहखाने में गया जहाँ कितने सालों से उसकी रानी पड़ी हुई थी। वह उसको एक बार फिर से महल ले आया।

अपने सुनहरे बालों वाले जुड़वाँ बच्चों को देख कर और यह देख कर कि उनका पिता उनको किताना प्यार करता था वह अपना इतने सालों तक जो दुख सहा था वह सारा दुख भूल गयी।

जहाँ तक राजा का सवाल था उसको हमेशा यही लगता रहा कि वह कभी भी अपनी रानी और बच्चों के लिये उनकी बदकिस्मती

को ठीक करने के लिये ज़्यादा नहीं कर पायेगा। वह कितना भी कर ले वह उनके दुख का बदला नहीं चुका सकता।

उसको लगा कि कितनी आसानी से उसने अपनी नीच सौतेली मॉ की बात मान ली क्योंकि वह खुद उन सब बातों की सचाई की जॉच करना नहीं चाहता था कि वे ऊटपटॉग बातें जो उसने उसे बतायीं वे कैसे सच हो सकती थीं।

इन सब दुखों के बाद फिर सब कुछ ठीक हो गया। राजा रानी और उनके सुनहरे बालों वाले जुड़वॉ बेटे सब बरसों तक सुख से रहे।

23 राजा के बेटे का सपना[97]

एक बार की बात है कि एक देश के एक राजा के तीन बेटे थे। एक शाम जब छोटे छोटे राजकुमार सोने जा रहे थे तो राजा ने उनसे कहा कि आज रात को वे जो सपना देखें उसे अच्छी तरह याद रखें और अगले दिन आ कर उसे बतायें।

सो अगले दिन सुबह उठ कर तीनों राजकुमार अपने पिता के पास गये। राजा ने उनको देखते ही उनमें से सबसे बड़े बेटे से पूछा — "बेटे तुमने क्या सपना देखा।"

बेटा बोला — "मैंने सपना देखा कि मैं आपकी राजगद्दी का वारिस बन गया हूॅ।"

राजा ने फिर अपने दूसरे बेटे से पूछा — "और बेटे तुमने क्या सपना देखा।"

दूसरा बेटा बोला — "मैंने सपना देखा कि मैं राज्य की पहली जनता हूॅ।"

राजा फिर अपने तीसरे सबसे छोटे बेटे की तरफ घूमा और उससे पूछा — "और बेटे तुम बताओ तुमने क्या सपना देखा।"

वह बोला — "पिता जी। मैंने देखा कि मैं हाथ धोने जा रहा हूॅ और मेरे राजकुमार भाई हाथ धोने वाला बर्तन लिये हैं और रानी माॅ

---

[97] The Dream of the King's Son. (Tale No 23)

मेरे लिये हाथ पोंछने के लिये तौलिया लिये खड़ी हैं। योर मैजेस्टी खुद एक सोने के बर्तन से मेरे हाथों पर पानी डाल रहे हैं।"

अपने छोटे बेटे का यह सपना सुन कर राजा तो गुस्से से आग बबूला हो गया और गुस्से से ही बोला — "क्या कहा तुमने? मैं एक राजा और अपने बेटे के हाथ खुद धुलाऊँ। चले जाओ इस महल से तुम, अभी चले जाओ। बल्कि मेरे राज्य से भी निकल जाओ। आज से तुम मेरे बेटे नहीं हो।"

बेचारे छोटे राजकुमार ने पिता से सुलह करने की बहुत कोशिश की कि इसमें उसका कोई कुसूर नहीं है। यह तो केवल एक सपना है। पर वह राजा को सन्तुष्ट नहीं कर सका। यहाँ तक कि राजा ने उसको अपने महल से बाहर निकलवा दिया।

सो राजकुमार मजबूर हो कर इधर उधर घूमता रहा। कि एक दिन वह एक जंगल में आ पहुँचा। वहाँ उसने एक गुफा देखी तो वह उसमें आराम करने के लिये उसके अन्दर चला गया।

अन्दर पहुँच कर उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहाँ तो एक चूल्हे पर मक्का उबल रही है। वह बहुत भूखा था इसलिये उसने वह उबली हुई मक्का खानी शुरू कर दी।

वह खाता गया खाता गया और थोड़ी देर में ही उसने देखा कि वह तो उस बर्तन में उबल रही सारी मक्का खा गया। उसको लगा कि अब उसके ऊपर कोई मुसीबत आने वाली है सो वह वहीं पास में ही छिपने के लिये कोई जगह ढूँढने लगा।

इसी समय गुफा के मुँह पर उसने ज़ोर का शोर सुना तो बस उसको छिपने का बहुत कम समय मिला। वह गुफा के एक अँधेरे कोने में बस छिपा ही था कि एक अन्धा आदमी गुफा में घुसा। वह एक बड़े से बकरे पर सवार था और वह अपने आगे आगे बहुत सारी बकरियाँ हाँकता चला आ रहा था।

आत ही वह मक्का वाले बर्तन के पास गया पर जैसे ही उसको पता चला कि उसके बर्तन की तो सारी मक्का खत्म हो गयी है तो उसको लगा कि जरूर इस घर में कोई है। उसने अपनी गुफा में उस आदमी को ढूँढना शुरू कर दिया और राजकुमार को पकड़ लिया।

कुछ गुस्से में उसने पूछा — "तुम कौन हो?"

राजकुमार बोला — "मैं एक गरीब इधर उधर घूमने वाला आदमी हूँ। मेरा कोई घर नहीं है। अब इस आशा में आपके पास आया हूँ कि आप मुझे रख लें।"

बूढ़ा बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। जब मैं अपनी बकरियाँ जंगल में चराने जाऊँगा तो कम से कम मेरे पास कोई आदमी तो होगा जो मेरी मक्का की देखभाल करेगा।"

इस तरह वे कुछ समय तक रहते रहे। बूढ़ा सुबह सुबह अपनी बकरियाँ चराने के लिये जंगल ले जाता और राजकुमार गुफा में रह कर बूढ़े की मक्का उबालता।

एक दिन बूढ़े ने राजकुमार से कहा — "आज तुम बकरियाँ चराने ले जाओ और मैं घर रह कर मक्का देखता हूँ।"

राजकुमार अब तक गुफा में अकेले रहते रहते बहुत थक गया था सो इस काम के लिये बड़ी खुशी से तैयार हो गया।

बूढ़ा आगे बोला — "पर एक बात का ध्यान रखना। यहॉ नौ पहाड़ हैं तुम उनमें से आठ पहाड़ पर तो उन्हें आराम से चरा सकते हो पर नवें पहाड़ पर किसी हालत में नहीं जाना। वहॉ विलाज़[98] रहती हैं। अगर वे तुम्हें अपने पहाड़ पर देखेंगी तो यकीनन वे तुम्हारी भी ऑखें वैसे ही निकाल लेंगी जैसे उन्होंने मेरी निकाल ली थीं।"

राजकुमार ने उसको यह बात पहले से बताने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और बड़े वाले बकरे पर चढ़ कर और बकरियों को साथ ले कर वह उन सबको चराने के लिये चल दिया।

बकरियों के पीछे पीछे चलते हुए वह करीब करीब सारे पहाड़ पार कर के अब आठवें पहाड़ पर आ पहुँचा था। यहॉ से उसको नवॉ पहाड़ साफ दिखायी दे रहा था। वह वहॉ जाने का लालच छोड़ नहीं सका। उसने सोचा "वहॉ जा कर देखता हूँ फिर चाहे जो हो।"

जैसे ही उसने नवें पहाड़ पर कदम रखा कि परियों ने उसे घेर लिया और उसकी ऑखें निकालने के लिये तैयार हो गयीं।

तुरन्त ही राजकुमार के दिमाग में एक विचार आया और वह बोला — "ओ प्यारी विलाज़। तुम यह पाप अपने सिर क्यों लेती

---

[98] Vilas – plural of Vila, means fairies in the language spoken there.

हो। इससे अच्छा है कि हम आपस में एक सौदा कर लेते है। मैं एक पेड़ रखता हूॅ। अगर तुम उस पेड़ के ऊपर से कूद जाती हो तो तुम मेरी ऑखें निकाल सकती हो और मैं तुम्हें रोकूॅगा नहीं।"

विलाज़ इस बात पर राजी हो गयीं। राजकुमार एक बड़ा सा पेड़ लाने के लिये चला गया। पेड़ को उसने जड़ तक उखाड़ लिया और करीब करीब उसकी जड़ तक उसके दो हिस्से कर लिये।

फिर उसने पेड़ के तने को थोड़ा सा खुला रखने के लिये उसके बीच में लकड़ी का टुकड़ा[99] लगा दिया। यह कर के उसने उसे सीधा खड़ा कर दिाा। पहले वह खुद उसके ऊपर से कूद गया और फिर बाद में विलास से बोला — "अब तुम्हारी बारी है। देखते हैं कि तुम इसके ऊपर से कूद सकती हो या नहीं।"

एक परी ने उसके ऊपर से कूदने की कोशिश की तो जैसे ही वह कूद रही थी राजकुमार ने तुरन्त ही तने में फॅसा हुआ लकड़ी का टुकड़ा उसमें से बाहर निकाल दिया। इससे तने का खुला हुआ हिस्सा तुरन्त ही बन्द हो गया और वह परी उसमें फॅस गयी।

[99] Translated for the word "Wedge". See its picture above. How it was used here is shown above its picture.

यह देख कर बाकी परियॉ तो सावधान हो गयीं। उन्होंने उससे विनती की कि वह उनकी बहिन को छोड़ दे। इसके बदले में वे उसको वही देंगी जो वह चाहेगा।

राजकुमार बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये सिवाय इसके कि मैं अपनी ऑखें रख सकूँ और उस बूढ़े की ऑखों की देखने की ताकत वापस ला सकूँ।"

परियों ने उसको एक जड़ी बूटी[100] दी जिसको उन्होंने उसे दे कर कहा कि वह उसे बूढ़े की ऑखों पर रख दे जिससे उसकी देखने की ताकत वापस आ जायेगी।

राजकुमार ने उससे वह जड़ी बूटी ली पेड़ का तना खोला जिससे परी उसमें से बाहर निकल सके। फिर वह अपने बड़े बकरे पर चढ़ा बकरियॉ इकट्ठी कीं और गुफा में वापस आ गया।

उसने वह जड़ी बूटी बूढ़े की ऑखों पर रखी तो तुरन्त ही उसकी देखने की ताकत वापस आ गयी। वह तो ख़ुशी और आश्चर्य से पागल सा हो गया।

अगली सुबह जब बूढ़ा अपने बकरियों को चराने के लिये ले जा रहा था तो उसने राजकुमार को गुफा में रखी हुई आठ आलमारियों की चाभियॉ दीं और उससे कहा कि किसी भी तरह नवीं आलमारी न खोले हालॉकि उस आलमारी की चाभी उस आलमारी के दरवाजे पर ही लटकी हुई थी।

---

[100] Translated for the word "Herb"

फिर वह उससे अपनी मक्का का ख्याल रखने के लिये कह कर चला गया।

बूढ़े के चले जाने के बाद राजकुमार अकेला रह गया। उसने सोचा कि बूढ़े की इस नवीं आलमारी में क्या रखा होगा। सो अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये वह तुरन्त ही उस आलमारी को खोलने जा पहुँचा।

वह आश्चर्य में पड़ गया जब उसने देखा कि वहाँ तो एक सुनहरा घोड़ा खड़ा था। उसके साथ था एक सुनहरा ग्रेहाउन्ड कुत्ता और पास में ही सुनहरे चूज़े बाजरे के दाने चुग रहे थे।

कुछ देर तक तो राजकुमार उनकी सुन्दरता को देखता रहा फिर सुनहरे घोड़े से बोला – "दोस्त मुझे लगता है कि बूढ़े के आने से पहले हमें यहाँ से जल्दी से जल्दी निकल जाना चाहिये।"

सुनहरा घोड़ा बोला – "ठीक है। मैं जाने के लिये बिल्कुल तैयार हूँ पर एक शर्त पर। कि जो मैं कहूँगा तुम वैसा ही करोगे।

जाओ और कहीं से इतना कपड़ा ढूँढ कर लाओ जिससे गुफा के सामने के पत्थर ढक जायें क्योंकि यह बूढ़ा अगर मेरे खुरों की आवाज सुन लेगा तो यकीनन वह तुम्हें मार देगा। इसके अलावा

तुम एक छोटा पत्थर एक बूँद पानी और एक कैंची अपने साथ ले लो। जैसे ही मैं तुमसे इन्हें फेंकने के लिये कहूँ तुम उसी पल उनको फेंक देना वरना तुम गये।"

राजकुमार ने तुरन्त ही ये सारी चीज़ें इकट्ठा कर लीं। फिर उसने सुनहरी मुर्गी और उसके चूज़ों को एक थैले में डाला थैले को बगल में दबाया घोड़े पर सवार हुआ कुत्ते की गर्दन में सोने की रस्सी डाल कर उसे हाथ से पकड़ कर गुफा से बाहर निकल गया।

हालाँकि बूढ़ा गुफा से काफी दूर था पर जैसे ही वह गुफा से बाहर निकला उसने अपने सुनहरे घोड़े के सोने के खुरों के भागने की आवाज सुनी। उसने अपने बड़े बकरे से कहा — "वे भाग गये। चलो तुरन्त ही हमें उनका पीछा करना चाहिये।"

बकरा उसको आश्चर्यजनक रूप से भगा कर राजकुमार के पास ले आया। यह देख कर राजकुमार का घोड़ा बोला — "राजकुमार यह छोटा पत्थर नीचे फेंक दो।"

जैसे ही राजकुमार ने पत्थर नीचे फेंका उसके और बूढ़े के बीच में एक ऊँचा सा पहाड़ प्रगट हो गया। इससे पहले कि बूढ़ा उस पहाड़ पर चढ़ता और राजकुमार को पकड़ता राजकुमार के घोड़े को और दूर भागने का समय मिल गया।

पर बूढ़े का बकरा भी कोई कम नहीं था। वह भी जल्दी जल्दी भागता हुआ फिर से राजकुमार के पास तक पहुँच गया। घोड़े ने राजकुमार से फिर कहा — "राजकुमार अब पानी की बूँद नीचे फेंक

दो।" राजकुमार ने वैसा ही किया। जैसे ही उसने पानी की बूँद नीचे फेंकी कि वहाँ उसके और बूढ़े के बीच में एक बहुत चौड़ी नदी बहने लगी।

जितनी देर में बकरे ने नदी पार की उतनी देर में घोड़े को फिर से भागने का समय मिल गया। वह बहुत दूर पहुँच गया था। पर बकरा भी जल्दी जल्दी भाग कर घोड़े के पास पहुँच गया था। जब घोड़े ने देखा कि बकरा फिर से पास आ गया है तो उसने राजकुमार से कहा — "राजकुमार अब तुम अपनी कैंची नीचे गिरा दो।"

घोड़े का कहना मान कर राजकुमार ने कैंची नीचे गिरा दी। जैसे ही बकरा कैंची के ऊपर से गुजरा उसकी आगे वाली टाँगें बहुत ज़ोर से घायल हो गयी।

जब बूढ़े ने देखा कि अब वह उसको नहीं पकड़ पायेगा तो बोला — "ठीक है। अब जब मैं तुम्हें पकड़ नहीं सकता तो जो कुछ तुम ले जा रहे हो ले जाओ। पर अगर तुम मेरी सलाह मानोगे तो अक्लमन्दी से काम करोगे।

लोग तुम्हारे घोड़े के लिये तुमको मारना चाहेंगे इसलिये अच्छा यह है कि तुम एक गधा खरीद लो। उसकी खाल निकाल कर तुम अपने घोड़े को पहना लो। ऐसा ही तुम अपने कुत्ते के साथ भी कर लेना।" यह कह कर बूढ़ा अपने बकरे पर चढ़ कर अपनी गुफा में वापस चला गया।

राजकुमार ने भी बूढ़े की सलाह मानने में अपना समय नहीं गॅवाया। उसने तुरन्त ही एक गधा खरीदा और उसकी खाल से अपने सुनहरे घोड़े और सुनहरे कुत्ते को ढक लिया।

बहुत देर तक चलने के बाद वह अनजाने में अपने पिता के राज्य में आ गया। वहाँ आ कर उसने सुना कि राजा ने एक बहुत बड़ा गड्ढा खुदवाया है – **300** गज चौड़ा और **400** गज गहरा। और उसने कहा है कि जो कोई भी उस गड्ढे को अपने घोड़े को कुदा कर पार करेगा वह उसी के साथ अपनी बेटी की शादी करेगा।

इस मुनादी को पिटवाये हुए अब एक साल के करीब बीत गया था पर अभी तक किसी ने भी यह गड्ढा पार करने की हिम्मत नहीं की थी। पर जब हमारे राजकुमार ने यह सुना तो वह बोला "यह काम मैं करूँगा अपने गधे और कुत्ते के साथ।"

पर जब राजा ने यह सुना कि एक मैले गन्दे से कपड़े पहने हुए एक लड़का यह काम करना चाहता है जबकि उसके बहादुर से बहादुर नाइट्स से यह काम नहीं हुआ है तो राजा बहुत गुस्सा हो गया और उसने राजकुमार को उसके गधे और कुत्ते के साथ एक अँधेरे तहखाने में डाल दिया।

अगले दिन सुबह राजा ने अपने कुछ नौकर उस तहखाने में यह देखने के लिये भेजा कि वह आदमी अभी ज़िन्दा है या नहीं। वे तुरन्त ही दौड़े दौड़े वापस आश्चर्यचकित से राजा के पास आये और

राजा को बताया कि उस तहखाने में उस गरीब लड़के उसके गधे और कुत्ते की बजाय एक नौजवान एक सुनहरा घोड़ा और एक सुनहरा कुत्ता मौजूद थे। उनके पास ही सुनहरी मुर्गी अपने सुनहरे चूज़ों के साथ घूम रही थी।

यह सुन कर राजा के मुँह से निकला यह तो कोई बड़ा ताकतवर राजकुमार लगता है। सो उसने अपनी रानी और राजकुमार बेटों से कहा कि वे उसके हाथ धुलाने के लिये सारा सामान तैयार कर लें।

फिर यह दिखाने के लिये कि वह अपने पिछले दिन के बुरे व्यवहार पर कितना शर्मिन्दा है राजा खुद तहखाने में गया और राजकुमार को वहॉ से इज़्ज़त से बाहर निकाल कर लाया।

राजा खुद हाथ धुलाने वाला बर्तन ले कर उसके हाथ धुलाने के लिये तैयार हुआ। दोनों राजकुमारों ने हाथ धुलाने वाला बर्तन पकड़ा और रानी ने उसके हाथ पोंछने के लिये तौलिये पकड़े।

जब यह हो गया तो राजकुमार बोला — "देखिये मेरा सपना पूरा हो गया न पिता जी।"

ऐसा कहते ही उन सबने उसे पहचान लिया। वे सब उसे अपने बीच पा कर बहुत खुश हुए।

24 तीन भाई[101]

एक बार की बात है कि एक देश में एक बूढ़ा अपनी पत्नी तीन बेटे और एक बेटी के साथ रहता था। वे बहुत ज़्यादा गरीब थे। यह देख कर कि वे सब अब एक साथ घर में नहीं रह सकते थे उसके तीनों बेटे और बेटी चारों अलग अलग दिशाओं में दुनियाँ घूमने चले गये। बूढ़ा और उसकी पत्नी अब घर पर अकेले रह गये।

बूढ़े के पास न तो बैल थे और न कोई घोड़ा सो उसको अब आग जलाने के लिये लकड़ी लाने के लिये रोज जंगल जाना पड़ता था और उसको अपनी पीठ पर लाद कर लाना पड़ता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि बूढ़े को घर से जंगल जाते समय शाम हो गयी। पत्नी को रात को अकेले घर में रहते डर लगा सो उसने पति से बहुत विनती की कि वह उसको अपने साथ ले चले। तो पहले तो उसने उसको बहुत मना किया पर उसने जाने की जब बहुत जिद की तो आखिर उसने उसको अपने साथ आने की इजाज़त दे दी।

उसने उससे कहा कि पहले वह घर का दरवाजा ठीक से देख ले कि कहीं ऐसा न हो कि कोई दरवाजा तोड़ कर हमारे घर में चोरी कर ले। पत्नी ने सोचा कि उस दरवाजे को बन्द करने से ज़्यादा

---

[101] The Three Brothers. (Tale No 24)

अच्छा होगा अगर वह दरवाजे को कब्जे से अलग कर के अपनी पीठ पर रख कर ले जाये। उसने घर का दरवाजा उसके कब्जों से निकाल कर अलग किया उसको अपनी पीठ पर लादा और जितनी तेज़ चल सकती थी चल कर अपने पति के पास पहुँच गयी।

पति उसकी इस बात पर बिल्कुल नाराज नहीं था कि उसकी पत्नी ने उसकी बात का मतलब कितना गलत लिया था और घर के दरवाजे की किस तरह से देखभाल कर रही है। क्योंकि उसका विचार था कि उनके घर में ऐसा कुछ था ही नहीं जिसको कोई चुरा कर ले जा सके।

जब वे जंगल पहुँचे तो पति ने लकड़ी काटना शुरू कर दिया और पत्नी ने उन डंडियों की ढेरी बनाना शुरू कर दिया। लकड़ी काटते काटते और उनको इकट्ठा करते करते उन लोगों को बहुत देर लग गयी।

अब उनको लगने लगा कि वे अपनी रात कहाँ गुजारें। उनका अपना घर तो वहाँ से बहुत दूर था। वे सुबह से पहले वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकते थे। और वहाँ आस पास में कोई घर था नहीं जिसमें वे सो सकते।

आखिर उनको एक बड़ा और घना सा पाइन का पेड़ दिखायी दे गया। उन्होंने सोचा कि वे वह रात उस पेड़ पर चढ़ कर गुजार लेते हैं। पति पहले चढ़ा उसके बाद उसकी पत्नी दरवाजा ले कर बड़ी मुश्किल से ऊपर चढ़ी।

उसके पति ने उससे बहुत कहा कि वह दरवाजा नीचे ही छोड़ दे पर वह तो सुनने वाली नहीं थी। वह अपने दरवाजे के बिना पेड़ पर रहने के लिये तैयार नहीं थी।

अभी वे एक शाख पर बैठे ही थे पत्नी ने अपना दरवाजा कस कर पकड़ रखा था कि उन्होंने बहुत ज़ोर का शोर सुना जो पास और पास आता जा रहा था। इस शोर से पति और पत्नी दोनों बहुत डर गये। डर के मारे तो वे न बोल सके और न हिल सके।

इतनी देर में उन्होंने देखा कि एक डाकुओं का सरदार अपने साथ 12 लोगों को लिये हुए उसी पेड़ की तरफ चला आ रहा था। सब डाकुओं ने एक जैसे कपड़े पहन रखे थे – सुनहरे और रुपहले। उनमें से एक के हाथ में एक ताजा शिकार की गयी भेड़ थी जिसको उन्हें केवल भूनना था।

पति पत्नी ने देखा कि उन डाकुओं ने उसी पेड़ के नीचे अपना डेरा डाल लिया है जिस पर वे चढ़े हुए थे। उनको लगा कि बस अब तो उनका समय आ गया और वे अपने को बस मरा हुआ समझने लगे।

जैसे ही सब डाकू वहाँ बैठ गये तो सबसे छोटे डाकू ने आग जलायी और भेड़ को भूनने के लिये नीचे रख दिया। इस बीच डाकुओं का सरदार किसी और से बात करने लगा।

जब भेड़ भुन गयी तो अब उसके काटने की बारी आयी। भेड़ काट कर डाकुओं ने उसको खुशी खुशी खाना शुरू किया ही था कि

पत्नी अपने पति से बोली कि अब इससे आगे वह दरवाजा पकड़ कर नहीं रख सकती। वह अब नीचे गिरने ही वाला है।

पति ने भी उससे विनती भरे शब्दों में कहा कि वह अभी उसको गिरने न दे बल्कि थोड़ी देर तक उसे और सँभाल कर रखे क्योंकि अगर डाकुओं को उनके बारे में पता लग गया तो वे उनको मार देंगे।

पर वह बोली कि वह उसको लिये लिये बहुत थक गयी है और अब इससे ज़्यादा नहीं पकड़ सकती। यह देख कर कि पत्नी से अब इस बारे में बात करने का कोई फायदा नहीं है उसने उससे कहा —

"अगर तुम इसको बिल्कुल नहीं पकड़ पा रहीं तो मैं तो फिर इसका कोना भी नहीं पकड़ सकता सो अगर तुमसे यह नहीं पकड़ा जा रहा तो फिर इसे छोड़ दो। मुझे कोई शिकायत नहीं। जो हो रहा है होने दो। इस दुनियाँ में किसी चीज़ का दुख करने से कोई फायदा नहीं।"

सो उन दोनों ने दरवाजे पर से अपनी पकड़ एक साथ ढीली कर दी और वह दरवाजा धड़ाम की आवाज के साथ नीचे गिर पड़ा। उसका ताला पेड़ की शाखों से टकराता हुआ नीचे गिर गया।

दरवाजे ने गिरते समय इतनी तेज़ आवाज की कि उसकी गूँज सारे जंगल में घूम गयी। डाकू इस सूने जंगल में इस तेज़ आवाज को सुन कर आश्चर्यचकित रह गये और आश्चर्यचकित ही नहीं

बल्कि इतने डर गये कि सोचने लगे कि यह क्या हुआ और भुनी हुई भेड़ के मॉस का एक कौर खाये बिना और उसे वहीं छोड़ कर वहॉ से भाग गये। साथ में वह लूटा हुआ खजाना भी छोड़ गये जो वे लूट कर ले कर आये थे।

पर उनमें से एक डाकू वहॉ से दूर नहीं भागा था। वह वहीं पास के एक पेड़ के पीछ यह देखने के लिये छिप गया था कि ऐसी कौन सी चीज़ थी जिसने इतना शोर किया था।

उधर पति पत्नी ने देखा कि डाकू तो वहॉ से भाग गये तो वापस ही नहीं आये तो वे पेड़ से नीचे उतर आये। वे बहुत भूखे थे सो उस भुनी हुई भेड़ को खाना शुरू कर दिया। सारा समय पति अपनी पत्नी की अक्लमन्दी की तारीफ करता रहा कि किस अक्लमन्दी से उसकी पत्नी ने दरवाजा फेंक दिया था।

अब जो डाकू वहॉ से भागा नहीं था बल्कि पास के एक पेड़ के पीछे छिप कर यह सब तमाशा देख रहा था वहॉ से निकल कर बाहर आया और उनके पास आ गया और उनसे थोड़ा सा खाना मॉगा। क्योंकि उसने पिछले **24** घंटों से खाना नहीं खाया था। पति पत्नी ने उसे खाना दे दिया।

उससे उन्होंने बहुत तरह की बातें कीं कि एकाएक पति डाकू से बोला — "ओ ज़रा ध्यान से। तुम्हारी जबान पर एक बाल है। अपने गले में कहीं खाना न फॅसा लेना क्योंकि अगर तुम कहीं मर

गये तो मेरे पास तो तुम्हें यहाँ दफ़न करने का कोई साधन भी नहीं है।"

डाकू ने इस मजाक को असली समझा और पति से कहा कि वह उसके मुँह से बाल निकाल दे तो इसके बदले में वह उसको एक गुफा दिखायेगा जहाँ बहुत सारा खजाना रखा है।

जब वह छिपा हुआ खजाना यानी डकैट[102] के ढेर थेलर शिलिंग्स आदि बता रहा था कि वे उसने उस गुफा में देखी हैं कि पत्नी बीच में ही बोली – "मैं तुम्हारे मुँह का बाल बिना कुछ लिये ही निकाल दूँगी। बस तुम अपनी जबान आगे निकाल लो और आँखें बन्द कर लो।"

डाकू ने खुशी खुशी अपनी जबान आगे निकाल दी और आँखें बन्द कर लीं। उसने तुरन्त ही एक चाकू उठाया और उसकी जबान काट ली फिर बोली – "मैंने तुम्हारे मुँह में से बाल निकाल लिया है।"

डाकू को जब यह पता चला कि उसको साथ क्या किया गया है तो वह तो बिना अपना कोट और टोप लिये हुए ही वहाँ से उसी दिशा में चिल्लाता हुआ भाग गया जिसमें उसके साथी भागे थे – "मेरी सहायता करो मुझे थोड़ा सा प्लास्टर दो। मुझे थोड़ा सा प्लास्टर दो।"

---

[102] Ducat – currency of Europe

उसके ये शब्द उसके साथियों के कानों में टूटे फूटे से पड़े। उन्होंने समझा कि वह चिल्ला रहा था — "अपनी सहायता अपने आप करो पुलिस मास्टर आ रहा है।"

वह यह कहता जा रहा था और तेज़ तेज़ भागता जा रहा था यह सुन कर उसके साथी उससे भी तेज़ भाग रहे थे।

इस बीच पति पत्नी ने सोचा कि अब इस पाइन के पेड़ के पास रहना खतरे से खाली नहीं है सो उन्होंने जल्दी से सारा पैसा बटोरा और जितना वे ले जा सकते थे, सोना हो या चॉदी, उतना जल्दी जल्दी घर वापस भाग गये।

जब वे घर वापस पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनके पड़ोसियों की मुर्गियों ने उनके घर की फूस की छत ही तोड़ दी है। पर इस बात के लिये उनको बहुत ज़्यादा दुख नहीं हुआ क्योंकि अब तो उनके पास बहुत पैसा था जिससे वे अपनी नयी छत तो छोड़ो अब तो इससे अच्छा नया मकान बनवा सकते थे।

और फिर उन्होंने यही किया। उन्होंने अपने लिये नया मकान बनवाया और उसमें रहना शुरू कर दिया। उनको अपने तीनों बेटे और बेटी की याद एक बार भी नहीं आयी जो करीब करीब नौ साल से इधर उधर घूम रहे थे।

इस बीच वे चारों दुनियॉ की चार जगहों में काम कर रहे थे। जब वे अपने घर से नौ साल के लिये दूर थे तो इत्तफाक से सबके दिल में एक साथ यह इच्छा उठी कि वे अपने घर वापस जायें।

सो उन्होंने अपनी अपनी सारी बचत ली जो उन्होंने इन पिछले नौ साल में कमायी थी और अपने घर की तरफ चल दिये।

बड़ा भाई जब अपने घर की तरफ आ रहा था तो रास्ते में उसको तीन जिप्सी मिले जो एक भालू बच्चे को गर्म लाल तवे पर नाचना सिखा रहे थे। यह देख कर भाई को उस बच्चे जानवर के लिये सहानुभूति पैदा हो गयी।

उसने जिप्सियों से पूछा कि वे उसको इस तरह से क्यों सता रहे थे। वह बोला — "इससे तो अच्छा है कि तुम लोग इसे मुझे दे दो। मैं तुम लोगों को इसके लिये तीन चॉदी के सिक्के दूँगा।" जिप्सियों को यह सौदा ठीक लगा उन्होंने उससे तीन चॉदी के सिक्के ले लिये और भालू बच्चा उसको दे दिया।

आगे चल कर उसे कुछ शिकारी मिले जिन्होंने एक भेड़िये का बच्चा पकड़ रखा था और वे उसको मारने ही वाले थे। उसने उनके भी तीन चॉदी के सिक्के दे कर उस भालू के बच्चे की जान बचा ली।

आगे चल कर उसे कुछ चरवाहे मिले जो एक छोटे से कुत्ते को फॉसी से लटकाना चाह रहे थे। उसको उस कुत्ते पर बहुत तरस आया। उसने उस जानवर को बचाने के लिये दो चॉदी के सिक्के दिये और कुत्ते को बचा लिया। उन्होंने बड़ी खुशी से वह कुत्ते का बच्चा उसको दो चॉदी के सिक्के ले कर दे दिया।

इस तरह से वह एक भालू बच्चे एक भेड़िये बच्चे और एक छोटे कुत्ते को साथ ले कर अपने घर पहुँचा।

अब क्योंकि उसकी नौ साल की कमायी केवल नौ चाँदी के सिक्के थी तो उसकी जेब में अब केवल एक चाँदी का सिक्का ही बचा था।

अपने पिता के घर पहुँचने से पहले वह कुछ बच्चों से मिला जो एक बिल्ली को पानी में डुबो रहे थे। उसने उनको अपनी बचत का आखिरी सिक्का दिया और इसको भी बचा लिया। बच्चे अपने इस सौदे से बहुत खुश थे।

आखिर वह बिना किसी पैसे के घर पहुँचा पर उसके पास एक भालू का बच्चा एक भेड़िये का बच्चा एक छोटा कुत्ता और एक बिल्ली थी।

अब ऐसा हुआ कि उसके दूसरे दो भाइयों ने अपनी नौ साल की कमायी मे केवल नौ चाँदी के सिक्के कमाये थे। पर जब वे घर आ रहे थे तो उन्होंने भी उनको कुछ जानवरों को बचाने में खर्च कर दिये थे जैसे कि सबसे बड़े भाई ने खर्च किये थे।

बहिन ने केवल पाँच चाँदी के सिक्के बचाये थे। जब वह घर लौट रही थी तो उसे एक हैजहौग मिला जो अपने हड्डी के दाँत और दो सिक्कों के बदले में एक चूहे से उसके लोहे के दाँत माँग रहा था।

कुछ देर तक तो वह लड़की सुनती रही पर बाद में वह चूहे से बोली — "प्यारे चूहे। मैं तुम्हें हैजहौग के दॉत दूॅगी साथ में तीन सिक्के भी दूॅगी।" तो चूहा इस सौदे पर तुरन्त ही तैयार हो गया।

उसने हैजहौग पकड़ा उसके दॉत खींच कर निकाले और उनको चूहे को दे दिये। बदले में चूहे ने हैजहौग को अपने लोहे के दॉत दे दिये।

अब वह अपनी यात्रा पर आगे चली तो रास्ते में कुछ ध्यान आया कि चूहे ने उसको धोखा दिया है। यह देखने के लिये कि यह बात सच है कि नहीं वह कुछ दूर तक उनके पीछे गयी और उसके दॉतों को जॉचने के लिये रास्ते में एक बहुत मोटा ओक का पेड़ खड़ा हुआ था उसे काटना शुरू कर दिया।

उसको लगा कि जैसे ही उसने पेड़ के तने में काटना शुरू किया तो वह पेड़ तो हिलने लगा और गिरने वाला होने लगा। तब वह जा कर सन्तुष्ट हुई कि उसके पास असली लोहे के दॉत हैं और वह शान्ति से अपने घर की तरफ चल दी।

घर पहुॅचने से पहले उसे एक चूहा दिखायी दिया जो अपने दॉत एक पत्थर पर घिस कर तेज़ कर रहा था। सो उसने चूहे से विनती कि वह अपना दॉत घिसने वाला पत्थर उसको दे दे ताकि वह अपने दॉत भी तेज़ कर सके।

चूहे ने कहा कि वह वह पत्थर उसे नहीं देगा जब तक वह उसे दो पैन्स नहीं देगी। सो बचे हुए दो पैन्स उसे दे कर उसने चूहे से दाँत तेज़ करने वाला पत्थर ले लिया।

उसने फिर अपने घर की यात्रा शुरू की। चलते चलते वह यह सोचने लगी कि अब वह घर जा कर अपने माता पिता और भाइयों से क्या कहेगी कि वह इतने सालों में कहाँ थी और क्या बचा कर लायी।

जब वह घर पहुँची तो उसके तीनों भाई अपने अपने खजानों के साथ घर पर मौजूद थे यानी भालू भेड़िया कुत्ता और बिल्ली के साथ। पर उसकी खुशकिस्मती से यह अच्छा हुआ कि उसके भाइयों ने उससे नहीं पूछा कि उसने कितना बचाया हालाँकि उनको यह पूरा यकीन था कि उसने बहुत सारा बचाया होगा।

उन्होंने बस उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में पूछा कि वह कैसी है और उसकी यात्रा कैसी रही। सब एक दूसरे को देख कर बहुत खुश थे और कुछ दिन तक खुश खुश रहे।

X X X X X X X

पर यह खुशी बहुत दिनों तक नहीं रही। उनके आने के जल्दी ही बाद उनके पिता चल बसे। तीनों भाइयों ने आपस में सलाह कर के उनके माता पिता ने डाकुओं से जो पैसा इकट्ठा किया था उसमें से कुछ कमाने के लिये इस्तेमाल में लगाना चाहा।

उन्होंने उसके तीन घोड़े और एक घास का मैदान खरीदा। पर उनका यह काम कोई बहुत अच्छा नहीं चला। एक दिन उनको अपनी घुड़साल में तीन की बजाय केवल दो ही घोड़े मिले। उनके तीसरे घोड़े को किसी ने मार दिया था। किसी ने उसको काटा था उसका खून चूसा था और उसके आधे शरीर को खा लिया था।

इत्तफाक से वह घोड़ा उनका उन तीनों में उनका सबसे अच्छा घोड़ा था। इस घटना के बाद तीनों भाइयों ने सोचा कि वे बारी बारी से अपनी घुड़साल की रखवाली करेंगे।

सो उस दिन जब रात आयी तो तीनों ने आपस में बात की कि उस रात सबसे पहले कौन पहरा देगा। सबसे छोटा भाई बोला — "आज का पहरा मैं दूँगा।"

सो प्लान के अनुसार शाम का खाना खाने के बाद वह घुड़साल में पहरा देने के लिये चला गया। आधी रात के करीब कोई एक सफेद रंग का कुछ वहाँ आया उसने सबसे छोटे घोड़े पर छलाँग लगायी और उसे खाना शुरू कर दिया।

जब तीसरे भाई ने यह देखा तो वह तो यह देख कर बहुत डर गया और इतना डर गया कि उसने दरवाजे से भाग जाने की भी तकलीफ नहीं की और वह उसकी छत में बने एक छेद में से हो कर भाग गया।

जब वह वहाँ से बच कर भाग रहा था उस भूत[103] ने घोड़े को मार दिया उसका खून चूसा और उसके आधे शरीर को खा गया।

अगले दिन जब बड़े भाई ने देखा कि उस दिन क्या हुआ था तो वह अपने इस नुकसान पर बहुत दुखी हुआ। उस दिन बड़े भाई ने अपने छोटे भाई से कहा — "आज तुम घुड़साल में जाओ और तुम उस घोड़े की देखभाल करो। यह तुम्हारा घोड़ा है और आज वह खतरे में है।"

तो दूसरा भाई अब आखिरी बचे घोड़े की देखभाल करने चला गया। आधी रात को फिर वही सफेद भूत आया तो यह पहरेदार भी पहले दिन के पहरेदार की तरह से इतना डर गया कि अपने भाई की तरह ही भाग गया।

भूत ने भी घोड़े को मारा उसका खून चूसा और उसके आधे शरीर को खा कर भाग गया।

अगली सुबह जब उन्होंने देखा कि क्या हो गया तो सबसे बड़े भाई ने सोचा कि आज मैं देखता हूँ कि इस बचे हुए घोड़े को कौन खाने आता है। सो रात को वह खुद घुड़साल में गया उसने घोड़े को बहुत सारा भूसा खिलाया और एक कोने में पहरे के लिये बैठ गया।

---

[103] Translated for the word "Monster"

जब आधी रात हुई तो वही भूत सफेद रंग में फिर वहाँ आया। उसको आते देख कर पहले तो वह डर गया पर फिर हिम्मत कर के साँस रोक कर खड़ा हो गया कि देखूँ अब यह क्या करता है।

उसने क्या देखा कि वह सफेद भूत जो उसकी बहिन जैसा लग रहा था अपने हाथ में एक घिसने वाला पत्थर लिये था। वह घोड़े के पास आया उसने उसका खून चूसा उसका आधा शरीर खाया और घुड़साल को छोड़ कर चला गया।

इस सारे समय वह वहाँ बिना हिले डुले सब कुछ देखता रहा। शायद यह उसने डर की वजह से किया था। और या शायद इसलिये किया था क्योंकि वह चुप रहना चाहता था कि जो कुछ भी होता है होता रहे।

अगले दिन जब दोनों छोटे भाइयों को पता चला कि उनके बड़े भाई के पहरा देने के समय उनका आखिरी घोड़ा भी मारा गया है तो वे उसके नुकसान के लिये हँसने लगे और उसकी खिल्ली उड़ाने लगे।[104]

तो बड़े भाई ने कहा कि उसको वह मालूम हो गया था जो उनको मालूम नहीं था। उन्होंने पूछा "क्या।" तो वह बोला कि उसे

[104] [My Note : By this description it seems that the brothers bought three horses. One was killed before watch, the second horse was killed when the youngest brother was keeping a watch, and the third one was killed when the second brother was watching. Thus all three were killed. Then where was the last remaning one to be watched by the eldest bother? I read the text several times but could not make out. As it was written there I am writing it here. Please, I am sorry if I made any mistake here.]

यह पता चल गया था कि वह कौन था जो उनके घोड़ों को मार रहा था और खा रहा था। फिर उसने कहा कि यह बात उनको किसी को बतानी नहीं चाहिये।

फिर उसने उन सबको बताया कि उनकी अपनी बहिन ही यह सब कर रही है। उसी ने घोड़ों को मारा है और उसी ने उनका खून पिया है।

पहले तो उन्होंने इस बात पर विश्वास ही नहीं किया पर खैर बाद में उन्होंने मान लिया। इस बात का सबूत उनको इस तरह से मिला।

एक दिन सुबह को दोनों बड़े भाई खेत पर काम करने गये और सबसे छोटा भाई घर पर ही रह गया था। उनकी बहिन भी उसी की तरह घर पर ही थी। उसको यह पता नहीं था कि उसका सबसे छोटा भाई भी घर पर ही मौजूद था।

बड़ा भाई जब घर से गया तो छोटे भाई से कहता गया कि वह एक बर्तन भर आग पर पानी उबलने के लिये रख दे और जब तब उसके नीचे की आग को कुरेदता रहे।

अगर वह पानी उबल कर खून बन जाये तो वह तुरन्त ही नीचे कमरे में जाये और छोटे कुत्ते को खोल ले और उसको वही रास्ता पकड़ने के लिये कहे जो वे पकड़ कर अपने खेत की तरफ गये हैं।

जब उसके दोनों भाई खेत पर चले गये तो छोटा भाई घर के पिछवाड़े घूमने के लिये गया। जब वह वहॉ से लौटा तो उसने घर में

बहुत ज़ोर का शोर और रोने की आवाज सुनी। तो वह अपने घर के दरवाजे की तरफ गया और चाभी के छेद से अन्दर झॉकने लगा कि अन्दर क्या हो रहा है।

तुम लोग क्या सोचते हो कि उसने वहॉ क्या देखा होगा। कि उसकी बहिन ने उन सबकी बूढ़ी मॉ का गला काट दिया था और उसका शरीर भूनने के लिये एक जाली पर रखने वाली थी।

यह देख कर तो वह बहुत डर गया और वहॉ से भाग लिया और एक बड़े टब के पीछे जा कर छिप गया। बहिन ने जब मॉ को जाली पर रख लिया तो वह उसको भूनने के लिये बाहर ले कर आयी।[105]

और ज़ोर से बोली "मैं अपने तीनों भाइयों के साथ ऐसा ही करूँगी। एक के बाद एक। उसके बाद मैं सारी जायदाद की अकेली मालिक बन जाऊँगी।"

जब उसने उसे भून लिया तो वह उस जाली को घर के अन्दर ले आयी और उसको एक दीवार के सहारे खड़ा कर दिया। फिर वह एक पत्थर ले आयी और उससे अपने दॉत तेज़ करने लगी।

जैसे ही वह घर के अन्दर गयी छोटा भाई अपनी छिपने वाली जगह से कूद कर बाहर आ गया और घर के दरवाजे की तरफ भागा और बाहर से घर के अन्दर झॉक कर देखने लगा कि वहॉ क्या हो रहा है।

---

[105] The kitchen in the cottages of Serbia and Bosnia is usually outside the house.

जब उसने यह सब देख लिया तो उसने एक बर्तन में पानी भर कर आग पर उबलने के लिये रख दिया और खुद भट्टी के पीछे छिप कर बैठ गया।

अपने दाँत तेज़ करने के बाद उसकी बहिन ने अपनी माँ के शरीर को खाना शुरू किया। उसने उसका सारा शरीर खा लिया केवल सिर छोड़ दिया। जब वह खाना खा चुकी तो उसने वह सिर उठाया और बाहर रसोई में चली गयी।

वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि वहाँ तो आग जल रही थी और बर्तन में पानी उबल रहा था। उसको बहुत गुस्सा आया और घर में चारों तरफ देखने लगी कि घर में कोई और था कि नहीं।

उसको शक हुआ कि शायद उसका एक भाई वहाँ हो सकता था सो वह हर एक का नाम पुकार पुकार कर बुलाने लगी। उसने सारा घर छान मारा। किस्मत से वह भट्टी के बराबर में देखना भूल गयी जहाँ उसका छोटा भाई छिपा बैठा था।

जब उसे घर में कोई नहीं मिला तो अपनी माँ का सिर अपने हाथों में लिये लिये लिये वह उसी रास्ते पर भाग ली जिस पर उसके भाई गये थे। वह खेत पर पहुँच गयी। वहाँ जा कर वह चिल्लायी — "रुको ज़रा। यह मत सोचो कि तुम मेरे हाथों से बच कर भाग जाओगे।"

इधर छोटे भाई ने जब देखा कि उसकी बहिन वहाँ से भाग गयी है वह अपने छिपने की जगह से बाहर निकला और पानी की तरफ

गया। उसने देखा कि उस बर्तन का पानी तो खून बन चुका था। सो वह तुरन्त ही नीचे वाले कमरे में गया और उनके कई कुत्तों में से एक छोटे कुत्ते को खोल कर उससे कहा कि वह घास के मैदान की तरफ जाने वाले रास्ते पर दौड़ जाये। इस छोटे कुत्ते से उसकी बहिन अपने भाइयों से भी ज़्यादा डरती थी।

कुत्ते को आजाद कर के वह फिर से पानी के पास आया कि देखूँ अब पानी का क्या होता है। अब तक बर्तन का सारा पानी जो खून में बदल चुका था बहुत ज़ोर से उबल रहा था। उसमें बहुत सारे बुलबुले उठ रहे थे।

ये बुलबुले और ज़्यादा ज़ोर से उठ रहे थे जैसे जैसे वह अपने भाइयों के पास आती जा रही थी। जब वह उनसे **5–7** कदम ही दूर थी कि उसने कुछ आवाज सुनी जैसे कोई उसके पीछे आ रहा हो।

उसने यह देखने के लिये पीछे मुड़ कर देखा कि उसके पीछे कौन आ रहा है। उसने देखा कि उसके पीछे तो छोटा वाला कुत्ता था। उसको देख कर वह बहुत डर गयी और अपनी जान बचाने के लिये पास में लगे एक पेड़ पर चढ़ गयी।

उसने पेड़ की एक शाख पकड़ी तो वह टूट गयी और वह खुद भी जमीन पर गिर पड़ी। उसी पल कुत्ता उसकी तरफ दौड़ा और उसने उसके दो टुकड़े कर दिये। खेत में से दोनों भाइयों ने यह सब

देखा पर वे उसके पास तक आने से बहुत डरते थे कि कहीं ऐसा न हो कि वह फिर से ज़िन्दा न हो जाये और उन पर हमला न कर दे।

फिर जब उन्होंने देखा कि कुत्ता उसके टुकड़े टुकड़े कर रहा था तब उनकी जान में जान आयी कि वह वाकई मर गयी थी।

फिर वे उस जगह आये जहाँ वह पड़ी हुई थी और उसका अपनी माँ के सिर के साथ ठीक से उसी पेड़ के नीचे दफ़न कर दिया जिससे वह गिरी थी।

यह करने के बाद दोनों भाई घर लौटे और अपने छोटे भाई को बताया कि वहाँ क्या हुआ था। उसने उनको अपने बारे में बताया कि कैसे उसका उबलता हुआ पानी खून बन गया था। कैसे वह पहले जल्दी जल्दी उबला किर कैसे वह शान्त हो गया और फिर कैसे पानी में बदल गया।

तीनों भाइयों ने बहुत ख़ुशी मनायी कि वे इस तरह से अपनी नीच बहिन से छुटकारा पा सके।

X X X X X X X

पर कुछ दिन बाद ही वे लोग फिर से मैदान से घास लाने गये जो दोनों बड़े भाइयों ने पहले ही काट कर रखी हुई थी। तो वहाँ उनको घास का केवल एक तिहाई हिस्सा मिला। बाकी की घास कहाँ गयी? उसे किसने चुरा लिया?

उसको ढूँढने के लिये वे इधर उधर गये भी पर कोई भी उनको ऐसा दिखायी नहीं दिया जिसने उनकी घास चुरायी हो। कुछ देर बाद जो घास उनको अपने मैदान में मिली वे उसी को ले कर घर चले आये।

किसी तरह से यह साल गुजर गया जिसमें यह सब हुआ था।

अगले साल उनकी हिम्मत नहीं हुई कि वे अपनी घास इस तरह मैदान में अकेले छोड़ जायें। सो फिर एक बार समय आया कि वे आपस में विचार करने लगे कि पहले उनकी घास की रखवाली कौन करेगा। हर एक बोला कि "मैं करूँगा।" "मैं करूँगा।" पर पहले की तरह से सबसे पहले सबसे छोटे भाई को यह काम सौंपा गया।

शाम को उसने अपनी तैयारी की और खेत पर चल दिया। वहाँ पहुँच कर वह एक ऊँचे से पेड़ पर चढ़ा और तय किया कि वह सुबह होने तक वहीं रहेगा। यह वही पेड़ था जिसके नीचे उसकी बहिन और माँ का सिर दफ़न था।

आधी रात के करीब उसने कुछ शोर और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने की आवाजें सुनी। वह उन आवाजों से इतना डर गया कि हिल भी न सका। उसने देखा कि कुछ जीव खेत में आये और बहुत सारी घास खा गये।

और जो कुछ उन्होंने नहीं खायी उसको उन्होंने इधर उधर उछाल दिया या फिर नष्ट कर दिया जिससे उसका कोई दूसरा इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था।

जब सुबह हुई तो वह पेड़ से नीचे उतरा और घर जा कर अपने भाइयों से सब कहा जो कुछ उस रात वहाँ हुआ था। सो उस साल उनके पास कोई घास नहीं थी।

अगले साल जब फिर घास काटने का समय आया तो तीनों भाइयों ने फिर से अपनी घास की रक्षा के बारे में सोचा।

अबकी बार दूसरे भाई को यह काम सौंपा गया। उसको यकीन था कि अबकी बार वह घास की रक्षा करने में सफल हो जायेगा। वह भी छोटे भाई की तरह से मैदान गया और उसी पेड़ पर चढ़ कर बैठ गया जिस पर बैठ कर उसके छोटे भाई ने पिछले साल उसका पहरा दिया था।

अबकी बार आधी रात के समय तीन पंखों वाले घोड़े आये। उनके साथ परियाँ भी थीं। पंखों वाले घोड़ों ने वह घास खानी शुरू कर दी और जो बाकी बची वह परियों के नाच से नष्ट हो गयी। जब सुबह निकलने को थी तो वे सब वहाँ से गायब हो गये।

दूसरे भाई ने यह सब अपनी आँखों से देखा। वह भी डर के मारे कुछ नहीं कर सका। पर जब वह घर गया तो उसने भी जा कर अपने सब भाइयों को यह बताया। यह सुन कर वे सब फिर से दुखी हो गये और इस तरह उस साल भी उनके पास कोई घास नहीं थी।

खैर समय गुजरता रहा। तीसरा साल आया। तीनों भाइयों ने फिर से अपने घास के मैदान की घास काट कर रखी और फिर

उसकी सुरक्षा का सवाल उठा तो अबकी बार सबसे बड़े भाई ने कहा कि वह खुद जा कर उसकी देखभाल करेगा।

अगर वह भी अपनी घास की देखभाल करने में सफल न हो सका तो यह तय पाया गया कि वे लोग जो कुछ भी उनके पास थोड़ी बहुत सम्पत्ति है उसको बेच कर कहीं और अपनी किस्मत आजमाने चले जायेंगे।

इस तरह विचार कर लेने के बाद बड़ा भाई रात को तैयार हो कर खेत पर चला गया। पर वह पेड़ के ऊपर चढ़ कर नहीं बैठा बल्कि घास के एक गट्ठर पर जा कर लेट गया और इन्तजार करता रहा कि अब क्या होता है।

आधी रात के समय लगता था जैसे बहुत दूर से एक आवाज आनी शुरू हुई। साथ में परियॉ भी तीन पंखों वाले घोड़ों के साथ वहॉ आने लगीं। वे वहीं आ रही थीं जहॉ वह लेटा हुआ था। वहॉ आ कर परियों ने नाचना शुरू कर दिया और घोड़ों ने घास खाना शुरू कर दिया।

पहले तो भाई बहुत डर गया और यह प्रार्थना करने लगा कि काश यह सारी पार्टी उसको वहॉ देखे बिना ही वहॉ से चली जाये। पर उसको लग रहा था कि उनको वहॉ से जाने की कोई जल्दी नहीं थी। उसने सोचा कि ऐसी हालत में वह क्या करे।

सोचते सोचते उसके दिमाग में आया कि क्यों न उन तीनों घोड़ों में से एक घोड़े को पकड़ लिया जाये। सो जब वे उसके पास आये

तो वह कूद कर उनमें से एक घोड़े पर बैठ गया और उससे कस कर चिपक गया। यह देखते ही परियाँ और बाकी के घोड़े सब वहाँ से भाग गये।

जिस घोड़े को बड़े भाई ने पकड़ा था उसने अपने सवार को अपने ऊपर से उतार फेंकने की बहुत कोशिश की पर वह ऐसा न कर सका।

जब उसकी सवार को अपने ऊपर से उतार फेंकने की सारी कोशिशें बेकार गयीं तो वह बोला — "मेहरबानी कर के मुझे जाने दो ओ भलेमानस। मैं कभी किसी दूसरे समय पर तुम्हारे काम आऊँगा।"

भाई ने कहा — "मैं तुम्हें केवल एक शर्त पर जाने दे सकता हूँ कि तुम इस मैदान में फिर कभी नहीं आओगे। और तुम मुझसे यह वायदा करो कि तुम अपना वायदा निभाओगे।"

घोड़ा इस शर्त पर तैयार हो गया। उसने अपनी पूँछ का एक बाल उसको दिया और कहा — "जब भी तुम्हें मेरी जरूरत पड़े तब इस बाल को आग में जला देना मैं तुरन्त ही तुम्हारी सेवा में हाजिर हो जाऊँगा।"

उसके बाद घोड़ा वहाँ से चला गया और बड़ा भाई अपने घर वापस आ गया। उसके भाई उसका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। जैसे ही उन्होंने उसको आते देखा तो तुरन्त ही उससे वहाँ का हाल बताने के लिये कहा।

बड़े भाई ने उनको सारा हाल बता दिया बस उनको यह नहीं बताया कि घोड़े ने उसको अपनी पूँछ का एक बाल दिया है। वह इसलिये कि उसको यह विश्वास नहीं था कि घोड़ा अपना वायदा निभायेगा और उसकी जरूरत के समय उसके पास आयेगा।

पर दोनों छोटे भाइयों को भी इस बात का कोई विश्वास नहीं था कि परियॉ और पंखों वाले घोड़े अपना वायदा निभायेंगे और उनका खेत नष्ट करने के लिये फिर से वहॉ नहीं आयेंगे।

इसलिये उन्होंने आपस में अब एक दूसरे से यह कहा कि अब उन्हें अपनी सारी सम्पत्ति आपस में बॉट लेनी चाहिये और अलग हो जाना चाहिये। बड़े भाई ने उनसे विनती कि वे कम से कम एक साल और रुक जायें और देखें कि अगले साल क्या होता है पर वह उनको रोक कर रखने में सफल नहीं हो सका।

सो उन्होंने बची हुई जायदाद आपस में बॉट ली अपने अपने जानवर भी ले लिये — यानी भेड़िया भालू कुत्ता बिल्ली और घर छोड़ कर चले गये। यह दूसरी बार था जब वे अपनी किस्मत आजमाने के लिये घर से बाहर जा रहे थे।

XXXXXXX

पहले दिन वे एक साथ चले पर दूसरे दिन उनको अलग होना ही पड़ा। क्यों? चलते चलते अब वे एक चौराहे पर आ गये थे

और अगर वे एक ही रास्ते पर चलते तो जब तक वे एक साथ थे वे एक साथ उस रास्ते पर नहीं चल सकते थे।

सो इन्होंने वह रास्ता छोड़ा और दूसरा रास्ता लिया। इसका भी कोई फायदा नहीं था क्योंकि इस रास्ते पर भी वे एक साथ होने की वजह से एक कदम आगे नहीं चल सके। जब उन्होंने तीसरा रास्ता लिया तभी भी वैसा ही हुआ। वे तभी भी उस पर एक साथ नहीं चल सके।

उन्होंने सोचा कि अगर हम तीनों एक रास्ते पर एक साथ नहीं चल सकते तो एक रास्ते पर दो भाई चल कर देखते हैं पर वह भी मुमकिन नहीं था। वे एक कदम भी आगे नहीं रख सकते थे जब तक दो भाई एक साथ थे।[106]

सो अब उनके पास और कोई रास्ता नहीं बचा था सिवाय इसके कि वे अलग अलग अपने अपने रास्ते पर जायें। वे लोग अलग होने के लिये बहुत दुखी थे पर कुछ कर नहीं पा रहे थे।

भाइयों ने अलग होने से पहले बात की। बड़ा भाई बोला — “भाइयो अब हम अलग हो रहे हैं। अलग होने से पहले हम अपने अपने चाकू इस ओक के पेड़ में गाड़ देते हैं। जब तक हम लोग ज़िन्दा हैं तब तक हमारे चाकू उसी जगह लगे रहेंगे जहॉ जहॉ हम

[106] Because the road was was not wide enough for two or three people standing and walking together.

लगायेंगे पर अगर हममें से कोई मरेगा तो उसका चाकू नीचे गिर जायेगा।

हमको हर तीसरे साल यहाँ आना चाहिये और देखना चाहिये कि हमारे चाकू ठीक से लगे हुए हैं या नहीं। इस तरह से हम लोग एक दूसरे के बारे कम से कम कुछ तो जान पायेंगे।" कह कर बड़े भाई ने अपना चाकू ओक के पेड़ में गाड़ दिया।

दूसरे दोनों भाइयों ने इस बात पर राजी हो गये। उन दोनों ने भी अपने अपने चाकू ओक के पेड़ में गाड़े। तीनों ने आपस में एक दूसरे को चूमा और अपने अपने जानवर ले कर अपनी अपनी सड़क कर चल दिये।

अब सबसे पहले हम सबसे छोटे भाई के साथ साथ चलते हैं। वह अपने जानवरों के साथ सारा दिन और सारी रात बिना रुके चलता रहा।

अगले दिन सुबह को उसने एक राजा का महल देखा तो वह सीधा उसी तरफ चल दिया। उसको राजा के सामने ले जाया गया तो उसने राजा से प्रार्थना की कि वह उसे अपनी बकरियों की देखभाल के लिये रख ले। राजा ने उसको अपना बकरियाँ चराने वाला रख लिया।

उस दिन से राजा की सारी बकरियों की देखभाल का जिम्मा उस पर आ गया। वह वहाँ राजा की बकरियों की देखभाल करता हुआ काफी समय तक शान्ति से रहा।

एक दिन वह अपने बकरियों को ले कर वह एक पहाड़ी की तरफ चला गया जो राजा के महल से ज़्यादा दूर नहीं थी।

उस पहाड़ी की चोटी पर एक बहुत ऊँचा पाइन का पेड़[107] था। उसको देखते ही उसको लगा कि वह उसके ऊपर चढ़ कर ऊपर से देश का दृश्य देखे।

सो वह उस पेड़ पर चढ़ गया और वहॉ से चारों तरफ के दृश्य का आनन्द लेने लगा। वह एक तरफ देख रहा था तो उसने देखा कि दूर एक पहाड़ पर से धुँआ उठ रहा है।

धुँआ देख कर उसको लगा कि हो सकता है कि उसको कोई भाई उस पहाड़ पर हो क्योंकि उसको लगा कि इस सुनसान जंगल में उसके सिवा कोई और कैसे हो सकता है।

उसने तुरन्त ही यह फैसला कर लिया कि वह अब यह बकरियॉ चराने वाली जगह छोड़ कर उस पहाड़ की तरफ चला जायेगा जिसे उसने इतनी दूर देखा था।

वह तुरन्त ही पेड़ से नीचे उतर आया अपनी बकरियॉ इकट्ठी कीं। यह काम तो उसके लिये बहुत ही आसान काम था क्योंकि उसको अपने भालू भेड़िया कुत्ता और बिल्ली की अच्छी सहायता मिली थी।

[107] Pine trees are of many kinds and shapes. Here, in above picture, its one kind of species is shown.

जैसे ही वह महल पहुँचा तो उसने राजा से कहा — "यौर मैजेस्टी। अब मैं यह काम और नहीं करना चाहता। मुझे अब यहाँ से जाना चाहिये क्योंकि आज मैंने पास वाले पहाड़ से धुँआ उठता देखा है। और मुझे ऐसा विश्वास है कि मेरा भाई वहाँ पर है। सो मैं वहाँ जाना चाहता हूँ और उससे मिलना चाहता हूँ।

मैं योर मैजेस्टी से विनती करता हूँ कि मेरी तनख्वाह का जो बनता हो वह मुझे दे दिया जाये और मुझे जाने की इजाज़त दे दी जाये।"

इस सारे समय उसको लगता रहा कि राजा को इस धुँए वाले पहाड़ के बारे में कुछ पता ही नहीं है। जब उसने राजा से यह सब कहा तो राजा बोला — "तुम उस पहाड़ पर किसी भी हालत में नहीं जाओगे। क्योंकि वहाँ जो कोई भी गया वह कभी वापस नहीं आया।"

उसने उसे साथ में यह भी बताया कि जो कोई भी उस पहाड़ पर गया वह वहाँ जमीन में धँसता ही चला गया। क्योंकि उसके बारे में फिर कभी किसी ने सुना ही नहीं।"

राजा की सारी सलाह और चेतावनियाँ बेकार गयी। बकरी चराने वाले की तो यह बात समझ में आने वाली नहीं थी वह तो बस अपने दोनों भाइयों को ढूँढने की लगन में था।

अपनी यात्रा की सारी तैयारी कर लेने के बाद वह वहाँ से चल दिया। उसके साथ उसके अपने साथी चारों जानवर भी थे। वह

सीधा पहाड़ की तरफ गया पर जब वह वहाँ पहुँचा तो उसको वहाँ आग कहीं दिखायी नहीं दी।

बड़ी मुश्किल से उसको आग मिली। यह आग एक बीच के पेड़[108] के नीचे जल रही थी। वह उसके पास ही उसकी गर्मी लेने के लिये बैठ गया और चारों तरफ देखने लगा कि वहाँ वह आग किसने जलायी।

कुछ देर तक इधर उधर देखने के बाद उसे एक स्त्री की आवाज सुनायी। उसने यह देखने की कोशिश की कि वह आवाज कहाँ से आयी तो उसको उस पेड़ की एक शाख के ऊपर एक बुढ़िया बैठी दिखायी दी।

वह वहाँ गठरी बनी बैठी थी और ठंड से काँप रही थी। जैसे ही उसने बुढ़िया को देखा तो बुढ़िया ने उससे इस ठंड में आग से कुछ गर्मी लेने की इजाज़त माँगी। भाई बोला कि "हाँ हाँ क्यों नहीं। आप भी नीचे उतर कर इस आग की गर्मी ले सकती हैं।

वह बोली — "मैं तुम्हारे साथ बैठने से डरती हूँ। मुझे तुम्हारे जानवरों से डर लगता है – तुम्हारा यह भालू भेड़िया कुत्ता और बिल्ली।"

इस पर उसने उसे विश्वास दिलाने की कोशिश की कि उसको उनसे डरने की कोई जरूरत नहीं है। वे उसको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे। पर बुढ़िया को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने

---

[108] Beech tree is native to Europe. Its nuts are edible.

अपने सिर से एक बाल तोड़ा और नीचे फेंकते हुए कहा — "यह लो यह बाल तुम अपने जानवरों की गर्दन में बाँध दो तब मुझे नीचे आने में डर नहीं लगेगा।"

सो भाई ने उसका फेंका हुआ बाल पकड़ कर अपने जानवरों पर फेंक दिया। तुरन्त ही वह बाल एक लोहे की जंजीर में बदल गया जिससे उसने चारों चौपायों को एक साथ कस कर बाँध दिया।

जब बुढ़िया ने देखा कि उसने जो कुछ वह चाहती थी वह कर दिया है तो वह पेड़ से नीचे उतर आयी और आग के पास आ कर बैठ गयी। पहले तो वह उसको बहुत ही छोटी स्त्री लग रही थी पर आग के पास बैठ कर उसने तो साइज़ में बढ़ना शुरू कर दिया।

यह देख कर वह आश्चर्य से चिल्लाया — "आप तो साइज़ में बढ़ रही हैं।"

बुढ़िया बोली — "हा हा हा। नहीं नहीं मेरे बेटे मैं तो बस ज़रा आग की गर्मी ले रही हूँ।"

फिर भी वह बढ़ती ही रही बढ़ती ही रही और बीच के पेड़ की आधी लम्बाई तक बढ़ गयी। वह बकरी चराने वाला उसको आश्चर्यचकित निगाहों से बढ़ते देखता रहा और डरता रहा।

वह बोला — "पर आप तो बड़े भयानक रूप से बढ़ती जा रही हैं। बढ़ती ही जा रही हैं ऊँची और ऊँची।"

वह फिर बोली — "हा हा हा हा। बेटे मैं तो केवल गर्मी ले रही हूँ।"

यह देख कर कि अभी वह सबसे ऊँचे बीच के पेड़ के बराबर तक नहीं हुई थी पर उसकी ज़िन्दगी खतरे में थी उसने चिन्तित हो कर अपने जानवरों से कहा — "ओ मेरे भालू इसको कस कर पकड़ ले। और मेरे भेड़िये तू भी इसको कस कर पकड़ ले। मेरे कुत्ते इसको कस कर पकड़ और मेरी बिल्ली तू भी इसको कस कर पकड़ ले।"

पर उनको इस काम के लिये पुकारना बिल्कुल बेकार था क्योंकि उनमें से कोई भी अपनी जगह से एक कदम भी आगे न बढ़ सका। जब उसने देखा कि उसके जानवर उसकी कुछ सहायता नहीं कर पा रहे हैं तो वह वहाँ से भागने के लिये तैयार हुआ।

पर यह क्या। वह भी अपनी जगह से हिल भी नहीं सका। लगता था जैसे उसके पैर भी किसी जंजीर से बँधे हुए थे।

जब बुढ़िया ने यह देखा कि सब कुछ वैसे ही हो रहा है जैसा कि वह चाहती थी तो वह थोड़ा सा नीचे को झुकी उसके सिर को अपनी छोटी उँगली से छुआ और बोली — "जाओ तुम्हारा सिर खो जाये।" और उसी पल वह राख बन गया।

उसके बाद उसने अपने पैर की छोटी उँगली से उसके जानवर छुए तो वे भी अपने मालिक की तरह से राख हो गये। उस सबको इकट्ठा कर के उसने उसको एक ओक के पेड़ के नीचे गाड़ दिया।

तब उसने अपनी लोहे की जंजीर उठायी तो वह उसके हाथ में आते ही उसके बाल में बदल गयी जिसको उसने अपने सिर में लगा लिया।

यह काम तो उसने पहले बहुत सारे कुलीन नौजवानें और नाइट्स[109] के साथ भी किया था जैसा कि आज उसने इस बेचारे गरीब बकरी चराने वाले के साथ किया। पर उन्होंने अपनी ज़िन्दगी और ज़्यादा अच्छी तरीके से खोयी इस बुढ़िया के बाल की वजह से नहीं।

अब दूसरे भाई का किस्सा सुनो। दूसरा भाई को किसी दूसरी अनजान जगह पर काम करने के बाद बहुत ज़ोर की इच्छा हुई कि वह उस चौराहे के उस ओक के पेड़ के पास जाये जहॉ वह अपने भाइयों से बिछड़ा था और जिसमें वह अपना चाकू गाड़ आया था। वह जानना चाहता था कि उसके दोनों भाइयों का क्या हुआ। क्या उनके चाकू अभी भी वैसे ही उस पेड़ में लगे हुए थे या... ।

जब वह वहॉ पहुॅचा तो उसने देखा कि उसके बड़े भाई का चाकू तो ऐसा का ऐसा ही गड़ा हुआ है पर उसके छोटे भाई का चाकू नीचे गिर पड़ा है। इससे उसको पता चल गया कि उसका छोटा भाई या तो मर चुका है या फिर मौत जैसे खतरे में पड़ा है।

[109] Knight – an honorable position in Imperial army

उसने तुरन्त ही निश्चय किया कि वह वही रास्ता ले कर उसे ढूँढने जायेगा जिसे वह पकड़ कर वहाँ से चला था ताकि वह उसे ढूँढ सके। सो वह उसी सड़क पर चल दिया।

अपने भाई की तरह से वह भी तीसरे दिन सुबह राजा के महल पहुँच गया। वहाँ उसने राजा से विनती की कि वह उसे अपने यहाँ कोई नौकरी दे दे। तो राजा ने उसको भी बकरी पालने का काम दे दिया। वही काम जो उसने उसके छोटे भाई को दिया था।

जब दूसरा भाई राजा की बकरियाँ काफी दिनों तक चरा चुका तो एक दिन वह उनको एक ऊँची पहाड़ी पर ले गया। उसने भी वहाँ एक ऊँचा सा पाइन का पेड़ देखा तो उसको लगा कि वह उस पेड़ पर चढ़ कर चारों तरफ से देखे कि राज्य कैसा दिखता है।

सो वह भी उस पाइन के पेड़ पर चढ़ गया और चारों तरफ देखने लगा। जब उसने वहाँ से थोड़ा सा शहर देख लिया तो उसने देखा कि दूर एक पहाड़ी से बहुत घना धुँआ उठ रहा है तो उसके दिमाग में आया कि उसके भाई शायद वहीं हो।

सो वह भी उस पेड़ से नीचे उतर आया अपनी बकरियों को इकट्ठा किया अपने चारों जानवरों यानी भालू भेड़िया कुत्ता और बिल्ली को साथ में लिया और राजा के पास चल दिया।

जब वह महल पहुँचा तो सीधा राजा के पास गया और उससे विनती की कि वह उसकी तनख्वाह तुरन्त ही दे दे। वह अपने भाइयों को ढूँढने जाना चाहता है। क्योंकि उसने एक पहाड़ पर से

धुँआ उठता देखा है सो उसको लगता है कि उसके भाई वहीं कहीं होंगे।

राजा ने उसको भी बहुत मना किया कि वह वहाँ न जाये क्योंकि वहाँ जो कोई भी गया फिर वापस लौट कर नहीं आया। पर राजा का सब कुछ कहना बेकार ही गया। राजा ने जब यह देखा कि वह मान नहीं रहा है तो उसने उसकी तनख्वाह उसको दे दी और जाने दिया।

वह तुरन्त ही वहाँ से चल दिया और सीधा पहाड़ पर चला गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसको भी आग ढूँढने में बहुत देर लग गयी। आखिर उसने एक बीच के पेड़ के नीचे जलती हुई आग देखी। वह वहीं उसके पास गर्मी लेने के लिये बैठ गया।

उसको आश्चर्य था कि यह आग किसने जलायी होगी क्योंकि उसके आस पास तो कोई दिखायी नहीं दे रहा था।

जब वह आग की गर्मी ले रहा था तो उसने एक स्त्री की आवाज सुनी जो उसके सिर के ऊपर से पेड़ के ऊपर बैठी स्त्री की थी। जब उसने ऊपर देखा तो देखा कि एक स्त्री सिकुड़ी हुई वहाँ बैठी बैठी ठंड से काँप रही थी।

जैसे ही दूसरे भाई ने उसको देखा तो वह बोली कि क्या वह भी नीचे आ कर आग की कुछ गर्मी ले सकती है।

भाई ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आप जब तक चाहें तब तक यहाँ बैठ सकती हैं और इसकी गर्मी ले सकती हैं।"

वह बोली — "पर मुझे तुम्हारे इन जानवरों से डर लगता है। तुम मेरा यह बाल ले लो और इसको अपने चारों जानवरों के ऊपर डाल दो तब मैं नीचे उतरूँगी।"

कह कर उसने अपने सिर से एक बाल तोड़ा और नीचे फेंक दिया। भाई बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला "ये जानवर आपको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे।"

यह जान कर कि शायद जो कुछ उसने कहा वह उसकी समझ में नहीं आया और वह अभी भी नीचे उतरने से डर रही है जैसा उसने उससे कहा था उसने उसका बाल उन चारों जानवरों पर फेंक दिया।

जैसे ही उसने बाल अपने चारों जानवरों पर फेंका तो वह तो लोहे की एक जंजीर बन गया जिसने उसके चारों जानवरों को कस कर बॉध दिया। तब वह स्त्री नीचे उतर कर आयी और आग के पास गर्म होने के लिये बैठ गयी।

जैसे जैसे दूसरा भाई उस स्त्री को अपने आपको गर्म करते देख रहा था तो उसने देखा कि वह स्त्री तो बड़ी और बड़ी होती जा रही है। वह उसको ऐसे ही देखता रहा जब तक वह उस बीच के पेड़ की आधी ऊँचाई तक नहीं पहुँच गयी।

बड़े आश्चर्य के साथ उसे देखते हुए उसने कहा — "ओ मॉ जी आप तो बढ़ती ही जा रही हैं बढ़ती ही जा रही हैं।"

बुढ़िया खाँसते हुए और काँपते हुए बोली — "हा हा हा हा। मेरे बेटे। मैं तो बस ज़रा सी गर्मी ले रही हूँ।"

पर जब भाई ने देखा कि वह तो अब तक इतनी ऊँची हो चुकी थी जितना कि बीच का पेड़। तो वह तो बहुत डर गया और उसने अपने जानवरों को पुकारा — "ओ मेरे भालू भेड़िये कुत्ता और बिल्ली पकड़ो इसको।"

पर वे तो हिलने के भी काबिल नहीं थे क्योंकि वे तो लोहे की जंजीर से कस कर बँधे हुए थे। यह देख कर वह स्त्री नीची हुई और उसने भाई के सिर को अपनी छोटी उंगली से छुआ तो वह तो वहीं राख हो कर गिर पड़ा। जानवरों को भी उसने एक के बाद एक अपने पैर की छोटी उंगली से छुआ तो वे भी राख हो गये।

तुरन्त उस स्त्री ने सारी राख को इकट्ठा किया और एक ओक के पेड़ के नीचे दबा दिया। जैसा कि उसने और बहुत सारे कुलीन जवानों के साथ किया था। यह बड़े दुख की बात है कि वे इस तरीके से मरे यानी केवल एक स्त्री के बाल से। अगर उनको मरना ही था तो किसी और अच्छी तरह से मर सकते थे।

फिर से काफी समय बीत गया लेकिन सबसे बड़े भाई को अपने भाइयों की एक बार भी याद नहीं आयी। वह उस चौराहे पर फिर कभी नहीं गया जहाँ वह अपने भाइयों से आखिरी बार मिला था।

वह एक बहुत ही ईमानदार और भले मालिक के पास काम करता था और वह भी उसको इतनी अच्छी तरह रखता था कि

उसके दिमाग में हमेशा यही रहा कि उसके भाई भी वैसे ही अच्छे तरीके से रह रहे होंगे।

उसका मालिक एक सराय चलाने वाला था और उसका काम वहॉ पर सुबह और शाम ठहरने वालों के बिस्तर ठीक करना था। वह अपना यह काम इतनी अच्छी तरह से कर रहा था कि उसके मालिक ने एक बार यह भी सोच लिया था वह उसे अपने बेटे की तरह से गोद ले लेगा क्योंकि उसके अपने कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन एक बहुत ही कुलीन और अच्छा आदमी उस सराय में ठहरने आया। बड़े भाई ने जब उसे देखा तो उसको लगा कि वह शायद उसका सबसे छोटा भाई था सो उसने उससे उसका नाम पूछना चाहा पर शर्म के मारे वह ऐसा नहीं कर सका।

पहली बात तो उसको यह शर्म आ रही थी कि वह कहीं उससे यह न पूछ ले कि इतने दिनों में तुम उस चौराहे पर क्यों नहीं गये। दूसरे उसके ढंग चाल इतने ऊँचे किस्म के थे उसके कपड़े सिल्क और मखमल के थे जबकि उसने अपने भाई को बड़ी गरीबी की हालत में छोड़ा था और उसका व्यवहार भी कोई सुसंस्कृत नहीं था।

जब वह अपने भाई से उस मेहमान की शक्ल सूरत मिला रहा था तो उसने यह भी सोचा कि शायद दुनियॉ घूमते घूमते उसको कहीं से अक्ल मिल गयी हो।

अक्ल से वह अपने किसी बिज़नस में बहुत सफल हो गया और बहुत पैसा कमा लिया हो। और फिर उस पैसे से तो उसके लिये

इतने बढ़िया कपड़े खरीदना आसान हो गया हो। ऐसा सोचते हुए वह हिम्मत कर के उसके पास जा पहुँचा।

उसने उसके परिवार के बारे में पूछा। फिर उसके अन्दर हिम्मत आ गयी कि उसने उससे पूछ ही लिया कि क्या वह उसका भाई नहीं था। अजनबी ने इस बात को तुरन्त ही मना कर दिया कि नहीं वह उसका भाई नहीं था पर पलट कर उसने उस नौकर से उसके परिवार के बारे में जरूर पूछा।

नौकर ने जो कहानी उसको सुनायी उसे उसने बड़े मन से सुना और मुस्कुराता रहा।

अगली सुबह मेहमान जल्दी ही सराय छोड़ कर चला गया। सुबह को जब नौकर उसके कमरे का बिस्तर बनाने के लिये उसके कमरे में गया तो उसने उसके तकिये के नीचे एक छोटा सा पत्थर रखा पाया।

नौकर ने सोचा कि यह पत्थर शायद बहुत कीमती होगा क्योंकि वह एक अमीर आदमी के पास था फिर भी उसने सोचा कि इतने ज़्यादा अमीर आदमी को तो इस पत्थर की चोरी का क्या अहसास होगा जो सिल्क और मखमल पहनता हो।

यह सोच कर उसने उसको उठा कर अपनी जेब में रखना चाहा पर उससे पहले वह उसे चूमने की इच्छा से उसे अपने होठों तक ले गया। जैसे ही उसने अपने होठ उस पत्थर पर रखे कि दो हब्शी

लोग उसके सामने आ खड़े हुए और बोले — "हमारे लिये क्या हुक्म है सरकार।"

उनके अचानक वहाँ इस तरह से प्रगट हो जाने से वह गड़बड़ा गया और बोला — "मेरा कोई हुक्म नहीं है।"

यह सुन कर वे हब्शी गायब हो गये और उसने वह पत्थर उठा कर अपनी जेब में रख लिया।

अब वह जितना उस भले आदमी के बारे में सोचता उतना ही ज़्यादा वह उस चमत्कारी पत्थर की प्रशंसा करता और सोचता कि वह उसको किस तरह काम में लाये।

धीरे धीरे यह पता करने के लिये कि वे हब्शी उसके लिये क्या कर सकते थे उसने वह पत्थर अपनी जेब से निकाला कर मुँह की तरफ बढ़ाया कि तुरन्त ही वे दोनों हब्शी उसको सामने फिर से प्रगट हो गये और बोले — "आपको क्या चाहिये जनाब।"

उसने तुरन्त कहा — "मुझे बहुत बढ़िया कपड़े चाहिये जिनमें से कोई दो कपड़े एक ही किस्म के न हों।" पल भर में ही वे उसके लिये बढ़िया किस्म के कई जोड़ी कपड़े ले कर आ गये।

वे सब कपड़े इतने बढ़िया थे कि वह तो उनको देख कर यह भी निश्चय नहीं कर सका कि उनमें से कौन सा सूट सबसे ज़्यादा अच्छा था। फिर उसने उन हब्शियों के वहाँ वापस भेज दिया वे उसके पत्थर में चले गये।

उसने उन कपड़ों में से एक जोड़ी कपड़े पहने तो वह उनकी यह भी प्रशंसा कर रहा था कि वे कपड़े उसके ऊपर कितने फ़िट आये थे। वह उनको अभी देख ही रहा था कि सराय का मालिक वहाँ आ गया।

वह अपने नौकर को उतने बढ़िया कपड़े पहने देख कर पहचान नहीं सका सो उससे पूछा — "माफ कीजिये सर आप कहाँ से आये हैं।"

नौकर बोला — "बहुत दूर से नहीं।"

सराय का मालिक बोला — "ज़रा रुकिये सर। मैं अभी अपने नौकर को बुला कर आपसे उसको औंर्डर दिलवाता हूँ।" कह कर वह बाहर की तरफ गया और नौकर को आवाज लगाने लगा।

इस बीच नौकर ने अपने बढ़िया कपड़े उतारे उनको हब्शियों को हवाले किया और अपने पुराने वाले कपड़े पहन कर बाहर वाले कमरे की तरफ भागा। रास्ते में ही उसको भंडार घर खुला मिल गया तो वह उसमें चीज़ों को सँभाल कर रखने का बहाना करने लगा।

उसके मालिक ने देखा कि वह तो काम कर रहा था तो उसने उससे कहा कि वह अपने हाथ का काम छोड़ दे और घर जा कर एक नये मेहमान के लिये काफी बना कर लाये जो अभी सराय में आया था।

पर वह नया मेहमान तो कहीं दिखायी ही नहीं दे रहा था। सराय का मालिक अपने नौकर के साथ उस नये मेहमान को चारों तरफ ढूँढता फिरा पर उसका तो कहीं नामो निशान ही नहीं था।

वह सोचने लगा कि लगता है कोई चोर उसके साथ चालाकी खेल रहा है। उसने अपने नौकर से कहा कि वह आगे से आने जाने वालों का ठीक से ध्यान रखा करे कि कौन सराय में आया कौन सराय से बाहर गया।

नौकर ने उसकी बात ध्यान से सुनी पर अपने भाइयों को याद कर के वह अब अपने भाइयों को देखने के लिये बेचैन हो गया। वह सराय के मालिक के पास गया और उससे कहा कि वह अब काम छोड़ना चाहता है सो उसको उसकी तनख्वाह दे दी जाये।

सराय का मालिक यह सुन कर बहुत दुखी हुआ। उसने उसको उसकी तनख्वाह बढ़ाने का लालच भी दिया कुछ और सुविधाऐं देने के लिये भी कहा पर वह नहीं माना।

यह देख कर कि वह फिर भी रुकने के लिये तैयार नहीं है मालिक ने उसको उसकी तनख्वाह दे दी और उसको वहॉ से जाने की इजाज़त भी दे दी।

वह वहॉ से अपने चारों जानवर यानी भालू भेड़िया कुत्ता और बिल्ली सब ले कर चल दिया। काफी समय चलने के बाद वह अपनी खुशकिस्मती से उस चौराहे पर आ गया जहॉ वह अपने भाइयों से अलग हुआ था।

तुरन्त ही वह उस ओक के पेड़ की तरफ दौड़ा जिस पर उन तीनों ने अपने अपने चाकू गाड़े हुए थे। देखते ही कि उसके दोनों भाइयों के दोनों चाकू नीचे गिरे पड़े हैं वह दुख के सागर में डूब गया। उसको यकीन हो गया था कि या तो उसके भाई मर गये हैं ओर या फिर किसी भारी मुसीबत में पड़ गये हैं।

इस मुसीबत के समय में वह उस बाल और पत्थर के बारे में बिल्कुल ही भूल गया जो उसके पास थीं। उसने अपने भाइयों को ढूँढने का पक्का इरादा कर लिया था सो उसने सबसे पहले वह रास्ता चुना जो अलग होते समय उसके सबसे छोटे भाई ने लिया था।

जब वह जा रहा था तो उसको उस बाल की याद आयी जो उसे पंखों वाले घोड़े ने दिया था और उस पत्थर की याद आयी जो उसने मेहमान के तकिये के नीचे से उठाया था। वह अपने भाइयों के लिये इतना ज़्यादा दुखी था कि इनसे उसको कुछ तसल्ली नहीं मिली।

कुछ समय तक चलने के बाद वह एक महल के पास आ पहुँचा। वहाँ के चौकीदारों ने उससे पूछा कि क्या वह राजा की बकरियों की देखभाल करेगा।

उसने कहा कि वह करेगा बशर्ते कि राजा उसे उसके दोनों भाइयों के बारे में कुछ बता सके जो इधर से वैसे ही चारों जानवरों के साथ इधर से गुजरे हों जैसे उसके पास हैं।

राजा ने कहा कि उसके राज के समय में तो ऐसा कोई आदमी वहाँ से नहीं गुजरा। और यह सच भी था क्योंकि वह अभी हाल ही में राजगद्दी पर नया नया बैठा था। पुराना राजा जिसके राज में उसके दोनों भाई वहाँ से गुजरे थे वह अभी हाल ही में मर गया था।

हालाँकि बड़े भाई को यहाँ से अपने दोनों छोटे भाइयों का कोई पता न चल सका उसने तय किया कि वह कुछ समय वहीं रहेगा और राजा का बकरियों की देखभाल करने वाले की हैसियत से उसका काम करेगा।

जब जब वह राजा की बकरियाँ चराने के लिये बाहर जाता तो चारों तरफ निगह डालता जाता कि शायद कहीं उसको अपने भाइयों के कोई निशान मिल जायें। क्योंकि हालाँकि उन दोनों के चाकू पेड़ से नीचे गिर पड़े थे फिर भी उसको अभी भी यही विश्वास था कि वे अभी मरे नहीं हैं।

एक दिन ऐसे ही जब वह बकरियों को लिये घूम रहा था तो उसको एक बूढ़ा मिला जो अपने कन्धे पर कुल्हाड़ी रखे लकड़ियाँ काटने जंगल जा रहा था।

उसने उससे पूछा कि क्या उसने उसके दो भाई देखे हैं। बूढ़ा बोला — "कौन जाने। हो सकता है कि वे उसी पहाड़ पर खो गये हों जिस पहाड़ पर न जाने कितने लोगों की जानें गयी हैं। तुम अपनी बकरियों को चराने के लिये उस वाले पहाड़ पर ले जाओ। वहाँ से तुम्हें एक उससे भी ऊँचा पहाड़ दिखायी देगा।

उस पहाड़ से हमेशा धुँआ निकलता रहता है उस पहाड़ पर बहुत सारे आदमी खो गये हैं हो सकता है कि तुम्हारे भाई भी वहाँ नष्ट हो गये हों। फिर भी मैं तुम्हें एक भली सलाह देना चाहूँगा कि तुम उस पहाड़ पर जहाँ से धुँआ निकल रहा हो वहाँ किसी भी हालत में न जाना।

मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ पर जहाँ तक मुझे याद पड़ता मैंने कभी किसी को वहाँ से लौटते नहीं देखा। इसलिये अगर तुम्हें अपनी ज़िन्दगी प्यारी हो तो उस पहाड़ पर कभी मत जाना।"

यह कह कर बूढ़ा वहाँ से चला गया।

बकरियों की देखभाल करने वाला अपनी बकरियों के साथ उस पहाड़ पर चल दिया जिस पर जाने के लिये बूढ़े ने उससे कहा था। उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच कर उसको वह पहाड़ दिखायी दे गया जिस पर बूढ़े ने बताया था कि उस पर से हमेशा धुँआ निकलता रहता है।

उसने यह जानने की कोशिश की कि क्या वहाँ पर कोई ज़िन्दा प्राणी रहता है या नहीं। पर उसको वहाँ ऐसा कोई निशान मिल जाये जिससे पता चल सके कि वहाँ कोई ज़िन्दा प्राणी रहता है। वह काफी देर तक सोचता रहा कि वह वहाँ जाये या नहीं। पर फिर बाद में उसने यही निश्चय किया कि उसको वहाँ जाना ही चाहिये।

शाम को जब वह बकरियाँ ले कर घर वापस लौट आया तो उसने राजा से अपना इरादा बताया।

राजा ने भी उसको वहाँ जाने से बहुत मना किया। उसकी तनख्वाह बढ़ाने का भी वायदा किया अगर वह उसके पास ठहर गया तो। पर कुछ भी उसको उसके इरादे से वह न डिगा सका। सो राजा ने उसको तब उसकी तनख्वाह दे दी और उसको विदा किया।

पहाड़ पर आ कर जब वह आग वाली जगह आया तो उसको उसे देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि यह आग यहाँ किसने जलायी।

वह ऐसा सोच ही रहा था कि उसे एक स्त्री की आवाज सुनायी पड़ी — "ए ए।"

आवाज सुन कर उसने ऊपर देखा तो देखा तो देख कर फिर आश्चर्य करने लगा कि ऊपर तो बीच के पेड़ की एक शाख पर एक बुढ़िया सिकुड़ी सी बैठी थी। उसके बाल उसके शरीर की लम्बाई से भी लम्बे थे और बर्फ की तरह सफेद थे।

जब उसने ऊपर देखा तो वह बोली — "बेटा मुझे बहुत ठंड लग रही थी। मैं थोड़ी गर्मी लेना चाहती थी सो मैंने यह आग खुद जलायी पर जब मैंने तुम्हें इन जानवरों के साथ आते देखा तो मैं बहुत डर गयी और डर के मारे इस पेड़ पर चढ़ कर बैठ गयी। मुझे तुम्हारे इन जंगली जानवरों से बहुत डर लगता है।"

भाई बोला — "पर अब आप यहाँ आ कर बैठ सकती हैं और अपने आपको गर्म रख सकती हैं।"

वह बोली — “इस तरह से मैं नीचे आने की हिम्मत नहीं कर सकती। तुम्हारे कुत्ते मुझे काट लेंगे। हॉ एक काम हो सकता है कि मैं तुम्हें यह बाल फेंक रही हूॅ इससे तुम अपने कुत्तों को बॉध देना तभी मैं नीचे उतर सकती हूॅ।”

बड़े भाई ने सोचा कि “यह तो एक अकेला बाल है अगर यह बाल मेरे भालू भेड़िये कुत्ते और बिल्ली को बॉध सकता है तो पता नहीं और क्या क्या कर सकता है।” सो उसने उससे बाल ले लिया और उससे बजाय जानवरों के बॉधने के उसे आग में फेंक दिया।

इस बीच बुढ़िया नीचे उतर आयी और दोनों आग के पास बैठ गये पर भाई ने अपनी नजर उस पर से नहीं हटायी। वह उसकी तरफ टकटकी लगा कर देखता ही रहा।

बहुत जल्दी ही उसने बढ़ना शुरू कर दिया और थोड़ी ही देर में वह तो 10 गज तक ऊॅची हो गयी। तब उसे लकड़हारे के शब्द याद आये तो वह तो डर के मारे कॉपने लगा। उसके मुॅह से बस इतना ही निकला “यह क्या आंटी आप इतना कैसे बढ़ रही हैं?”

बुढ़िया बोली — “अरे नहीं नहीं यह तो मैं केवल आग की गर्मी ले रही हूॅ।”

वह अभी भी बढ़ती ही जा रही थी। जब वह बीच के पेड़ के बराबर लम्बी हो गयी तो भाई फिर बोला — “आप इतनी कैसे बढ़ रही हैं आंटी?”

बुढ़िया फिर से वही बोली — "नहीं नहीं मेरे बेटे मैं तो केवल गर्मी ले रही हूँ।"

पर उसको पता चल गया कि वह बुढ़िया उसके साथ चाल खेल रही है सो वह अपने साथियों को पुकार कर चिल्लाया — "ओ मेरे साथियो भालू भेड़िया कुत्ता और बिल्ली सब मिल कर इसको पकड़ कर नीचे खींच लो।"

यह सुनते ही सब उस बुढ़िया के ऊपर टूट पड़े और उसको फाड़ खाने लगे। यह देख कर कि वह अब अपने लिये कुछ नहीं कर सकती थी उसने भाई से विनती की कि वह उसको अपने उन गुस्से भरे जानवरों से बचा ले। वह उसको वह सब कुछ देगी जो कुछ भी वह उससे माँगेगा।

तुरन्त ही वह बोला — "आप मेरे दानों भाइयों को उनके साथी जानवरों के साथ वापस दे दें और साथ में उन लोगों को भी जिनको आपने अब तक मारा है। इसके अलावा मुझे 10 बोरे भर कर डकैट[110] चाहिये। अगर आप मेरी इन माँगों को पूरा नहीं करेंगी तो मैं अपने जानवरों को वापस नहीं बुलाऊँगा।"

बुढ़िया इन सब बातों के लिये तैयार हो गयी पर बोली — "मैं यह सब करूँगी पर मैं एक आदमी को ज़िन्दा नहीं कर सकती। क्योंकि जब मैंने उसे राख में बदला था तो मैंने उससे कहा था कि जब तुम ज़िन्दा होगे तब मैं तुम्हारी जगह लेट जाऊँगी।"

---

[110] Ducat was a European currency in those times

इसलिये उसे डर था कि जब वह आदमी ज़िन्दा होगा तो वह खुद मर जायेगी।

बड़े भाई को लगा कि वह बुढ़िया अभी भी उसके साथ चाल खेल रही थी सो उसने उसकी बात नहीं मानी। बुढ़िया ने देख लिया कि वह किसी तरह भी अपने आपको नहीं बचा पा रही है।

तो आखिर वह बोली — "उस पेड़ के नीचे से थोड़ी सी राख ले लो और उसको अपने और अपने जानवरों के ऊपर फेंक दो और जब तुम ऐसा करो तो बोलना "उठो मिट्टी और राख। जैसा मैं अब हूँ वैसे ही तुम भी हो जाओ।"

यह तो बहुत बड़ा आश्चर्य हो गया। जैसे ही उसने यह किया जैसा कि उसने कहा था तो वहाँ तो 10 हजार से भी ज़्यादा लोगों की भीड़ उठ खड़ी हुई।

पेड़ के नीचे से इतने सारे लोगों को आते देख कर वह तो आश्चर्य के मारे हिल भी न सका। फिर उसने उन सबको समझाया कि क्या हुआ था। सो सब लोगों ने उसको धन्यवाद दिया। पर कुछ लोगों को तो अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था। वे बोले "अच्छा होता अगर तुमने हमें न जगाया होता।"

उाके बाद वे सब झुंडों में बँट कर चले गये। कुछ किसी रास्ते से कुछ किसी रास्ते से। अब वहाँ उसके दो भाई खड़े रह गये। हालाँकि काफी देर तक तो उनको भी विश्वास नहीं हुआ कि वह

उनका भाई था। पर उनके जानवरों ने उसको पहचान लिया था क्योंकि ऐसे जानवरों को रखने वाला और कोई नहीं था।

तीनों भाइयों ने एक दूसरे को पहचान कर एक दूसरे को गले लगाया और सब बहुत खुश हुए। फिर उन्होंने बुढ़िया के दिये हुए डकैट आपस में बॉट लिये और उनको अपने अपने जानवरों पर लाद लिया।

उसके बाद वे तीनों अपने घर चले गये जहॉ वे पैदा हुए थे और जहॉ उनके माता पिता मरे थे।

जहॉ तक बुढ़िया का सवाल था जब आखिरी आदमी वहॉ से उठा था वह तो तभी वहीं उसके उठने के बाद ही राख बन कर गिर गयी।

X X X X X X X

घर पहुॅच कर तीनों भाइयों ने अपने रहने के लिये तीन महल बनाये और कुछ समय के लिये उनमें बिना शादी किये ही रहते रहे। कुछ दिन बाद उन्होंने सोचा कि मरने के बाद उनकी जायदाद आदि का क्या होगा। यह तो बड़ी बुरी बात होगी अगर वह बिना किसी वारिस के मर गये तो।

उन्होंने आपस में विचार किया कि अब उनको शादी कर लेनी चाहिये ताकि वे अपनी सम्पत्ति अपने बेटे बेटियों के लिये छोड़ कर जा सकें।

सबसे बड़ा भाई बोला — “ठीक हैं मैं हम लोगों के लिये जितनी अच्छी दुलहिनें मैं देख सकता हूँ देख कर लाता हूँ। इस बीच तुम लोग यहीं रहो और हमारी जायदाद की देखभाल करो।”

दोनों छोटे भाई इस बात पर तुरन्त ही राजी हो गये क्योंकि अब तक उसने उनको काफी अच्छी तरह से साबित कर दिया था कि वह उन तीनों में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द था। उन्होंने भी यह सोच लिया था कि वह उनके लिये यह मामला ठीक से सुलझा सकेगा।

सो उसने अपनी जरूरत की सब चीजें बाँधी और अपनी दुलहिनों की खोज के लिये यात्रा पर रवाना हो गया। दोनों छोटे भाई घर पर ही रहे।

काफी देर तक यात्रा करने के बाद वह एक बड़े शहर में आया और निश्चय किया कि वह रात को वहीं रहेगा और सुबह अपनी यात्रा शुरू करेगा।

अब हुआ यह कि उस देश के राजा ने एक घुड़दौड़ का इन्तजाम किया हुआ था। उसके एक अकेली बेटी थी। उसने यह कहा हुआ था कि जो उस घुड़दौड़ मैं जीत जायेगा वह अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर देगा और उनको 10 बोरे भर कर खजाना देगा।

उसी शाम भाई उस शहर में आया था और तभी उसने राजा की यह मुनादी सुनी कि जिस किसी के पास भी घोड़ा हो वह इस दौड़ में

हिस्सा ले सकता है सो वे सब कल शाही मैदान में आयें और फिर जो कोई भी सबसे पहले गड्ढा कूद कर उसे पार करेगा राजा उसको अपनी बेटी और **10** बोरे भर कर सोना देगा। उसने वह मुनादी सुनी पर कहा कुछ नहीं।

अगली सुबह वह घुड़दौड़ देखने के लिये राजा के मैदान में गया तो वह वहाँ क्या देखता है कि वहाँ तो बहुत किस्म के घोड़े खड़े हुए हैं। कुछ देर बाद ही वहाँ राजकुमारी आयी जिसके पीछे पीछे **10** बोरे सोना था।

जब उसने राजकुमारी को देखा तो उसको वह इतनी सुन्दर लगी कि उसको और अच्छी तरह से देखने के लिये वह भीड़ से हट कर दूसरी तरफ चला गया।

उस समय उसको अपने पत्थर की याद आयी। उसने उसको जेब से निकाला और होठों की तरफ ले गया कि तुरन्त ही दो हब्शी उसके सामने प्रगट हो गये और बोले — "मालिक क्या हुक्म है।"

वह बोला — "मुझे सिल्क और मखमल के कपड़े ला कर दो। वेशकीमती हीरे जवाहरात ला कर दो और **10** बढ़िया घोड़े ला कर दो और यह सब जल्दी से जल्दी ला कर दो।"

उसने दो बार भी अपनी पलकें नहीं झपकायी थी कि उन दोनों हब्शियों ने उसका मँगाया हुआ सब सामान ला कर रख दिया।

फिर उसने बाल निकाला और एक चकमक पत्थर से आग जला कर उसे उसमें डाल दिया। बाल को आग में डालते ही तुरन्त वही

हल्के सफेद रंग का घोड़ा वहाँ प्रगट हो गया जिसने उसको अपना बाल दिया था।

वह बोला — "मालिक क्या हुक्म है।"

भाई बोला — "आज एक घुड़दौड़ है और मैं चाहता हूँ कि हम सब घोड़ों को उस दौड़ में पीछे छोड़ दें ताकि मैं राजा की बेटी ले सकूँ। इसलिये इस काम के लिये तैयार हो जाओ और बस जल्दी से चलो क्योंकि दूसरे घोड़े भागने के लिये तैयार हैं।"

जैस ही भाई ने यह कहा कि वह घोड़ा दौड़ने के लिये तैयार हो कर जमीन में अपने पैर गड़ा कर खड़ा हो गया। भाई उसके ऊपर सवार हो गया और मैदान की तरफ चल दिया।

दूसरे दौड़ वालों ने उससे कुछ पल पहले है अपनी दौड़ शुरू कर दी थी सो वे शुरू होने की लाइन से पहले ही काफी दूर जा चुके थे। पर उसके घोड़े ने पल भर में ही उनको पकड़ लिया और दूसरे पल में ही उनको काफी पीछे छोड़ दिया।

जब वह गड्ढे के पास पहुँचा जो 105 गज गहरा था और 100 गज चौड़ा था तो उसने इतनी लम्बी और ऊँची कूद लगायी कि वह गड्ढे के 50 गज दूर जा कर उतरा।

उसके बाद वह वापस आया राजकुमारी को अपने घोड़े पर बिठाया लिया सोने के बोरे उठाये और वहाँ से चल दिया।

जब सब लोगों ने उसे देखा तो उसके लिये आश्चर्य करने और प्रशंसा करने लगे कि यह नाइट कौन सा है जिसने इतने सारे बढ़िया

घोड़ों को पीछे छोड़ कर राजकुमारी और सोने को जीत लिया। मगर वह तो अब तक जा चुका था।

घोड़े को भगाता भगाता वह शहर से दूर एक जंगल के पास आ गया। वहाँ आ कर उसने अपने घोड़े को छोड़ दिया जब तक के लिये जब तक उसकी उसको दोबारा जरूरत पड़ती। फिर उसने अपने बढ़िया वाले कपड़े उतारे अपने पुराने वाले कपड़े पहन कर राजकुमारी को ले कर वहाँ से चल दिया।

शाम को वह किसी दूसरे अजनबी शहर में पहुँचा तो वहाँ एक सराय में ठहर जाने का निश्चय किया।

वहाँ पहुँच कर उसने सराय वाले से सुना कि उस दिन उस शहर में वहाँ के राजा ने मुनादी पिटवायी थी कि जिस किसी के पास बहुत बढ़िया घोड़ा हो वह कल घुड़दौड़ के लिये शाही मैदान में आ जाये और जो जीतेगा राजा उसी से अपनी एकलौती बेटी से शादी कर देगा और साथ में उसको 100 पौंड[111] सोना और जवाहरात देगा।

पर रास्ते में एक गड्ढा था जो 350 गज गहरा और 150 गज चौड़ा था। दौड़ के साथ साथ उसको वह भी पार करना था।

यह सुन कर वह बहुत खुश हुआ। उसको यकीन था कि वह यह दौड़ भी जीत जायेगा।

---

[111] Translated for the word “Hundred-weight”. It is a measurement of weight. In Imperial System it is equal to 100 pounds; and in Metric system it equals to 50 Kg.

अगली सुबह पत्थर और चमत्कारी बाल की सहायता से वह फिर से बढ़िया कपड़े पहन कर अपने बढ़िया सफेद घोड़े पर सवार हुआ और शाही घुड़दौड़ के मैदान में पहुँच कर दूसरे दौड़ वालों के साथ जा कर खड़ा हो गया।

हर आदमी को आश्चर्य था कि यह नाइट किस देश से आया था। वे सब उसकी पोशाक देख कर बहुत खुश हो रहे थे और उसके घोड़े की तारीफ करते तो थक ही नहीं रहे थे।

जब घुड़दौड़ की घंटी बजी तो वह जानबूझ कर कुछ पल पीछे रह गया। उसको पता था कि इस बात से उसके घोड़े को कोई फर्क नहीं पड़ता था क्योंकि वह तो एक पल में ही उन सबको पीछे छोड़ कर आगे निकल जाता।

आखिर उसने दौड़ शुरू की तो पल भर में ही उसने वहाँ मौजूद सबसे तेज़ दौड़ने वाले घोड़े को पछाड़ कर वह गड्ढे के पास तक आ पहुँचा। वहाँ से उसने जो छलाँग लगायी तो ऐसे लगायी जैसे वह छलाँग उसके लिये कुछ भी नहीं थी।

फिर बिना एक मिनट का इन्तजार किये हुए उसने राजकुमारी को उठाया और सीधे उस शहर चला गया जहाँ वह पहली राजकुमारी को उसके सोने के साथ छोड़ गया था।

दोनों राजकुमारियों और उनके साथ मिली हुई सम्पत्ति को साथ ले कर उसने सोचा कि अब उसको घर वापस जाना चाहिये सो वह अपने घर की तरफ चल पड़ा।

रास्ते में वह फिर से एक बड़े शहर से गुजरा। वहॉ पहुॅचते पहुॅचते उसको रात हो गयी थी तो रात को उसने वहीं ठहरने का विचार किया।

इत्तफाक से वहॉ भी मुनादी पीटने वाला सारा दिन यही मुनादी पीटता रहा कि “कल एक घुड़दौड़ हो रही है उसे जो कोई जीतेगा उससे राजा अपनी बेटे की शादी कर देगा और उसको **1500** पौंड सोना देगा। पर रास्ते में एक गड्ढा है जो **1000** गज गहरा है और **450** गज चौड़ा है। उसको वह भी पार करना पड़ेगा।

यह सुन कर भाई बहुत खुश हुआ क्योंकि वह जानता था कि यह काम तो वह बड़ी आसानी से कर लेगा। कोई और घोड़ा उसके घोड़े का मुकाबला कर ही नहीं सकता था।

अगले दिन उस छोटे पत्थर और घोड़े के बाल की सहायता से उसने **15** बढ़िया घोड़ों का औॅर्डर दिया ताकि वह जीते हुए सोने को उनके ऊपर लाद कर ले जा सके जिसके लिये उसको पूरा यकीन था कि वह उसे जीत लेगा।

हब्शियों से उसने कहा कि वे उसके लिये इतने बढ़िया कपड़े ले कर आये जिन्हें कोई राजा भी न खरीद सकता हो। इस तरह से तैयार हो कर अपने बढ़िया घोड़े पर सवार हो कर घुड़दौड़ के शाही मैदान में पहुॅचा।

अब तो बस सारे संसार में वह ही वह दिखायी दे रहा था और कोई नहीं। सारे दौड़ने वाले दौड़ने के लिये तैयार खड़े थे।

दौड़ के शुरू शुरू में वह थोड़ा इधर उधर घूमता रहा जबकि बाकी लोग बाज़ की तरह से वहॉ से भाग लिये। वह चाहता था कि हर एक को यह पता चले कि वह सबसे बाद में दौड़ा था ताकि बाद में कोई यह न कह दे कि उसने धोखा दिया था।

जब सब लोग काफी दूर निकल गये तब उसने भागना शुरू किया और पल भर में ही जा कर उनके साथ हो लिया।

अगले पल ही वह उनको बहुत पीछे छोड़ कर बहुत आगे निकल गया। पर ऐसा कैसे हुआ? कौआ कबसे बाज़ को पीछे छोड़ने लगा?

जब वह गड्ढे के पास पहुँचा तो उसने घोड़े की लगाम को ज़रा सा छुआ घोड़ ने छलॉग मारी और सुरक्षित रूप से गड्ढे के उस पार पहुँच गया। बस तुरन्त ही उसने राजकुमारी और सोने को लिया और शहर वापस चला गया।

तीन राजकुमारियॉ और इतना बड़ा खजाना जीत कर वह सीधा घर चल दिया। रास्ते में उसे जो कोई मिला उसी ने उससे पूछा — "कहॉ जा रहे हो? क्या ये लड़कियॉ बेचने के लिये हैं?" क्योंकि वे लड़कियॉ सब बहुत सुन्दर थीं।

जब वह उनको ले कर घर पहुँचा तो सब लोगों के साथ साथ उसके दोनों भाई भी उनको देख कर बहुत खुश थे। वे उस खजाने को पा कर जो वे सब ले कर आयी थीं उससे आधे भी खुश नहीं थे

जितना कि राजाओं की सुन्दर लड़कियों की सुन्दरता से खुश थे जो उनका भाई उनके लिये ले कर आया था।

इस तरह तीनों भाइयों ने एक एक राजकुमारी से शादी कर ली। सबसे बड़े भाई ने जो सबसे ज़्यादा अक्लमन्द था सबसे छोटी वाली लड़की से शादी कर ली जो सबसे सुन्दर थी।

25 जानवर दोस्त भी और दुश्मन भी[112]

बहुत पुराने समय में एक बार की बात है कि किसी दूर देश में एक कुलीन नौजवान रहता था जो बहुत ही गरीब था। वह इतना गरीब था कि उसकी सम्पत्ति में उसके पास केवल एक पुराना किला था एक सुन्दर घोड़ा था, एक वफादार हाउंड कुत्ता[113] था और एक राइफल थी।

यह कुलीन नौजवान अपना सारा समय शिकार में बिताया करता था और उसी से जो कुछ उसके हाथ लग जाता था अपना गुजारा करता था।

एक दिन वह अपने बढ़िया घोड़े पर चढ़ा और पास के जंगल में शिकार के लिये चला गया। उसके साथ में उसका वफादार कुत्ता भी था। जब वह जंगल में पहुँचा तो वह वहाँ अपने घोड़े से उतर गया और उसको एक छोटे से पेड़ से सुरक्षित बाँध दिया और झाड़ियों के पीछे शिकार ढूँढने चला गया।

उसका कुत्ता अपने मालिक से आगे आगे भागा जा रहा था। अब घोड़ा अकेला रह गया। वह शान्ति से घास चरता रहा।

अब हुआ यह कि कहीं से एक भूखी लोमड़ी उधर आ निकली। उसने देखा कि यह तो खाया पिया तन्दुरुस्त जानवर है।

---

[112] Animals as Friends and as Enemies (Tale No 25)

[113] Hound dog is a very good hunting dog.

वह उसको इतना सुन्दर लगा कि वह उसको देखती की देखती रह गयी। यह देख कर वह उसके पास ही घास पर लेट गयी ताकि वह कुछ देर उसके पास रह सके।

कुछ देर बाद नौजवान जंगल से एक बारहसिंगा मार कर वापस आया तो उसने अपने घोड़े के पास एक लोमड़ी को लेटे देखा तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने अपनी राइफल निकाली और उसको मारने के लिये निशाना लगाया।

पर लोमड़ी तुरन्त ही वहॉ से उठ कर उसके पास भागी और बोली — "मेहरबानी कर के मुझे मत मारो। तुम मुझे अपने साथ रख लो मैं तुम्हारी वफादारी से सेवा करूँगी। जब तुम शिकार करने जाओगे तो मैं तुम्हारे इतने बढ़िया घोड़े की ठीक से देखभाल करूँगी।"

लोमड़ी इतनी दीनतापूर्वक बोली कि नौजवान का दिल पिघल गया। उसके लिये उसके दिल में दया आ गयी। उसने उसका कहा मान लिया। वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपने आगे अपना मारा हुआ बारहसिंगा रखा और अपने किले को लौट चला। उसके पीछे पीछे उसका कुत्ता और नयी नौकर लोमड़ी भी चली।

जब कुलीन नौजवान ने अपना रात का खाना बनाया तो वह लोमड़ी को उसका हिस्सा देना नहीं भूला। वह भी बहुत खुश थी कि अब वह कभी भूखी नहीं रहेगी। कम से कम तब तक तो नहीं

रहेगी जब तक वह इस बढ़िया नौजवान शिकारी की नौकरी करती रहेगी।

अगली सुबह वह नौजवान फिर से शिकार पर चला। लोमड़ी भी उसके साथ थी। हर बार की तरह से वह अपने घोड़े से उतरा उसने अपना घोड़ा एक पेड़ से बॉधा और पास की झाड़ियों में शिकार ढूॅढने चला गया। लोमड़ी घोड़े के पास लेट गयी।

शिकारी के जाने के बाद वहॉ एक भूखा भालू आया जहॉ घोड़ा बॅधा हुआ था। यह देख कर कि वह घोड़ा कितना मोटा था उसको मारने के लिये दौड़ा।

यह देख कर लोमड़ी उछली और भालू से बोली — "मेहरबानी कर के घोड़े को कोई नुकसान मत पहॅुचाओ। अगर तुम बहुत भूखे हो तो मालिक के वापस आने तक इन्तजार करो। वह तुम्हें बहुत सारा खाना देंगे।"

लोमड़ी को पूरा विश्वास था कि दयालु राजकुमार उसको भी अपने किले ले जायेगा और उसका अच्छी तरह ख्याल रखेगा जैसे वह अपने घोड़े कुत्ते और उसका खुद का रखता है।

भालू ने उसकी इस सलाह पर विचार किया और आखिर में उसकी सलाह मानने का विचार किया। सो वह भी घोड़े के पास शान्ति से लेट गया।

जब शिकारी जंगल से बाहर आया तो वह एक बड़े से भालू को अपने घोड़े के पास लेटा हुआ देख कर फिर से आश्चर्यचकित रह

गया। उसने अपना मारा हुआ बारहसिंगा जो उसके कन्धे से लटक रहा था नीचे रख दिया और उस जंगली जानवर को मारने लिये अपनी राइफल उठा ली।

यह देख कर लोमड़ी तुरन्त ही शिकारी के पास पहुँची और भालू की ज़िन्दगी की भीख माँगने लगी। उसने कहा कि वह उसे घर ले चले वह भी उसकी सेवा करेगा।

कुलीन आदमी राजी हो गया। वह अपने घोड़े पर चढ़ा अपने मारे हुए बारहसिंगे को अपने आगे रखा और अपने किले चल दिया। उसके पीछे पीछे उसका कुत्ता लोमड़ी और नया नौकर भालू भी चल दिया।

अगली सुबह जब शिकारी शिकार के लिये फिर से जंगल चल दिया तो फिर से रोज की तरह उसने अपने घोड़े को पेड़ से बाँधा और कुत्ते को साथ ले कर शिकार के लिये जंगल चला गया। लोमड़ी और भालू घोड़े के पास लेट गये।

तभी एक भूखा भेड़िया उधर आ निकला। इतना खाया पिया मोटा घोड़ा देख कर उसके मुँह में पानी आ गया। वह उसको खाने के लिये कूदा तो लोमड़ी और भालू दोनों उससे बोले कि वह उस घोड़े को न खाये बल्कि उनके मालिक के आने का इन्तजार करे। उनका मालिक बहुत दयालु था वह उसको भी अपनी सेवा में रख लेगा।

यह सुन कर भेड़िये को लगा कि उनकी सलाह मानना ही ठीक था सो वह भी घोड़े के पास ही लेट गया और शिकारी का इन्तजार करने लगा।

अब तुम सोच सकते हो कि शिकारी वहाँ एक भेड़िये को अपने घोड़े के इतने पास लेटा देख कर कितना आश्चर्य कर रहा होगा।

पर जब लोमड़ी ने उसको सब मामला समझाया तब वह थोड़ा शान्त हुआ और भेड़िये को भी अपनी सेवा में रख लिया।

इस तरह इस दिन यह हुआ और शिकारी चार जानवरों को साथ ले कर घर चल दिया – कुत्ता लोमड़ी भालू और नया नौकर भेड़िया।

अब क्योंकि सभी बहुत भूखे थे तो जो बारहसिंगा शिकारी ने मारा था वह सबके लिये न तो रात के खाने के लिये काफी था और न ही सुबह नाश्ते के लिये ही काफी था।

कुछ दिन के बाद एक चूहा भी उनके झुंड में शामिल कर लिया गया। और उसके बाद एक मोल ने इतनी ज़्यादा विनती कि शिकारी का दिल उसको लेने के लिये मना नहीं कर सका।

आखीर में आयी एक चिड़िया – कुमरेकुशा[114]। यह चिड़िया इतनी बड़ी होती है कि यह अपने पंजों में किसी घोड़े को उसके सवार सहित उठा कर ले जा सकती है।

---

[114] Kumrekusha – a very big bird

कुछ और दिन बीते तो फिर एक बड़ा खरगोश[115] भी आ गया।

यह कुलीन नौजवान इन सबको ठीक से खाना खिलाया करता था और उनका बहुत ख्याल रखता था सो सारे जानवर उसको बहुत प्यार करते थे।

एक दिन लोमड़ी ने भालू से कहा — "ओ मेरे अच्छे ब्रुइन[116]। जा और जा कर जंगल से एक अच्छा बड़ा सा लट्ठा ले आ जिस पर मैं ठीक से बैठ सकूँ। आज मैं एक मीटिंग करना चाहती हूँ जिसमें मुझे तुम लोगों से कुछ खास बातें करनी है।"

ब्रुइन को लोमड़ी की होशियारी और उसकी प्रबन्ध करने की ताकत पर बहुत भरोसा था सो एक लट्ठा लाने के लिये वह तुरन्त ही चला गया। और जल्दी ही एक भारी लट्ठा ले कर वापस भी आ गया। लोमड़ी उस लट्ठे से बहुत खुश थी।

तब उसने दूसरे जानवरों को बुलाया और उस लट्ठे पर बैठ कर सब जानवरों से बोली — "तुम सब जानते हो कि हमारे मालिक कितने अच्छे और दयालु मालिक हैं। हालाँकि वह इतने अच्छे और दयालु हैं पर वह अकेले भी हैं। तो मुझे यह कहना है कि क्यों न हम उनके लिये उनके लायक कोई दुलहिन ढूँढें।"

---

[115] Translated for the word "Hare". Hare is a little bit bigger in size than normal rabbit. See its picture above.

[116] Bruin – name of the bear

सारे जानवर यह सुन कर बहुत खुश हुए। सब एक साथ बोले — "वाह यह तो बड़ी अच्छी बात है। काश हम यह जानते कि उनके लायक दुलहिन कौन सी है जो कि हम लोग नहीं जानते।"

लोमड़ी बोली — "मुझे मालूम हे। यहाँ के राजा की बेटी बहुत सुन्दर है। मैं सोचती हूँ कि हम उसक बेटी को उठा लायें। मेरी सलाह यह है कि कुमरेकुशा राजा के महल की तरफ जाये और वहाँ तब तक उड़ती रहे जब तक राजा की बेटी महल के बाहर घूमने के लिये न आ जाये। जब वह बाहर आये तो बस तुरन्त ही उसे उठा कर हमारे पास ले आये।"

कुमरेकुशा तो अपने मालिक से इतनी खुश थी कि वह अपने मालिक के लिये कुछ भी करने के लिये तैयार थी। सो वह सब जानवरों का इस बारे में आखिरी फैसला सुने बिना ही वहाँ से उड़ कर भाग गयी।

शाम होने से थोड़ी देर पहले ही राजकुमारी घूमने के लिये अपने पिता के महल से बाहर बागीचे में आयी। बस बड़ी चिड़िया ने उसको अपने पंजों से उठा लिया और कुलीन नौजवान के किले में उठा कर ले आयी।

राजा ने जब यह सुना कि उसकी बेटी को कोई उठा कर ले गया है तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने राज्य भर में जो कोई भी राजकुमारी को ढूँढ कर लायेगा या यह बतायेगा कि वह कहाँ खोजी जा सकती है उसको इनाम दिये जाने का ढिंढोरा पिटवा दिया।

काफी दिनों तक जब उसका कोई पता न चला तो वह राजकुमारी की तरफ से बहुत नाउम्मीद हो गया तो एक जिप्सी बुढ़िया[117] उसके पास आयी और उससे पूछा — "राजा साहब आप मुझे क्या देंगे जो मैं आपकी बेटी को ढूँढ लाऊँ?"

राजा तुरन्त बोले — "अगर तुम मुझे मेरी बेटी वापस ला दोगी तो जो तुम चाहोगी वह मैं तुम्हें खुशी से दूँगा।"

यह सुन कर जिप्सी बुढ़िया जंगल में अपने घर गयी और वहाँ जा कर यह जानने के लिये कुछ जादू टोना[118] किया कि राजकुमारी कहाँ है। आखिर उसको पता चल गया कि वह किसी दूर देश के एक पुराने किले में है। वह एक कुलीन नौजवान के पास है जिसने उससे शादी कर ली है।

जिप्सी बुढ़िया यह जान कर बहुत खुश हुई। उसने हाथ में एक कोड़ा लिया फिर एक छोटे से कालीन पर बैठी और उसे कोड़े से मारा तो वह कालीन जमीन से ऊपर उठा और आसमान की तरफ उड़ चला।

उसके बाद तो वह उस देश की तरफ उड़ चला जहाँ वह कुलीन नौजवान अपने अकेले पुराने किले में अपनी सुन्दर पत्नी और वफादार जानवरों के साथ रहता था।

---

117 Gypsy in Hindi is known as Banjaaraa or Khaanaabadosh

118 Translated for the words "Magic and Spell"

जब जिप्सी बुढ़िया किले के पास आयी तब उसने अपना कालीन किले के बाहर पेड़ों के पास घास में उतार दिया।

कुछ समय बाद सुन्दर लड़की यानी राजकुमारी बाहर आयी। वह अजनबी स्त्री तुरन्त ही उसके पास गयी और उसको अजीब अजीब कहानियॉ सुनाने लगी।

वह एक बहुत ही अच्छी कहानी सुनाने वाली थी। राजकुमारी चलते चलते तो थक गयी पर वह उसको कहानी सुनाते सुनाते नहीं थकी। पास में घास पर राजकुमारी को एक सुन्दर सा कालीन दिखायी दिया तो वह आराम से कहानी सुनने के लिये उस पर बैठ गयी।

यही तो बुढ़िया चाहती थी। जैसे ही वह उस कालीन पर बैठी बुढ़िया भी उस पर बैठ गयी और कालीन को डंडे से मार कर उड़ा कर ले चली। बस अगले ही मिनट तो कालीन राजकुमारी के किले से बहुत दूर पहुँच चुका था। और फिर जल्दी ही वह राजा के महल के बागीचे में उतर गया।

तुम बड़े अच्छे से अन्दाजा लगा सकते हो कि राजा अपनी बेटी को देख कर कितना खुश हुआ होगा। उसने जिप्सी बुढ़िया को उससे कहीं ज़्यादा दिया जो उसने उससे इनाम में मॉगा।

उस दिन के बाद में राजा ने अपनी बेटी को एक अकेली मीनार में रख दिया और सेवा के लिये दो नौकरानियॉ रख दीं। वह इतना डर गया था कि उसकी बेटी अब कहीं फिर से न चुरा ली जाये।

इस बीच लोमड़ी ने देखा कि उसका मालिक अपनी पत्नी के इस तरह से उठाये जाने पर बहुत दुखी था। और साथ में यह सुन कर कि उसकी बेटी फिर से न चुरायी जा सके राजा ने भी उसकी सुरक्षा के लिये बहुत सावधानियाँ बरत रखी हैं उसने सारे जानवरों की मीटिंग एक बार फिर बुलायी।

जब वे सब उसके पास आ गये तो उसने उनसे कहना शुरू किया — "तुम लोग सब जानते हो कि हमारे मालिक राजा की बेटी से शादी करके कितने खुश थे पर अब उनकी पत्नी उनके पास से चुरा ली गयी है। अब तो उनकी हालत जब हम उनके लिये राजकुमारी ले कर आये थे तबसे पहले से भी बहुत खराब हो गयी है।

पहले तो वह केवल अकेले थे अब तो वह अकेले से भी ज़्यादा अकेले हैं। ऐसी हालत में वफादार नौकरों की हैसियत से अब हमारा यह फर्ज हो जाता है कि हम किसी तरीके से उनकी पत्नी को वापस ला कर दें।

अब हालाँकि यह कोई आसान काम नहीं है क्योंकि राजा ने अब उसको एक मजबूत मीनार में बहुत सुरक्षित रूप से रख दिया है फिर भी मैं निराश नहीं हूँ और मेरा प्लान यह है।

मैं एक बहुत सुन्दर बिल्ली में बदल जाऊँगी और जा कर उसके महल की खिड़की के नीचे उसके बागीचे में खेलती हूँ। मेरा दावा है

कि जैसे ही वह मुझे देखेगी मुझे पाने के लिये ललचायेगी और मुझको ऊपर बुलाना चाहेगी।

वह मुझे लाने के लिये अपनी दासियों को भेजेगी पर मैं भी सावधान रहूँगी कि मैं उसकी किसी दासी के हाथ न आऊँ।

आखिर राजकुमारी अपने पिता का दिया गया हुक्म भूल जायेगी कि उसको मीनार से नीचे नहीं उतरना है। वह बस मुझे लेने के लिये अपनी मीनार से नीचे उतरेगी ताकि वह यह देख सके कि वह मुझे पकड़ सकती है या नहीं। जब वह आयेगी तो मैं उसको अपने आपको पकड़ने दूँगी।

बस इसी पल पर हमारी दोस्त कुमरेकुशा जो उस समय महल महल के चारों तरफ चक्कर काट रही होगी वह हम दोनों को उठा कर मालिक के किले ले आयेगी जैसा कि उसने पहले किया था। इस तरह से मुझे पूरा विश्वास है कि हम अपने मालिक के घर में उनकी पत्नी को वापस ला पायेंगे।

तुम सब मेरे इस प्लान के बारे में क्या सोचते हो?"

सारे जानवर इतनी अक्लमन्दी का प्लान सुन कर बहुत खुश थे। उनको बहुत खुशी थी कि उनके बीच एक इतना अच्छा सलाहकार मौजूद था जो अपने मालिक के लिये इतनी अच्छी तरह से अपनी कृतज्ञता दिखा सकता था।

फिर लोमड़ी कुमरेकुशा के पास गयी। कुमरेकुशा ने लोमड़ी को अपने पंखों में छिपाया और दोनों अपना उद्देश्य पूरा करने में लग गये। इससे वे अपने मालिक के चेहरे पर हँसी ला सकते थे।

जब कुमरेकुशा उस मीनार के ऊपर पहुँची जिसमें राजकुमारी रहती थी वहाँ जा कर उसने लोमड़ी को नीचे उतारा। लोमड़ी ने वहाँ पहुँच कर अपना एक बहुत सुन्दर बिल्ली का रूप बनाया।

फिर वह राजकुमारी के महल की उस खिड़की के नीचे अजीब अजीब हरकतें करने लगीं जहाँ राजकुमारी बैठती थी। बिल्ली के सारे शरीर पर कई रंगों की धारियाँ थीं। जैसे ही राजकुमारी ने उसे देखा तो उसने अपनी दोनों दासियों को उसको अपने पास लाने के लिये भेजा।

दोनों दासियाँ तुरन्त ही नीचे बागीचे में गयीं और अपनी मीठी आवाज में उसे बुलाने लगीं – "पुसी पुसी।" उन्होंने उसको रोटी दूध देने की भी कोशिश की पर वह सब बेकार गया। बिल्ली चारों तरफ नाचती रही इधर उधर भागती रही पर वह किसी भी तरह से उनके हाथ नहीं लगी।

आखिर राजकुमारी जो खिड़की पर खड़ी हुई थी यह सब देख कर बेचैन हो गयी और तुरन्त ही नीचे उतर आयी और बोली — "हटो हटो। तुम लोग हटो यहाँ से। तुम तो इसे डरा रही हो। मैं पकड़ती हूँ इस बिल्ली को।"

जैसे ही वह बिल्ली को पकड़ने के लिये आगे बढ़ी तो बिल्ली भी अपने आपको उससे पकड़वाने के लिये तैयार थी। जैसे ही राजकुमारी बिल्ली की तरफ भागी कि तुरन्त ही कमरेकुशा वहाँ आ गयी उसने राजकुमारी को उसकी कमर से पकड़ा और उसे उठा कर वहाँ से उड़ गयी।

राजकुमारी की दोनों दासियाँ तो यह देख कर परेशान हो गयीं और तुरन्त ही राजा के पास भागी गयीं।

यह सुन कर राजा ने अपने सारे हाउंड कुत्ते छोड़ दिये ताकि वे उस बिल्ली को पकड़ सकें जिसकी वजह से उसकी बेटी दोबारा भगायी गयी थी। कुत्तों ने बिल्ली का पीछा किया और वह उसे पकड़ने ही वाले थे कि बिल्ली को एक गुफा दिखायी दे गयी जिसमें घुसने का रास्ता बहुत तंग था वह अपनी सुरक्षा के लिये उसी गुफा में घुस गयी।

बाहर कुत्ते अपने पंजों से गुफा के दरवाजे को खुरच खुरच कर उसे चौड़ा करने की कोशिश करते रहे पर सब बेकार। वे बहुत देर तक वहाँ भौंकते रहे फिर थक कर वहाँ से वापस राजा की घुड़साल में चले गये।

जब सारे हाउंड कुत्ते वहाँ से चले गये तो वह फिर से लोमड़ी की शक्ल रख कर महल की तरफ भागी जहाँ उसको अपना मालिक खुश खुश दिखायी दे गया क्योंकि कुमरेकुशा तब तक उसकी सुन्दर पत्नी को ले कर उसके पास पहुँच गयी थी।

इस बार राजकुमारी के जाने से राजा बहुत गुस्सा था कि उसने अपनी बेटी को दोबारा खो दिया। और यह देख कर तो वह और भी ज़्यादा गुस्सा था कि जो उसकी बेटी को उठा कर ले गया वह केवल एक चिड़िया और बिल्ली थी जो उसकी सारी सावधानियों के साथ भी उसको उठा कर ले गयीं।

इस गुस्से में उसने सारे जानरों के साथ लड़ाई की और उनको मारने की घोषणा कर दी।

राजा ने अब तक अपनी सारी सेना इकट्ठी कर ली थी और तय किया कि वह खुद अपनी सेना का सेनापति बनेगा। राजा के इस इरादे की खबर तो उसके सारे राज्य में जंगल की आग की तरह फैल गयी।

इस पर लोमड़ी ने तीसरी बार अपनी सभा यानी अपने सारे दोस्तों को बुलाया – भालू भेड़िया कुमरेकुशा चूहा मोल बड़ा खरगोश। उसे एक जनरल मीटिंग करनी थी।

जब सब वहॉ इकट्ठे हो गये तो लोमड़ी बोली — "मेरे दोस्तों। राजा ने हमारे खिलाफ लड़ाई की घोषणा कर दी है और हम सबको मारने का ऐलान कर दिया है। अब यह हमारा काम है कि हम अपने आपको बचायें।

हम सबको देखना है कि हम लोग अपने अपने लोगों से कितने सारे जानवर ला सकते हैं। मेरे अच्छे ब्रुइन तुम बताओ कि तुम कितने भालू हमारी सहायता के लिये ला सकते हो।"

भालू बहुत तेज़ी से अपने पिछले पैरों पर उठा और बोला — "मुझे यकीन है कि मैं कम से कम **100** भालू तो ले ही आऊँगा।"

फिर उसने भेड़िये से पूछा कि वह अपने कितने दोस्त ला सकता है तो भेड़िया बोला "मैं कम से कम **500** भेड़िये तो ला ही सकता हूँ।"

"और बड़े खरगोश तुम हमारे लिये क्या कर सकते हो।"

"मैं भी कम से कम **800** बड़े खरगोश ला सकता हूँ।"

"और मेरे छोटे चूहे तुम हमारे लिये क्या करोगे।"

"मैं भी आपको **3000** चूहे ला कर दूगा।"

लोमड़ी ने फिर मोल की तरफ देखा और पूछा "मोल तुम?"

"मैं भी आपको **8000** मोल ला दूँगा।"

लोमड़ी ने इस बार कुमरेकुशा से पूछा — "और तुम्हारा क्या ख्याल है। तुम कितनी चिड़ियाँ ले कर आ सकती हो।"

कुमरेकुशा बोली — "मैं तो केवल **200** या फिर **300** ही ला पाऊँगी।"

लोमड़ी बोली — "ठीक है। अब तुम लोग जाओ और अपने सब दोस्तों को बुला लाओ। जब वे सब यहाँ आ जायेंगे तब देखेंगे कि हमें अब क्या करना है।"

इसके बाद मीटिंग खत्म हो गयी और सब जानवर अपने अपने दोस्तों को लाने चल दिये। वे सारे जंगल में बिखर गये।

जल्दी ही किले के पास से अजीब अजीब सी आवाजें आनी शुरू हो गयीं। आस पास के बड़े बड़े पेड़ हिलने लगे। भालुओं की गुर्राहट सुनायी पड़ने लगी। भेड़ियों का भौंकना भी पास आ रहा था। सारा शान्त जंगल जानवरों की आवाज से जैसे ज़िन्दा हो उठा हो। चारों तरफ से आयी हुई जानवरों की सेना तय की गयी जगह पर इकट्ठी हो रही थी।

जब सारे जानवर इकट्ठे हो गये तब लोमड़ी ने उन सबको अपना प्लान बता दिया।

उसने कहा — "जब राजा की सेना आये और अपने पहले पड़ाव पर आराम करने के लिये रुके तो भालुओ और भेड़ियो तुम लोग राजा के घोड़ों को मारने के लिये तैयार रहना। अगर सेना इससे नहीं रुक पायी तो वह और आगे बढ़ेगी।

अगली रात जब वे फिर से आराम करने के लिये रुकें तो जब सिपाही सो रहे हों तो ओ चूहों तुम उनके बचे घोड़ों की जीन और लगाम आदि कुतरने के लिये तैयार रहना। और तुम ओ बड़े खरगोशों उस रात उन रस्सियों को कुतरने के लिये तैयार रहना जिनसे सिपाही तोपें खींचते हैं।

अगर राजा अब भी आगे बढ़ता है तो ओ मोल तुम लोग तीसरी रात जा कर उस सड़क के नीचे की जमीन खोद देना जिस पर वे अगले दिन चलने वाले होंगे। उनके कैम्प के चारों तरफ के गड्ढों की गहरायी **20** गज और चौड़ाई **15** गज होनी चाहिये।

अगले दिन जब वे अपने कैम्प से बाहर निकलेंगे और इस खोखली सड़क पर चलेंगे तो ओ कुमरेकुशा तुम सब लोग सेना के ऊपर भारी भारी पत्थर की बारिश कर देना जबकि जमीन उन्हें नीचे घुसा देगी।”

यह प्लान मान लिया गया और सारे जानवर वहाँ से जल्दी से अपना अपना काम करने चले गये।

राजा की सेना जब पहली रात सो कर सुबह को उठी तो सिपाहियों को तो यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनके सारे घोड़े मर गये थे। तुरन्त ही यह खबर राजा को दी गयी तो उसने भी जल्दी से और घोड़े मँगवा लिये। वे घोड़े शाम तक आये तब वे लोग वहाँ से आगे बढ़े।

दूसरी रात बहुत सारे चूहे राजा के कैम्प में घुस गये और घोड़ों की जीन और सिपाहियों की पेटियाँ आदि काट दीं और बड़े खरगोशों ने मिल कर तोपों की रस्सियाँ कुतर दीं।

अगली सुबह सिपाही लोग जानवरों की शरारत देख कर बहुत आश्चर्य में पड़ गये। राजा ने उन्हें विश्वास दिलाया कि वह उन्हें जीन और रस्सियाँ मँगवा कर देगा। जब वे आ गयीं तब वे सब फिर से आगे बढ़े। यह सब देख कर अबकी बार दुश्मन से बदला लेने का उसका इरादा और पक्का हो गया था।

तीसरी रात को जब सिपाही लोग सो कर चौथे दिन की सुबह को उठे तो यह देख कर बहुत खुश हुए कि इस रात उनके साथ

पहले जैसी कोई घटना नहीं हुई थी। उनके अन्दर एक नयी हिम्मत आ गयी और वे एक नये उत्साह से लड़ाई पर चले।

पर यह क्या? उनका चलना तो बहुत जल्दी से रुक गया। यह क्या हुआ। उनके घुड़सवार धरती में धॅसने लगे। जब राजा ने यह देखा तो उसने अपनी सेना को हुक्म दिया कि वह वापस चले।

उसन कहा — "क्योंकि हमने जानवरों के खिलाफ लड़ाई छेड़ दी है तो मुझे लगता है कि भगवान भी हमारे खिलाफ है। मैं इसके लिये अपनी बेटी को छोड़ने के लिये तैयार हूॅ।"

इसके बाद राजा अपनी सेना को लो कर अपने शहर वापस चला। सेना भी यह सुन कर बहुत खुश हुई और खुशी खुशी चलने की तैयारी करके चलने लगी। पर उनको सबसे बड़ा आश्चर्य तो तब हुआ जब वे जिधर को भी मुड़ते उनके उधर जाते ही जमीन नीचे धॅसने लगती।

अपना काम पूरा करने के लिये कुमरेकुशाओं ने अब भारी भारी पत्थर उठा कर सिपाहियों के ऊपर डालने शुरू कर दिये थे। वे उनको पूरे के पूरे मार कर जमीन में धकेल देते थे। इस तरह से राजा और राजा की सारी सेना नष्ट हो गयी।

जल्दी ही बाद नौजवान अपनी पत्नी के साथ अपने दुश्मन के शहर गया और वहॉ जा कर उसके महल को अपने कब्जे में कर लिया। वह वहॉ अपने साथ अपने जानवरों को भी ले गया और फिर वे सब साथ खुश खुश रहे।

26 सेन्ट जौर्ज की कहानी[119]

एक बार सारे सेन्ट दुनियाँ का सारा खजाना बाँटने के लिये इकट्ठे हुए। और इस बँटवारे में हर सेन्ट को कुछ न कुछ ऐसा मिल गया जिससे वे सन्तुष्ट थे।

सुन्दर गर्मी का मौसम सब तरह के फूलों की बहार सेन्ट जौर्ज के हिस्से में आयी। सेन्ट ऐलियास के हिस्से में आये बादल और बिजली। सेन्ट पैन्टैलिजा के हिस्से में आया अंधड़ तूफान। और सेन्ट पीटर के हिस्से में आयीं स्वर्ग की चाभियाँ।[120]

सेन्ट निकोलस के हिस्से में आये समुद्र और उसके ऊपर चलने वाले पानी के जहाज़। आर्कऐन्जिल माइकल के हिस्से में आयीं मरती हुई आत्माओं को इकट्ठा करना और उनकी रक्षा करना।[121]

सेन्ट जौन के हिस्से में आयी दोस्ती और "कूमशिप" और लेडी मैरी के हिस्से में आया बिना कानून वाला शापित देश "ट्रोयन"[122]। इस आशा में कि शायद वह उस देश में कुछ कानून ला सके और वहाँ सच्चा धर्म स्थापित कर सके।[123]

---

[119] The Legend of St George (Tale No 26)
[120] Saint George, Saint Elias, Saint Pantelija, Saint Peter
[121] Saint Nicholas, Saint Archangel Michael
[122] Troyan – sometimes it is referred to India
[123] Saint John, Lady Mary (had the Koom-ship means Godfather or Sponsor)

सेन्टों में किये गये इस बॅटवारे को हुए एक साल गुजर गया कि एक दिन पवित्र लेडी मैरी सभा में आयी। वह देखने में काफी दुखी और परेशान लग रही थी। उनके गोरे गालों पर ऑसुओं की धाराऐं बह रही थीं।

उन्होंने आ कर "लौर्ड के नाम में" अपने सब सेन्ट भाइयों को नमस्ते की। सेन्ट ऐलियास बोले — "बहिन तुम इतनी दुखी क्यों हो। तुम ये ऑसू क्यों बहा रही हो। शायद तुम अपने उस हिस्से से सन्तुष्ट नहीं हो जो हम लोगों के हिस्से में दुनियॉ की चीज़ों को बॉटने के समय आया था।"

होली मैरी ने कहा — "मेरे भाइयो तुम लोग जो सब तरह से भगवान के न्याय स्वरूप हो। जब तुम सबने यह बॅटवारा किया तो तुम लोगों ने मुझे भी एक हिस्सा दे दिया और मैं उससे सन्तुष्ट हूॅ।

फिर भी मेरे पास एक ठीक वजह है जिसकी वजह से मैं बहुत दुखी हूॅ। मैं अभी अभी ट्रोयन लोगों के शहर से आ रही हूॅ। मैं अभी तक वहॉ शान्ति और सच्चा धर्म स्थापित नहीं कर पायी हूॅ।

वहॉ छोटे लोग बड़ों का कहना नहीं मानते हैं। उनकी इज़्ज़त नहीं करते। वहॉ एक भाई अपने ही भाई को ललकारता है और उससे लड़ता है। एक गौडफादर अपने ही गौडफादर से अदालत में लड़ रहा है। एक भाई अपनी ही बहिन से और एक गौडफादर अपनी ही गौडडौटर से शादी कर रहा है।

भगवान का पवित्र[124] दिन नहीं माना जा रहा और सबसे बुरी बात तो यह है कि लोग सच्चे भगवान की पूजा नहीं कर रहे। लोगों ने अपने लिये चाँदी के भगवान बना लिये हैं और वे उन्हीं की पूजा करते हैं।

मेरे प्यारे भाइयो अब तुम सब ही बताओ कि मैं क्या करूँ सिवाय इसके कि मैं सच्चे भगवान से प्रार्थना करूँ कि वह वहाँ के गाँव शहर और किले आदि जलाने के लिये यहाँ से बिजली भेजे। तब शायद ट्रोयन देश के लोगों को अपनी नीचता का पता चले और वह फिर उस पर पछतावा करें।"

यह सुन कर सेन्ट ऐलियास बोले — "ओ हमारी पवित्र बहिन मैरी। मेहरबानी कर के ऐसा मत करो। बल्कि हम सभी लोग भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह हमको इतना अधिकार दें कि हम ही उनको चेतावनी दे सकें।

जैसे हम खुद ही बर्फ को यह कह सकें कि वह "मित्रोवदन" के दिन पर बर्फ गिराये और वहाँ वह सेन्ट जौर्ज के दिन तक रहे और फिर एक और बार बर्फ गिराये जो सेन्ट जौर्ज के दिन गिरे और "मित्रोवदन" के दिन तक रहे।[125]

---

[124] Translation for "Sabbath" – Christians believe that God made the world in six days and rested on the seventh day, so everybody should do the same way. That is why people work for six days and the seventh day, ie Sunday, is called "Sabbath Day" and they do not work on Sunday.
[125] St George's Day is on 25th April, and Mitrovdan Day is on 25th October.

इस तरह से न तो कोई बीज ही बोया जा सकेगा और न ही कोई भेड़ पाली जा सकेगी। इससे धरती का घमंड भी थोड़ा दब जायेगा और लोग भी शायद अपने किये पर पछतायेंगे।"

सब सेन्टों ने सेन्ट ऐलियास की सलाह मानी। तब मित्रोवदन के दिन बहुत सारी बर्फ गिरी और वह सेन्ट जौर्ज के दिन तक रही। उन दिनों में कोई बीज नहीं बोया जा सका और कोई भेड़ नहीं पाली जा सकी।

सारा साल सब लोग बहुत परेशान रहे। पर उन्होंने न तो अपने तरीके बदले और न ही वे अपने किये पर पछताये। कुछ लोगों के पास पिछले साल का अनाज था और बाकी अनाज जहाज़ों से पास के दूसरे देशों से ले आया गया।

किसी तरह से उनका वह साल निकल गया लेकिन फिर भी वे लोग अपने उसी नीच तरीके से रहते रहे।

यह देख कर पवित्र मैरी एक बार फिर रोती हुई सेन्टों के पास गयी। आपस में एक दूसरों को नमस्ते करने के बाद सेन्ट ऐलियास ने उससे पूछा — "ओ पवित्र मैरी अब तुम क्यों रोती हो?"

तो मैरी बोली — "मैं बहुत ज़्यादा दुखी हूँ क्योंकि ट्रोयन देश के लोगों को जो सजा दी गयी है वह उनको समझ में ही नहीं आयी है। वे अभी भी नीच व्यवहार कर रहे हैं।"

सो सेन्टों नें उनको एक बार और चेतावनी देने का निश्चय किया। उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि अबकी बार वह चेचक

भेज दे। सो ट्रोयन में रहने वालों के लिये उन्होंने चेचक भेज दी। चेचक उनके देश में तीन साल तक रही। उसने उनकी सारी ताकत और सुन्दरता ले ली थी। अब वहाँ पर बूढ़े लोग रह गये थे खाँसने के लिये और बच्चे रह गये थे रोने के लिये।

पर जब बच्चे बड़े हुए तो वे भी अपने माता पिता की तरह से रहने लगे। न तो उनके व्यवहार में कुछ सुधार आया और न उन्होंने अपने किये पर कुछ पछतावा ही किया।

रोती हुई पवित्र मैरी एक बार फिर अपने गोरे गालों पर आँसू बहाते हुए तीसरी बार सेन्टों के पास आ पहुँची और उन्हें बताया कि वे लोग अभी भी किस तरह से खराब ढंग से रह रहे हैं।

उसने और आगे कहा कि उनको किसी भी तरह ठीक से पछतावा करने के लिये तैयार नहीं किया जा सकता। और अब वह भगवान से प्रार्थना करना चाहती है कि वह अपनी बिजली धरती पर भेज कर गाँव और शहर आदि नष्ट कर दे।”

पर सेन्ट ऐलियास फिर से बोला — “नहीं मेरी बहिन ऐसा मत करो। उनको एक तीसरी चेतावनी और देते हैं।”

सो सब सेन्टों ने भगवान से एक बार और प्रार्थना की और भगवान ने उसे मान लिया।

अगली सुबह राजा के महल के पास ट्रोयन के एक मुख्य शहर में एक हरे रंग की झील प्रगट हुई। उसमें एक ड्रैगन प्रगट हुआ जिसकी नौजवान आदमियों और स्त्रियों को खाने की भूख कभी

शान्त नहीं होती थी। रोज सुबह ड्रैगन को नाश्ते में खाने के लिये एक ऐसा नौजवान आदमी चाहिये होता था जिसकी कभी शादी न हुई हो और हर रात को उसको एक सुन्दर नौजवान लड़की चाहिये थी।

यह सब सात साल तक चलता रहा। एक दिन आखिर राजा की एकलौती बेटी की बारी आयी। यह सुन कर तो रानी बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने चीखने लगी। उसने अपनी बाँहें अपनी बच्ची के गले में डाल कर उसे कस कर छाती से लगा लिया।

माँ और बेटी तीन दिन तक लगातार रोती रहीं। जब चौथा दिन आया तो रानी की अपनी बेटी के पास ही आँख लग गयी। उसकी नींद में उसके सपने में एक आदमी आया और उससे बोला — "ओ ट्रोयन शहर की रानी। आज की शाम तुम अपनी बेटी को ड्रैगन के पास मत भेजना। तुम उसको कल सबेरे जब सूरज निकल आये तब भेजना।

उससे कहना कि जब वह झील की तरफ जाये तो मुँह धो कर जाये और फिर पूर्व की तरफ को मुँह कर के सच्चे भगवान को पुकारे। किसी भी हालत में वह चाँदी की मूर्ति का ध्यान भी न लाये। ऐसा कर के वह धीरज रख कर इन्तजार करे कि सच्चा भगवान उससे क्या कहता है। और फिर उसे वही करना चाहिये।"

यह सपना देखते ही रानी की आँख खुल गयी।

जागने पर रानी ने अपनी बेटी को अपना सपना सुनाया और जिद कर के उसी सलाह को मानने की विनती की।

सो अगले दिन सुबह को रानी की बेटी ने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोते हुए अपनी माँ के दूध की जो बचपन में उसने पिया था माफी माँगते हुए माँ से विदा ली।

वह झील के किनारे पहुँची। वहाँ पहुँच कर उसने अपना मुँह धोया और फिर पूर्व की तरफ मुँह करके सच्चे भगवान की प्रार्थना की। ऐसा करके अपनी माँ के कहे अनुसार वह वहीं बैठ गयी और होनी का इन्तजार करने लगी – अब जो भी हो।

अचानक वहाँ एक बहुत ही शानदार नाइट[126] प्रगट हुआ जो एक बहुत ही शानदार घोड़े पर सवार था। उसने लड़की से कहा "भगवान के नाम पर"। लड़की ने तुरन्त ही खड़े हो कर उसकी नमस्ते का बड़ी नम्रता से जवाब दिया।

उस अजनबी नाइट ने देखा कि लड़की तो रो रही थी तो उसने उससे पूछा कि क्या बात थी वह क्यों रो रही थी और वह वहाँ अकेली क्यों बैठी हुई थी।

इसके जवाब में उसने अपनी सारी कहानी उसको सुना दी कि वह यहाँ बैठी बैठी ड्रैगन का इन्तजार कर रही थी।

[126] Knight is a respectable person in Imperial army.

जब वह उसकी बात का जवाब दे चुकी तो नाइट घोड़े से उतरा और अपना हैल्मैट[127] अपने सिर से उतार कर बोला — "मैं ज़रा सोना चाहता हूँ। मैं यह चाहता हूँ कि जब मैं सोऊँ तो तुम मेरे बालों में हाथ फेरती रहो ताकि मैं ठीक से सो जाऊँ।"

लड़की ने इस बात को न मानने की काफी कोशिश की पर वह उसकी इच्छा पूरी किये बिना न रह सकी। तुरन्त ही वह नाइट मीठी नींद सो गया जैसे कोई मेमना सोता है।

जल्दी ही झील के पानी में हलचल मचने लगी और एक भयानक ड्रैगन पानी में से निकल कर उनकी तरफ बढ़ने लगा। उसी समय अजनबी नाइट जाग गया और लड़की को अपनी बाँहों में उठा कर अपने घोड़े पर अपने पीछे बिठा लिया।

यह कर के उसने अपने भाले के एक ही वार से ड्रैगन को झील की तह में पहुँचा दिया। वहाँ उसका खून तो बहता रहा पर वह मरा नहीं। फिर नाइट लड़की को ले कर राजा के महल चल दिया जहाँ राजा और रानी बड़ी बेसब्री से अपनी बेटी के साथ वह सब होता देख रहे थे जो उसके साथ हुआ।

उन्होंने उसका शहर के दरवाजे पर ही नाइट का स्वागत किया और उसको शहर की चाभी दे दी।

---

[127] Helmet is a kind of hat of some kind of strong material to protect the head of the wearer in case of accident.

यह नाइट और कोई नहीं बल्कि सेन्ट जौर्ज खुद थे जो ट्रोयन शहर की सड़कों पर चल रहे थे। उन्होंने वहाँ के लोगों को इकट्ठा किया और उन सबसे यह कहा —

“मेरे बच्चों अब मेरी बात सुनो। चाँदी की मूर्तियों की पूजा मत करो केवल सच्चे भगवान की ही पूजा करो। और तुम बच्चे लोगों अपने से बड़ों की इज़्ज़त करो। तुम सबको यह भी याद रखना चाहिये कि करीबी रिश्तेदारों में शादियाँ नहीं होतीं। सातवें दिन को पवित्र दिन मानो और साथ में दूसरे पवित्र दिनों को भी और सेन्ट लोगों के दिनों को भी।”

यह सब कहने के बाद नाइट ने हुक्म दिया कि सारे मन्दिर खोल दिये जायें। जब उसके सारे हुक्म मान लिये गये तो उसने चाँदी की एक मूर्ति निकाली और उसको पिघला कर कई तरह के गहनों में बदल दी। उस चाँदी की मूर्ति की जगह उसने एक पवित्र तस्वीर रख दी और वहाँ एक मन्दिर बनवा दिया जो बाद में चर्च बन गया।

जब यह सब हो गया तो उसने लोगों से कहा — “अगर तुम सब मुझसे यह वायदा करते हो कि जैसा मैंने तुमसे कहा है तुम लोग वैसा ही करोगे तो मैं इस ड्रैगन को झील में ही मार दूँगा और अगर तुम वैसा नहीं करोगे तो मैं उसे खोल दूँगा। वह यकीनन तुम सब लोगों को इसी तरह खा खा कर खत्म कर देगा।”

यह सुन कर सब लोग उसके सामने जमीन तक झुक गये और ज़ोर से बोले — "ओ भले अजनबी नाइट। भगवान की तरफ से हमारे भाई। हम सबको झील के इस ड्रैगन से बचाओ। हम लोग वैसे ही रहेंगे और वैसा ही करेंगे जैसा कि तुमने हमसे कहा है।"

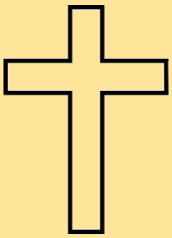

फिर उन सबने सच्चे विश्वास[128] का पालन करने की कसम खायी। उसके बाद सेन्ट जौर्ज झील की तरफ चले गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने झील के ऊपर एक डंडी से क्रास का निशान बनाया और अगले ही पल वह झील और ड्रैगन दोनों ही ऐसे गायब हो गये जैसे वे वहाँ कभी थे ही नहीं।

इसके बाद सेन्ट जौर्ज स्वर्ग चले गये और वहाँ जा कर ट्रोयन लोगों के साथ जो उनकी बातचीत हुई वह सब उनको सुनायी।

[128] Translated for the words "True Faith".

Classic Books of European Folktales in Hindi
Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone.**
No 33 By Giovanni Boccaccio. 100 tales

1550 **Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols.
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales. Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
वंगाल की लोक कथाऐं — लाल विहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. 2002. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il **Pentamerone.**
By Giambattista Basile. 1634. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. 1894. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. 1887. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. 1998. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. 2001. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales.
पश्चिमी अफीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898)** 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फ्रैडैरिक क्रेन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment". **1903 and 1892** respectively.
पंजाब की लघु कथाऐं —

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहॉ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहॉ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहॉ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहॉ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहॉ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन गुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहॉ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022